राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिलभारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर,
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ८२

महेसदास राव कृत

बिन्है रासौ

[बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन]

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासौ

[बादशाह शाहजहाँ के शाहजादों के युद्धों का वर्णन]

कवि की अन्य कृतियों, परिशिष्ट एवं विस्तृत भूमिका सहित

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत

अनुसन्धान सहायक

राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर

द्वारा सम्पादित

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२२ प्रथमावृत्ति १००० | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८७ | ख्रिस्ताब्द १९६६ मूल्य- ६.७५

मुद्रक- हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

विषय - सूची



सञ्चालकीय वक्तव्य

भारत में मुगल-साम्राज्य की जड़ो को पक्का करने मे राजस्थान की तत्कालीन रियासतो के राजाओ का बडा हाथ रहा है। इन राजाओ के भाई-बेटे, सामत और सामान्य राजपूत परिवार भी उनके साथ साम्राज्य की रक्षा और उसके विस्तार के प्रयत्नो मे जी-जान से सहयोग देते थे। इन लोगो मे आपसी रूप मे पद, ख्याति, दरबारी मनसब और आभिजात्य को लेकर तो मन-मुटाव और एक दूसरे को नीचे दिखाने की अहमहमिका बनी रहती थी और हर एक अपने को अन्य से वरिष्ठ प्रमाणित करने के लिए अवसर की ताक लगाये बैठा रहता था, परन्तु जहां साम्राज्य सबधी या सम्राटो के वैयक्तिक जीवन तथा पारिवारिक प्रश्न उपस्थित होते थे उनमे ये लोग समान रूप से साम्राज्य का ही साथ देने के लिए होड़ लगाते थे। युद्धो मे जाने के लिए एक से एक आगे बढ़ कर उपस्थित होता था और शाही-परिवार मे भी कभी आपसी कलह का प्रसग आता तो ये लोग उन्ही मे से एक या दूसरे पक्ष को अपना कर उसी का हित-साधन करने के लिए अपनी सहज रण-कण्डू का निर्वापन किया करते थे। ऐसे अवसरों पर जिन नायको का चरित्र ऊचा उभर आता था उनको शाही इतिहास-लेखक भी अपने विवरणो मे प्रमुख स्थान देते थे और बादशाह भी उन्हे यथावसर मनसब, खिलअत और जागीरें आदि देकर सम्मानित करते थे। यह कहने की आवश्यकता नही है कि कुछ राजाओं की शक्ति और रुतबा इतना बढ गया था कि बादशाह के घराने को उनके घरानो से मान प्राप्त होने लगा था।

सम्राटों, उनके वजीरो, सेनानायको और अन्य बडे अधिकारियो के कार्यों और सुयश को तो दरबारी इतिहास लेखक या उनकी मजलिसो के कवि, शायर और चारण, भाट आदि चिरस्थायी करने के प्रयत्न करते थे और उनकी कृतिया भी यथानुरूप प्रसिद्धि मे आती चली गई थी परन्तु, जैसा कि सभी जानते हैं, प्यादे लड़ते हैं और बख्शी का नाम होता है, जो वास्तव मे रणक्षेत्र मे लड़ने वाले राजपूत क्षत्रिय सैनिक अपना अदम्य उत्साह और शौर्य प्रदर्शित करते थे उनकी कीर्ति-गाथा को स्थिर करने के लिए उनके वंश-भाट और चारण या फिर कोई लड़ाई के मैदान मे आखो देखे हाल को लिपिबद्ध करने वाला समीक्षक ही किसी न किसी रूप मे स्थिर रूप देता था। ऐसे ही विवरणो के फलस्वरूप कितनी ही लघु वचनिकाओ, रासो, ख्यातो और बातो का निर्माण हुआ

है जो बहुत कम प्रसिद्धि में आ सके और कोई-कोई तो रचयिता के परिवार मे ही पडा नष्ट हो गया, अथवा हाथों-हाथ उतर कर कही का कही पहुँच गया, खडित हो गया या फिर किसी ने उसमें अपनी बुद्धि लगा कर जोड-तोड़ कर मूल रूप से भिन्नता ला कर उसे घटा बढा दिया, इत्यादि । परन्तु निःसन्देह ऐसी रचनाए जब उपलब्ध हो जाती हैं और उनका अनुशीलन किया जाता है तो कितने ही ऐसे कुलो और शूरवीरो का पता चलता है कि जिनके वीर कार्यों ने घटनाओ को निर्णायक मोड दिए हैं और इतिहास निर्माण मे जिनका पूरा दायित्व रहा है। यह बात दूसरी है कि कारणान्तर से श्रेय किसी और को मिला हो ।

राव महेशदास कृत 'बिन्हैरासो' भी ऐसी ही रचना है जिसका मुख्य विषय तो गद्दी के लिए बादशाह शाहजहा के पुत्रो की लडाई का है परन्तु कवि का उद्देश्य अपने आश्रयदाता राजगढ के शासक अर्जुन गौड़ की वीरता और रण-कौशल का गुण-गान करना है। प्रसगवश उसने इस सबध मे हुई तीनो ही लडाइयो का वर्णन किया है परन्तु जिस रुचि और ओज के साथ उज्जयिनी युद्ध का विवरण दिया गया है, जिसमे अर्जुन गौड वीर गति को प्राप्त हुआ था, उससे कवि का झुकाव और उद्देश्य प्रत्यक्ष ही स्पष्ट हो जाता है। ऐसा ही खिडिया जगा की राव रतनसिह महेसदासोत की वचनिका मे हुआ है जिसमे आधार तो शाहजादों का युद्ध ही है परन्तु कवि का अभीष्ट राव रतनसिह की यशोगाथा को चिरजीवी करने का है ।

प्रस्तुत 'बिन्हैरासो' ब्रजभाषा प्रभावित डिंगल की, जिसको कि राजस्थानी ही मानना चाहिए, एक अज्ञात कृति है। इसकी एकमात्र उपलब्ध प्रति लेकर जब जोधपुर स्थित राजस्थानी शोध सस्थान के सचालक डा० नारायणसिहजी भाटी और उनके शोध सहायक श्री सौभाग्यसिहजी शेखावत आए और हमको पाण्डुलिपि दिखाई तो इसको अद्यावधि अज्ञात, अप्रकाशित और भाषा एव कितने ही ऐतिहासिक मुद्दो और तिथियो का हल करने योग्य समझ कर हमने राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला मे इसके प्रकाशन को समुचित माना और श्री सौभाग्यसिहजी शेखावत को ही जो इसका रुचिपूर्वक अध्ययन कर रहे थे सपादन-भार सौंप दिया। इन्होने बहुत योग्यता पूर्वक, इस रचना की एक ही प्रति उपलब्ध होते हुए भी पदच्छेद और अर्थानुसधान की सगति बैठा कर पाठ संपादन किया है, तथा शब्दार्थ और संदर्भ खोलने के भी अधिकाधिक प्रयास किये हैं। साथ ही परिशिष्ट में गौड़ो की वंशावली, ऐतिहासिक टिप्पणियां व नामानुक्रमणिका देकर पुस्तक को बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके अतिरिक्त उनकी अध्ययन-पूर्ण विस्तृत भूमिका मे कवि और उसकी रचनाओ, प्रस्तुत रचना के साहित्यिक

ओर ऐतिहासिक विवेचन का यथाशक्य पूरा विवरण भी कम महत्त्वपूर्ण नही है ।

शाहजहा के शाहजादो के युद्धो के विषय में अन्य भी बहुत सी रचनाएं उपलब्ध होती है और इतिहास के विशेषज्ञो ने भी इस सघर्ष का ऐतिहासिक विश्लेषण करने मे कोई कसर नही रखी है । प्रस्तुत रचना मे इन युद्धो की तिथियां भी विक्रमी सवत् के अनुसार दी गई हैं । किसी-किसी इतिहास के विद्वान् द्वारा उल्लिखित तिथियों से सभवत: इनका मेल नही बैठता । विद्वान् सपादक का अनुमान है कि उज्जैनी युद्ध मे राव महेशदास स्वय प्रत्यक्षदर्शी रहा होगा । अत: यह विषय इतिहास सशोधको के लिए सशोध्य और रुचिकर हो सकता है ।

विद्वान् संपादक ने ग्रथ के नामकरण और इसकी अप्रसिद्धि के कारण पर भी अपनी भूमिका मे प्रकाश डाला है और अनुमान किया है कि 'बिन्है' शब्द दो के लिए और 'रासो' युद्ध के लिए प्रयोग मे आता है इसलिए कवि ने इसे 'बिन्हैरासो' नाम दिया होगा क्योकि इसमे आरम्भ में उज्जैनी और धौलपुर के दो युद्धो का वर्णन करने का ही विचार रहा होगा, इत्यादि । अथवा "अपने वीर आश्रयदाताओ के यश का विनय-पूर्वक प्रसारण करने के लिए ग्रंथ का नाम 'विन्है रासो' रखा गया हो तो भी युक्ति-सगत है ।" परन्तु, हमे प्रथम अनुमान ही अधिक संगत लगता है । बिन्है शब्द प्राय. कवि ने 'दो' के अर्थ मे ही प्रयुक्त किया है और आरम्भ मे भी ग्रन्थ का परिचय देते हुए प्रकट किया है—

"पिता पूत वळ द्वै जुडै, भिन भिन बरणौं ताय"

(पृष्ठ १ पद्य २)

पिता और पुत्रो के दोनो दलो मे यह युद्ध हुआ जिसका भिन्न-भिन्न रूप मे इस ग्रन्थ मे वर्णन हुआ हैं । दो दलो के युद्धो का वर्णन होने के कारण ही इसका नाम "बिन्हैरासो" है । अन्यत्र भी कई स्थलो पर "बिन्है" व "दुहूँ" "दुई" आदि शब्दो का प्रयोग हुआ है । यथा—

"दसयेक घड़ी चढतै दिवस, दळां साहि चढिया दुई"

(पृष्ठ १२३ पद्य ३२)

"मिळि दीठि दीठि वहू दळां मद्धि"

(पृष्ठ १२५ पद्य ३७)

"साहि विन्है घर सधि, कोट कावली करारे"

(पृष्ठ १०९ पद्य ११)

"फतै पाय मोटी बिन्है साहि फूलै"

(पृष्ठ १०३ पद्य २०३)

श्री सौभाग्यसिह जी शेखावत एक अध्ययनशील विद्वान् हैं। इनकी रुचि और योग्यता का जो उपयोग इन्होने इस पुस्तक के सपादन मे किया है और एतद् द्वारा राजस्थानी भाषा एव कतिपय ऐतिहासिक तथ्यो का उद्‌घाटन तथा इतिहास मे अप्रसिद्ध कतिपय वीरो और उनके कुलो के परिचय का उद्धार हुआ है उसके लिए ये हमारी ओर से बधाई के पात्र है। आशा है ये अपने अध्ययन और शोध मे गतिशील होकर भविष्य मे भी इसी प्रकार शोधकर्त्ताओं को उपकृत करते रहेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन मे भारत सरकार के शिक्षा मत्रालय से 'हिंदीतर आधुनिक भारतीय भाषाओ की विकास योजना—राजस्थानी' के अन्तर्गत व्यय का कतिपय अश अनुदान के रूप मे प्राप्त हुआ है तदर्थ हम उक्त मत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

राजस्थान पुरातन ग्रथ-माला के ८३वें ग्रथाक रूप मे प्रकाशित इस रचना से विद्वानो को सतोष और आमोद प्राप्त होगा, ऐसी हमारी आशा है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर
७-२-६६

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

भूमिका

राजस्थान मे जितना विशाल साहित्य डिंगल तथा पिंगल भाषाओं मे लिखा गया है, उसका बहुत थोड़ा अश प्रकाशित होकर विद्वानो के हाथो मे पहुँचा है। अनेक महत्त्वपूर्ण कवि और कृतियाँ अभी तक अज्ञात हैं। प्रस्तुत कृति बिन्हैरासो और उसका कर्त्ता महेशदास राव दोनो अद्यावधि अज्ञात थे। यद्यपि यह कृति अपने आप मे साहित्यिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है और इसका कर्त्ता एक प्रतिभावान् कवि रहा है। अतः इस कृति की ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्ता पर प्रकाश डालने से पहले हम इसके कर्त्ता के सम्बन्ध मे प्राप्त साधनो के आधार पर आवश्यक जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

कवि-वंश परिचय

राजस्थानी-साहित्य-सर्जक जातियो मे चारणो और रावो का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। चारण-समाज के कवियो ने अधिकतर डिंगल भाषा मे काव्य-रचना की है और राव जाति के कवियो ने पिंगल मे। राव कवियो की रचना-प्रवृत्ति वीररस के स्थान पर शृङ्गाररस की ओर अधिक रही है। पर जिन राव कवियो ने डिंगल भाषा मे वीररसात्मक काव्य का सर्जन किया है, उनकी कृतियाँ डिंगल के अन्य जातीय श्रेष्ठ कवियो की रचनाओ की भली प्रकार समता करने मे सक्षम हैं। राव कवियो की कलाकृतियो का अवलोकन करने से एक बात और जान पड़ती है कि उनका काव्याध्ययन ; नियमित, व्यवस्थाबद्ध और काव्यशास्त्रीय पद्धतियों के अनुकूल हुआ था। यही कारण है कि अन्य जातीय कवियो के प्राचीन ग्रथों मे लिपि की जैसी और जितनी असावधानियाँ मिलती हैं, उतनी राव कवियो की रचम ओ मे नही मिलती।

राजस्थान मे रावो को ब्रह्मभट्ट अथवा भाट भी कहते हैं। संभवतया भाट शब्द भट्ट का ही विकृत रूप है। राजस्थान के कई भागो मे पीढ़ियाँ लिखने वाले और वशावलियाँ लिपिबद्ध कर सुरक्षित रखने वाले बड़वों और वहीबचो को भी भाट सम्बोधन से पुकारा जाता है। किन्तु ब्रह्मभट्ट, राव और काव्यकार भाट जाति, उन भाटो से अपने आपको सर्वथा अलग और श्रेष्ठ मानती है। यह जाति चारणो की भाँति ही एक काव्योपजीवी जाति है और उनके समान

ही राजपूत जाति के अतिरिक्त अन्य जातियो से दान आदि की याचना नही करती। राजपूत समाज भी इन दोनों जातियों का बडा सम्मान रखता है और चारण कवियो को कविराज और राव कवियों को कविराव के आदरणीय सम्बोधन से बतलाते हैं। वैसे इन दोनो ही कवि-जातियो की गणना 'षट्दर्शनों' मे होती है, जो शासक और प्रजा दोनो ही के लिए पूज्य रहे हैं।

रावो अथवा भाटो की बारह शाखाए प्रसिद्ध हैं। उन बारह शाखाओं में 'लाखनौत' भी एक शाखा कहलाती है। लाखनोत शाखा वाले राव अपना उत्पत्ति सम्बन्ध गौड़ शाखा के चन्द्रवशी क्षत्रियो से प्रकट करते हैं। उनका कथन है कि खिलजी वश के प्रसिद्ध बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल मे पूर्व दिशा से पाँच गौड क्षत्रिय भ्राता राज्य-च्युत हो कर राजस्थान की ओर आए थे। उनके नाम वामनदेव, वच्छराज, हृदयचद, रणसी और उदयसी थे। उन्होंने राजस्थान मे अजमेर-मेरवाड़ा और साभर के समीपस्थ भूभाग पर आधिपत्य स्थापित कर अपना निवासस्थान बनाया। राज्य-सस्थापन के उस सघर्ष में रणसी और उदयसी दो भ्राता तो मारे गए और वामनदेव, वच्छराज तथा हृदयचद जीवित रहे, जिन्होने ऊपर कथित भूप्रांत पर शासन किया। कालान्तर मे अजमेर और साभर तो उनके अधिकार से निकल गए और अब उनकी सतति के निवास मे राजगढ, शिवपुर बडोदा, और मारवाड़ के मारोठ परगने के गावो और कोटा-बूदी के गावो मे कही-कही 'छडे-बीछडे' परिवार रह गए हैं।

उन पाचो भ्राताओ मे वच्छराज बड़ा प्रतापी, वीर और उदार शासक हुआ। उसने अजमेर को अपनी राजधानी बना कर शासन किया। उसकी उदारता और वदान्यता राजस्थान मे आज भी काव्य-श्रुतियो के रूप में प्रचलित है।[1] उससे छोटे वामनदेव ने मारवाड प्रदेश के नागौर जिले के मारोठ परगने पर आधिपत्य स्थापित किया; तब से उस भाग का नाम गौडावाटी प्रचलित हुआ। कविराजा बांकीदास ने अपनी ख्यात मे वामनदेव को पृथ्वीराज चौहान का बहनोई लिखा है और उसी के द्वारा वामन को अजमेर प्रान्त दिये जाने का जिक्र किया है।[2] गौड़ावाटी भूभाग पर गौड़ क्षत्रियो का लगभग पाँचसौ वर्षों तक शासन रहा। इस अवधि मे गौडो और कछवाहो की शेखावत शाखा तथा गौड़ों और राव

---

[1] दीधो अडव पसाव दत, वीर गौढ वछराज।
गढ़ अजमेर सुमेर जिम, ऊचो दीसे आज॥

[2] बाकीदास री ख्यात, स० नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १६६

मालदेव जोधपुर की सेनाओं के मध्य एक-दो बार भयानक सघर्ष भी हुए, पर गौड़ो की सगठित शक्ति और शेरशाह सूरी के मारवाड़ पर आक्रमण के कारण राव मालदेव का अधिकार स्थायित्व प्राप्त नही कर पाया। बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल मे गौड़ो का प्रताप-रवि पूरे प्रभाव से तपा जो उसकी अस्वस्थता के कारण संवत् १७१५ विक्रमी मे जब शाहजादा औरगजेब उज्जैन और धौलपुर के रणक्षेत्रो मे शाही सेना को परास्त कर दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ हुआ, तब अस्त हुआ। औरगजेब ने बादशाह बनने के बाद अपने सैनिक पक्ष को सबल बनाने तथा दाराशिकोह और बादशाह शाहजहाँ के पक्ष को निर्बल करने तथा उपर्युक्त युद्धो के प्रतिपक्षी योद्धाओ से प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से उनके मनसब तथा जागीरें जप्त की। साथ ही अपने समर्थक योद्धाओ को वे ही जागीरे प्रदान कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का उपक्रम किया। उपर्यंकित दोनों युद्धों मे औरगजेब और मुराद के पक्ष मे राठोड़ो की दूदावत (मेड़तिया) शाखा के सांवलदास का पुत्र रघुनाथसिंह राठोड भी उनकी सेना मे रह कर लड़ा था। उसके बाद के शाहशुजा और दाराशिकोह के विरुद्ध लड़े गए युद्धो मे भी वह अनवरत औरंगजेब का सहायक बना रहा। फलस्वरूप बादशाह बनने के बाद औरगजेब ने सवत् १७१७ वि० मे गौड़ावाटी का भूभाग रघुनाथसिंह मेड़तिया को प्रदान किया। रघुनाथसिंह अपनी अकेली शक्ति से गौड़ो पर काबू न पा सका। तब उसने अपने ननिहाल और ससुराल पक्ष के लाडखानी (शेखावत) तथा राजावत कछवाहो की सशर्त सैनिक सहायता प्राप्त कर गौड़ावाटी पर अपना अधिकार स्थापित किया।[1] इस प्रकार गौड़ावाटी की पराजय के साथ वामनदेव के वशजो की सैनिक शक्ति सदा के लिए समाप्त प्राय: हो गई।

उपर्युक्त वच्छराज और वामनदेव के अवशेष जोवित बंधु हृदयचद के वश मे लाखन नाम का पुत्र हुआ। उस लाखन से रावो की लाखनवत अथवा लाखनौत शाखा का प्रचलन हुआ। कविराजा बाँकीदास ने लाखन गौड़ के भाटो में मिल जाने का उल्लेख किया है।[2] राजस्थान मे अनेक जातियो की उत्पत्ति के संबंध मे इससे मिलती-जुलती कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी दशा मे पुष्ट प्रमाणाभाव में यह तो नही कहा जा सकता कि इस कथा मे कितना ऐतिहासिक तथ्य है, किन्तु इतना अवश्य माना जा सकता है कि लाखनौत रावो मे अनेक विद्वान्, योद्धा

---

[1] राठौडों की ख्यात, राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर का सग्रह।

[2] लाखण गौड भाट हुवो जिणरे वश रा लाखणोत भाट गोडा रा ग्रतेसरी। वांकीदास री ख्यात, स० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० १६५।

और राजसभाओ मे प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति हुए हैं । इस शाखा वालो को अपने योग्य पूर्वजो के कारण ब्रह्मभट्ट समाज मे भी यथेष्ट सम्मान और गौरव मिला है ।

लाखनौतों मे जैसा कि ऊपर सकेत कर आए हैं, समय-समय पर अनेक विद्वान्, कवि, योद्धा और राजदरबारो मे बैठक तथा सम्मान प्राप्त करने योग्य व्यक्ति हुए हैं । इन राज्यमान्य लाखनौतो मे प्रस्तुत ग्रथ बिन्हैरासो के कर्त्ता विद्वान् और कवि महेशदास के पिता बाघा अथवा बाघजी भी एक प्रसिद्धि-प्राप्त व्यक्ति थे । इनके दो और भाई थे, जिनके नाम भीखाजी और रामाजी थे[1] । बाघाजी आमेर नरेश राजा मानसिह कछवाहा, राणा प्रतापसिह मेवाड़ और नारायना के स्वामी राव खगार कछवाहा के समकालीन थे। प्रसिद्धि है कि राजा मानसिह ने हल्दीघाट के युद्ध मे राणा प्रतापसिह को पराजित कर उदयपुर की प्रसिद्ध झील पीछोला मे अपने अश्व को पानी पिलाते समय गर्वोक्ति के साथ घोडे को सम्बोधित कर कहा था—'हे अश्वराज ! इस सरोवर का निर्मल जल विजय प्राप्त कर आज या तो तू ने ही पिया है या एक बार राव जोधा राठौड के घोड़े ने पिया था ।' यह दर्पोक्ति उसी की सेना के एक चारण कवि को सहन नही हुई और उसने अपने भावी लाभालाभ का विचार किए बिना ही राजा की भर्त्सना करते हुए वही एक दोहा कह सुनाया ।[2] चारण के उस अपमान-जनक दोहे पर रुष्ट होकर कछवाहा नरेश ने अपने राज्य के चारणो के सभी शासनिक गाव उनसे छीन लिए । उनमे से कई गाव अन्य जातियों के कवियो को प्रदान किये । राजा ने चारणो के उन गांवों मे से एक ग्राम और लाखपसाव बाघा को भी देने का प्रस्ताव किया, लेकिन विवेकशील बाघा ने चारणो की उदक का गाव लेना स्वीकार नही किया । इस पर राजा मानसिंह और बाघा के भी दर्शन-व्यवहार नही रहा । बाघा ने चारणो की उदक से उतरा हुआ गाव लेने मे अपना अपमान समझा और तब फिर वह भी एक दोहे द्वारा अपना विरोध प्रकट कर आमेर से चला गया ।[3] तदन्तर राजा मान-सिंह के ननिहाल श्रीनगर के पचायण पवार के आमात्य चतुर कवि किसना भादा

---

[1] स्वर्गीय कविराव मोहनसिहजी उदयपुर द्वारा सकलित 'राव जाति का इतिहास' की सामग्री मे ।

[2] माना मन अजमे मनी, अकबर वळ आयाह ।
जोधै जगम आप रै, पाणी वळ पायाह ॥

[3] मान नाम जांचू नहीं, आही याग री टेक ।

ने मानसिंह को प्रसन्न कर चारणो को उनके गांव पुनः दिलवा कर उनका सकट मिटाया। पर बाघा तो मानसिंह नाम के किसी राजपूत का 'दान न लेने' की प्रतिज्ञा कर चुका था, इसलिए वह अपने जीवन-काल मे फिर आमेर नही गया। बाघा की इस निर्लोभिता, विवेक और साहसिक कार्य के कारण अपने समय के कवि समाज मे बड़ा सम्मान बढा। वह जैसा विवेकशील, विचारक, और मानधनी था, उसी के अनुरूप स्पष्टभाषी और डिंगल-साहित्य का प्रौढ विद्वान भी था। यद्यपि राजा मानसिंह से उसकी अनबन हो चुकी थी, पर उसी के सजातीय और सहयोगी अन्य कछवाहा सामन्त योद्धाओ से उसका पूर्ववत ही मेल-मिलाप और सम्पर्क बराबर बना रहा।

कविराव बाघा की रचनाएँ प्रयत्न करने पर भी अच्छी सख्या में प्राप्त नही हुई हैं। हमारी अब तक की खोज मे उसके रचित डिंगल भाषा के दो वीर गीत ही हमें उपलब्ध हुए हैं। प्राप्त गीतो मे प्रथम गीत नरायना के स्वामी कछवाहो की खंगारोत शाखा के प्रवर्त्तक राव खगार और राणा प्रतापसिंह के सवत् १६३३ वि० के खमनोर स्थान के युद्ध पर आधारित है। राव खगार उस युद्ध मे अपने सजातीय तत्कालीन प्रसिद्ध योद्धा राव लूनकर्ण शेखावत अमरसर, राजा माधवसिंह कछवाहा भानगढ और राजा मानसिंह आमेर सहित शाही सेना मे नियुक्त था। कवि बाघा की भाषा, शैली और रचनाक्रम का अवलोकन करने के उद्देश्य से वह गीत यहा उद्धृत किया जाता है—

गीत

कळहणि करि थाट कळळ ऊकळतै, सोहड़ सिखरि पाव सजि सार।
ओवड़ि राण प्रताप ऊपरां, खमियो खाडा धार खगार॥
ऊतर अकळ अचळ घण ऊरड़, हूकळ कळ बीजूजळ हाम।
माथै लोह निहसि मेवाड़े, वूठो जगड तणो वरियाम॥
किरमर सेन कूत कैलपुरा, मेह छेह अरि उर सिरमौर।
कळहणि रहचि किया कछवाहे, खळ डळ पळ चीखल खमणोर॥

यद्यपि खमनोर (हल्दीघाट) के युद्ध में राणा प्रतापसिंह को पराजित होना पड़ा था, परन्तु अपार जन-धन की हानि उठा कर भी उन्होने स्वाभिमान, कुल-गौरव और अपनी स्वतन्त्रता की कष्टसाध्य साधना की टेक को त्यागने की कभी कल्पना नही की। उनकी स्वतत्रता तथा देश-भक्ति की उस उत्कट भावना ने जोधपुर के राव चन्द्रसेन, सिरोही के राव सुरतान देवड़ा और सिवाना के राव कल्ला राठौड प्रभृति कतिपय स्वतन्त्रता-प्रेमी राजाओ मे भी साहस का सचार किया। राणा प्रतापसिंह को स्वतन्त्रता की गौरवमयी टेक

ने मुगल दरबार और बाहर के अनेक डिंगल कवियों को प्रभावित किया। फलस्वरूप तत्कालीन प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज राठौड, दुरसा आढा, माला सांदू आदि कवि उसके चरणों पर अपनी वाणी के शब्द-सुमन समर्पित कर पवित्र हुए हैं। हम पहिले लिख आए हैं कि कवि बाघा एक स्वाभिमानी व्यक्ति था, तब भला उस काल के एकमात्र स्वाधीन हिन्दू नरेश राणा प्रतापसिंह पर वह कुछ भी न लिखे, यह कैसे हो सकता था? राणा के वीर चरित्र और स्वाधीनता के सघर्ष-शील प्रयास ने कवि बाघा को भी आकर्षित किया और उसने अपनी ओजपूर्ण भाषा मे तलवार-बल से मेवाड़ की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने का एक गीत लिख सुनाया—

गीत

खळ कटका खळा सावरत खाडो, खाडो कर्दन राखै खाप।
खाडाबळि राखै खूमाणै, प्रथमी खाडा तणै प्रताप ॥१॥
रवदा चूक अचूक रातडै, पळ नह रूक विछोड़ै पाण।
रूके कुम्भ कळोधर राखै, रेणा रूक तणी तिम राण ॥२॥
सत्रहर सार अपार सुरगे, जूटि सार धर राखण जोध।
सारि मारि राखै दस सहसो, सार तणी अवनी सीसोध ॥३॥
असुरा रौळ चौळ व्रण आउध, 'आउध 'ग्रहि आतम अरियां।
आउध ध्रम धरती ऊदावत, आउध धारे ऊधरिया ॥४॥

उल्लिखित दोनो गीतो के माध्यम से कवि की भाषा, भाव-निर्वाह, उसके अध्ययन, विचारधारा और रचना-प्रणाली की यत्किंचित झलक हमे प्राप्त हो सकती है।

कवि बाघा के पाच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः काशीदास, महेशदास, कल्याणदास, गगादास और पोखरदास थे। बाघा अपने जीवन के सध्याकाल मे तीर्थराज पुष्कर के सन्निकट अपने निवास-स्थान ग्राम खोहरी मे ही स्थायी रूप से रहने लगा और उसी स्थान पर अपनी जीवन-लीला संवरण की। तब उसकी मृत्यु के पश्चात उसके पाचो योग्य पुत्र अपने भाग्य और काव्य-कौशल की परीक्षा करने के लिए प्रयत्नशील हुए। उनमे से सबसे बडा काशीदास राजा विट्ठलदास गौड के पुत्र राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के पास गया और अपनी काव्य-चातुरी से राजा को प्रसन्न कर शिवपुर बडोदा के पास जागीर प्राप्त की। काशीदास ने वहा पर अपने नाम पर काशीपुरा गांव आबाद किया। वह अपने जीवनकाल मे राजा अनिरुद्धसिंह की सेवा मे ही बना रहा। दूसरे पुत्र महेशदास ने राजा विट्ठलदास गौड के द्वितीय पुत्र, बादशाह शाहजहा के अत्यन्त विश्वासी

मनसबदार और दरबारी अर्जुन गौड़ की सेवा स्वीकार की। अर्जुन गौड ने महेशदास की काव्य-सेवाओ पर प्रसन्न होकर अपने राज्य राजगढ़ मे महेशदास को जागीर और निवास के लिए हवेली प्रदान की। महेशदास ने राजगढ़ मे एक बड़ा तालाब बनवाया और अपनी हवेली का सुधार कर उसके परकोट बनवाया। वह जलाशय और हवेली उसके वर्तमान वशज श्री गोवर्द्धनसिह राव के अधिकार मे है। महेशदास की सन्तति मे राजगढ, इन्द्रगढ़, गोदावरी, बड़ौदा और खूजी आदि गावो के राव हैं। महेशदास अपने अन्य चारों बन्धुओ में सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हुआ। उसने बड़े परिमाण मे काव्य ग्रन्थों का प्रणयन किया जिन पर आगे अलग से विचार किया जाएगा।

बाघा के तृतीय पुत्र का नाम कल्याणदास था। वह मेवाड के प्रतापी नरेश राणा राजसिंह के दरबार में पहुँचा और राणा से मेवाड़ का समेला ग्राम प्राप्त कर वहाँ अपना निवास बनाया। उसने अपने रचित भक्तिकाव्य ग्रंथ 'गुणगोबिन्द' मे समेला ग्राम का इस रूप मे उल्लेख किया है।[1] कल्याणदास ने नरकाव्य और भक्तिकाव्य दोनो प्रकार का काव्य लिखा है। उसके कृतित्व और रचनाशैली की परिचिति के लिए अर्जुन गौड़ पर लिखा गया एक गीत यहाँ उदाहरण के लिए दिया जा रहा है। गीत अर्जुन का उज्जैन के युद्ध मे लड़ते हुए वीरगति प्राप्त करने का सूचक है। कवि ने युद्ध की विवाह से समता करते हुए उसके उपकरणो और क्रियाओ का सावयवरूपक मे वर्णन किया है जो वस्तुतः बड़ा सुन्दर बन पड़ा है—

गीत

ऊजेणि मंडप जुध अवरग मांडै, कगळ केसरिया अजै किया।
तोरण थया तणा तरवारचा, थांम साबळा तणा थया ॥१॥

गौड मौड वध ठौड़ गराजू, राजू सूरति सिरी रढ़ाळ।
दुलहणि जोय वीठळ रौ दुलही, मन उलही मेळै बरमाळ ॥२॥

चतुरगी गवरगी चातुर, वर आतुर अजमेरि बर।
घूघट ढाल तणा घातिया, भाळी तीछि कटाछि भर ॥३॥

कँवर बाण जमूर अखति कढि, हाथा कियै जमदढ़ हथळेव।
फिरि फिरि अफिरि कियै सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव ॥४॥

खेत महळ वीचि रहसि वहसि खगि, तिहसि मिहसि कसि ऊससि ताव।
लोहा लाट लाल रग लाडै, घट घट घाट ऊपरै घाव ॥५॥

---

[1] बास समेळै वाघतण, लाखणोत कलियाण।
गायो श्रीगोविन्द गुण, पायो भगत प्रमाण ॥

अड़थड़ मिरड भिरड झड़ अवझड, नवड भवड़ वड़ निवड़ नड़ ।
आवट कूटि तूटि कसणावट, छूटि जड़ावटि फूटि छड़ ॥६॥

अपछर हर खेचर भूचर अंग, लग आपोपण लाग लिया ।
त्याग दिया अजमल वड त्यागी, कारण वाद मुराद किया ॥७॥

साहा वदै न चूको सावो, राखै दहु राहा बिचि टेक ।
वड जानी जसवत बीछड़ता, बीद बीदणी मिळै विसेक ॥८॥

कल्याणदास का पुत्र दयालदास हुआ, जिसने 'राणा-रासो' नामक प्रबध की रचना की । 'राणा-रासो' मे राणा राजसिह तक के मेवाड़ के नरेशो का इतिवृत्तात्मक काव्यवर्णन है । ग्रथ की भाषा बडी क्लिष्ट और ओजमयी है । कल्याणदास के वशज आजकल गाधेरी, पावसू और केदारडी आदि गाँवों मे रहते हैं ।

बाघा के चतुर्थ पुत्र गगादास और पांचवे पोखरदास के उत्तराधिकारी हाडा-वाटी के इन्द्रगढ, पीपलदा, वड़ोली आदि गाँवो मे रहते हैं । काशीदास, गगादास और पोखरदास भी कवि और विद्वान् बताए जाते हैं, किन्तु प्रयत्न करने पर भी उनकी रचना के अश उपलब्ध नही हुए हैं । इस प्रकार बाघा के पांचो वशधरो ने अपने सम्मिलित वतन खोहरी गाँव को तीर्थराज पुष्कर के समर्पित कर दिया । खोहरी ग्राम मे बाघा के निवास की स्मृति के रूप मे उसकी हवेली के खुर्रे का एक जीर्ण-शीर्ण भाग अवस्थित है । बाघावतो के खोहरी ग्राम के निवास, उनकी उदारता, वीरता आदि की ध्वनि एक प्राचीन दोहे मे इस प्रकार व्यक्त हुई है—

जुध वका खत्रवट खरा, औ है बाघ हराह ।
नग सारीसा नीपजै, वन खोहरी घराह ॥

इस प्रकार प्राप्त जानकारी के आधार पर कवि बाघा लाखनौत और उसके पाचो पुत्रो की सक्षिप्त परिचयात्मक परिचिति यहाँ देने का प्रयास किया गया है ।

कवि-परिचय

कविवश परिचय मे पहिले उल्लेख किया जा चुका है कि कविराव महेश-दास रावो की लाखनौत शाखा के कवि बाघाराव का द्वितीय पुत्र था । उसका जन्म पुष्कर के समीपस्थ खोरी (खोहरी) नाम के ग्राम मे हुआ था । जब वृद्धावस्था प्राप्त कर बाघा का देहावसान हो गया, तब महेशदास भी अपने अन्य भ्राताओ के साथ खोरी ग्राम को तीर्थराज पुष्कर के अर्पण कर राजगढ के शासक ठाकुर अर्जुन गौड़ की सेवा मे चला गया । अर्जुन गौड़ ने महेशदास की प्रतिभा और काव्य-गुणो पर मुग्ध होकर अपने ठिकाने राजगढ मे निवास के लिए एक

हवेली और जीवन-निर्वाह के लिए भूमि प्रदान कर सम्मानपूर्वक अपने वहाँ रख लिया। तब वहाँ उसने कृषि की सिंचाई के लिए एक तालाब का निर्माण करवाया और हवेली मे सुधार करवा कर अपना स्थायी निवास बनाया।[1] वह हवेली, तालाब और भूमि का अंश अद्यावधि उसके उत्तराधिकारी वशज गोवर्द्धनसिंह राव के अधिकार में है।

कवि के व्यक्तिगत जीवन मे उसके बाल्यकाल, शिक्षा, गुरु, विवाह और सन्तति आदि का परिचय अनेक प्रकार का प्रयत्न करने पर भी सुलभ नही हुआ। कवि ने अपने आश्रयदाता गौड अर्जुन और उसके पुत्र राजसिंह की वशावली मे गौडो का वश-वृत्तान्त लिख कर उनके इतिहास को तो सुरक्षित करने की दिशा में प्रयत्न किया है, परन्तु स्वय के तथा अपने कुल के विषय मे अपने ग्राम का नाम और स्वय का नाम सकेत करने के अतिरिक्त कुछ भी नही लिखा है। यही नही अपने लिखित ग्रथो के इतिहास-प्रसंगो मे उसने प्रमाणित सवत् तिथियाँ और वार आदि का प्रकाशन किया है, पर ग्रथ के निर्माण काल के सूचक सवतादि का कही भी ग्रथाश अथवा पुष्पिका मे सकेत नही दिया है। ऐसी स्थिति मे कवि का समग्र जीवन-परिचय तो क्या बल्कि काव्य-साधनाकाल भी सही रूप मे निर्धारित करना बडा कठिन है। कवि के वशज या बहीवाचक से तथा प्राप्त ख्याती और प्रकाशित-अप्रकाशित किसी भी पुस्तक मे उसके विषय मे कही कोई आधारभूत सकेत उपलब्ध नही हुआ है। कवि की कृतियो के विषय मे आज से चार वर्ष पूर्व मैंने पहली बार पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से साहित्य-ससार को अवगत करवाया था। तदनन्तर मैं कवि के परिचय और उसकी अन्य कृतियो की जानकारी के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ, किन्तु अद्यावधि कोई परिचय प्राप्त न हो सका। कवि के अध्ययन के विषय मे अन्त साक्ष्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वह सस्कृत, पिंगल और डिंगल भाषा का विद्वान् था। अरबी और फारसी के शब्दो की भी उसे अच्छी जानकारी थी। ज्योतिष, भूगोल, छंदशास्त्र और रणकौशल एव विद्या का उसने विधिपूर्वक अध्ययन किया था। भारतीय राजवशो, मुगलो, पठानों, सैयदो, उजवेगो आदि यवन जातियो के इतिहास का वह पूर्ण ज्ञाता था। आदि कवि वाल्मीकि की रामायण, वेदव्यास का महाभारत और शुकदेव, जयदेव, कृष्ण, माघ, दण्डी, चन्द्र वरदाई, कविकुलगुरु कालिदास आदि सस्कृत और भाषा-कवियो की कृतियो का उसने

[1] कवि के वशज गोवर्द्धनसिंह का लेखक के नाम पत्र।

अध्ययन किया था। अतः वह बहु-भाषाविद् और शास्त्रीय कोटि का विद्वान् माना जा सकता है ।

कवि के समय और काव्यसाधना-काल की जानकारी के लिए भी हमारे पास उसके काव्यग्रथो के नायकों, घटनाओ, तिथि-सकेतों और सकेतित प्रसगों के अतिरिक्त कोई साधन अथवा स्रोत नही है । अतः उपर्युक्त आधारों पर ही कवि का काव्य-रचना-काल स्थिर करने का प्रयत्न किया जा रहा है। प्राप्त ग्रंथों को घटनाओं के आधार पर, रचनाकाल के स्थिरीकरण के लिए निम्न प्रकार से रखा जा सकता है—

(१) राव अमरसिंघ नागौर का साका
(२) बिन्हैरासो
(३) राणा राजसिंघ का गुणरूपक
(४) डिंगल गीत
(५) राजा जयसिंघ के छप्पय
(६) गौड़ो की वंशावली
(७) रघुनाथ चरित नवरसवेलि

'राव अमरसिंघ का साका' बादशाह शाहजहाँ के शाहजादे दाराशिकोह की हवेली में लगे शाही दरबार में बख्शी सलावतखाँन को मार कर अर्जुन गौड़ आदि योद्धाओ द्वारा राव अमरसिंह के मारे जाने की सवत १७०१ की घटना पर आधारित है।[1] इस घटना के दूसरे वर्ष अमरसिह का पुत्र राव रायसिंह शाही सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने बल्ख, बदख्शा, कधार आदि के युद्ध मे भाग लिया। बल्ख का युद्ध सवत् १७०३ मे हुआ था।[2] साका में कवि ने राव रायसिह के जन्म और बाल्यकाल का ही वर्णन किया है, युद्धों का नही। अत. इससे ऐसा जान पडता है कि यह कृति सवत् १७०१ और संवत् १७०३ के मध्य की रचना है। यदि इसके बाद की होती तो कवि रायसिह के उपर्युक्त युद्धो में भाग लेकर वीरता प्रदर्शित करने का अवश्य वर्णन करता, जैसा कि डिंगल के अन्य कवियो के इसी कोटि के काव्यो में मिलता है।

बिन्हैरासो और राणा राजसिंह का रूपक सवत् १७१६ से पूर्व की रचनाएं हैं, क्योकि उसके वाद की गौडो की वशावली में कवि ने राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ के

---

[1] मारवाड़ का इतिहास, विश्वेश्वरनाथ रेउ, द्वितीय भाग, पृ ६५४।

[2] मआसिरुल् उमरा, अनु० व्रजरत्नदास बी. ए., भाग १, पृ. ७५

राज्यासन पर उसके पुत्र राजा नृसिंहदास गौड का बैठना लिखा है।[1] अनिरुद्धसिंह की मृत्यु सवत् १७१६ मे हो चुकी थी।[2] राजा जयसिंह के छप्पयों मे छत्रपति शिवा सीसोदिया को पराजित करने का उल्लेख किया है। मिर्जा राजा जयसिंह ने संवत् १७२३ मे राजा शिवा को समझा-बूझा कर शाही दरबार मे उपस्थित हो जाने के लिए सहमत कर भेजा था। इसलिए ये छप्पय संवत् १७२३ के पास की रचना ठहरते हैं।[3] डिंगल-गीतों में राजा रामसिंह कछवाहा का गीत संवत् १७४४ से १७५५ के मध्य रचा गया होगा, क्योकि उनका शासनकाल उपर्युक्त संवतो तक ही सीमित रहा है।[4] शेष गीत संवत् १७१५ तथा सवत् १७१६ के मध्य में लिखे गए होगे। कवि की अन्तिम रचना रघुनाथ-चरित-नवरस-वेलि मानी जानी चाहिए। वेलि में कवि ने नवरसो के माध्यम से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र का १२७ छदो मे वर्णन् किया है जो अपूर्ण है। यह उसके वृद्धकाल की कृति है जो कि शारीरिक असमर्थता के कारण शायद अपूर्ण रह गई है। कवि ने जब गौड़ों की वशावली लिखी, तभी उसके मन में संसार की असारता, जीवन की भूलभ्रातिया और प्रमाद-जन्य अकृत्यो आदि की चिन्ता उभर कर मस्तिष्क पर आ जमी थी। उसने वशावली मे स्पष्ट लिखा है—

करा सुकृत कीधा नहीं, कुकृत कुमाया।
क्रम तीरथ क्रमिया नहीं, अणक्रमे आया॥
राम नाम रटिया नही, यम जनम गुंमाया।
सुणिया कथा पुराण नही, नहिं वेद वंचाया॥
... ...।
गुणि अनि मानव गाइयो, यों नगुण कहाया॥ वि.रा.प.पृ २०४-२०५

कवि ने अपने विगत जीवन का सिंहावलोकन करते हुए राम की भक्ति न कर मानव-काव्य रचने के प्रति पश्चाताप व्यक्त किया है। इस प्रकार की रचना का परिपक्व अवस्था में ही लिखा जाना सभव होता है। मृत्यु का आसन्न भय भगवान् के चरण-शरण की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है। अतः वशावली के बाद कवि ने वेलि की रचना कर सुख का अनुभव किया होगा।

---

[1] बिन्हैरासो, परिशिष्ट घ, पृ. २१७
[2] मुगल दरबार, अनु० ब्रजरत्नदास, भा. १, पृ. ६४
[3] मुगल दरबार, व्रजरत्नदास, भा. १, पृ. १६२-६३
[4] मुगल दरबार, ब्रजरत्नदास, भा. १, ३४२-४४

उपर्यंकित घटना-सकेतों के आधार पर हम कवि का काव्य-सर्जनकाल सवत् १७०१ से संवत् १७५५ के मध्य स्थिर कर सकते हैं।

वैसे कवि गौड-क्षत्रियों का आश्रित और कृपापात्र था किन्तु उसके ग्रथों के आधार पर राव रार्यसिह नागौर, राणा राजसिह उदयपुर और हाडावाटी के कोटा-बूंदी के सामन्त-सरदारो से भी उसका परिचय और सम्मान पाना माना जा सकता है। अमूमन मध्यकालीन राजस्थानी कवियो की यह परम्परा रही है कि वे जिस किसी वीर पर काव्य-रचना करते, वह काव्य उसके नायक अथवा नायक के उत्तराधिकारी को सुना कर उससे पुरस्कार और प्रतिष्ठा प्राप्त करते थे। तब फिर महेशदास का भी अपने काव्य-नायको से सम्मान प्राप्त करना असभव नही माना जा सकता।

कथासार

बिन्हैरासो मे कवि ने मुगल बादशाह शाहजहां के विद्रोही पुत्र शाहजादा शुजा, मुरादबख्श और औरंगजेब के तीन युद्ध बनारस, उज्जयिनी और धौलपुर का वर्णन किया है। तीनो शाहजादो में पहले पहल शुजा ने बगावत कर युद्ध की स्थिति पैदा की थी। परिणामस्वरूप पहला युद्ध सवत् १७१४ मे बनारस के समीप शुजा और शाही सेनानायक मिर्जा राजा जयसिह कछवाहा के मध्य हुआ। उसमे शाही पक्ष की विजय हुई, परन्तु कवि ने उस युद्ध का वर्णन बाद के दोनो युद्ध उज्जयिनी और धौलपुर युद्धो के वर्णन के बाद लिखा है। यहा कवि द्वारा प्रस्तुत वर्णन-क्रम के अनुसार तीनो युद्धो का कथासार पृथक-पृथक दिया जा रहा है, जो कि इस ऐतिहासिक काव्य-ग्रथ को समझने मे सहायक सिद्ध होगा।

उज्जयिनी-युद्ध

बिन्हैरासो की कथा का आरभ कवि ने विद्या की अधिष्ठात्री भगवती वाग्देवी, अशुभ गणो तथा काव्य दोषो के विनाशक, देवाधि अग्र-वद्य गणपति और मानव-समाज मे श्रेष्ठमति-निधि परम गुरु की वन्दना से किया है। पिता और पुत्रो के उभय पक्षो मे हुए युद्ध में अनेक भूपतियो का सहार हुआ, उन वीरो के वृत्तो को रूपक-बद्ध करने मे सफलता हेतु श्रेष्ठमति और उक्ति वैचित्र्य-प्रदाता तीनो देवो से याचना की है।

परम प्रतापी बादशाह अकबर और ससार के नूर शाहशाह नूरुद्दीन जहागीर नव खण्डो में अपने तेज-प्रताप को विकीर्ण कर चले गए। उनके उस महान् सिहासन पर प्रतापी बादशाह शाहजहा आरूढ हुआ। उसने खड्ग-बल

से चारों दिशाओं को विजित कर संसार मे अपने यश का अर्जन किया। उसके दरबार में मेवाड़ नरेश राणा राजसिंह के अतिरिक्त भारत के हिन्दू और मुसलमान सभी राजा और नवाव एक पैर पर खड़े रह कर सेवा करते हैं। वह दोनों राह वालों के लिए समान रूप से पूजित है। चारो दिशाओ मे उसके पराक्रम और कीर्ति के वाद्य वजते हैं। उसके बुद्धिमान और सुयोग्य चार राजकुमार हैं, जिन्हे वय-क्रम से दाराशिकोह को उत्तर दिशा, शाहशुजा को पूर्व दिशा, औरगजेब को दक्षिण दिशा और मुरादबख्श को पश्चिम दिशा के प्रान्त सौंपे हुए हैं और वह स्वय केन्द्र मे दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान है। ज्वाजल्यमान सूर्य के समान ससार पर उसका तेज-प्रताप छाया हुआ है। नव-खण्ड और सप्त-द्वीपो मे उसके विरुद्ध शस्त्र उठा कर सामना करने का साहस किसी मे नही है।

इस प्रारम्भिक प्रस्तावना के अनन्तर कवि अपने वर्ण्य कथा-प्रसग की ओर उन्मुख हुआ है।

बादशाह शाहजहां के जीवित ही ससार मे उसकी मृत्यु का प्रवाद फैल गया कि दिल्ली का शाही सिंहासन और छत्र-चँवरादि राज्य-चिन्ह खाली हो गए है। यह सम्वाद सुन कर सारे संसार मे शोर मच गया। बादशाह के निधन की सूचना पाकर उसके तीनो शाहजादे दिल्ली पर आधिपत्य जमाने के लिए प्रयत्न-रत हुए। सब से पहिले पूर्वदेशीय प्रान्तो के राज्यपाल शाहजादा शाहशुजा ने दिल्ली की ओर कूच किया। वह यमराज तुल्य प्रचण्ड, वीर शाहजादा अपनी गज, अश्व और पदाति सेना को युद्ध-सज्जा से सज्जित कर पथ के नगरो को लूटता, दुर्गों को ध्वस्त करता और विजय-घोष करता हुआ चला। जब बादशाह शाहजहा और युवराज दाराशिकोह ने सुना कि शाहशुजा तोप, बन्दूक, तीरकमानो से सज्जित अस्सी हजार गजाश्व सेना के साथ दिल्ली की ओर तीव्रता से बढ कर आ रहा है तो उसने अपनी सल्तनत के स्तम्भ-तुल्य हिन्दू और मुस्लिम उमराव-नवाबो को आमन्त्रित किया। उनमे दुर्धर्ष वीर राठौड़, कछवाहा हाडा और गौड सभी आये। राजा जसवतसिंह, राजा जयसिंह, राव शत्रुशाल, राजा अनिरुद्धसिंह, नवाब दलेलखांन, शाहजादा सुलेमानशिकोह और राव रायसिंह जैसे बडे-बड़े राव, राजा, नवाब आकर उपस्थित हुए। बादशाह ने दिल्ली-साम्राज्य की रक्षा का दायित्व उन पर प्रकट करते हुए कहा—'पूर्वी प्रान्त के राज्यपाल शुजा ने विद्रोह कर दिया है। उसके सैनिक अभियान के कारण भूलोक मे आतकजनित भय छा गया है।" यह कह कर बादशाह ने शुजा को पराजित करने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह, शाहजादा सुलेमान

शिकोह, राव रायसिंह और राजा अनिरुद्धसिंह को जसवर्तासिंह गौड, उदयभानु राठौड, भोजराज खगारोत, भावसिंह, रणछोडदास, दलेलखान रुहेला, बहादुरखा सैयद, मीर जाफर और कासिमखान सैयद सहित विदा किये। वे वीर छत्तीसो प्रकार के युद्ध-वाद्यो की मेघ-तुल्य गर्जना करते हुए पूर्व दिशा की ओर चले।

उधर दिल्ली और पूर्व की घटनाओ की सम्वाद-सामग्री सकलित कर आगरा के गुप्तचर औरंगजेब के पास औरंगाबाद पहुचे। औरंगजेब ने दूतो द्वारा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त कर दक्षिण के अपने हितैषी गोलकुण्डा, कर्नाटक, बीजापुर आदि के प्रान्ताध्यक्षो तथा योद्धाओ को युद्ध-सामान से तैयार होकर औरगावाद आ उपस्थित होने के आदेश भेजे। तदनन्तर उस विचक्षणमति शाहजादे ने अपने विदग्ध गुप्तचरो को दिल्ली, आगरा, गुजरात और अहमदाबाद की ओर भेजा। वे साधु-सन्यासी और यति-योगियो के वेश में यत्र-तत्र समाचार सकलित करने लगे। तभी शाहजादा दाराशिकोह को सूचना मिली कि गुजरात का प्रान्तपति शाहजादा मुराद भी अपनी विशाल चतुरगिनी सजा कर दिल्ली पर अधिकार करने के लिए चल पडा है। शाहजादा दाराशिकोह ने राजा जसवर्तासिंह को बुलाया। तब वह पचहजारी मनसबदार था। उसे सप्तहजारी का पद प्रदान कर शाहजादा मुराद को रोकने के लिए मालवा की ओर विदा किया। राजा जसवर्तसिंह, अर्जुन गौड़, राव मुकन्दसिंह हाडा, वीरभद्र गौड, मोहनसिंह, जूझारसिंह, कन्हीराम, किशोरसिंह हाडा, राजा रतनसिंह राठौड, राजा रायसिंह कछवाहा, दलथम्भ झाला, राघवदेव झाला, सुजानसिंह सीसोदिया, राजा बैरीसिंह शेखावत, ठाकुर गोवर्द्धनदास कूपावत, रावत केशरीसिंह, रुक्मागद सीसोदिया, राव अमरसिंह चद्रावत, राजा अमरसिंह कछवाहा, वेलू, परशु दक्षिणी, राजा देवीसिंह, राजा सुजानसिंह बुन्देला, राजा छत्रमणि यादव, वलिराम हाडा, प्रतापसिह राठौड, सबलसिंह सीसोदिया, जखमी उजबक, इफ्तिखारखान और कासिमखां आदि अनेकानेक उमराव नवाबो को लेकर ससैन्य उज्जैन की ओर चला।

गुप्तचरो की खबरो से औरगजेब को शाहजादा मुराद के अपने आपको बादशाह घोषित करने की सूचना मिली। और यह भी पता लगा कि वह शम्श-वेग और मसूरखान आदि योद्धाओ सहित पचास हजार सेना लेकर अपने प्रान्त से उज्जैन के लिए प्रस्थान कर चुका है। उसकी वह विशाल सेना गिरिराज से प्रवाहित नदी के समान उमडती आगे बढी। सैनिको, अश्वो, गजो और बार-बरदारी के ऊटो तथा बैलो के पदाघातों से दुर्गम गिरि-घाटिया चूर्ण होकर

साफ मार्गों में बदल गए। मुराद के इस प्रयाण से औरगजेब को असीम प्रसन्नता हुई। इधर वह भी अपनी सेना सजा कर चला। मार्ग मे दोनो सेनाए सम्मिलित हुईं। शाहजादे परस्पर मिल कर आनन्दित हुए। दोनो ने एक दूसरे से छल न करने के लिए अपने बीच रहमान की शपथ ली। तदनन्तर साम्राज्य को हस्तगत करने की सैनिक योजना पर विचार हुआ। उनके इस सम्मिलित आयोजन से चतुर्दिक् कोहराम व्याप्त हो गया। वह सेना क्या थी मानो प्रालेय समुद्र धरा पर उमड़ पड़े हों, अथवा बारह मेघ दिल्ली धरा को जल-प्लावित करने को घुमड़ आये हों। वहां से ससैन्य प्रस्थान कर शाहजादों ने मेवाड के राणा राजसिंह को खासा रुक्का और उपहार भेज कर अपने पक्ष मे आ जाने के लिए प्रार्थना की। पत्र मे मेवाड नरेशों के गौरव, शौर्य और सहयोग की प्रशंसा लिखी। शाहजादों की गज, अश्व, रथ और पदाति सेना के प्रस्थान-भार से शेषनाग के सिर भाराक्रान्त होकर फटने लगे। उनके पदाघातों से उठे धूलि-समूह से आकाश छिप गया। रवि-ज्योति धूमिल हो गई। प्रालेय मेघ सदृश्य यूथबद्ध गज-घटाओ के चलने से कच्छप की पीठ कसमसाने लगी। अविचल हिमाचल चल-विचल हो गया। दिक्पाल अकुला गए। दिशाओ के बधन टूट गए। वह सेना क्या थी मानो सग्राम-सागर की ओर महागिरि ही चले आ रहे थे। उस सेना में अरब, ईराक, तुर्की आदि देशोत्पन्न उत्तम जाति के असख्य घोड़े थे। उन पर अश्व भूलें, पाखरे, लक्षाधिक मूल्य के ललाट भूषण सजे हुए थे। पैरो में घुंघरू शोभित थे। उस सेना मे मुसलमानो की विभिन्न जातियो और शाखाओ के एक लाख सैनिक, बरकदाज, तोपची और धनुर्धर योद्धा थे। वे जिरहबख्तर, जूसण, सेलार, चिलकन्ते, घूघियाँ, हाथो मे दस्ताने, जघाओ पर राग और पैरो में लोह-शृखलाओ के मोजे धारण किये हुए थे। कालकीट के समान भयानक वे योद्धा बल और आकृति मे समतुल्य थे। उनके मुख रक्तिम, नेत्र लघु, स्कन्ध उन्नत और मस्तक स्थूल थे। भाभरा-भूताकृति वे वीर अगम्य स्थानो मे भी सहज गम्य थे। वे अस्पष्ट अरबी, तुर्की और पश्तो भाषाए बोलते थे। एक-एक योद्धा के अपने भाथे मे सौ-सौ बाण भरे हुए थे। ऐसा वह भयानक सैन्यदल आसेर दुर्ग के पास आकर ठहरा। आसेर के दुर्गाध्यक्ष मानसिंह गौड़ को औरगजेब ने सन्देश भेज कर दुर्ग सुपुर्द करने का आदेश दिया। स्वामिभक्त मानसिंह ने शाहजादे की आज्ञा की उपेक्षा कर अभीतता प्रकट की। साम, दाम और भय किसी भी प्रकार जब वह लोभ मे न आया, तब औरंगजेब 'पहिले दिल्ली विजय करेंगे, फिर आसेर और उसके दुर्गपाल को समझेंगे' कह कर वहां से आगे बढ़ा।

एक सप्ताह के प्रयाण के पश्चात् शाहजादो की सेना मालव के माण्डव दुर्ग पर पहुँची। वह माण्डव हिमालय पर स्थित शिवधाम कैलाश के समान था। वहाँ का दुर्गपाल राजा शिवराम गौड साक्षात् अपराजयी शिव था। शाहजादा मुराद ने माण्डव को हस्तगत करने के लिए राजा शिवराम पर भय का दण्ड फेका। अपनी सेना मे उच्चपद देने का वचन दिया। परन्तु उस वीर पर तनिक भी प्रभाव नही हुआ। तब राजा पर औरगजेब कोपान्वित हुआ। उसने गर्वोवित-पूर्वक अगले प्रातः माण्डव को समूल नष्ट कर डालने का प्रण किया। दूसरे दिन शाहजादे सुल्तान मुहमद और निजावतिखान की अधीनता मे सेना ने माडव पर आक्रमण किया। राजा शिवराम और उसके अनुज पोखरदास ने सामना किया। तोपो, बन्दूको और बाणो का युद्ध हुआ। गढ नही टूटा। शिवराम की दृढ़ता को देख कर शाहजादो ने उज्जैन के पथ पर आगे प्रयाण किया।

इधर राजा जसवतसिंह के नेतृत्व मे शाही सेना ने खाचरोद पहुँच कर अपना पडाव डाला। उस सेना मे क्षत्रियो के छत्तीस राजकुलो और शाखा-प्रशाखाओ के योद्धा थे। उधर से औरगजेब और मुराद की सेनाए भी खाचरोद की ओर बढी। दोनो सेनाओ के मध्य दस कोस की दूरी शेष रह गई थी। युद्ध का अवसर प्राप्त कर वीर वैताल, भूत, प्रेत, पिशाच, चण्डियाँ, शिव, रणदेवी, भैरव, नारद तथा गृद्ध, शृगाल आदि रणक्षेत्र मे आकाश-पथ से उतरने लगे। राजा जसवतसिंह ने नरायनेचौर नाले के पास अपना सैनिक शिविर स्थापित किया।

वैशाख मास कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि गुरुवार सवत् १७१५ का दिन था। सूर्य श्रवण नक्षत्र पर था। वालवकरण नामक योग था। उस योग मे दोनो पक्षो की सेनाओ ने अपने-अपने मोरचे तैयार किए। गज, अश्व और पदाति सेनाएँ पक्तिबद्ध हुई। इस प्रकार तैयारी मे अष्टमी का वह दिन व्यतीत हुआ। दिवावसान के साथ औरगजेब ने अपना भृत्य राजा जसवतसिंह की सेवा मे भेज कर सेना का मार्ग न रोकने का आग्रह किया। राजा ने यह स्वीकार नहीं किया। तब मुराद ने अपना दूत भेज कर कहलाया कि—"पिता और पुत्रो की भेट को कोई कैसे रोक सकता है ?" तब राजा ने दूत के साथ पाच हजार सेना लेकर शाहजादो को आगे जाने की स्वीकृति-सूचना भेजी। इस समाचार से दोनो शाहजादे क्रुद्ध हो उठे। इतने मे अर्द्ध रात्रि बीत चुकी थी। युद्ध की नौबतें घोष करने लगी। रवि उदय होते ही शाही सेना पर शाहजादो ने गोला-बारी के साथ युद्धारम्भ की घोषणा की। सवत् १७१५ का वर्ष था। वैशाख वदि नवमी शुक्रवार धनिष्ठ नक्षत्र, ब्रह्मयोग और तैतिल नाम का करण था। उस शुभ वेला में शाहजादो की सेना कवचादि से सज कर तैयार हुई। मुसलमान योद्धा

अपने इष्ट का स्मरण करने लगे। सुर, असुर और नर-समाज विस्मित हुआ। उधर अष्टमी की मध्यरात्रि व्यतीत होते ही हिन्दू योद्धा जगे। वे दैनिक कर्मों से निवृत्त हो कर अपने-अपने आराध्यों का स्मरण करने लगे। अप्सराएँ योद्धाओ को पति रूप मे प्राप्त करने के लिए शृङ्गार करने लगी।

उसी वेला मे वीरश्रेष्ठ अर्जुन गौड़ उठा। उसने तेल-मर्दन कर स्नान किया। महादेव का अर्चन कर एकादश मृतक कर्म किये। भगवान् भास्कर को अर्घ्य दिया। पूजा के स्वर्ण-पात्र विप्रों को दान किये। फौज-बख्शी को बुलाया और सिलहखाने से अस्त्र-शस्त्र, जिरहवख्तर निकला कर योद्धाओं को प्रदान किये। इस प्रकार ससार मे अपनी रण-ख्याति अमर रखने के लिए वह वीर सन्नद्ध हुआ। उसका सिंह-तुल्य पराक्रमी काका वीरभद्र कवच धारण कर तैयार हुआ। युद्ध रूपी अखाड़े का सिंह अगद के समान समर-धीर वीरश्रेष्ठ मुरारिदास खैराड़ा तैयार हुआ। वह सदा उधारे युद्ध मोल लेने की प्रसिद्धि प्राप्त था। उसके साथ रावत पद के विरुद को धारण करने वाला पृथ्वीराज और उसका अनुज आशकर्ण केशरिया पट धारण कर तैयार हुआ। प्रतापसिंह के पुत्र राजसिंह ने भी केशरिया बाना पहिन कर अप्सराओ के वरण की कामना की। केहलण का वंशधर वीरश्रेष्ठ मानसिंह अर्जुन की सेना की अग्रिम पक्ति में सिर कट पड़ने पर भी तलवार चलाते रहने को प्रतिज्ञा ले तत्पर हुआ। क्षात्र-जोश से आपूरित जसराज का पुत्र साईदास भाखरोत रणभूमि मे अपने प्राणो की आहुति देने के लिए वचन-बद्ध हुआ। गजयूथ पर सिंह की झपट के समान, अरि-समूह पर धावा मारने के लिए भाखरोत कुशलसिंह सज्जित हुआ। सुन्दरदास का पुत्र इन्द्रभानु और युद्ध-विद्या का पडित राघवदास किशनदासोत अपने नाम को प्रसिद्ध करने की कामना करने लगे। गौडावाटी प्रदेश के मारोठ संस्थान का अधिपति नरहरिदास दोनों शाहजादों की सेना से लोहा बजाने के लिए तैयार हुआ। दीपचन्द का उत्तराधिकारी अपराजयी वीर जगभानु कटार, कृपाण और कमान सम्हाल कर उद्यत हुआ। आमेर के कछवाहा कुल को गौरवान्वित करने वाला कर्मसिंह का पुत्र किशोरसिंह अपने घट को सती के नारियल की भांति उत्सर्ग करने के लिए सज्जित हुआ। उनके साथ ही मुरारिदास खैराड़ा के नव प्रसिद्ध वीर जो नवों सिद्धों के समान युद्ध-सिद्ध थे, सन्नाह-सन्नद्ध हुए। खीचीवाड़े का वैरीशाल खीची, जहाजपुर का मोहनदास चंद्रावत, जयरामदास मोहनदासोत, राघवदास खैराड़ा, जोधसिंह, खेतसिंह, मनराम पंवार, भीमसिंह ताजखानोत और चूडा का वंशज कुभकर्ण खवास, ये नवों ही वीर अपने कुल को कीर्त्तिमान् करने के लिए तैयार हुए।

प्रभात का रवि उदय हुआ। गौडों की सेना के अध्यक्ष अर्जुन ने अपना अश्व मागा। सईस उसे युद्ध साज से सजा कर लाया। वह गजराज के सदृश्य विशाल गात्र वाला था। प्रभात-कालीन सूर्य-सा उसका रक्तिम वर्ण था। उच्चैश्रवा के प्रतिरूप, उस अश्वराज पर अर्जुन आरूढ हुआ। अपने स्वामी के अश्वारोहण पर उसके सामन्त वीरभद्र, श्यामदास दशौन्धी, मुरारिदास खैराडा, पृथ्वीराज आदि सभी वीर सवार होकर अपने-अपने मोरचो पर आए।

अर्जुन ने राव मुकर्दसिह हाडा को दूत द्वारा कहलवाया—'शाहजादे सिर पर आ लगे हैं। राजा जसवंतसिह अभी तक तैयार नही हुआ। लगता है मारवाड नरेश को कायरता ने आ घेरा है। उसने पहिले कभी बड़े सग्राम मे भाग भी नही लिया है। जो अनेक युद्धो मे लड़ चुके हैं, वे ही इस बार भी लड़ेंगे।' दूत-मुख से अर्जुन का सन्देश सुन कर हाड़े वीर कवच, दस्ताने और टोप धारण कर तैयार हुए। तदनन्तर उन वीरो ने विद्युत तुल्य तीक्ष्ण तलवारें और कटारे सम्हाली। अपने अगों को मुक्तामाल, कण्ठाभूषण और बहुमूल्य जवाहिरातो से सजाया। अर्जुन के सन्देश से अपने स्वजातीय वीरो और सुभट सामन्तो को अवगत किया। तत्पश्चात् वे वीर युद्ध-नक्कारों के रण घोष के साथ अश्वों पर सवार हुए। उनके इस प्रकार अश्वो पर चढने पर विपक्षी योद्धाओ में हलचल मच गई। अश्वो की पीठ पर वजन पड़ कर उनके पाखर कवचो की कडिया टूटने लगी। गजो की पीठ पर झूलें लहराने लगी। निशान, ध्वज और पीत-पताकाएँ आकाश मे फहराने लगी। उनके सवारी करते ही सीसोदिया परमार, राठौड, कछवाहे, गौड़, भाटी और चालुक्य आदि अनेक जातियो के वीर अपने-अपने घोड़ों पर चढ कर चले। चौहानो की उस चतुरंगिनी सेना के प्रयाण से समस्त भूलोक भयाक्रान्त हो गया।

गौडो और हाडों के युद्ध-भूमि मे प्रस्थान करने पर राजा जसवन्तसिह ने भी अपने सुभटो को रण-मन्त्रणा के लिए बुलाया। तब राठौड वीर विट्ठलदास चांपावत, गोवर्द्धन कूपावत और जोधा, बीका, उदावत, जैतावत, मेड़तिया, सिंघल आदि राठौड़वंशीय योद्धा उपस्थित हुए। तब विट्ठलदास ने कहा—'महाराजा, सुनिए! जैसा जीना वैसा ही मरना। युद्ध का दुर्लभ अवसर सुलभ हुआ है। शीघ्र ही तैयार हो जाइए। शत्रुओ के सिर तोड़ने हैं। सिलह कीजिए और सेना को पक्तियो में—हरावल, चन्दावल, गोल, जंघाल, तरगाल और बरगाल में विभाजित कीजिए।'

तदनन्तर राजा जसवन्तसिह सवार हुए। अपने जीवन को क्षणभगुर समझने वाला राजा रतनसिंह अश्वारूढ़ हुआ। झाला वीर दलथभ खड्ग सम्हाल

कर चला। शत्रुओं पर वज्रघाती प्रहार करने वाला उसका अनुज राघवदेव झाला सवार हुआ। चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा में कपाट तुल्य दृढ वीर केशरसिंह और रुक्मागद अश्वों पर चढ कर आगे बढे। रण मे मर कर रविमण्डल का भेदन करने वाला उत्साही वीर सुजानसिंह सीसोदिया चला। इफ्तियार खांन सैयद सन्नाह-सज्जित होकर रणाभिमुख हुआ और उनके प्रस्थान करते ही राजा भीम का पुत्र राजा रायसिंह सीसोदिया, कछवाहा वीर दोनों अमरसिंह, राजा बैरीसिंह शेखावत आदि अनेक सुभट रणस्थली में अपने-अपने मोरचो की ओर बढ़े।

सेना के प्रयाण से धरा कांप उठी। चारों दिशाएं भयाक्रान्त हो उठी। हाथियों पर कसे हुए रण-वाद्य गडगड़ाने लगे। ध्रीह-ध्रीह के घोष मे धूंसे बजने लगे। करताल, भैरी और काहलों ने भयानक नाद किया। तुरही और रणतूर त्रह-त्रह की आवाज में गूजने लगे। बरघू और शहनाइयां बजी। झांझे झिगुर के समान झणकार करने लगीं। रणवाद्यो की प्रतिध्वनि से गिरि-मालाओ मे गर्जना फैल गई। गजगाहो से ढके गजराजो की पंक्तियां आगे बढी। तोपखाने के प्रधान कासिमखान ने प्रस्थान किया। गजनालें, शुतर-नालें, गो नालें और सीसा बारूद से लदे हुए शुतरों की पंक्तिया चली। राजा जसवन्तसिंह सेना के केन्द्र मे स्थिर हुए। हरावल का भार राजा रतन, गोवर्द्धन राठोड़, रावत दयालदास झाला, राघवदास झाला, रावत केशरीसिंह शक्तावत, राजा देवीसिंह, राजा सुजानसिंह, सैयद इफ्तियार खान आदि हिन्दू यवन वीरों ने ग्रहण किया। सेना के वाम पार्श्व मे राजा रायसिह, सुल्तान का पुत्र सबलसिंह व फतहसिह नियुक्त हुए। दाएँ भाग का नेतृत्व राजा बैरीसिंह, दोनो अमरसिंह, खेलू, मालू और राजा छत्रमणि यादव ने सम्हाला।

उधर दोनो शाहजादो के वीर सैनिक खुदा की निवाजश कर अश्वो पर सवार हुए। सेना की अग्रिम पक्ति में निजामत खांन, भगवन्तसिह हाडा, केशरीसिह राठोड, सफशिकन खाँ, बहादुरखां, अल्लाहयार खां, मसूर खाँ, शेख-मीरक आदि चालीस हजार योद्धाओं ने प्रस्थान किया। उनकी चंदावल, बरंगाल और तरंगाल भागो मे दो दो हजार सुभटो को स्थिर कर तोपखाने को व्यवस्थित किया। इकसठ हजार सेना पृष्ठ भाग मे, बीस हजार वाए और उन्नीस हजार दाहिने पक्ष मे जमा कर शाहजादो ने रणभूमि मे प्रवेश किया।

उभय सेनाए एक दूसरे के अभिमुख हुईं। वीर रस के सिंधव बजने प्रारभ हुए। हिन्दू वीरो ने शिव और राम के नामों का उच्चारण किया। यवनो ने अल्लाह-अल्लाह का स्मरण किया। तोपें गोले बरसाने लगी। रवि का प्रकाश

धूमिल हो गया। पलीतों की आग से गजाश्वो की पाखरें जलने लगी। आकाश-पथ में उड़ते पक्षी भस्म होकर भूमि पर गिरने लगे। तोपो के भयानक रव से पृथ्वी आकाश मे मेघ का-सा गर्जन व्याप्त हो उठा। हाथियो की अँधेरिया खुली। पैर लगरों से मुक्त हुए। गृद्ध-गणो से पृथ्वी और आकाश ढंक गया। गोलो और तीरो की भयकर झडी लग गई। रवि-मण्डल से च्युत नक्षत्रो की भाति गोले गिरने लगे। उभयपक्षीय योद्धाओ के वक्ष भाग को चीर कर बाण पीठ के पार लगने लगे। भालो की पैनी नोकें आर-पार पहुँचती थी। बाँध के फव्वारो के समान श्रोणित की धाराएं बहती थी। यवन रोजा पर्व के दिन की क्रीडा के समान लोह-क्रीडा करने लगे। ढालें चटकती थी। योद्धागण घावों से आपूरित यत्र-तत्र प्रहार करते थे। भालो की नोको से गज-शुण्ड छिन्न-विच्छिन्न हो गए थे। कवचों की कडिया टूट कर योद्धाओ के तन क्षतिग्रस्त हो गए। कटार, गूर्ज, परशु और गुप्तियो की चोटो से अश्व, गज और योद्धा भू पर लोटते थे। चुगो की चपेट खाकर मदमस्त हस्ति तक मदहीन हो जाते थे। तलवारो की हूल और गदाओ के प्रहार चलते थे। महाक्षेत्र उज्जयिनी की भूमि मे नारद, भैरव और वैतालो ने नृत्य किया। उस समय सबसे पूर्व पांच सौ राठौड़ योद्धा धराशायी हुए। तीन सौ भाटी वीरगति प्राप्त हुए। राजा जसवन्तसिंह आगे बढा। दोनों शाहजादों ने हल्ला कर सामना किया मानो प्रालेय समुद्र बढ़ चला हो।

गजो से गज भिड़ गए। मस्तक से छिन्न उनकी दंतावलियां अलग जा गिरती थी। आपस की टक्कर से एक भाग उठता, दूसरा उसका पीछा करता हुआ पांव रोप कर गिरि के समान रुप जाता। उनमे कतिपय अशुण्ड कटते ही भयकर चिग्घाड़ करते थे। महावत और ध्वजाएं रणभूमि पर पड़ी थी। तोपो के गोलो की अजस्र मार से कितने ही मद-मस्त भद्रजाति गज मदहीन हो गए। योद्धाओ के एक के बाद एक शस्त्र टूट कर गिर गए थे। पृथ्वी धूम्राच्छन्न हो गई थी। रणवाद्यो के तुमुल नाद से कुछ भी सुनाई नही पड़ता था मानो देव-मदिरो की झालरो का रव हो रहा हो।

योद्धाओ के हाथ और पैर सधि-स्थानो से अलग हुए पड़े थे। रुधिर के पनाले बहते थे। रणस्थल मे मुण्ड नृत्य करते थे। रक्त-पात्र भरे योगिनियां क्रीडा-रत थी। कतिपय सुभट कटि-छिन्न पडे थे। उनके कलेजे, वृक्क और आंतडियां बिखरी पडी थी। फेफडे, मज्जा और चर्बी के ढेर पड़े थे। उन पर गृध्द-समूह झपट मारते और उड़ते-बैठते थे। कितने ही योद्धा क्षताग घूमते थे। कइयो के मस्तको के अर्द्ध टुकड़े फड़-फड़ की ध्वनि करते थे। उनकी खोपड़ियो

की मज्जा ढक्कन-हीन दधि के पात्र समान दीखती थी। कतिपय घायल वक्ष-स्थल वीर सिंह की भाति निर्भीक आगे बढने की धुन में थे। उनकी छातियां राजप्रासाद की खिडकियो की भांति सहस्र-छिद्र हो गई थी। वे शस्त्र-प्रहारों से भूमि पर गिरते और पुनः उठ कर शस्त्र सम्हाल कर गज-सेनाओ पर वार करते। कवचो और अश्वो की लाशों के ढेर-लगे पड़े थे। कई वीरों के पैर कट गए थे। कइयो की जघाऐं खण्ड-खण्ड बिखरी पड़ी थी। अब युद्ध-परिणाम को देख राठौड़ वीर का साहस हिल गया था। उसका धैर्य साथ छोड़ चुका था।

तदनन्तर कवि ने युद्ध से पलायन करने वाले योद्धाओ मे प्रमुख राजा जसवतसिह राठौड़, राजा रायसिह, राव रायसिह चद्रावत, और राजा बैरीसिंह कछवाहा आदि सभी भागने वालो का नामोल्लेख किया है। युद्ध मे वीरगति प्राप्त करने वाले वीरो में अर्जुन गौड, वीरभद्र गौड, मुरारिदास खैराडा, राजा रतनसिह, रावत दयालदास, सीसोदिया सुजानसिह, रावत केशरीसिह, रुक्मांगद, राघवदेव, फतहसिह, गोवर्द्धन, विट्ठलदास, इफ्तिखार खां, राव मुकंदसिंह, उसके तीनों भाइयों और पृथ्वीराज, पोखरदास, राजसिह, मानसिह आदि का नाम-निर्देश किया है।

अब उज्जयिनी मे विजय प्राप्त कर दोनों शाहजादो ने आगरा की ओर कूच किया। शाहजहा और दाराशिकोह को आगरा-दिल्ली के उनके प्रस्थान का सम्वाद मिला।

कवि ने इस सूचना के साथ उज्जयिनी खण्ड के वर्णन को पर्यवसित किया है।

धौलपुर-युद्ध

उज्जयिनी में शाही सेना की पराजय का समाचार आगरा पहुँचा। बादशाह ने पत्र खोल कर पढाया। युद्ध से पलायन करने वाले और काम आने वाले वीरो की शाहजहा ने जानकारी प्राप्त की। बादशाह को निश्चय हो गया कि दाराशिकोह के साथ धोखा होने वाला है। तब बादशाही के अन्य हितैषी योद्धाओ को बुलवाने का आयोजन हुआ। राव शत्रुशाल, रुस्तमखाँ और राजा शिवराम जैसे परम वीरों को फरमान भेजे गए। शाहजादा दारा स्वयं युद्धार्थ तत्पर हुआ।

बूदी के राजसिहासन को शोभित करने वाले राव शत्रुशाल चहुवान को लेने अहदो को भेजा। छत्तीस क्षात्रकुलो मे शिरोमणि उस राव ने स्वामि-भक्त सेवक की भांति एकनिष्ठ भाव से शाही फरमान ससम्मान ग्रहण किया और तत्काल आगरे के लिए सदल-बल चल पड़ा। उसके प्रयाण की सूचना से

दक्षिण (शाहजादो की सेना) में हलचल मच गई। वह श्याम-वर्ण के गज-समूह को तैयार कर चला, जो मानो साक्षात् यमराज के पुत्र ही हों। उनके प्रस्थान से जल-स्थानो पर स्थल और स्थल-स्थानो मे भूमि उभरने लगी। युद्ध मे जूझने का विरुद धारण कर वह बूदी नरेश राव शत्रुशाल आगरा पहुचा। उसने शाहजहाँ के चरण-स्पर्श कर अपनी स्वामिभक्ति प्रकट की। बाहशाह ने राव को गज, अश्व, तेग, कटार, झिलम-टोप और रत्नाभूषण भेट किए। शत्रुओं रूपी तारो के लिए वह चन्द्र तुल्य था। लोभी गजराजो के लिए अंकुश माना जाता था। बलाबध के बादशाह के नाम से सर्वत्र उसकी प्रसिद्धि थी। उसने बीजापुर के शाह को पराजित किया था। गोलकुन्डा के पति से स्वर्ण, जवाहिरात लेकर उसका मान खर्वित किया था। उसने दौलताबाद के सुदृढ दुर्ग को क्षण मात्र मे जीत लिया था। नागपुर, बगलाना, टोडा, बीदर और तिलगाना पर अपनी विजय-पताका फहराई थी। उसने गुड़ी की भांति अनेक गढो को आकाश मे उडा दिये थे। खीचियो के प्रदेश को पराजित कर शरणागत बनाया। दक्षिण और उत्तर दिशा के कजिलबाशो को शाही अधीनता के लिए बाध्य किए। ऐसी अपार कीर्त्तिगाथा वाला राव शत्रुशाल बादशाह से भेंट कर अपने आगरा स्थित आवास पर आया।

सध्या का समय था। राव अपनी सभा जोडे बैठा था। उसमे राजकुमार भारतसिह, महाराज मोहकमसिह, गुमानसिह, जोरावरसिह, नाहरसिह, जगतसिह गौड, शिवराम खैराडा आदि योद्धा उपस्थित थे। वे सभी दिल्लोपति की सहायता के लिए कटिबद्ध थे।

उधर बादशाह ने रुस्तमखांन फिरोजजग बहादुर को काबुल मे पत्र भेजा। उसमें उज्जयिनी मे राजा जसवतसिह के भागने और औरगजेब के जीतने का समाचार था। बादशाह ने लिखा—'अर्जुन गौड और राव मुकन्दसिह आदि माधोसिहोत हाडे रण मे मारे गये। औरगजेब और मुराद की विजय हुई। अब उन्होने आगरा पर अधिकार करने के लिए प्रस्थान किया है।' तब वह वीर अपनी चतुरंगिनी सेना ले काबुल से चला। उसने ढाल और सिलह धारण कर रक्खे थे। वह ऐसा प्रचण्ड वीर था जो पचास सेर का भाला, बारह सेर की ढाल, एक मन की सिलह, सात सेर की शमशीर, तीन सेर की कटार, दश सेर का शिरस्त्राण, आधे मन की सन्नाह और दश सेर के जघाओ के कवच धारण किए रहता था, फिर भी उसके लिए वह भार कुसम-कली के तुल्य था। अपने विशाल शरीर के अनुरूप ही वह भोजन करता था। ऐसा वह वीर बादशाह की मदद के लिए आगरा पहुच कर शाहशाह से मिला। तब उसके साथ मदोन्मत्त पच्चीस गजराज, पाच

सहस्र घोड़े, और अपने हाथो मे नगी तलवारें लिए असंख्य सैनिक थे। एक सहस्र पदाति तो सदा उसकी पेशवाई मे चलते थे। उसी दिन गौडो का पति राजा शिवराम अपने बधु पोखरदास सहित आगरा पहुँच कर दाराशिकोह के पास उपस्थित हुआ।

युद्ध में रावत भीमसिह को मारने वाला राजा रामसिह राठौड़ आगरा पहुचा। वह युद्ध मे शत्रुओ पर चूक करने वालो मे अचूक था। उसने अनेक युद्धों में प्रचण्ड वीरो का सहार किया था। वह ईडर के दुर्गम किले को विजित कर अपनी कीर्त्ति का प्रसारण कर चुका था। ससार मे अभ्यागतो को सदैव अन्नादि से तृप्त करने वाला वह वीर रामसिह दोनो राहों वालो में प्रशसा प्राप्त था।

उज्जयिनी में राजा जसवतसिह के पलायन करने की बात सुन कर राजा भारमल का पुत्र राजा रूपसिह राठौड दिल्ली की शाहंशाही को सुरक्षित रखने के लिए आगरे आया। वह मरुधरा के नर समाज का रूप था। आमखास में पर्वत की भांति अडिग, शत्रुओं के लिए सिह-तुल्य और शस्त्र-सचालन मे महावीर हनुमान के समान बलिष्ठ भुज था।

तदनन्तर अनम्र वीरों को नत सिर करने वाला राजा भीमसिह गौड आया। वह महावीर पांडव भीम के समान गजेन्द्र सेना को चक्राकार घुमा कर आकाश मे फेंकने में सबल था। युद्धस्थल में अंगद के समान स्थिर चरण था और धर्मराज युधिष्ठिर-सा सत्यभाषी था। हठ मे साक्षात् दुर्योधन था। वह अनेक विद्याओं का तत्वज्ञाता और शरणागतों का ससम्मान रक्षक था।

इस प्रकार अनेक राजा अपनी राजधानियो से प्रस्थान कर आगरा में सम्मिलित हुए। उल्लिखित वीरों के अतिरिक्त केशरीसिह राठौड, नाहरखांन सैयद, अलियारखान, रहमतुला, शत्रुशाल (बूदी राव से अन्य), महासिह, नरपाल, रणछोडदास राठौड़, सुजानसिह, राजकुमार रामसिह, कीर्त्तिसिह कछवाहा, कुशलसिह, कनकसिह, दाउदखां और नरपाल भाखरोत आदि वीरो को बादशाह ने शाहजादा दाराशिकोह के सेनापतित्व मे विदा किया।

सेना का प्रस्थान हुआ। घनघोर ध्वनि करते हुए अम्बागल वजने लगे। उनकी ध्वनि से शेषनाग के शीश पर स्थित धरा और उत्तुग आकाश गूज उठे। हाथियों के हलको ने प्रस्थान किया। उनकी पीठ पर ढालें और नेजे-निशान-हिलते-लुढकते थे। वीरघटों की आवाजें हुईं। पाखरो और श्रीभूषणो की घम-घम ध्वनि होने लगी। उन गजो में कइयो के वेड़ियो पर वेड़ियाँ जड़ी गई थीं।

अत्यधिक रोसोले उन हाथियो के पैर लगरो से बाँध कर कठिनता से वश में रखे जाते थे । उन पर चँवर ढुलते और उनके कानो पर छोटी-छोटी पताकाएँ फहराती थीं, जो ऐसी प्रतीत होती थी मानो विन्ध्यगिरि अथवा श्यामल पर्वतो से गगा बह रही हो। अश्व पाखरो की असीम झणकारें होती थी । बेलाल जाति के वे अश्व चाल-विशेष से चलते थे। उन पर सवार योद्धाओ के भाले और उनके धातु के बध अग्नि की भाँति चमकते थे। उन पर नीले-पीले, और हरे आदि कई रगो के इन्द्र-धनुष के समान रगो वाले ध्वज फहराते थे। उनमें अपने-अपने आराध्यो के चिन्ह अंकित थे। अपार बाणो के समूह उनकी पीठों पर लदे हुए थे, जो मानो चलते हुए श्मशान ही हो। इस प्रकार धौलपुर-स्थान पर युद्ध लडने के लिए उन्होने चम्बल के तट पर आकर अपने पड़ाव डाले। उस सेना मे एक लाख सैनिक और नवहजार गज थे। प्रातःकाल होते ही युद्ध प्रारम्भ करने के लिए उन वीरो ने प्रारम्भिक तैयारी की। घोड़े पाखर और वीर कवच धारण कर सन्नद्ध हुए। तदुपरान्त राव शत्रुशाल, रुस्तमखांन और राजा शिवराम गौड युद्धार्थ तैयार हुए। उनके साथ सूर्य, चन्द्र, अग्नि और ऋषि सभी वंशो तथा कुलों के वीर अश्वों पर सवार हुए।

वाजित्रो का वीर नाद हुआ। उनकी ध्वनि सुन कर दोनो सुल्तानों की सेना तत्पर हुई। मदमस्त-गजेन्द्रो ने गर्जना की। कायरों के मुख की कान्ति मलीन हुई। रज-राशि से रवि प्रतिबिम्ब धुंधला हो गया। वीरो का वरण करने के लिए आकाश मे अप्सराओ के समूह आ डटे। पाखरो के बजने की ध्वनि, कवचों की झनझनाहट और अश्वो की हिनहिनाहटो से चतुर्दिक् कोलाहल फैल गया। दोनो पक्षो से क्रमवार योद्धा अश्वारूढ हुए।

सवत् १७१५ जेष्ठ शुक्ला अष्टमी शनिवार के उस दिन दोनो सेनाओ के महावीरो ने युद्ध प्रारभ किया। दोनो ओर से तोपो के गोलों के प्रहार हुए। तदनन्तर धनुष, तलवार, कटारिया और गदाओ का युद्ध हुआ। उस विकट युद्ध मे प्रथम वीर रुस्तमखान रण-भूमि पर गिरा तब दाराशिकोह ने सैयद नाहरखान को उसका स्थान ग्रहण करने के लिए उत्साहित किया। तदनन्तर केशरीसिंह, नरहरिदास और पोखरदास रण-खेत रहे। शाहजादा दाराशिकोह ने युद्धभार नाहरखान पर डाल कर आगरा का मार्ग लिया। शाहजादा के भागने पर शाही सेना मे हलचल मच उठी। तब अपने अश्व को चपलता से बढा कर राव शत्रुशाल ने मोरचे को सम्हाला। उसने अपने सामन्तो को प्रोत्साहित कर शाहजादा मुराद को मुकाबिले के लिए ललकारा। राव के साथ राजा शिव-राम, भीम, रामसिंह और राजा रूपसिंह ने भी अपने घोड़ो को आगे बढ़ाया।

उस आक्रमण में राजकुमार भारतसिंह, मोहकमसिंह, गुमानसिंह, जूझारसिंह, जोरावरसिंह हाडा और शिवराम चालुक्य वीरगति को प्राप्त हुए। राजा रामसिंह राठौड, राव शत्रुशाल और राजा शिवराम गौड भी तदुपरान्त असिधारा मे अन्तर्लीन हो गए। इस प्रकार धौलपुर का युद्ध समाप्त हुआ।

पूर्व (वाराणसी) का युद्ध

कवि ने पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध खण्ड वर्णन मे प्रारम्भ मे, उज्जयिनी-युद्ध मे वर्णित बादशाह अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ तथा उसके चारो पुत्रो का वर्णन दोहराया है। तदनन्तर शाहजादा शाहशुजा के विद्रोह को विज्ञप्त कर उसे पददलित करने हेतु शाहजादा सुलेमानशिकोह, मिर्जा राजा जयसिह कछवाहा, राव रायसिह राठौड़ और राजा अनिरुद्धसिह गौड़ को ससैन्य भेजने का उल्लेख किया गया है।

शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपनी सेना को युद्ध-सज्जा से सज्जित कर पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान किया। सेना के प्रयाण-समय छत्तीसों प्रकार के वाद्य इस प्रकार व्यजित हुए जिस प्रकार भाद्रपद मे घनघटा ने गर्जन किया हो। उस सेना मे दिल्ली-साम्राज्य की रक्षा के लिए सतत तत्पर रहने वाला राजा जयसिह कछवाहा अश्वारूढ होकर चला। राजाओ मे श्रेष्ठ राजा माना जाने वाला राव रायसिह राठौड सवार होकर चला। वह रीझ के समय गज-राजो का दानदाता और खीझने पर गज-समूह को चक्राकृति घुमाकर फेंकने में सबल था। तदनुपरान्त वनराज तुल्य पराक्रमी सैनिक-समाज के स्वामि राजा अनिरुद्धसिह गौड ने अश्वारोहण कर प्रस्थान किया। उसका भाई जसवन्तसिह गौड़ जो सदा युद्ध मे अविचल रहने मे सुमेरुगिरि के समान माना जाता था, सवार हुआ। वह, राजा अनिरुद्धसिह का जैसा भाई होना चाहिए, वैसे ही उच्च गुणो से सम्पन्न था। युद्ध वेला मे द्विगुणित जोश के साथ रिपु-समूह का सहार करने वाला मारुराव उदयभानु सवार हुआ। युद्ध मे लक्षाधिक विपक्षी सेना को ललकार कर मारने वाला भोजराज खगारोत अपने वीर साथियो सहित सवार होकर चला। अनेक प्रकार की युद्ध प्रशस्तियो का प्राप्त-कर्त्ता वीर भावसिह अपने अनुज रणछोडदास सहित सवार हो कर चला। रुहेला वीरो का प्रमुख, वीर दलेलखान अपनी सेना को लेकर आगे वढा। गज-मस्तको पर असि-सघात करने मे निपुण सैयद बहादुरखान अश्व पर आरूढ हो रणाभिमुख हुआ। निर्भीत वीर मीरजाफर सवार हुआ। सैयद कासिमखान ने कवचादि युद्ध-सज्जा से सज कर प्रस्थान किया। उन वीरो के साथ छोटे-वडे उमराव-योद्धाओ ने घुड सवार हो

कर अपने शूरमां सरदारों का अनुगमन करते हुए प्रस्थान किया। इस प्रकार योद्धाओं ने आगरा से प्रस्थान कर यमुना को पार किया। शाहशुजा को दण्ड देने के लिए उद्यत वह सेना अनवरत कूच करती हुई बनारस के समीप गगा के पास पहुची। वहाँ विश्राम कर वीरो ने गगा स्नान किया।

उधर दोनों ओर के गूढचर गुप्त सूचनाएँ सकलित करने मे सक्रियता बरतने लगे। वहाँ जहाँ-तहाँ से सम्वाद प्राप्त कर अपने-अपने सेना-नायको को उभयपक्ष की सैनिक गति-विधियो से अवगत करने लगे। तब शाहजादा सुलेमानशिकोह को अनुचरो से सम्वाद मिला कि शाहजादा शुजा सोन नदी के पार उतर कर सहसराव तक आ पहुँचा है। उसकी सेना के हरावल मे मुहम्मदहया, जामबेग और राजसिंह हाड़ा जैसे बडे योद्धा नियुक्त है। तब सुलेमानशिकोह ने भी अपनी सेना को गगा तट पर बनारस मे युद्धार्थ सज्जित की।

उधर सहसराव से शाहशुजा ने आगे प्रस्थान किया। वह सेना क्या थी मानो सातो समुद्र ही उद्वेलित होकर पर्वतो को डुबा देने के लिए उद्यत हुए हो। उस विशाल वाहिनी के प्रयाण से मार्ग के सर-सरोवरों का पेय जल सूखकर समाप्त हो गया। काले गजराजो की वह सेना, मार्ग के नगरो को लूटती, उपहत करती दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए बढी आ रही थी, मानो मेघो की घटा बरसने के लिए उमड कर बढ चली हो। इस प्रकार दोनो पक्षो की वीर सेनाएँ गगा के दोनो दुकूलो पर आमने-सामने आकर डट गईं। तब शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपने सेना-नायको को युद्ध-मत्रणा के लिए आमन्त्रित किए। राजा जयसिंह, राजा अनिरुद्धसिंह और राव रायसिंह आए। उन वीरो ने शाहजादा को प्रत्यय दिलाते हुए कहा कि हम दिल्ली पर अधिकार करने की दुर्भिलाषा करने वालो को कुचल कर धूलि समाहित कर देंगे। यह युद्ध तो क्या है, हम पश्चिम दिशा के विशाल पर्वतो तक को अपने बलिष्ठ भुज-पाशो मे उठाकर पूर्व दिशा मे ला पटकने मे समर्थ हैं। उत्तर (बगाल) दिशा के स्वयकथित इस बादशाह को ही बधन मे डाल कर बदीखाने पहुँचा देंगे। हम केवल दिल्ली के शाहशाह के सम्मुख ही अपना मस्तक नमाते हैं—अन्य किसी के सामने नही। बादशाह का अन्न ग्रहण किया है, अत उस पर किसी प्रकार दोष नही लगने देंगे।

तत्पश्चात् दोनो दलो ने अपने-अपने शस्त्रागार खोले। योद्धाओ को सिलह और अश्वो की पाखरें वितरण की गई। उभय समूह मे आक्रमण की प्रारम्भिक हलचल उत्पन्न हुई। राजा अनिरुद्धसिंह ने अपने योद्धाओ को आहूत किये। उन्हे गगा का महत्त्व, स्वामिधर्म का पालन, ससार की ममता, जीवन की क्षण-

भगुरता और युद्ध-मृत्यु का महत्त्व जतला कर उत्साहित किए। उसने कहा—हे वीरश्रेष्ठो! जीवन-मरण के भय-भाव से निर्भ्रम हो कर युद्ध मे प्रवेश करो। यह पचतत्त्वो का शरीर तो अपने-अपने तत्त्वो मे अन्तर्लीन हो जाएगा, फिर मरता जीता कौन है? अतः युद्ध मे वीरता प्रदर्शन कर कीर्त्ति और लक्ष्मी का सग्रह कीजिए। वैरियो के आयुध-प्रहारो के सम्मुख बढिए। यदि रण मे मारे गए तो भी लाभ ही है क्योकि सिर शिव की कण्ठमाल का आभूषण बनेगा, पल से पक्षियो को तृप्ति मिलेगी और अप्सराओ के रूप मे सुर-सुन्दरियाँ सुखोपभाग के लिए प्राप्त होगी। स्वामिधर्म का पालन होगा और यश मिलेगा, अतः कहो–हे वीरो! रण भूमि मे प्राणोत्सर्ग करना अच्छा है या पलग पर पड़े रह कर मरना अच्छा? इस प्रकार उस गौड़ वीर ने महाभारत के योद्धा अर्जुन के समान अपने वीरो को श्री कृष्ण की भाँति जीवन-मृत्यु के रहस्य का बोध कराया। उन वीरो ने युद्ध मे प्राण विसर्जन कर सुर बालाओ के द्वारा वरण की कामना के साथ रण मे मरने मारने का सकल्प ग्रहण किया।

तब फिर गौड़ो की शाखा-शाखा के वीर सज्जित होकर दरबार मे आए। राजा अनिरुद्धसिंह ने शिरस्त्राण तथा कवच धारण किया। उनके सामन्त जसवन्तसिंह, भावसिंह, तेजसिंह, जोरावरसिंह, नवलसिंह, शक्तिसिंह, रुक्मागद, अचलदास, किशोरदास राव और सावलदास राव (भाट) सन्नाह सनद्ध हुए। यद्यपि ये भट्ट-बधु राज्यसपत्ति से प्रति वर्ष दसमाश प्राप्त करते थे, पर आज अपने स्वामी के सम्मुख युद्ध मे लडने को उद्यत हो उसका अर्द्ध भाग बँटाने पर तत्पर थे। उपर्युक्त वीरो को तैयार जान, तत्काल ही वीर हरिदास, शिवदास, महेशदास, रामसिंह, डूगरसिंह, केशवदास, शूरसिंह और कल्याण आदि भी तैयार हुए। इस प्रकार बधु-बाधवो और सज्जित सैनिक समाज में राजा अनिरुद्धसिह ऐसा शोभायमान हुआ, मानो नक्षत्र रूपी योद्धाओं मे वह पूर्णिमा का सोलह कला युक्त नक्षत्रपति चद्र ही हो।

तदनन्तर धार राज्य का उद्धार-कर्त्ता परमार वीर जुझारसिंह तैयार हुआ। मदमस्त गजसमूह को मारने वाले सिंह तुल्य पराक्रम वाला जसवतसिंह हाडा तत्पर हुआ। जीवन के प्रति विरक्त, अपार बल वाला मोहकमसिंह सनद्ध हुआ। उसके साथ ही युद्ध मे कर्ण के समान लड़ने मे समर्थ कर्ण, सिंह तुल्य साहस-धनी सुजानसिंह, वन के खूखार सिंह जैसा बली डूंगरसिंह और केशरी खान तैयार होकर हरावल मे नियुक्त हुआ।

तदनन्तर अरि सेना का सहार करने के लिए राजा जयसिंह कछवाहा अश्वारूढ होकर रण भूमि की ओर चला। उसके प्रस्थान करने पर एक

बादशाह (शाहजहा) के पक्ष मे तो विजय की आशा लहर और दूसरे बादशाह (शाहशुजा) के पक्ष मे पराजय की निराशा बढी। उस वीर के तैयार होते ही, शूरसिंह, महासिंह, फतहसिंह, तेजसिंह कछवाहा, मथुरादास गौड, मधकर (माधवदास ?), रूपसिंह राठौड आदि वीर रणभूमि की ओर बढे। उन योद्धाओ से घिरा हुआ राजा जयसिंह उस समय इस प्रकार शोभित हुआ, मानो अष्ठ कुली पर्वतों के मध्य सुमेरुगिरि विराजमान हो।

राजा रामसिंह, उदयभानु, दलेलखांन, सैयद बहादुर खा, मीरजाफर आदि वीर, सन्नाह सनद्ध होकर शाहशुजा को पराजित करने के लिए सेना के अग्र-भाग मे चले।

शाही दल सवार होकर ऐसे आगे बढा जैसे लहर पर आया हुआ समुद्र उमड चला हो। गजराजो पर कसे हुए नक्कारो ने वीर निनाद किया। करनालो का घोर घोष समुद्रो के उस पार तक ध्वनित हुआ। शहनाई और रणतूर्यो का गम्भीर घोष हुआ। तोपो की पंक्तिया चली। गजराजो पर बधे ध्वजो की डोरिया और लाल पट चमकने लगे। कितने ही वीर माहि-मुरातिब और तोग लिए हुए थे। पदाति वीरो के हाथो मे नगी तलवारें और कन्धों पर बन्दूके थी। कतिपय कोतिल अश्व मयूर-कला करते चलते थे और उनके साईस लम्बे कदमो से उन्हे सम्हालते हुए चलते थे। उनके सम्मुख मुद्गर तथा गदा-धारी वीर चल रहे थे।

राजा जयसिंह ने हरावल का नेतृत्व ग्रहण किया। कज्जलगिरि की भ्राति देने वाली अपनी गजसेना को सज्जित कर स्थिर की। उनके पीछे जूझारसिंह पवार, जसवतसिंह, मोहकमसिंह, कर्णसिंह, सुजानसिंह, डूंगरसिंह, शेरखान आदि सज कर तैयार हुए। मध्य भाग मे शाहजादा सुलेमानशिकोह ने अपनी सेना को तैयार कर स्थिर की। मीर जाफर तथा बहादुर खा ने चदावल, राव रामसिंह ने बाए पार्श्व और राजा अनिरुद्धसिंह ने दाहिने भाग की सेना का नेतृत्व सम्हाला। इस प्रकार तीस हजार सेना हरावल मे उतनी ही गोल में तथा बीस सहस्र चदावल मे और दस-दस सहस्र दोनो पार्श्वों में स्थिर कर मयूर-व्यूह की रचना की। गगा तट के निकट दोनो सेनाओ मे मार-काट मची। सर्वप्रथम परमार और गौडो ने शत्रु पर आक्रमण किया। वे बधन-मुक्त सिंह की भाँति रिपु-सेना पर झपटे। राजा अनिरुद्धसिंह और जाम बेग का सामना हुआ। योद्धाओ के अग शस्त्राघातो से विंध गए। बाणो की झडी लगी। तल-वारो से वज्राग्नि बरसी। कवचो की लोह कड़िया टूटने लगी। योद्धाओ के स्कन्ध और कटि संधि-स्थलो से छिन्न हो पड़ने लगे। भालो की चौधारी मार से

लोहू धाराए बहने लगी। योद्धा प्रति योद्धा को ललकार कर प्रहार करने लगे। रणभूमि बसन्त के फाग की आकृति मे बदल गई। वीरो के अग रक्त रूपी गुलाल से रक्तिम बन गए। रवि-रथ आकाश मे स्थिर हो गया। शत्रु सेना के पैर उखड गए। जामबेग भाग गया। अनिरुद्धसिंह खड़ा रहा।

शाहजादा शुजा के राजचिह्न छीन लिए। उसे जीवित जाने दिया। राजा जयसिंह ने राजचिह्न सहित राजा अनिरुद्धसिंह को शाहजादा सुलेमान शिकोह की सेवा मे उपस्थित किया। शाहजादा ने "तुम्हारे ही कारण हम विजयी हुए हैं" कह कर राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। विजय के लिए राजा जयसिंह को बधाई दी। समस्त सेना हर्षित हुई।

उपर्युक्त कथासार से स्पष्ट है कि कवि का उद्देश्य तीनो युद्धो मे वीरगति तथा विजय प्राप्तकर्त्ता योद्धा का यश-प्रकाशन था। यद्यपि वह गौड़ों का आश्रित कवि था। अत गौड योद्धाओ के युद्ध का विस्तार के साथ वर्णन करना उसका लक्ष्य रहा है, जो उनका आश्रित होने तथा सख्या मे गौड़ो के अधिक मारे जाने के कारण अनुचित नही कहा जा सकता। तब भी कवि ने सभी जातियो के वीरों का समुचित वर्णन कर अपनी समन्वय दृष्टि एव निष्पक्ष दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

साहित्यिक विवेचन

रस

विन्हैरासो प्रारम्भ से अन्त तक युद्ध-घटनाओ के वर्णन का काव्य है और वीर रस उसका प्रधान रस है। वीर रस के सहायक रूप मे उसके मित्र रस वीभत्स, भयानक तथा रौद्र भी ग्रथ मे यथाप्रसग व्यवहृत हुए हैं। वीर रस के परिपाक मे योद्धाओ की दर्पोक्तिया और शस्त्र-सघात आदि का चित्रण बडा प्राणवन्त, ओजस्वी एव चित्रोपमतामय हुआ है। वीर रस की निष्पत्ति के लिए आसेर किले के दुर्गपाल मानसिह गौड़ का शाहजादा औरगजेब को दिया गया वीरोचित उत्तर देखिए:—

मुणँ येमि भड मान, सुणौ अवरग सुलिताण।
साहिजिहा पतिसाह, जाणि राखै जमिराण॥
दूठ जेणि मो दियै, दुरग जिण रीति स देस्यां।
दूजा सो गहिं दुजड, येमि खळ खट्ट रचेस्यां॥
जिण बात फेरि जाणौ रखे, जुद्ध बळावळ जूटसी।
तूटिसी सीस असुरा तणा, तवि आसेर न तूटसी॥

धौलपुर के युद्ध मे शाही सेनानायक शाहजादा दाराशिकोह के रणभूमि से पलायन करते समय सैयद योद्धा नाहरखांन ने सेना का संचालन और युद्ध का भार ग्रहण किया उस समय उसने शत्रु सेना का सामना करते हुए दृढ निश्चय के साथ कहा:—

नाहर किम नीसरै, नांम नाहर किम रख्यौ।
दोइ राह यम कह्यौ, साहि आलम मुख अख्यौ॥
और मरै व्है सैद, हम जीवतै कहावैं।
सैदों की क्या रहै, नाजि जो काम न आवैं॥
हरवल्ल तुमैं हम ना किया, मन यह रह्या मजा खरा।
यक चोट लरौं ठड्ढौ यहा, (तुम) गहो कोट जा आगरा॥

गोड सेना के अनेक योद्धा रण-मस्त हुए सीधे शाहजादा औरंगजेब पर आक्रमण कर उसे धराशायी करने के लिए दिशा-सकेत पूछते हैं:—

गज फौजा वेहडी, हठी हरवळ बगाळां।
खग बाहै हीलाळ, खूंदि ढोहिया बढ़ाळा॥
भडा चौळ बबाळ, घटां पूरै कस घावां।
मुणि बीरभद्र मुरारि, किसूं पीथल्ल कहावा॥
साईदास राजसी मानसी, हद्द मरद्द कुसळौ हठी।
ऋन आस भांण वेऊ कहै. कहो वाग लीजै कठी॥

सेनाओ के प्रयाण, तीर-तोपो के बाण-गोलो की गर्जना और शस्त्रों के प्रहारो से उत्पन्न भयानक स्थिति की पृष्ठभूमि मे भयानक रस को अभिव्यक्ति मिली है। योद्धाओ के पारस्परिक प्रहारो के रूप मे एक उदाहरण देखिए:—

झिलैं सूर सामन्त वाहै झटक्का।
घडा ढग कुढग रा लै घटक्का॥
गजां तणा कुभाथळा सैल लग्गै।
वळे धार हू धार डकार बग्गै॥
कढ़ी झडै जरद्दा तणी जोध कट्टै।
झटक्का केई ढाल हूता उझट्टै॥
वाहै येमि गुरज्जा फरस्या गुपत्ति।
ढहै जोध असवार जाये धरत्ति॥
वहै येमि चूगा चपेटा सवाहं।
गजां टूक पडिया मचै गज्जगाह॥

वीभत्स रस का उप-सयोजन करने का भी कवि ने प्रयत्न किया है। युद्ध-स्थल मे गज, अश्व और अग-छेद योद्धाओ के मांस, मज्जा, आंतें आदि पर आमिषचारियो के मॅंडराने का वर्णन करते हुए लिखा है—

कहुं परै बीर खडह विहड।
कहुं परै सुण्ड दण्डह प्रचड॥
कहुं परै अन्त दन्तह उलझ्झि।
मसिहार फिरै तिह बार मझ्झि॥
कहु परै रुण्ड मुण्डह भ्रसुण्ड।
कहु परै तुग कहु परै भुण्ड॥
कहु परै लुथ्थि ऊपरि सु लुथ्थि।
कहुं परै मसि कहु परै बुथ्थि॥
खळकत श्रोण तवि नाळ खाळ।
तहा तीर बीर भैरू बिताळ॥
चवसट्ठि तहा भरि पीवै पत्र।
सारद्द तड नारद्द नृत॥
तहां लियै ईस सीसह सुभट्ट।
किरमार धार घड हू विछुट्ट॥

राजस्थानी काव्य की वर्णन-परम्परानुसार युद्ध-स्थल के मध्य योद्धाओ के कवचादि तथा अप्सराओ के वस्त्रा-भूषण धारण करने के बहाने कवि ने शृगार वर्णन का भी अवसर निकाल लिया है जो कि परम्परायुक्त होते हुए भी बड़ा सजीव और मोहक है।

यत सूर कवचि पहरैं सु हेत।
उत रंभ कंचुकी तनी देत॥
यत सूर पाग बधै सु बीर।
उत रंभ चीर पहरै सु धीर॥
यत सूर टोप बधै अतूल।
उत रभ दहैं सिर सीस फूल॥
यत सूर ढाल वधै अमान।
उत रभ तरीना पहरि कान॥
यत दस्तान सूर वधैं अभग।
उत रभ करत मेहदीन रग॥
कर सूर खाग मजै कराळ।
वहो रभ नैन अजैं बिसाल॥

संसार और जीवन के विषय में शूरवीरो का दृष्टिकोण सामान्य जन से भिन्न होता है। शरीर को वे मरणधर्मी मान कर मृत्यु से सदा अभीत रहते हैं। अत. युद्ध को एक सामान्य जीवन-व्यापार से अधिक महत्व देते हैं तो उसे अश्वमेध यज्ञ के समतुल्य फलदाता अथवा मुक्ति के साधन के रूप मे ही।

मुक्ति के इस अभियान मे कर्त्तव्य-रत योद्धा अपनी आत्मा को ब्रह्मज्योति मे मिला कर चिरतन शाति और सुख को प्राप्त करता है। इस भाव की प्रेरक आसक्तिविहीन उक्तियो में जो दार्शनिक तत्व छिपा है, उसका अवलोकन करने से वीर रस के साथ शान्त रस के गठ-बधन का जो आभास, वीर भावनाओ के अतिरेक के फलस्वरूप हुआ है, वह भी अवलोकनीय है—

कहै राव सत्रसाल सुणो भड भीछ कहाव।
उरध मंडळ भेद तणा कोइ लैहे लाहवं॥
करि इस्ट द्रढ दमन भेदि सह कमळ उचाई।
स्याम काम धरि मनैं यह पग धरत सवाई॥
व्रहमड फूटि चालै सु तैं जोतिहि जोति मिलाइयां।
यह धरै पांव असमेद का, दोय मुकति यक पाइया॥

इस प्रकार कवि ने वीर, भयानक, वीभत्स आदि मित्र रसों के साथ-साथ शृगार और शान्त रस की कुछ भाव-भूमियो को भी छुआ है।

अलकार

अलकारो के प्रयोग के प्रति कवि का विशेष आग्रह तो नहीं रहा है, फिर भी समूचे काव्य मे अनेक अलकारो का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। डिंगल-काव्य-परम्परानुसार वैणसगाई (वर्ण-मैत्री) अलकार का प्रायः सभी छदो और सभी स्थलो पर प्रयोग हुआ है। यह वस्तुत. एक प्रकार का अनुप्रास अलंकार होता है। शब्दालकारो मे वयण सगाई के अतिरिक्त यमक, पुनरुक्तवदाभास और अनुप्रास के अनेक भेदो का प्रयोग काव्य मे हुआ है। अर्थालकारों में उपमा, रूपक, अनन्वय, उल्लेख, अत्युक्ति, ध्वन्यर्थ व्यजन, सन्देह और उत्प्रेक्षा के उदाहरण मिलते हैं। कुछ उदाहरण कवि के कला-कौशल को समझने की दृष्टि से यहा प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

अनुप्रास— तवियै भड येह मुरारि तणा। घण घाय विभाडण फौज घणा॥
सजि सूर सनाह सनाह सजै। रण रूप जिसा नवनाथ रजै॥

श्रुत्यनुप्रास— (१) खयराट पहाड वराड खत्री।
(२) बधै गाढ़ मे वाढ़ जमदाढ़ गाढ़।
(३) कसै वाग केकाण केवाण कस्सै।

वृत्यनुप्रास— (१) सजि सूर अनै सामत सार।
(२) तांणै तेज तंग दुतंग।

छेकानुप्रास— बटका बटका बीधरै, तटका झटका तान
घटका वहि पटिया घणा, कुटका कुटका कान॥

सर्वान्त्यानुप्रास— गोवरधन चदह तणो कूपां किरनाळा ।
महि देणा अरि मारणां बेऊ विरदाळा ।।
जोधा रिडमल चौंड रा बीका बाहाळा ।
सलखा बीरम जैमला घूहळ मज्जाळा ।।

यमक— (१) चम्मर जेमि चम्मर चार ।
(२) महामत्तिवाळे महामत्तिवाळे ।
(३) मौसरां ऊगा मौसरां खग अ'दा खट्टै ।

पुनरुक्तवदाभास— तडफत भड़ा घड टूटै तडळ बधि सधाण बंधाण ।
फबिया रत घट जाणै फूटा रग मजीठ मचाण ।।

उपमा— (१) बारा अपार अणपार बाण । मूराड़ जेमि बहता मुसांण ।।
(२) भींवडो जिसो पण्डू रो भींव ।
(३) चित येह विहू बळ चमर ढाळ ।
मळहळै दिवाकर जेमि भाळ ।।
(४) गगैव जेमि अणभेव ग्यांन ।
सरणाय राय राखण समांन ।।

रूपक— (१) बजै सद्द नद्द छत्तीस विहद्दं ।
पुणै मेघ अग्राज तैं भाद्रपद्दं ।।
(२) नरसिंघ रूप भयांण भाळै लागुवा लकाळ ।
गाहिया गोपदन्त गैमर डोळिया तर डाळ ।।
(३) करी जिन नाळि करी जिन कोर ।
घटा घहरि जनु चारों हि ओर ।।

अनन्वय— (१) अजण जेहा अजण रचेबा सु महारण ।
(२) मोहोक्कम जेहा मोहोक्कम ।
(३) भीम जिम भीम गयंदा अमाड़ ।
(४) दळ जेहा दरियाव ।

उल्लेख— अजमेरि धरा आदीत ऊगि ।
पयनिधी परा परकास पूगि ।।
भीमाळ वंस ऊजाळ भूप ।
घर खळां तेज परजाळ धूप ।।

अत्युक्ति— (१) असा बाण बेऊ दळां तणा ऊडै ।
वंवे भाण धूंवाण मझ्झेस बूडै ।।
(२) धम धमय बाजिय धूजि धरा ।
रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरा ।।

ध्वन्यर्थ व्यंजन— अगग अगगं गजराज गजै।
घननं घनन घन घट्ट बजै ॥
रमझम धमधम घूघरयं।
प्रति बाजत ते हय पक्खरिय ॥

सन्देह— बियडाण कसैस नीसाण बजै।
गति मेघ किना महराण गजै ॥

उत्प्रेक्षा— (१) छटा जिम पावक बाण छुटन्त।
तहाँ घनु ते मनौं बाण छुटन्त ॥
....

तुपक्कन ताड़ पहै यक तार।
मनौं बिरखा यह होत अपार ॥
....

समट्टिय छुट्टिय श्रिगनि बान।
मनौं अहिपख उड़ै असमान ॥
....

गुरज्जन मार परैं गमकार।
मनौं घन कुट्टत लोह लुहार ॥
....

दृष्टान्त— (१) मिळे वाय मधि वाय, सुन्नि मधि सुन्नि समावै।
तेज तेज में मिळे, पिण्ड घर माँहि मिळावै ॥
आप आप मिळ जाय, रहै अपणो नह कोई।
सत रज तम जिस माय, जको ले देय समोई ॥

नह तात न मात न भ्रात पुणि, उडै हंस राखै कवण।
टग टगी लाय रहिये जितैं, भरियो तजि जाये भवण ॥

(२) यत करही सूर सनान दान। उत रभ कर ही मंजन विधान ॥
यत सूर राग वधै असकि। उत सूर सजै लहगानि लकि ॥

कवि ने जहाँ अनेक अलकारो का प्रयोग यथा स्थान किया है, वहाँ उत्प्रेक्षा का वाहुल्य भी दृष्टिगोचर होता है। उत्प्रेक्षा का अधिक प्रयोग केवल इस ग्रथ मे ही नही अपितु इस प्रकार के अन्य ग्रन्थो में भी प्राय: देखने को मिलता है। अलकारो के प्रयोग को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि की सूझ बूझ और उसका अध्ययन किस कोटि का है ?

भाषा-शैली

रासो की भाषा व्रज-मिश्रित डिंगल है और उसमे राजस्थानी भाषा की

मेवाड़ी की क्रियाओं का पुट लक्षित होता है। गद्य-खण्डों में आधुनिक हिन्दी के विकासोन्मुख प्रारम्भिक काल की झलक भी दिखाई पड़ती है। अनेक स्थलों पर अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मध्यकालीन भारतीय योद्धाओ का अधिकांश समय मुगल दरबार और उनके शासित प्रान्तो मे बीतता था। मुगलों के अत्यधिक सम्पर्क के कारण योद्धाओ के आवास-भवनो, वेश-भूषा और शस्त्रादि में मुस्लिम-संस्कृति के अनेक तत्व जाने-अजाने मिल-घुल गए थे। फलस्वरूप यहा की भाषा में भी उनकी भाषाओ के शब्दो का मिल जाना स्वाभाविक था। इस प्रकार रासो मे मुस्लिम सग-सम्पर्क और वातावरण के कारण तत्कालीन व्यवहृत शब्दों का समिश्रण प्राप्त होता है। ऐसे शब्दो मे तोग, समसेर, वाका, जहसत्ति, कासीद, बफाति, फर्जरि, सरजा, करनाळ, नरजान, तखतरेवान, जासूस, बिलद, बहरख, तसब्बी, चिलकंतो और जनब्बर आदि अनेक शब्द गिनाए जा सकते हैं।

यह ऐतिहासिक युद्ध-काव्य है। इस कोटि की प्राचीन काव्य-कृतियो में बहुधा संयुक्ताक्षरो और विकृत-वर्णों का बाहुल्य पाया जाता है, पर रासो मे शब्दो की अनावश्यक विकृति और क्लिष्ट पद-योजना को अधिक स्थान नही मिला है। प्राचीन कवियो की यह धारणा रही है कि सयुक्ताक्षरो और द्वित्वक्षरो के अभाव मे युद्ध का वातावरण निष्पन्न नही हो पाता और उसके अभाव मे ओजगुण का सम्यक् प्रभाव स्थापित नही होता; पर रासो मे शब्द-विकृति और कृत्रिम-शब्दायोजम के बिना भी ओजगुण प्रभावशील बन पडा है। इस प्रकार यह काव्य कृत्रिमताजन्य उपर्यंकित दोष से मुक्त ही माना जा सकता है। अरबी और तुर्की आदि विदेशी भाषाओ के शब्दो के साथ-साथ मराठी के केतला और चा विभक्ति के कही-कही प्रयोग अलबत्ता हुए हैं, जो डिंगल मे प्रायः सर्वत्र प्रचलित रहे हैं।

कवि डिंगल का प्रौढ और अधिकारी विद्वान् था। वह, काव्य मे किस स्थल पर, किस प्रसग मे, किस योद्धा के लिए और किस वातावरण के लिए किस प्रकार की शब्दावली उपयुक्त और प्रभावी हो सकती है, से भली-भाँति विज्ञ था। अत. उसने काव्य मे योद्धाओ की युद्ध-क्रियाओ और युद्ध के वातावरण के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग कर अपनी काव्य-कला-दक्षता और भाषाधिकार का परिचय दिया है। युद्धस्थल के वातावरण और गजाश्वो के युद्ध-स्थल में प्रवेश की क्रियाओ को चित्रोपमता देते हुए वर्णन किया है—

अगग अगगं गजराज गजै। घनन घनन घन घंट बजै।।
रमझम घमघमं घूघरय। प्रति बाजत ते हय पक्खरियं।।
घम घमंय वाजिय धूजि धरा। रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरा।।

घसमस्सि धमस्सि जवान धसैं । फिरवानन तोडि कमांन कसैं ॥
खिलि मिल्लिय झिल्लिय छक्करय । मनु कुद तुरगन बक्करय ॥
पम छुट्टिय सकुल छुट्टि पटा । घनघोरि मिळी दहुवौर घटा ॥
हिंगलिय यल्लगिय हूल हुय । धमगज्जर गज्जिय मांचि घुयं ॥

योद्धाओ के पारस्परिक शस्त्र-सघात और घायलो की दशा तथा युद्धस्थल की वीभत्सता के वर्णन मे कवि ने सशक्त भाषा का प्रयोग किया है। उपमा और रूपक अलकार की छटा भी इस पद्याश में दर्शनीय है—

महा जोध जोधा मिळै मांचि मार । घडा वेहडा तेहडा तूटि धार ॥
धरा बासता घूवळा नाद ढंक्के । झिलै झिल्लरी देवद्वारे झणंक्के ॥
पडै जूजुवा टूक यू हाथ पाव । वहै श्रोणित नाळ खाळ बहावं ॥
पडै सीस रुण्ड पड़ै रु ड प्रेत । खिलै जुग्गनि खप्र लै मझ्झ खेतं ॥
पडै लंक हू टूटि जोधा अनन्त । कलेज सवूकं बिसयरी अंत ॥
पड़ै फेफर गूद नै मेद फूटै । तिन ऊपरा गिझ्झनी झूड तूटै ॥
घट्टा घाव लग्गास घूमैं घुरक्कै । फटा सीस फूटास केई फरक्कै ॥
उडी खोपरी मझ्झि भेजो स येखी । दहेडी जाणै ढांकणी खोल देखी ॥
अनै छातिया घाव केतां स आगे । पुळेवा लजै जोध लकाळ पागे ॥
कितां छातिया घाव लागे कटारी । वणे राज आवास जाणेस बारी ॥

उपर्यंकित सरल तथा प्रवाहयुक्त शब्द-योजना के पश्चात् अब कुछ पक्तिया विकट शब्दावली की देखिए, जिसमे द्वित्त्य वर्णों का प्रयोग भी निःसकोच किया गया है।

सजि सूर सुभट्टं थूरण थट्टं थट्ट गरट्टं तेथइया ।
बीरारस बट्टं ऊपट पट्ट ऊभट भट्टं ऊलहिया ॥

× × ×

मिळि दीठि दीठि दहूं दळां मद्धि ।
उलट्टिय फट्टिय सात उदद्धि ॥
निघस्सिय खोड हजार सुनद्ध ।
सुणै सुरलोक महि पडि सद्ध ॥
भभंकिय सद्द नफेरि न भेरि ।
रुभंकिय डडन की बजि भेरि ॥
घुम्रे सिर सेस गिरां सिर घूजि ।
हयख्खुर खेह बिभाकर बूजि ॥

× × ×

पडे लट्ट चट्टं । बिकट्टं बिकट्टं ॥
गळे बांह गथ्थ । वढे लोयिबथ्थ ॥

कच श्राच कख्ख। वगे दावं वख्ख ॥
मंडे मत्तिवाळं क ग्रहे कलाळं ॥
मुकदे मरट्टं । ठेले गज थट्ट ॥

कवि ने रासो मे गद्य-खण्डो मे वचनिका और दवावैत का प्रयोग किया है। दवावैत मे लघु वाक्यो की योजना और राजस्थानी गद्य के सुष्ठु प्रयोग का एक उद्धरण मे देखिए—

"हठ का हमीर। ओहठमाल। भावता के भावता। अणभावतां के नाट-साल। सत का समूह। ध्रम की पाज। गदाई का कल्पितरु। जोग की जिहाज। तेज का सूरिज। मूरति का मैण। दुसमनो के दावानळ। सैणो का सैण। दिल का दरियाव। दरियावो सा गहर। दरियावो सा फेर। दरियावो की लहर।"

यद्यपि कवि ने गद्य-खण्डो का अत्यल्प ही प्रयोग किया है, परन्तु इन अल्प प्रयोगो मे ही कवि की गद्य-शैली का नैपुण्य प्रकट हो जाता है। यहां वचनिका का एक अन्य उदाहरण दिया जाता है जिसमे आधुनिक खड़ी बोली के पूर्व रूप प्रयुक्त क्रियाओ का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है—

"करनाळो का सौर घमक बजै घनघोर। अराबो की आवाज जुरे अनुरूव महाराजाधिराज। कोहोकवान चद्रबान छूटते हैं। तारे आसमान से तूटते हैं। सुलतान कों वारे गया जामवेग खरा रया। बात करतें बेर लगै। जोधा जुड़ै कायर भगै। राव किसोर सै यों फुरमाया—जामवेग चलाय आया। बेग के पीलवान नै हाथी डाल्या। पाहर जैसा पगां चाल्या। ये तै दरम्यांन कौन खड़ा रहै। हाथी का धका हाथी सहै।"

काव्यकार ने योद्धाओ की जातियाँ, प्रान्त अथवा स्थान, अस्त्र-शस्त्रो तथा घोडो की जातियां, रग और चालो की नाम-गणना कराते हुए लम्बी सूचियां दी हैं। इन स्थलो मे कवि के इतिहास, आयुध-विद्या और शालिहोत्र शास्त्र के अध्ययन का समुचित परिचय मिलता है। कही-कही ग्रथ मे पात्रो के नामो के स्थान पर उनके समानार्थक शब्द भी काम मे लिए गए हैं। यह प्रवृत्ति डिंगल काव्यो और डिंगल गीत साहित्य में भी पाई जाती है। उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं—

अर्जुन के लिए उसका पर्यायवाची 'पाराथनामी' शब्द का प्रयोग हुआ है—
नरांनाथ ऊभो स 'पाराथनांमी'। पृ० ५१

सुमेरसिंह के लिए सुमेरु गिरि का पर्यायवाचो 'गिरमेर' शब्द का प्रयोग किया है—

नाना गोपालदास दादा 'गिरमेर' । पृ० ११७

कई स्थलों पर योद्धाओं के नाम के आधे भाग का ही प्रयोग किया गया है और कहीं कहीं नाम को विलोम कर दिया गया है, जैसे गोपालदास के लिए 'पाळ' और उदयभानु के लिए 'भाण' शब्द प्रयुक्त हुआ है—

'पाळ' री जोध लंकाळपति, भीछा कहे सुभलन रे ।
ऊन आस 'भाण' वेऊ कहे, कहो बाग लीजै कठी । पृ० ९७

इसी प्रकार जसवंतसिंह और रूपसिंह के लिए केवल 'जसवत' और 'रूप' ही रख दिया है—

भाजियो सुणे 'जसवत' भड, 'रूप' रूप चढियो रणे । पृ० ११५

निम्नांकित पद पक्ति मे 'सुजाणसिंघ' के स्थान पर उसका उलटा 'सिंघ-सुजाण' और 'दल्लेलखांन' के लिए 'खांन दलेल' प्रयुक्त हुआ है—

सुणे हरवल्लह 'सिंघ सुजाण' । पृ० ७१
दळा 'खान दल्लेल' चढै दुहेला । पृ० १४२

अनेक स्थानों पर योद्धाओं के नामो के अल्पार्थ प्रयोग किए गए हैं, परन्तु ये प्रयोग अवज्ञा अथवा छोटापन प्रकट करने के उद्देश्य से नही किए गए हैं अपितु कवि का उन स्थलो पर पात्र के प्रति सम्मान, प्रेम और घनिष्टता व्यक्त करना ही लक्ष्य रहा है। जैसे भीमसिंह के लिए कवि ने 'भीवड़ो' और राजा भीमसिंह सीसोदिया के लिए 'भीमाणी' का प्रयोग किया गया है। यहाँ भीवडो और भीमाणी महत्ववाची रूप ग्रहण किए हुए हैं।

'भीवडो' जिसो पंडू रो भीव, मात्रवा गढा ऊपाड सीव । पृ० ११९
'भीमाणी' रासो भयक, सावळा वोपै असक । पृ० ६६

अल्पार्थ की भाँति ही महत्ववाची सम्बोधनो के भी ग्रथ मे पर्याप्त प्रयोग मिलते है, जैसे 'कुसळसिंघ' के लिए 'कुसळेस' और रतनसिंघ के लिए 'रतनेस'; 'मुंकदसिंघ' के लिए 'मुकदेस' और 'जूझारसिंह' के लिए 'जूझार' महत्ववाची रूप मे प्रयुक्त हुए हैं। साक्षी के लिए दो पक्तियाँ प्रस्तुत है—

हुई वार 'कुसळेस' रै फनै हाथां, नरां चाढणो नीर रणधीर नाथां । पृ० १६६
परमारह सूर 'जूझार' पुणे, सिरदार जको जुधवार सुणे । पृ० १५४

डिंगल काव्य परम्परा के अनुसार नामो के रूप भेदो का काव्य मे अच्छा प्रयोग किया गया है; जैसे—गौड योद्धा अर्जुन के लिए निम्नाकित नाम भेद व्यवहृत हुए हैं—अजमल, अजमाल, अज्जमल, अरजण, अरज्जण, अरजन और अजा आदि।

छंदों की पादपूर्ति के लिए ह, स, ज और य वर्णों का प्रयोग हुआ है। प्रमाणार्थ 'ह' और 'स' के प्रयोग निम्नलिखित पंक्तियों मे देखे जा सकते हैं—

'गोवरधन चन्द्रह तणो' और 'नरां नाथ ऊभो स पाराथनांमी।' पृ० ५१

कवि ने स्थान-स्थान पर मुहावरों और कहावती पद्यांशों का प्रयोग कर भावो को प्राञ्जल और भाषा को सरस तथा चमत्कृत रूप प्रदान किया है।

अजमाल लूण ऊजळ करा, आजि लडा मुंह आगळां। पृ० ४१

यहाँ 'लूण ऊजळ करां' मुहावरा है।

पत चाढण आजि स जहाजपुर।

यहाँ पर 'पत चाढण' मुहावरा है।

पुणै घात-पाती अंग नी काढ़ि परखे। पृ० ५०

यहाँ 'घात-पाती' मुहावरा है।

मारुवै राव काचो मतो मंडियो। पृ० ५२

यहाँ 'काचो मतो मंडियो' मुहावरा है।

सवै ऊपरां ऊबरी जेणि वत्तं। पृ० ११४

यहाँ 'ऊबरी जेणि वत्त' मुहावरा है।

दारासाहि पल्लो गह्यो नाहर सैंद निबाहियां। पृ० १२८

यहाँ 'पल्लो गह्यो' मुहावरा है।

कवि ने कहावती पद्यांशो का पर्याप्त प्रयोग किया है। इनसे जहाँ भाषा मे लालित्य आया है, वहा भावो मे वजन भी। यही नही पाठक के मन पर योद्धा के चरित्र की उदात्तता का प्रभाव भी यह कम उत्पन्न नही करते हैं। यहा कुछ उदाहरण दिए गए हैं—

'सती तणो नारेळ' तिको 'वेहडो उताळी'। पृ० ४२
बुधसेणि तणो 'भवरी स बर'। घण नीर चढावणहार घर॥ पृ० ४३
'काम री कोट' कहिये किसोरं। पृ० ५४
भिडै काजि 'भ्रदा तणो बाथि भारो'। पृ० ५४
'मंनध्या नाथणो' साहि छळि गौड सपाणो। पृ० ११२

अन्त मे कहना होगा कि अकृत्रिम भाषा, ओजपूर्ण उक्तियां, स्वाभाविक अलकार, सशक्त पद्याश और अवसरानुकूल शब्दावली के प्रयोग से समूचा ग्रंथ दीप्त है।

छंद

रासो मे कवि ने इकतीस प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है, परन्तु लक्षणो के आधार पर भुजगप्रयात और भुजगी के लक्षणो मे कोई अन्तर अथवा भेद

नही मालूम पड़ता। इसी प्रकार कवित्त और छप्पय भी लक्षणो के अनुसार अभिन्न ही परिलक्षित होते हैं। वस्तुत ग्रथ में प्रयुक्त कवित्त हिन्दी का छप्पय छद ही हैं। अत: लक्षणो के आधार पर उनतीस प्रकार के छदों का प्रयोग हुआ है। वैसे कवि छद शास्त्र का विद्वान् था। उसने अपनी अन्य काव्यकृतियों में कतिपय अन्य प्रकार के छदो का भी प्रयोग किया है। किन्तु यहां कवि की प्रवृत्ति आचार्यत्व प्रकट करने की न होकर ऐतिहासिक काव्य के रूप में वीरो का वीरत्व-प्रदर्शन तथा गुणानुवाद करना ही उसे अभीष्ट था। कृति मे प्रयुक्त छंदो के अवलोकन से लगता है कि वीरगाथा काल का छप्पय छंद कवि को विशेष प्रिय रहा हैं। यह छद पृथ्वीराज रासो में भी अन्य छन्दों के अनुपात मे अधिक व्यवहृत हुआ है। अत' कवि को अपने ग्रथ का रासो नाम होने के कारण नाम की साम्यता तथा स्वय चन्दवरदाई का सजातीय होने के कारण भी यह छद अधिक प्रिय रहा हो तो कोई विस्मय नही।

कवि ने सस्कृत के त्रोटक, मोतीदाम, शार्दूल विक्रीड़ीत, गाथा तथा हिन्दी के दोहा, सोरठा, छप्पय, बेअखरी आदि का प्रयोग किया है तो डिंगल के प्रसिद्ध गीत छदो मे झमाळ और भाखड़ी आदि का प्रयोग भी अधिकारपूर्ण ढंग से किया है। गद्य-खण्डो मे दवावैत और वचनिका के सुन्दर प्रयोग भी यथास्थान मिलते हैं। इनके अतिरिक्त डिंगल के रेड़की, रोमकध, किलकिला आदि छद भी उसके द्वारा प्रयुक्त हुए हैं। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि कवि डिंगल और पिंगल के छदशास्त्रो से भली भांति परिचित था। प्रयुक्त छदो मे कुछ को छोड़ कर अधिकाश छदों के लक्षण हमे डिंगल और पिंगल के प्रकाशित छदशास्त्रो मे मिल जाते हैं। पर ताटक, अलिला, सागर और वेली भुजगी आदि छदो का जिस रूप मे इस ग्रथ मे प्रयोग हुआ है, उस रूप मे प्राप्त लक्षण ग्रथो मे या तो उपलब्ध नही होते या मेल नही खाते हैं। छन्दशास्त्र का विषय अपने आप मे बहुत बडा विषय है और अभी तक अनेक छंद-शास्त्र प्रकाश मे भी नही आए हैं, ऐसी स्थिति मे इन छदों के सम्बन्ध मे प्रामाणिक तौर पर कुछ कहना सभव नही है। इस ग्रथ मे जो छंद प्रयुक्त हुए हैं, अध्येताओ की सुविधा के लिए परिशिष्ट मे छदानुक्रमणिका के रूप मे उनका निर्देश कर दिया गया है।

यहाँ मैं एक बात और विद्वानो से निवेदन कर देना चाहता हूँ कि इस ग्रंथ की एक ही प्रति उपलब्ध होने से और विभिन्न छदशास्त्रो मे छदो के लक्षणों मे अन्तर होने के कारण ग्रथ के सम्पादन में यथोचित सतर्कता रखते हुए भी यदि छंदगत कोई कमी रह गई हो तो उसे सम्पादक की विवशता ही समझें।

चरित्र-चित्रण—

वैसे तो कवि ने सभी योद्धाओं का चरित्र-चित्रण करने का प्रयास किया है। सेनानायको में राजा जसवंतसिंह, राव मुकंदसिंह हाडा, अर्जुन गोड़, राव शत्रु-शाल हाडा, रुस्तमखां बहादुर, राजा शिवराम गोड़, राजा रूपसिंह राठोड, राजा रामसिंह राठोड़, मिर्जा राजा जयसिंह, राजा अनिरुद्धसिंह गोड़, और भीमसिंह गोड़ के चरित्र को उभार-कर रखने मे कवि को बड़ी सफलता मिली है। परन्तु इन प्रसिद्ध और ख्याति-लब्ध योद्धाओं के अतिरिक्त भी कवि ने अनेकानेक योद्धाओं पर यथास्थान एक-एक छप्पय कवित्त लिख कर उनकी वीरता, स्वामि-धर्म, कर्त्तव्यपरायणता और युद्धार्थ कटिबद्धता का बड़ी ही ओजस्वी एव प्रवाह युक्त शैली मे वर्णन किया है, जिसे पढ़ते ही पाठक के हृदय में एक प्रकार की स्फूर्त्ति और योद्धा के प्रति सद्भावना उत्पन्न हो जाती है।

उदाहरण के लिए उज्जयिनी खण्ड के ऐसे योद्धाओं में शाहपुरा के शासक सुजानसिंह सीसोदिया का एक छप्पय द्रष्टव्य है—

सीसोदियो 'सुजाण' मरण कारण ऊमाहे।
भाण मंडळ भेदवा, चित्त येहा सह चाहे॥
कड़ा-भीड़ कगळां, गलां राखण अगंजी।
खग चाढै खरसांण, मेटि भटसांण स मजी॥
चित्तौड नीर चाढ़ण चढै, चालै केमि अचल्ल री।
सिरदार बिन्हे फौजां सिरै, मुणियै सूरजमल्ल री॥

धौलपुर खण्ड के योद्धाओं के परिचय मे भी कवि ने प्रत्येक योद्धा का स्वतंत्र वर्णन किया है। इससे कवि के वर्णन-कौशल का ही भान नही होता है बल्कि उस के गहरे इतिहास-ज्ञान का भी बोध होता है। जिन योद्धाओं का वर्णन इतिहास ग्रंथो मे दुर्लभ है, उनका परिचय तो यहाँ और भी महत्व रखता है। धौलपुर समर के योद्धा शिवराम चालुक्य का परिचयात्मक उदाहरण इस प्रकार है:—

चाळक बंस उजाळ, नांम 'सिवरांम' कहांणों।
खैराड़ो खग झाट, रीसि गज सीस बहांणो॥
'सत्रसल' आगळि सूर, खळां फाडै अवझाड़ै।
कैसरिया अंग साजि, जिरह जूसण बीभाड़ै॥
दइवाण असुर दळ-दाहिवा, बिहसि बिहसि आघा धरै।
'अवरंग' 'मुराद' ऊपरि उरड़ि, सूडाडड निरळग करै॥

योद्धाओं के परिचयात्मक वर्णन में कवि ने हिन्दू और मुसलमान उभय धर्मों एव जातियों के योद्धाओ पर समान-रूप से प्रकाश डाला है। इस ओर

कवि का पर्याप्त व्यापक दृष्टिकोण रहा है। पूर्व या बनारस युद्ध के योद्धा दलेलखांन रुहेला का कुल परिचय देकर कवि ने युद्ध में उसका स्थिति-निर्देश करते हुए लिखा है:—

विढ़ण करेबा खेल, खान चढियो खग साहें।
अग जको वजरग, सूर ढांपियां सनाहें।
मैमता गाजतां, अनै ताता अराकी।
रुहेला रिमराह, बांह देखतां कजाकी॥
घर गाजि बाजि हुव घूहळा, दिल्ली सिर दावा दिया।
जैसिंघ तणै हरवळ जको, करण फतै मुहरै किया॥

इस प्रकार प्रत्येक वीर का स्वतत्र रूप से चित्रण कर कवि ने उनकी कीर्ति और कार्य को तो अमर बनाया ही है, पर साथ ही अपने कृतित्व को भी महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

ऐतिहासिक मूल्यांकन

विन्हैरासो में बादशाह शाहजहा के तीन विद्रोही पुत्र शाह शुजा, मुराद और औरगजेब के बनारस (बहादुरपुर), उज्जयिनी (धर्मतपुरा) और धौलपुर (शामूगढ) के ऐतिहासिक युद्धो का तीन खण्डो में सविस्तार वर्णन किया गया है। यद्यपि तीनो शाहजादो मे सर्व प्रथम बगाल के राज्यपाल शाह शुजा ने बादशाह शाहजहां की मृत्यु के प्रवाद को वास्तविक मृत्यु मान कर अपने आपको बादशाह घोषित किया था। उसके ताज धारण कर दिल्ली-आगरा पर अधिकार करने के लिए प्रयाण करने की सूचना के बाद शाहजादा मुराद और औरंगजेब ने भी अपने-अपने प्रान्तो से सैनिक तैयारी के साथ आगरा की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार घटना-क्रम के अनुसार पहला विद्रोह और प्रथम युद्ध शाही सेना और शाह शुजा के मध्य दि० १४ फरवरी, १६५८ मे बनारस के समीप बहादुरपुर स्थान पर हुआ था। उस युद्ध मे शाहजादा शुजा की पराजय और शाही सेना की विजय हुई। किन्तु कवि ने उस प्रथम युद्ध का रासो मे सब के अन्त मे वर्णन किया है। इस वर्णन क्रम की पृष्ठ-भूमि पर विचार करने पर जान पडता है कि कवि द्वारा इस कम को आगे-पीछे रखने के पीछे दो बातें मुख्यतया उसके मस्तिष्क मे रही होगी। प्रथम तो बनारस के युद्ध के परिणाम की समग्र सूचना आगरा पहुँची, तब तक उज्जयिनी के युद्ध का आयोजन प्रारभ हो गया था। अत. उस युद्ध की तिथि, योद्धाओ की जानकारी और अन्य आवश्यक प्रसगो की वास्तविक परिचिति जो ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ के लिए आवश्यक थी, कवि को विलम्ब से मिली होगी। और उज्जयिनी का युद्ध जो

राजस्थान की सीमा से बहुत अधिक दूरी पर नहीं हुआ था तथा उस युद्ध में उसके आश्रयदाता अर्जुन के मारे जाने की जानकारी कवि को बनारस के युद्ध की जानकारी से पूर्व ही मिल गई होगी। द्वितीय कारण भारतीय साहित्य में दु.खान्त घटनाओं को सुखान्त रूप में पर्यवसित करने की परम्परा रही है। नाटको और आख्यायिकाओं में ऐसा किया जाता रहा है। ऐतिहासिक काव्यों में भी युद्ध नायक के अवसान को अप्सराओ के साथ प्रणय करवा कर स्वर्गलोक, शिवलोक, चन्द्रलोक आदि के अलौकिक वैभवो की सुखद कल्पनाओं के द्वारा अशुभ को शुभ और अमगल को मंगल रूप देकर अन्त सुखान्त बना दिया जाता है। यहां कवि ने ऐसी अलौकिक कल्पना न कर प्रथम युद्ध को जिसमें शाही पक्ष की विजय हुई थी, अन्त में वर्णित कर काव्य को अशुभ अथवा दुखान्त नही बनने दिया है। अतः कवि का यह क्रम सप्रयोजन भी मान लिया जाए तो कोई आपत्ति-जनक नही कहा जाना चाहिए।

रासो मे उपन्यस्त क्रम से प्रथम युद्ध दि० शुक्रवार, वैशाख वदि ६, १७१५ विक्रमी (शुक्रवार १६ अप्रैल १६५८ ईस्वी) को उज्जयिनी (मालवा) के रण-क्षेत्र मे हुआ था। प्रस्तुत युद्ध के शाही पक्ष की सेना के नायक जोधपुर के राजा जसवतसिह और कासिम खा तथा विपक्ष की सेना के नायक शाहजादा औरगजेब और मुराद थे। शाही पक्ष के उप-सेनानायक अर्जुन गौड (राजगढ वालो का पूर्वज) और राव मुकन्दसिह हाडा कोटा थे। उनके सहायक उप-सेनानायकों मे राजा रायसिह सीसोदिया, राजा रतनसिह राठौड़, राव अमरसिह चद्रावत, शाहपुरा का शासक सुजानसिह सीसोदिया, राजा देवीसिह बुन्देला, राजा सुजानसिह बुन्देला, वेलू परशु मरहठा आदि प्रमुख थे। विद्रोही पक्ष के उप-सेनानायको में शाहजादा मुहम्मद सुल्तान और निजाबत खान थे तथा उनके सहायको मे सफशिकन खा, शेख मीरक, बहादुर खा, अल्लाहयार खां, केशरीसिह राठौड़, भगवतसिह हाडा, रघुनाथसिह मेड़तिया आदि थे। तीन प्रहर के भयानक घमा-सान सग्राम के बाद शाही पक्ष की सेना का पक्ष निर्बल पड़ गया। युद्ध मे शाही पक्ष की पराजय के आसार स्पष्ट जान कर प्रधान सेनानायक राजा जसवतसिह और कासिम खां एवं राजा रायसिह, राजा देवीसिह, राजा सुजानसिह, वेलू परशु मरहठा और राजा जसवंतसिह के श्वसुर राजा बेरीसिह खण्डेला, राजा छत्रमणि करौली, राव अमरसिह रामपुरा आदि सहायक उप-सेनापति रणभूमि का त्याग कर पलायन कर गए। राव मुकन्दसिह हाडा, वीर अर्जुन गौड, राजा रत्नसिह राठौड़, सुजानसिह सीसोदिया, दयालदास झाला, विट्ठलदास चांपावत और गोवर्द्धनदास चन्द्रावत (राठौड़) प्रभृति वीर अपने अनेकानेक सामन्तों,

सैनिको और बन्धु-मित्रों सहित रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए। विद्रोही शाहजादो की विजय हुई।

इस युद्ध के वृत्तान्त के समसामयिक अरबी फारसी के ग्रथों, राजस्थानी ख्यातो तथा ऐतिहासिक पत्र-पट्टो के अतिरिक्त ऐतिहासिक काव्य ग्रथो मे अद्या-वधि 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री महेसदासोत री खिड़िया जगा री कही' की अत्यधिक चर्चा एवं प्रसिद्धि रही है। वैसे प्रसगवसात् कुभकर्ण सांदू कृत रतन रासो, जयचद्र यति कृत सईकी, सगता सादू कृत इन्द्रसिंघ री रूपक, कविया कर्णीदान कृत सूरज प्रकास और महाकवि सूर्यमल मिश्रण कृत वशभास्कर मे भी वर्णन मिलता है। परन्तु प्रथम तो ये ग्रथ युद्ध-घटना के बहुत बाद में लिखित कृतियां होने से तथा द्वितीय 'सूरज प्रकास' जैसे ग्रथ राजा जसवन्तसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा अभयसिंह के आश्रय मे रचे जाने के कारण ऐतिहा-सिक तथ्यों से कोसो दूर ही नही निकल गए हैं अपितु सत्यता की निर्मम हत्या भी की गई है। उदाहरण के लिए राजा जसवतसिह के उज्जयिनी युद्धस्थल से पलायन को किस साहस से छिपा कर पराजय को धूमिल करने का प्रयत्न किया गया है, इस रूप मे देखने योग्य है—

दस हजार रवदाळ पडे गज भिडज अपारा।
अग असि अर आपरै, वहे रत लहि विहारा॥
गूड हाडा गहलोत त्रूटे सिव चख ततरासै।
रूक झटो राठौड, सूर पडिया सतरासै॥
वचिग्रो न एक लख दळ विचै, जवन धकै चढ जेण सू।
'अवरंग' 'मुरादि' वचिया उभै, भाव न तूठी एण सू॥[1]

अतः ऐसी सूरत मे 'वचनिका' की भांति बिन्हैरासो ही एक ऐसा प्रामाणिक ग्रथ है, जो घटनाओं की फारसी आधारसम्मत पूरी-पूरी जानकारी ही नही देता है; अपितु घटनाकृत अतिशयोक्ति जैसे मान्य दोष से भी अछूता है।

उज्जयिनी युद्ध के लिए खिडिया जगा कृत 'वचनिका' एक महत्व का काव्य-ग्रथ है अतः रासो के साथ उसको ऐतिहासिक तुलना दर्शाना भी अनुपयुक्त नही होगा।

यद्यपि रासो का लेखक कविराव महेशदास वचनिकाकार कविवर खिड़िया जगा की भाति अपने आप को युद्ध वेला पर उज्जैन मे उपस्थित रहने और

---

[1] सूरजप्रकास, स. सीताराम लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, भा. २, पृ २१, छं २३।

आंखो देखा वर्णन करने का घोष तो नही करता है, पर वह इस युद्ध के उप-नेता अर्जुन गौड़ का दरबारी और आश्रित कवि था।[1] इससें उसे घटनाओं की विस्तृत जानकारी होना स्वाभाविक ही है। जहा तक उसके द्वारा वर्णित घटनाओं की सत्यता का प्रश्न है, उसने 'राजरूपक' के कर्त्ता बीरभाण रत्नू की तरह योद्धाओ के नाम, उनका कुल-परिचय, घटनाओ के स्थान और युद्ध की तिथि, वार, समय आदि दिए हैं और प्रत्येक अवसर का जिस विस्तार और आत्मविश्वास के साथ वर्णन किया है, उससे यह भली भाति प्रमाणित होता है कि कवि ने चाहे आखो से सारा हाल न भी देखा हो, पर उसने घटनाओ की सत्यता के नजदीक रहने का भरसक प्रयत्न किया है।

वचनिका मे राजा छत्रमणि यादव, राजा बैरीसिह शेखावत, राजा अमरसिह कछवाहा और विपक्षी सेना के शाहजादा-द्वय के अतिरिक्त अन्य बड़े योद्धाओं का नामोल्लेख न पाया जाना कवि खिड़िया के उज्जयिनी युद्ध के समय वहा उपस्थित रहने तथा आखो देखा वर्णन करने के कथन के प्रति एक स्वाभाविक सशय ही उत्पन्न नही करते, बल्कि उसकी एतिहासिकता की कमी की ओर भी एक सकेत दे जाते हैं। रासो मे ऐसा अभाव नही है। महेशदास ने उज्जयिनी सग्राम विषयक जो विवरण रासो मे दिए हैं, वे समकालीन ख्यात ग्रथों की भाति विस्तृत और अधिक प्रामाणिक, विश्वस्त और ऐतिहासिक महत्व के प्रतिपादक हैं। अत. इस युद्ध से सम्बन्धित अद्यावधि उपलब्ध ग्रथो में विस्तार, जानकारी और प्रामाणिकता की दृष्टि से रासो एक अन्यतम ऐतिहासिक महत्व की उपलब्धि है।

गुजरात के राज्यपाल शाहजादा औरगजेब के विद्रोह की गुप्त सूचना प्राप्त होने पर बादशाह शाहजहा के निर्देश से शाहजादा दाराशिकोह ने राजा जसवतसिह को औरगजेब को पददलित करने के लिए भेजने से पूर्व राजा के मन्सब और सम्मान में अभिवृद्धि की तथा उपहारो से पुरस्कृत किया और उसकी वैयक्तिक सेना के अतिरिक्त अनेक शाही मन्सबदारो के रूप में गौडों, राठौड़ो, हाडो, सीसोदियो, यादवो, बुन्देलो, कछवाहो, मरहठों और यवनो की सेनाओ को भी साथ मे विदा की थी। राजा जसवतसिंह के आगरा से मालवा की ओर प्रयाण करने के बाद शाहजादा दाराशिकोह और सम्राट शाहजहां को

[1] बिन्हैरासो, परिशिष्ट १ (ख) मे प्रकाशित गीत—'कदै गाळ बावै नहीं साख तेरह कमंध' गीत की एक अन्य प्राचीन प्रतिकृति के शीर्षक पर 'गीत अरजन गौड़ नू घर रा भाट रो कह्यो' अंकित मिला है।

मुराद के विद्रोह और सैनिक अभियान की भी सूचना मिल गई थी। दोनो शाहजादो की सम्मिलित सेना को राजा जसवतसिंह की सेना द्वारा पराजित कर पाना सदिग्ध और असम्भव समझ उसकी मदद के लिए कासिम खां के नेतृत्व में एक बड़ी सेना पीछे से और भेजी थी, जो युद्ध के पूर्व ही राजा जसवंतसिंह की सेना से जा मिली थी।

यद्यपि जसवतसिंह उज्जयिनी के इस युद्ध मे शाही पक्ष द्वारा मनोनीत प्रधान सेनानायक था। युद्ध के सचालन का नैतिक और वैधानिक दायित्व उस पर था। उसने उस दायित्व के निभाने की अपनी ओर से पूरी चेष्टा भी की थी। परन्तु वह औरंगजेब जैसे कैतव-प्रकृति, अग्रदर्शी और अनेक युद्धों मे अनुभव प्राप्त योद्धा की तुलना मे युद्धो की व्यावहारिकता से अनभिज्ञ और अपरिपक्व मति था। वह कधार आदि के युद्धो मे नियुक्त तो हुआ था, परन्तु स्वतन्त्र रूप से किसी युद्ध का सचालन करने का अवसर और अनुभव उसने प्राप्त नही किया था। अत वह उज्जयिनी मे विद्रोही शाहजादों से पूर्व पहुँच कर भी उनको पराजित करने के लिए कोई प्रभावशाली व्यवस्था नही कर सका। और न दोनो शाहजादो को नर्मदा को पार करने से तथा सम्मिलित होने से ही रोक सका। दोनों शाहजादो के नर्मदा नदी को पार कर आगे वढ आने की सूचना भी उसे तो राजा शिवराम गौड के द्वारा प्राप्त हुई, तव कही अपनी सेना के शिविर और युद्धस्थान की व्यवस्था की गई। इन तथ्यो से जसवन्तसिंह के गुप्तचर विभाग की निष्क्रियता, स्वय की अनुभवहीनता और रणनीति-पटुता के अभाव की स्पष्ट झलक मिल जाती है।

विद्रोही पक्ष के उज्जयिनी मे पहुँच जाने पर शाहजादो के दूत द्वारा जसवंतसिंह को युद्ध न करने और उनको वृद्ध वादशाह की मिजाजपोशी के लिए आगरा जाने देने की स्वीकृति की वात जिस साहस और निर्भीकता से अस्वीकृत की उसमे तो उसकी वुद्धिमानी और क्षत्रियोचित वीरता लक्षित होती है। परन्तु उसके वाद जिम युद्ध-कौशल की पटुता, तत्परता और सतर्कता वरतने की आवश्यकता थी, वह उससे वरती नही जा सकी। रासो के वर्णन के अनुसार तो जव शाहजादो का मार्गावरोध न करने का प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया और उभय पक्षो मे लडना निश्चित हो गया था तव हाडा और गौड़ वीरो ने विपक्षी सेना से लडने की प्रारम्भिक तैयारी सपन्न कर ली थी। उसके वाद राजा जसवतसिंह ने युद्धार्थ-व्यूह रचना करने का आयोजन किया और अपने जातीय वीरो को मत्रणा के लिये वुलाया। वचनिका मे भी सधि का उपक्रम समाप्त हो जाने पर युद्ध मंत्रणा का वर्णन मिलता है। परन्तु वचनिका और रासो दोनो

में हो राजा जसवंतसिंह के अपने सरक्तीय योद्धाओं के अतिरिक्त गौड़ों, हाडों, सीसोदियो, मरहठो, बुन्देलों और यवन योद्धाओ को युद्ध मंत्रणा में सम्मिलित न करना, जसवतसिंह के युद्ध करने के निर्णय की शिथिलता और हिलते हुए मन की ओर स्पष्ट इगित करता है ? वह युद्ध का प्रधान सेनानायक था । उसे हिन्दू और यवन योद्धाओ को युद्धार्थ आदेश देने चाहिये थे । उन्हे व्यूह रचना की मंत्रणा में सम्मिलित करना चाहिये था और नही तो कम से कम राव मुकदसिंह हाडा को तो उस मंत्रणा में आमत्रित करन आवश्यक था, जिसे वे उज्जयिनी की तरफ आते समय एक दिन कोटा मे ठहर तथा साथ लेकर आये थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नही किया ।

उपर्युक्त तथ्यो के उद्घाटन से स्पष्ट है कि दोनो सेनाओं मे युद्ध प्रारम्भ होने के कुछ पूर्व तक राजा जसवंतसिंह युद्ध मे भाग लेने का निर्णय नही कर पाए थे । विद्रोही शाहजादों को पददलित करने के लिए आई हुई शाही सेना मे कुछ ऐसे विघटनकारी तत्व मौजूद थे जिन पर राजा जसवतसिंह का कोई प्रभाव नही था । विभिन्न जातियो के प्रमुख योद्धाओं का विश्वास भी वे प्राप्त नही कर पाए थे, ऐसा आभास चर्चित विवरणो से मिलता है । अतः युद्ध में प्रवेश करते समय जसवतसिंह के मस्तिष्क मे पराजय की आशका रही हो तो असभव नही कहा जा सकता । यह शका इस तथ्य से और भी पुष्ट होती है कि युद्ध से पलायन करने वाले उसके सम्बन्धियो में राजा छत्रमणि यादव, राव अमरसिंह चद्रावत, और राजा बैरीसिंह शेखावत के नाम भी अकित है इस प्रकार सभी सम्बन्धी योद्धाओ के एक साथ युद्ध का त्याग करने के पीछे कुछ अन्य राजनैतिक कारण भी रहे होगे, अन्यथा ये सभी एक साथ युद्ध का त्याग कर अपने योद्धाचरित्र को कदापि कलकित नही करते। अत' सभवतया युद्ध के प्रारभकाल मे ही उसके परिणाम की जानकारी जसवतसिंह को हो गई थी ।

रासो और वचनिका मे एक और बडा और महत्वपूर्ण मतभेद यह है कि जसवतसिंह और कासिम खा के रण-त्याग करने के बाद सेना का सचालन-भार राजा रत्नसिंह पर रहा था अथवा अर्जुन गौड ने ग्रहण किया तथा जसवतसिंह आदि के पलायन कर जाने के बाद युद्ध चलता रहा था बन्द हो गया । रासो और वचनिका उनके पलायन कर जाने के बाद भी युद्ध जारी रहने की बात पर एक मत हैं । इस सम्बन्ध मे ख्यातो के अतिरिक्त भी अन्य स्रोतो से युद्ध के प्रारभ रहने की जानकारी मिलती है । राजा जसवतसिंह की सेना के साहनी कम्मा जगराज कुंभकरणोत परिहार का एक समकालीन डिंगल गीत मिला है, जिसके शीर्षक के लेख

से भी युद्ध के प्रारंभ रहने की पुष्टि होती है।[1] यह संभव भी है कि प्राचीन पद्धति के बड़े युद्ध किसी योद्धा या नायक विशेष के पलायन कर जाते ही सर्वथा समाप्त नही हो जाते थे। द्वितीय मारवाड़ की ख्यात की एक प्रति में राजा रत्नसिंह की मृत्यु निम्नलिखित योद्धाओं के साथ दी गई है और तदनन्तर राजा जसवतसिंह के रणत्याग कर मारवाड़ की ओर प्रस्थान करने का विवरण दिया है।[2] राजा रत्नसिंह की मृत्यु हरावल की पक्ति के प्रथम आक्रमण मे हो जाने की सूचना आलमगीर नामा और कतिपय फारसी स्रोतो के आधार पर लिखित डा० यदुनाथ सरकार की 'हिस्ट्री आफ औरगजेब' मे भी मिलता है। बिन्हैरासो भी रत्नसिंह की मृत्यु जसवतसिंह के पलायन करने से पूर्व ही स्वीकार करता है। इस प्रकार जसवत-सिंह के रण-क्षेत्र त्याग जाने के बाद के युद्ध सचालन की रत्नसिंह के विषय की कल्पना सारभूत नही जंचती। वैसे भी उस समय की सैनिक प्रणाली और युद्ध-पद्धति के अनुसार जातियो की सेनाए अपने कुल के नेता के नेतृत्व मे रहती थी। इस युद्ध मे भी वे अपने अपने जातीय घटको मे अपने सजातीय प्रमुखो के

---

[1] गीत साहणी कमा जगराज कुंभकरणोत पड़ीयार रो उजेण री वेढ बाबत महाराजा नूं सात कोस पोहचाय पाछो आय काम आयो।

—राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर का संग्रह

[2] राव रतन वगैरे घणां काम आया। हाथी खेत रहा। च्यार घडी पाछली रा पातसाही फौज वीचळी श्री महाराज घोडा ऊठाया। खास हाथी सूं वरछी वाही। नीवाब १ ठौड रह्यो नै पछै सीरदार आसकरणजी महेसजी बाग झाली नै मार्डा काढिया। सू वैसाख वद ऽऽ सोझत पधारीया। आखातीज सोझत करने वैसाख सुद ७ जोधपुर पधारीया नै उजीण री राड मे काम आया सु वीगत पातसाही उमराव दो फेरां पछै काम आया। (१) रा. राव रतनसिंघ म्हेसदासोत दलपत ऊदैसिंघोत जालोर राजथांन पछै रतलाम। (२) रा. भाई फतेसिंघ म्हेसदासोत। (३) ५० रजपूत वेली पचास। (४) बारहट जसो राव रतन रो। (५) गौड अरजन वीठलदासोत वेली ४० कांम आया। (६) नीवाब ईफतखार खा सीपाई २०० काम आया। (७) कासम खां मालक थी सो तो नीसरीयो नै सीपाई लडिया। (८) झालो दयालदास नरहरदास सावळदासोत रो आदमी ४० कांम आया। (६) झालो भाई राघोदास सूघो काम आयो। (१०) हाडो मुकंदसिंघ लोहो लाग नै काम आयो नै भाई ३ जुजारसिंह, कान्ह, माहणसिंघ माघोसिंघ रा काम आया। कीसोरसिंघ लोहो लागां सु ऊपाड़ियो आदमी २०० सीपाई सुं काम आया कोटा रा धणी। (११) मीसोदीया कीसनसिंघ नाराणदास सगतावत रो काम आयो। (१२) सीसोदीयो रुकमागद सुरताण अचलावत। (१३) रा. गोरधन चादावत कुंपावत चडावळ। (१४) सीसोदीयो सुजाणसीघ सूरजमलोत वेटा ५ सूं कांम आया साहपुरा रो धणी।—राठोडां री ख्यात सीताराम लाळस जोधपुर की सग्रह प्रति

नेतृत्व मे ही विभाजित थी और उसी व्यवस्था-क्रम के अधीन उन्होने युद्ध मे भाग लिया था। इसलिए जसवंतसिंह और कासिम खां के बाद किसी एक योद्धा के पूर्ण नेतृत्व की धारणा उचित नही लगती।

रासो में विपक्षी सेना-नायक औरगजेब और अर्जुन गौड़ का पारस्परिक युद्ध अन्त मे वर्णित है। रासोकार ने नायक से नायक का युद्ध करवा कर अर्जुन गौड़ को उप-सेनानायक और इस खण्ड के काव्य का नायक चित्रित कर उप-सेनानायक की कोटि मे पहुचा दिया है। उल्लिखित तथ्यों के कारण वचनिका के आधार पर प्रतिष्ठापक उज्जयिनी युद्ध के उप-सेनानायक राजा रत्नसिंह के मृत्युसमय का प्रश्न फिर भी जीवित रह जाता है, जिस पर इतिहास के विद्वानो को उपर्युक्त संदर्भो के आधार पर पुनः विचार करना है।

तृतीय, वचनिका मे जहा राजा जसवतसिंह और राठौड़ सेना के योद्धाओ का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, वहां रासो मे इस युद्ध मे सम्मिलित एव वीरगति पाने वाले और पलायन करने वाले—सभी योद्धाओं पर समुचित प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार युद्ध में शरीक योद्धाओ के साथ न्याय तो दर्शाया ही है, पर साथ ही काव्य के महत्व को व्यापकता और विस्तार भी प्रदान कर दिया है।

कवि ने राजा जसवंतसिंह, राव मुकदसिंह और अर्जुन गौड का अपनी-अपनी सेनाओ सहित अलग अलग चित्रण किया है, जिससे राजपूत-युद्ध प्रणाली के अनुसार तीनो प्रमुख योद्धाओ का अलग और स्वतंत्र अस्तित्व भी स्पष्ट हो गया है, जो उचित और प्रमाण सम्मत है। राव मुकदसिंह और अर्जुन गौड़ ने इस युद्ध मे बलिदान होकर जिस वीरता और स्वामि-धर्म-निष्ठता का परिचय दिया, वह बहुत ध्यान देने योग्य है। मुकदसिंह ने जहा कधार के युद्ध में दाराशिकोह के सहयोगी निजाबत खां को स्पष्ट रूप से यह जवाब दिया था कि 'ये लोग, जो मेरे साथ हैं, साधारण किराये के टट्टू नही हैं, वे मेरे भाई-बद और नातेदार हैं। मैं उनको वहां नही भेज सकता हू जहा मैं स्वय नही जाना चाहता हू।'[1] वहीं इस युद्ध मे, उसी ने परिस्थिति की गभीरता और शाहजहां के वृद्धावस्था के वचनो को ध्यान में रख कर अपना ही नही अपने भाइयो और अन्य साथियो का सर्वस्व युद्ध-वेदी पर चढा दिया।

इन प्रसगो के अतिरिक्त कवि ने शाहजादो के उज्जयिनी की ओर आते समय

---

[1] दाराशिकोह, डा० कालिकारञ्जन कानूनगो, पृ: ३९

मांडू और आसेर दुर्गों को हस्तगत करने तथा वहां के दुर्गपालों को अपने साथ मिलाने के प्रयत्न-प्रसगों, राणा राजसिंह से सैनिक सहायता प्राप्त करने के आयोजन आदि ऐतिहासिक सदर्भों की ओर भी आवश्यक सकेत दिए हैं।[1]

उपर्यंकित इन ऐतिहासिक तथ्यो के अतिरिक्त भी रासो में योद्धाओं की वेशभूषा, विभिन्न प्रकार के कवचो, आयुध-प्रकारो, अश्व-गजो की नस्लो, व्यूह रचनाओ और अप्सराओ के वर्णन के रूप मे नारी समाज के आभूषणो, पोशाक, पूजा-पाठ, दान-पुण्य आदि का वर्णन देखने योग्य है, जो सास्कृतिक और समाज-शास्त्रीय अध्ययन की सामग्री प्रदान करते हैं।

उज्जयिनी युद्ध के नायक का निर्णय

विन्हैरासो मे वर्णित उज्जयिनी युद्ध के दो प्रसगों से यह विदित होता है कि शाही सेना के प्रधान सेनानायक राजा जसवतसिंह राठौड थे। उन मे प्रथम तो यह कि बादशाह शाहजहाँ और शाहजादा दाराशिकोह को जब यह विश्वस्त सम्वाद मिला कि मालवा मे शाहजादा मुराद ने अपने आपको बादशाह घोषित कर दिया है और गुजरात का शासक औरगजेब भी उससे मिल गया है और वे दोनो अपनी-अपनी प्रान्तीय सेनाओ को सुगठित कर दिल्ली और आगरा को अधिकृत करने के लिए प्रस्थान करने की योजना मे रत हैं, तब उन्होने जोधपुर के राठौड नरेश को दरबार मे आमन्त्रित किया और उनकी प्रशसा करते हुए कहा—

यम साहि दारा ऊचरै, हजरति फुरमाये।
तैं भुजा दिल्ली तखत, गजपत्ति जाये॥

तदनन्तर राजा के द्वारा शाहजादो का अवरोध करने की स्वीकृति प्राप्त कर बादशाह की तरफ से शाहजादा दाराशिकोह ने उनके पचहजारी मन्सब मे अभिवृद्धि कर एक साथ सप्तहजारी बनाया और पांच गज, एक सौ अश्व तथा सिरपाव प्रदान कर सम्मानित किया तथा उनके सहयोग के लिये अनेक मन्सवदार, सामत, राजा, राव, उमराव, और यवन योद्धाओ को नियुक्त कर मालवा की ओर विदा किया।

द्वितीय दोनो विद्रोही शाहजादो ने शाही सेना द्वारा उज्जयिनी के पास आगरा जाने का मार्ग अवरुद्ध पाकर राजा जसवतसिंह को मार्ग न रोकने और आगरा जाने देने का दूत के साथ अनुरोध करना जो राजा जसवतसिंह के सेना-

[1] इस तथ्य के प्रमाण के लिए देखें राणा राजसिंह के नाम औरगजेब के पञ्जे के निशान वाले पत्र, वीर विनोद, कविराजा श्यामलदास, द्वि. भा, पृ. ४१४-४२३

नायक होने तथा काव्य के नायक की भी भूमिका का निर्माण करता है। अतः यहाँ तक तो जसवंतसिंह के सेनानायक और काव्यनायक होने में कोई सदेह नही उठता है, परन्तु तदुपरान्त युद्ध की मत्रणा, सेनाओ की तैयारी, मोर्चा बन्दी, व्यूह-रचना और राजा जसवतसिंह, राव मुकदसिंह तथा अर्जुन गौड तीनो की सेनाओ का युद्धप्रवेश और उनकी सवारी का अलग-अलग रूप मे समानस्तर पर वर्णन करना राजा जसवतसिंह के प्रधान सेनापति और काव्य-नायक के अधिकार के सम्मुख एक शकाजनित समस्या उत्पन्न कर देता है । इस प्रकार युद्ध मे प्रवेश करते समय तीनो योद्धाओ को एक समान स्थिति और स्तर पर ला बिठाता है ।

अर्जुन गौड़ द्वारा अपने दूत के माध्यम से यह कहलवाना कि "शाहजादे युद्ध हेतु पूरी तरह सन्नद्ध हो कर सिर पर आ लगे हैं और राजा जसवतसिंह तैयारी तो दूर रही पर अभी तक शैय्या से उठा तक नही है" से लगता है कि जसवतसिंह ने युद्ध मे भाग लने के प्रति कोई उत्साहजनक निर्णय तब तक नही लिया था ।[1] राजा जसवतसिंह के प्रति उपर्युक्त कथन उसके प्रधान सेनानायक के प्रति असन्तोष ही प्रकट नही करता, उसके सेना के नायकत्व के प्रधानत्व के अधिकार पर भी आघात करता है । यद्यपि जसवंतसिंह ने युद्ध मे भाग लिया और उसकी सेना के राठौड, भाटी, कछवाहे आदि अनेक सामन्त रण में पराक्रम दिखा कर वीरगति को प्राप्त हुए । जसवंतसिंह को रणक्षेत्र छोडने के लिए बलात् बाधित किया गया। राव मुकदसिंह हाडा भी अपूर्व शौर्य्य-प्रदर्शन कर रण खेत रहा। तब तीनो नायकों मे एक अर्जुन गौड अवशेष रहा। उसने स्नान, आराध्य पूजा और विप्रो को स्वर्णादि दान कर प्रतिनायक शाह-जादा औरगजेब का सामुख्य किया । अपने योद्धाओ द्वारा प्रतिनायक पर आक्र-

---

[1] 'अजरा' बसीठी उल्लहे, दळ 'मुकदेस' दुबाह ।
'जसमत' अजै न जागियो, सिर लग्गा पतसाह ॥

मुणे अजमाल मुकदेस हूता मरद्द ।
साहिजादा बिन्है आय चढ़िया सरद्द ॥
मारुवै राव काचो मत मांडियो ।
तिजड गही बिन्है फौजां सिरै ताडियो ॥
पहर राति हूता गहर बाणा पडै ।
असूर दिल्ली तणै राज लेवा अडै ॥
'सूरहर' देखिये नको भाभो सम्मरां ।
दाखवै यतां ऊपरां खालो डम्मरां ॥

मण करने के लिए उसकी पहचान के चिह्नादि के बाबत पूछे जाने पर वह कहता है—

जित मेक रद्द दखिखणावं।
तसं ऊपरां लोह सन्दूक लावं॥

दिढ़े गाढ़ माफीस बैठो दुबाहं।
सही जांणिजै वोह अवरग साह॥

तदनन्तर वह अपने योद्धाओं सहित औरगजेब से सामुख्य युद्ध कर धराशायी हो जाता है।

अतः उल्लिखित घटना-प्रसगों से निम्नाकित तथ्यो का उद्घाट होता है—

(१) युद्ध-भूमि मे सक्रिय भाग लेने की अन्तिम मंत्रणा मे राजा जसवतसिंह का राव मुकंदसिंह, अर्जुन गौड आदि को न बुलाना तथा उनके यहाँ स्वय या प्रतिनिधि को न भेजना और जसवतसिंह से आदेश लिए बिना ही युद्ध का प्रारम्भ होना।

(२) जसवंतसिंह, मुकंदसिंह और अर्जुन की सवारियो और युद्ध का अलग-अलग वर्णन करना, जो नेतृत्व को युद्धस्थल मे तीन भागो मे विभाजित कर देता है।

(३) प्रतिपक्षी सेना के नायक औरगजेब से अर्जुन गौड़ का युद्ध करवाना, जिससे साकेतिक रूप मे यह पुष्टि होती है कि इस युद्ध में अन्तिम रूप से नायकत्व का सेहरा अर्जुन गौड़ पर आ जाता है। डिंगल की प्राचीन काव्य-परम्परा मे भी सेनानायको के प्रत्यक्ष युद्ध को बड़ा महत्त्व देने की परिपाटी रही है, उसका निर्वाह भी इस प्रकार से हो गया है।

धौलपुर युद्ध के नायक का निर्णय

विन्हैरासो के इस द्वितीय खण्ड मे शाहजादा दाराशिकोह और विद्रोही शाहजादे औरगजेव तथा मुराद के धौलपुर (सामूगढ) के युद्ध का वर्णन है। यह ऐतिहासिक युद्ध दि० जेष्ठ सुदि ८, सवत् १७१५ (२९ मई, १६५८ ई०) मे हुआ था। यद्यपि शाही सेना का सेनाध्यक्ष स्वयं युवराज शाहजादा दाराशिकोह था, किन्तु युद्ध का पासा पलटते जान वह उद्वेलित हो युद्ध से पलायन कर गया था। अत. कवि ने उपसेनानायक राव शत्रुशाल हाडा और रुस्तमखा बहादुर तथा उनके सहयोगी नायक राजा शिवराम गौड, राजा रामसिंह भिनाय,

राजा रूपसिंह किशनगढ़ और राजा भीम गौड़ जो कि रणभूमि में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे, का विस्तार से वर्णन किया है। कवि ने उज्जयिनी के युद्ध में जिस प्रकार अर्जुन गौड को उपनायक सिद्ध किया है, उसी प्रकार इस खण्ड में राव शत्रुशाल हाडा को उपसेनानायक मान कर उसका शाहजादे औरंगजेब और मुराद से प्रत्यक्ष युद्ध करवाया है, जिसकी इतिहास ग्रथों से भी पुष्टि होती है। वैसे भी राव शत्रुशाल हाडा शाही पक्ष के इस युद्ध में सम्मिलित योद्धाओ मे सब से बड़ा मन्सबदार, अनेक युद्धो का साक्षात् अनुभवी योद्धा था तथा वह विजय अथवा प्राणोत्सर्ग की प्रतिज्ञा के साथ युद्ध में प्रविष्ट हुआ था। बादशाह ने स्वयं उसके नाम भेजे गए फरमान मे सेना-नायक का दायित्व उस पर डाला था।[1]

विदेशी इतिहासकार जेम्स टॉड अपने प्रसिद्ध ग्रथ 'एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज आफ राजस्थान' मे राव शत्रुशाल की प्रतिज्ञा को दोहराते हुए लिखता हैं कि—'हमारा कोई भी सैनिक युद्ध से भाग नही सकता। जो राजपूत डर कर युद्ध से भागता है, वह मरने पर नरक जाता है। मैं बादशाह की तरफ से युद्ध करने आया हूँ। मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि युद्ध में या तो विजय प्राप्त करूगा, अन्यथा प्राण दे दूगा।' इसलिए राव शत्रुशाल के चरित्र को रासो में विस्तार देना उचित और युक्ति-मान्य है।

रासो के इस भाग में वर्णित घटना प्रसगो के विषय में फारसी तवारीखो, ख्यातो और राजस्थान तथा उसके भूतपूर्व राज्यो के इतिहास ग्रथो में बिखरा हुआ और अधूरा वर्णन तो मिलता है परन्तु जैसा रासो में एक साथ दोनो पक्षो के हिन्दू और मुसलमान योद्धाओ का उल्लेख प्राप्त होता है, वैसा नही। इस दृष्टि से रासो का यह धौलपुर युद्ध खण्ड भी बड़ा उपयोगी और ऐतिहासिक महत्त्व का है।

धौलपुर के इस युद्ध का ऐतिहासिक काव्य ग्रथो में वशभास्कर में विस्तार के साथ वर्णन हुआ है, पर उसमें भी हाडा वीरो के अतिरिक्त उस युद्ध में भाग लेने वाले अन्य कतिपय हिन्दू-मुस्लिम वीरो का नामोल्लेख नही मिलता है। एक अन्य चारण कवि काना कविया कृत 'राव सत्रुसाल रा कवित्त' नाम की एक उल्लेखनीय कृति और प्राप्त है, पर वह खण्डित है। राव शत्रुशाल के चरित्र पर तो उसके प्राप्त अश में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है, पर अन्य योद्धाओ की

[1] बूदी रा फरमाण विच, इम लिखियो आदाब।
भूप सता थारै भुजा, अब म्हारै घर आव॥
—वशभास्कर, सत्रसाल चरित्र-महाकवि सूर्यमल मिश्रण

उपेक्षा उसकी ऐतिहासिक उपादेयता को सीमित बना देती है। कुछ साहित्य-इतिहास-वेत्ताओ ने कवि वृन्द लिखित 'किशनगढ री वचनिका' कृति का भी यत्र तत्र नामोल्लेख किया है, जो इस युद्ध को आधार बना कर लिखी गई कही जाती है पर वह कृति हमारे देखने में नही आई है। जहाँ तक हमें मालूम हुआ है। डॉ० मोतीलाल मेनारिया के सिवाय अन्य किसी विद्वान ने उसकी खोज करने का यत्न नही किया है और उन्ही के स्रोताधार पर उसका नामोल्लेख करते आ रहे हैं। इनके अतिरिक्त महाकवि भूषण रचित 'सत्रसाल दसक' में भी धौलपुर के सग्राम का वर्णन मिलता है, पर उसमे भी शत्रुशाल का काव्यात्मक वर्णन ही अधिक है। अन्य योद्धाओ तथा युद्ध के इतिवृत्त की दृष्टि से उसका विशेष महत्त्व नही है। ऐसी दशा मे उसके ऐतिहासिक वर्णन के बारे मे कुछ भी कहना सगत नहीहोगा। अतः प्राप्त इतिहासो और ऐतिहासिक काव्य ग्रथो में विन्है-रासो का यह धौलपुर युद्ध-वर्णन खण्ड भी उज्जयिनी खण्ड की भाति ही ऐतिहासिक उपयोगिता और महत्त्व का है।

बहादुरपुर युद्ध के नायक का निर्णय

जसा कि उज्जयिनी के युद्ध के प्रारभ मे इगित कर आए हैं कि बादशाह शाहजहा के तीनो शाहजादो मे सब से प्रथम द्वितीय शाहजादे शाहशुजा ने अपने प्रान्त बगाल मे विद्रोह का प्रारभ किया था। उसने अपनी प्रान्तीय राज-धानी राजमहल मे शाही ताज धारण कर बिहार को पार कर बनारस के पास बहादुरपुर मे अपनी सेना को ला जमाया था। जब वृद्ध बादशाह और युवराज दाराशिकोह को शुजा के विप्लव का सम्वाद प्राप्त हुआ तो उन्होने मिर्जा राजा जयसिह की सरक्षकता मे शाहजादा सुलेमानशिकोह को सेनापति नियत कर उसे पददलित करने के लिए भेजा। शाह शुजा और शाही सेना के मध्य मगलवार, फाल्गुन सुदि एकादसी, सवत् १७१४ (१४ फरवरी, १६५८) को यह युद्ध हुआ। उपर्युक्त युद्ध के विषय मे इतिहासो, ख्यातो और फुटकर गीत, दोहो कवित्तो और सोरठो के अलावा कोई महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रथ उपलब्ध नही होता। प्राप्त ग्रथो मे भी बहुत ही सक्षिप्त और चलता उल्लेख ही अधिक हुआ है। रासो के इस प्रकरण मे दोनो सेनाओ के प्रमुख वीरो, शाह शुजा के आक्रमण अभियान की तैयारी और शाही सेनानायक सुलेमानशिकोह, मिर्जा राजा जयसिह, राजा अनिरुद्धसिह गौड और राव रायसिह नागौर प्रभृति बड़े योद्धाओं के अतिरिक्त उदयभानु राठौड, भोजराज खगारोत, नबाब दलेलखान, राव कल्याणसिह नरुका, कुशलसिह नाथावत, गोविन्ददास ऊहड, महासिह शेखावत आदि अनेकानेक वीरो की समग्र जानकारी दी गई है। युद्ध का सेनानायक

कवि ने शाहजादा सुलेमानशिकोह तथा उपसेनानायक मिर्जा राजा जयसिंह और राजा अनिरुद्धसिंह गौड को चित्रित किया है, जो फारसी अभिलेखो और गौड़ो की वशावली आदि ग्रथो से भी सही प्रमाणित होता है।

इस प्रकार कवि ने विद्रोही शाहजादो के तीनो युद्धो का इस ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ में वर्णन किया है तथा मध्यकालीन इतिहास, राजनीति और बादशाह अकबर की सहिष्णुता और तेजके युग के अन्त का इतिहास सजोया है । अत. यह ग्रथ शाहजहा के शासनकाल और उसके पुत्रो के उत्तराधिकार के तीनो युद्ध के महत्वपूर्ण वर्णनो का ग्रथ है।

रासो का नामकरण और अप्रसिद्धि के कारण

बिन्हैरासो का नामकरण— भारतीय साहित्य मे रासो-सज्ञक ग्रथो की एक दीर्घकालीन परम्परा चली आ रही है। इस परम्परा मे जहा सन्देश रासक, पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो, राम रासो, खुमाण रासो, हमीर रासो और राणा रासो जैसे महाकाय ग्रथ प्राप्त हैं, वहा जती रासो, बाणिया रासो, खीचड़ रासो, ऊन्दर रासो और घेनु रासो जैसी लघु हास्यप्रधान कृतियाँ भी बहुलता से मिलती हैं। अमूमन ऐसी रचनाएं काव्य के प्रधान नायको अथवा युद्ध-घटनाओ के नामो से सम्बोधित मिलती हैं, पर बिन्हैरासो का नामकरण उपर्युक्त श्रणी से भिन्न प्रकार का है। कवि का इस नामकरण के पीछे क्या अभिप्राय रहा है, यह तो स्पष्ट नही कहा जा सकता, पर ऐसा लगता है कि उसके मस्तिष्क मे ग्रथारभ के समय उज्जयिनी और धौलपुर के दो युद्धों का वर्णन करने का विचार रहा होगा। क्योकि राजस्थानी मे 'बिन्है' शब्द दो के लिए और 'रासो' युद्ध के लिए प्रयोग में आता हैं। इसलिए कवि ने इसे 'बिन्हैरासो' नाम दिया होगा। फिर जब वह तृतीय युद्ध को भी लिखने बैठा होगा तब उसके मन में नाम की सार्थकता का प्रश्न भी शायद उठा होगा, पर इससे पूर्व दोनो युद्धो की प्रसिद्धि और चर्चा अन्य विद्वानो तक फैल गई होगी। ऐसी स्थिति में नाम में परिवर्त्तन करना समीचीन न जान कवि ने उस नाम को पूर्ववत् ही रहने दिया हो तो यह सभावना हो सकती है। वैसे वह गौड क्षत्रियो का आश्रित कवि था और बिन्हैरासो मे गौड़ो का सर्वाधिक वर्णन है। इसलिए अपने वीर आश्रयदाताओ के यश का विनय पूर्वक प्रसारण करने के लिए ग्रथ का नाम 'बिन्हैरासो' रखा गया हो तो भी युक्ति-सगत हो सकता है। गौडो की वशावली में एक स्थल पर कवि ने इस ओर सकेत भी दिया है कि 'नाम बिन्हैरासो दियो, बिन्है करे सब कोय।' यह नाम कवि ने किसी भी प्रयोजन से रखा हो, फिर भी रासो नामक ग्रथों की परंपरा में इस ग्रथ का अपना अलग स्थान है।

बिन्हैरासो की अप्रसिद्धि के कारण—पिछले पृष्ठो के विवेचन से यह भली भांति प्रकट हो जाता हैं कि बिन्हे रासो बादशाह शाहजहां के विद्रोही शाहजादों के उत्तराधिकार के युद्धों के वर्णनकी दृष्टि से एक सम-कालीन और प्राथमिक ऐतिहासिक महत्व का ग्रंथ है। उसमें मुगल दरबार के उपर्युक्त युद्धो में भाग लेने वाले सभी वंशो और शाखाओ के प्रमुख योद्धाओं का यथातथ्य वर्णन हुआ है जिसका विस्तृत उल्लेख हम कर आए हैं फिर भी ग्रथ की एक से अधिक प्रतिलिपिया न मिलने और समुचित प्रसार न पाने का क्या कारण रहा, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक हैं। हमारी विनम्र राय मे इसके प्रचार न पाने में मुख्यतया चार कारण हो सकते है। प्रथम तो यह कि इस ग्रथ के तीनो खण्डों मे अन्य जातीय योद्धाओ के अनुपात मे गौड-योद्धाओ का वर्णन सबसे अधिक किया गया है। कारण कि इन युद्धो मे गौड और हाडा वीरो का ही अधिक सहार हुआ था। गौडो में तो राजा अनिरुद्ध-सिंह को छोड कर अन्य सभी बडे योद्धा और मन्सबदार वीरगति को प्राप्त हो गए थे। अत किसी बड़े राजा के जीवित न रहने और उत्तराधिकारियो को भी औरगजेब द्वारा अपने-अपने राज्यो से वचित कर देने के कारण ग्रथ मे वर्णित अपने पूर्वजो के कीर्ति-विस्तार को प्रोत्साहन कौन देता ? द्वितीय, उज्जयिनी युद्ध मे राठौडो के स्वामी राजा जसवतसिंह के रण-पलायन का कवि ने तथ्या-तथ्य वर्णन किया है, इसलिए राठौड समाज में उसके प्रति उपेक्षित भाव बरता जाना अस्वाभाविक नही कहा जा सकता। तृतीय, औरगजेब गौडो से सख्त रुष्ट था और उसने बादशाह बनने के बाद सवत् १७१७ मे गौडो के प्रति अपना रोष प्रकट करते हुए गौडो का वतन गौडावाटी तक उनसे छीन कर मेड़तिया राठौडो को दे दिया था। इसलिए बादशाह के विरुद्ध और उसके प्रतिद्वन्द्वियो के अनुकूल वर्णन को उसके मन्सबदार और कृपापात्र राजागण सुनने को कब और कैसे तैयार होते ? चतुर्थ समान वृत्ति होने के कारण रावो और चारणों में प्रारभ से ही आपस में विरोध चला आ रहा था। चारण संख्या मे अधिक थे इसलिए यहा के काव्य-प्रचार मे उनका हाथ मुख्य रूप मे रहा और चारण कवि जगा खिडिया तथा कुंभकर्ण सादू द्वारा रचित क्रमशः रतनसिंघजी महेस-दासौत दलपतौत री वचनिका तथा रतन रासो इन्ही घटनाओ को लेकर लिखे गए ग्रन्थ हैं, जिनमे नायकत्व, योद्धाओ के शौर्य तथा घटनाचक्र आदि का वर्णन राठौड आदि सामन्तो के अनुकूल करने से उनका प्रचार इन सामन्तो के इलाको में अधिक होना स्वाभाविक था। क्यों कि जैसा हम पहले बता आये हैं, इस रासो मे उपर्युक्त दोनो कवियों से इस कवि का पर्याप्त मतभेद रहा है और उसमे गौडो

तथा हाड़ा वीरो की प्रशसा अधिक की है । चारणों ने तथा उनके आश्रयदाताओ ने कृति को अपने समाज में महत्त्व नही दिया और इसीलिए इसकी प्रतिलिपियाँ भी अधिक नही हुईं, जो कि उस समय के प्रचार का प्रमुख साधन थी ।

ऐसा केवल इस कृति के साथ ही हुआ हो सो बात नही, राजनैतिक उथल-पुथल, राजवंशों के पतन और उत्थान के साथ लगे हुए कवि-समाज की कृतियाँ इस प्रकार के अनेक कारणों से न केवल काल-कवलित हो गईं, अपितु अभी तक अधकार के गह्वर मे छिपी भी पड़ी हैं और कई महत्वपूर्ण कृतियाँ त्रुटित ग्रंथो में केवल अपनी बानगी प्रदर्शित कर उन महान् कवियो के काव्य-कौशल के नमूने को बचा पाई हैं। यह सब कुछ होते हुए भी जिन काव्य-कृतियो का अपना ऐतिहासिक तथा साहित्यिक मूल्य है, वे जब भी प्रकाश मे आती हैं तो निश्चित रूप से हमारे साहित्य के गौरव की वृद्धि करती हैं, चाहे इतिहास के किसी काल मे किन्ही कारणो से उसकी अवज्ञा क्यो न करदी गई हो ।

कवि की अन्य कृतियाँ

बिन्हैरासो के अतिरिक्त कवि की निम्नलिखित रचनाएँ उपलब्ध हैं—

(१) राव अमरसिंघ नागौर को साको, (२) राणा राजसिंघ का गुण रूपक, (३) गोडो की वशावली (४) रघुनाथ चरित नवरस वेलि और (५) 'राजा जयसिंह का छप्पय' तथा कतिपय योद्धाओ पर रचित डिंगल गीत । राव अमरसिंह का साका में कवि ने विभिन्न प्रकार के चौतीस छदो में नागौर के स्वामी राव अमरसिंह राठौड़ के पूर्व-पुरुष राव मालदेव, उदयसिंह, शूरसिंह और गजसिंह का सक्षिप्त रूप में नामोल्लेख कर राव अमरसिंह के पराक्रम और उनके राजकुमार रायसिंह का जन्म-वर्णन किया है । तदनन्तर आगरा के दुर्ग मे बादशाह शाहजहाँ के समक्ष सलाबत खां को मारने तथा अर्जुन गौड़ आदि योद्धाओ के सामूहिक आक्रमण से स्वयं के मारे जाने का पतेवार वर्णन किया है। 'राणा राजसिंघ का गुण रूपक' कवि की अट्ठावन छदो की कृति है । इसमे मेवाड़ की प्राकृतिक सुषमा, गिरि और सरोवरो मे वन्य-जीवों का स्वच्छन्द विहार, उदयपुर नगर, वहाँ के राजप्रासाद, सरोवर, राणा की सवारी, उनके हाथी, हाथियो की लड़ाइयाँ आदि का बड़ा सजीव और चित्ताकर्षक वर्णन किया है । शाहजादा औरंगजेब द्वारा सहायता के लिए प्रार्थना करने और फलस्वरूप अप्रकट रूप मे उपरोक्त सकेतित सहायता की मंशा से राणा राजसिंह का ससैन्य प्रयाण कर मालपुरा को लूटने तथा मार्ग मे आने वाले शाहपुरा आदि बादशाह के सहायक

राज्यो को दण्डित करने का उल्लेख किया है। कवि ने मालपुरा को लूटने के लिये किए गए सैनिक अभियान मे सम्मिलित सामन्त-उमरावो का बडा महिमामय वर्णन किया है। 'गौड़ो की वशावली' कवि की एक अन्य ऐतिहासिक महत्व की दुर्लभ कृति है। इसमे गौड़ क्षत्रियो का इतिहास, पीढियाँ और उनके युद्धो पर प्रकाश डाला गया है। बादशाह शाहजहाँ के राज्य-प्राप्ति के प्रयत्नो मे उसके प्रभावशाली और विश्वस्त सहयोगी गोपालदास गौड और उसके वशज राजा अनिरुद्धसिंह, राजा शिवराम, अर्जुन, भीम आदि सभी योद्धाओ का सारग्राही परिचय दिया है। यद्यपि इसका प्रारंभिक अंग कीटभक्षित होने से त्रुटित है, फिर भी गौड़ो के इतिहास और अन्य अनेक घटनाओ के कारण यह कृति अति उपादेय है। रघुनाथ चरित नवरस वेलि एक सौ सत्ताईस छदो की व्रजभाषा की रचना है। इसमे नवरसो के माध्यम से श्री रामचन्द्र के चरित्र का वर्णन किया गया है। यह वर्णन प्राप्त प्रति मे बालकाण्ड तक ही मिला है। अतएव कहा नही जा सकता कि ग्रथ का परिमाण कितना था। कवि इस कृति में रसो के माध्यम से वर्णन करने मे सफल नहीं हुआ है। अन्य छप्पय और डिंगल गीतो में कवि ने समसामयिक वीरो में राजा जयसिंह आमेर, दयालदास झाला, राजा रामसिंह कछवाहा आमेर और अर्जुन गौड का यश एवं वीरता का वर्णन किया है। मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पयो मे उनके द्वारा पुरन्दर का किला और छत्रपति शिवा मरहठा पर विजय प्राप्त करने का उल्लेख है। इस प्रकार 'रघुनाथ चरित नवरस वेलि' के सिवाय सभी कृतियाँ ऐतिहासिक उपयोगिता और महत्त्व की हैं। इसी दृष्टि से 'वेलि' को छोड़ अन्य कृतियो को परिशिष्ट में प्रकाशित कर दिया है।

आशा है परिशिष्ट मे दी गई ये कृतियाँ कवि के कृत्तित्व को सामूहिक रूप मे हृदयंगम करने मे सहायक सिद्ध होगी और सम्बन्धित विषयो पर कार्य करने वाले विद्वानो के लिए भी किसी न किसी रूप मे सहायक सिद्ध हो सकेगी।

बिन्हैरासो के सम्पादन मे एक ही प्रति का प्रयोग हुआ है कारण कि अनेक विध प्रयत्न करने पर भी इसकी दूसरी प्रति उपलब्ध नही हुई। प्रस्तुत प्रति पाच वर्ष पूर्व कवि के वशज श्री गोवर्द्धनसिहजी राव द्वारा उदयपुर के प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय कविराव मोहनसिहजी को प्राप्त हुई थी। तव कविराव जी पृथ्वीराज रासो के सम्पादन का कार्य सम्पन्न कर 'पृथ्वीराज रासो शब्दकोप' के निर्माण के कार्य मे लगे हुए थे। मैं उन दिनो साहित्य सस्थान, उदयपुर में शोधपत्रिका, त्रैमासिक पत्र का सम्पादन कार्य देख रहा था। एक दिन उन्होने 'रासो' की वह प्रति मेरे हाथ मे थमाते हुए कहा—यह 'बिन्हैरासो' की प्रति है, लीजिए आपको इसका सम्पादन करना है।' मैंने उनका आग्रह

स्वीकार किया और ग्रंथ की प्रतिलिपि का कार्य प्रारभ हुआ । तदनन्तर उसी वर्ष मैं उदयपुर से राजस्थानी शोधसंस्थान जोधपुर मे आ गया । यहा आने पर मैंने सस्थान के सचालक डॉ० नारायणसिंहजी भाटी को मेरा वह कार्य बताया और 'रासो' के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए उनसे आग्रह किया ।

उन्होने ग्रन्थ की उपादेयता का अनुभव कर प्रसन्नता व्यक्त की तथा राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित करवाने का सुझाव दिया । फिर मुझे साथ लेकर प्रतिष्ठान के उप सचालक श्रद्धेय गोपालनारायण जी बहुरा की सेवा मे ले गए । श्रद्धेय बहुराजी और भाटी जी ने प्रतिष्ठान के सम्मान्य सचालक पूज्यचरण पद्म श्री मुनि जिनविजयजी महाराज, पुरातत्वाचार्य के समक्ष ग्रथ की ऐतिहासिक और साहित्यिक उपयोगिता प्रकट की । पूज्य चरण ने मेरी प्रतिलिपि का अवलोकन कर मुझे सम्पादनार्थ आवश्यक निर्देश देते हुए कार्य सम्पन्न करने का आदेश दिया । एक वर्ष के अनवरत श्रम के पश्चात् यह कार्य सम्पन्न कर आज विद्वानो की सेवा मे इसे प्रस्तुत करते हुए मैं दो कारणो से विशेष प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हू । प्रथम तो यह कि ग्रन्थ ऐतिहासिक महत्व की अज्ञात कृति है । इसके प्रकाशन से कतिपय आदर्श चरित्र योद्धाओ का परिचय प्रकाश मे आएगा । द्वितीय मेरे अभिन्न मित्र स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी की इस रूप में इच्छा पूरी होने से उनकी स्वर्गीय आत्मा को सन्तोष मिलेगा ।

ग्रथ की सम्पादित प्रति की प्रतिलिपि सवत् १८७६ वैशाख शुक्ला २ सोमवार को इन्द्रगढ (कोटा) मे महताप (सिंह) के पुत्र जोरावरसिंह के पढने के लिए अगरजी के पुत्र प्रतापजी ने की थी । इन्द्रगढ के स्वामी महाराज शिवसिंहजी हाडा बड़े विद्यारसिक, विद्वान् और विद्वानो के गुणग्राहक थे । उनका अपना हस्तलिखित ग्रथों का बड़ा महत्वपूर्ण पुस्तकागार था, जो अब प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में सुरक्षित है । यद्यपि प्रतिलिपि-कर्त्ता ने रासो की इस प्रतिलिपि के विषय मे, यह किस की प्रति से नकल की गई है, कोई सकेत नही दिया है, फिर भी इन्द्रगढ में महाराज शिवसिंह के शासन काल में तैयार की जाने के कारण अनुमान किया जा सकता है कि महाराज शिवसिंह के सग्रहालय की प्रति के आधार पर ही इसकी अनुकृति हुई होगी ।

प्राचीन ग्रथों में आमतौर से छद-संख्या उस ग्रन्थ की समाप्ति पर अन्त मे एक ही स्थान पर लगाने की परम्परा-सी रही है । रासो की इस प्रति में भी छद-संख्या का वही पुरातन क्रम था । मैंने प्रतिलिपिकार के ही

क्रम को स्वीकार कर छद संख्या क्रम को यथावत् ही रहने दिया है। पाद टिप्पणियो के स्थान पर आवश्यक शब्दार्थ और परिशिष्ट भाग में सम्बद्ध ऐतिहासिक टिप्पणिया दी गई हैं। कवि के कृतित्व का विद्वान् सम्यक मूल्याकन कर सके, इस दृष्टि से उपयोगी समझ कर कवि की प्राप्त अन्य ऐतिहासिक कृतियाँ भी परिशिष्ट मे प्रकाशित कर दी गई हैं।

इस ग्रथ के सम्पादन मे मैंने राजस्थानी शोधसंस्थान के संचालक डॉ० नारायणसिंह जी भाटी से बराबर सहायता प्राप्त की है। सस्थान के अन्य आवश्यक कार्यो में अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी उन्होने मुझे जो सहयोग दिया है, वह मैं नही जानता कि किन शब्दो मे व्यक्त करूं। ऐतिहासिक स्थलो के स्पष्टीकरण और तत्सम्बन्धी टिप्पणियो को तैयार करने मे इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् महाराजकुमार डा० रघुबीरसिहजी, सीतामऊ का मुझे महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। महाराजकुमार साहब की कृपा को भी मै धन्यवाद अर्पण करने जैसी आज की चलती परम्परा से प्रकट करना नही चाहता। कवि-वश-परिचय की सामग्री कवि के वशज गोवर्द्धनसिहजी राव और स्वर्गीय कविराव मोहनसिंहजी की विदुषी धर्मपत्नी माजी मानकुवरीजी के यहा से प्राप्त हुई हैं। कठिन शब्दो के शब्दार्थ निर्णय मे राजस्थानी के विद्वान् श्री सीतारामजी लाळस का मुझे सहयोग मिला है।

पूज्यचरण पद्मश्री मुनिजी महाराज और श्रद्धेय गोपालनारायण जी बहुरा की तो कृपा का यह फल ही है कि प्रतिष्ठान से यह ग्रथ प्रकाशित हुआ। मुझे यह कार्य सम्पन्न करने का उन्होने जो अवसर प्रदान किया उसके लिए मै उन दोनो विद्वानो का विनम्रतापूर्वक आभार मानता हूँ। साथ ही साधना प्रेस के साहित्यानुरागी विद्वान् व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक के प्रकाशन-सहयोग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना भी मै अपना कर्तव्य समझता हूँ।

राजस्थानी शोध सस्थान
जोधपुर
३१ दिसम्बर, १९६५

—सौभाग्यसिह शेखावत

महेसदास राव कृत

बिन्हैरासो

(शाहजहाँ बादशाह के शाहजादों का उज्जयिनी, धौलपुर एवं पूर्व का युद्ध वर्णन)

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ महेसदासराव कृत बिन्हैरासो लिख्यते ॥

छंद साटिक

श्वेताअमर वैयसिता मुक्तासिरा मंगता
श्वेताअमर सोभ लवज चिहुर सोभ सजिता
रुक्मासिता रामनो श्वेता हंस अरुढिता
जगजिता श्वेता गुना सारिनी
वीना पुस्तक धारिता सरस्वती विद्या वर कारिनी ॥ १ ॥

छंद दोहा

देहु बुद्धि वर उक्तिका, रूपक जुक्ति बताय।
पूत पिता दळ द्वै जुड़े, भिन भिन बरणौं ताय ॥ २ ॥

छंद साटिक

सूडादड सिंदूर सोभ सिरसा देवादन अग्रिता।
लबोदर भुज चारि आयुध जुता पादाब लहु पीनता ॥
घूघर मेखळ घोर भौंर भमित्ता मुकटाभिर भोजिटा।
वन्दौ श्रीनाथ सुधि बुधि करा काव्येन कारायना ॥ ३ ॥

छंद दोहा

गणनायक घायक बिघन, सुधि बुधि नायक जाणि।
मैं बदौं सिर नाय कै, कारण सूर बखांणि ॥ ४ ॥

छंद छप्पय

श्री गुरु परम दयाल, गुरु गुण सागर जाणै।
गुरु गोविंद तै अधिक, गुरु कृत ईस मिलाणै ॥

---

१ छन्द सख्या एक त्रुटित है।

२. रूपक – काव्य वर्णन। जुक्ति – युक्ति। दळ द्व – बादशाह शाहजहाँ और उसके पुत्रो का दल। बरणौं – वर्णन करूं।

३ मेखळ – मेखला। घोर – ध्वनि। श्रीनाथ – भगवान् कृष्ण।

४. घायक – नष्ट करने वाले। नाय कै – नमन कर के।

गुरु देवै पद अभय, गुरु मति ज्ञान दिढावै ।
गुरु करवै अप जेमि, गुरु लघु हूत बढावै ।।
गुरु हूत मिळै जे व्है सफळ, गुरु बिन अफळ वखाणियै ।
गुरु चरण कज वदित कर, कारण गुरु कवि आणियै ।। ५ ।।

छंद दोहा

गुरु दाता द्याता गुरु, गुरु ज्ञाता सब जाणि ।
परम गुरु दीजै ऊकति, बरणौ सूर वखाणि ।। ६ ।।

चगता हू चगता जुटै, खितपति हुवौ सिघार ।
गुरु आखो मौहू उकति, जपौं गल्ह बिथार ।। ७ ।।

छंद पद्धरी

'अकबर जलालदीनह' दिलीस ।
सो तपै गयौ नव खड सीस ।।
'नूरदी साहि जहागोर' नूर ।
प्रथमादि सिरै तिण तेजपूर ।।
'साहिजिहान' साहिब्ब दीन ।
चहु चक्क जेर समसेर कीन ।।
सह मिळै आय दिल्ली सपाण ।
रस मिळै नही 'राजसी' राण ।। ८ ।।

छंद छप्पय

'साहिजिहा' पतिसाह, राह दहुवै सिर रज्जै ।
वाजा पूरब दिखण, उतर पछिम दिस बज्जै ।।
पूत सपूत स च्यारि, यळा चहुवै ज्या अप्पि ।
ठावा ठौहड़ा ठौहड, उथड थाणा करि थप्पि ।।

---

५ दिढावै – दृढ करता है। अप जेमि – आप जैसा ही। हूत – से। अफळ – निष्फल। चरण कज – चरण कमल।

६ द्याता – वन्दनीय। ऊकति – काव्य रचना की सूझ।

७ चगता – मुसलमान। खितपति – पृथ्वीपति। सिघार – सहार। आखो – कहो, प्रदान करो। जपौ – कहूं। गल्ह – कथा। बिथार – विस्तार सहित।

८ तेजपूर – पूर्ण शक्तिवान्। साहिजिहान – शाहजहाँ। चहुं चक्क – चारो खण्डो को। जेर – पराजित, अधीनस्थ। रस मिळै नहीं – पूर्णरूप से घुले मिले नही।

९ राह दहुवै – हिन्दू और मुसलमान। यळा – पृथ्वी। ठावा – मुख्य। थाणा – सैनिक

जाजुळी तेज जग चख्खि जिम, दुनिया ऊपरि देखियै ।
नव खड सप्त दीपह र्नरिंद, लोह गहै कुण लेखियै ।। ९ ।।

छंद पद्धरी

थिर ऊतर 'साहिदारा' स थप्पै ।
यळा पूरब साहि 'सूजा' स अप्पै ।।
जरा दिखिण साहि 'अवरग' जाणौ ।
वळ पछिम साहि 'मुरियाद' बखाणौ ।।
चहू देस अच्चाळ च्यारौ चगत्ता ।
करै च्यारहु येमि चौ बेद कथ्था ।।
दिली 'साहिजिहान' बैठौ दुबाह ।
येक पाय सेवै जीह दोय राह ।।
जीयप्पउ जहमत्ति जांणी जगत्त ।
खाली हुवौ तखत्त नै आतपत्त ।।
मही मडळ हूहळ कूक माचै ।
वळा च्यारि वाका दहाका स बाचै ।। १० ।।

छंद दोहा

'सूजे' पूरब साभळे, वाका ढिल्ली येह ।
आरभ जुध परठ्ठियौ, आरभ कीध स येह ।। ११ ।।

छंद त्रिभगी

'सूजा' सुलिताण श्रौह अमाण जाणि जवाण जमराणं ।
आरभ उमगे अगसु अगे तग तुरगे ताणाण ।।

थाने । जाजुळी – ज्वाजल्यमान । जग चख्खि – सूर्य । दीपह – द्वीप । लोह – शस्त्र ।

१०. थिरं – स्थिर । थप्पै – नियुक्त किया । अप्पै – प्रदान की । वळ – वल, फिर । अच्चाळ – अविचल, दृढ । दुबाह – श्रेष्ठ वीर । येक पाय – एक पैर पर खडे होकर । जीह – जिसकी । जीयप्पउ – जिन्दा ही । जहमत्ति – जहमत, कष्ट, मौत । आतपत्त– छत्र । वळा च्यारि – चारो शाहजादो की ताकतें, चारो ओर, चारो दिशाओ मे ।

११ सूजे – शाहजादा शुजा । साभळे – सुन कर । ढिल्ली – दिल्ली । जुध – युद्ध ।

पखराळ' पमगा नाग सनग्गा बाहि विहगा बाणास ।
गज झप स जग्गां धारै धज्जा ऊडि सरज्जा आकासं ॥
खड खड स खडिया आभि स अडिया जोधा जडिया जरदाळ ।
रत्थाह उचडिया खिभिदळ खडिया अनडा नटिया योहाळ ॥
दिल्लीसर दाव चित्त स चाव राजा राव उमराव ।
पुणि सैद पठाण ताणि कमाण गिडिक धाण गुमराव ॥
पौहमी पालट्ट थट्ट सुथट्ट बहै बिहट्ट पूरवय ।
सूजासाहि आया असा अधाया साहिजिहान सुणे सवय ॥ १२ ॥

छद छप्पय

सुणियौ 'साहिजिहान', येमि 'सूजा साहि' आया ।
पट्टण हदा तौडि, पाट द्रहबट्ट लुटाया ॥
असी सहस असवार, पार पैदळ कुण पावै ।
मेक सहस मातग, अरि गढ मूळ ऊचावै ॥
गज नाळि गजा सुत्रनाळि गणि, तोप जमूर जगळा तई ।
सीसाण बाण सोराण सजि, दीयण विधी फतै दई ॥ १३ ॥

छद दोहा

'साहिजिहा' 'दारा' सुणै, 'सूजा' आया साहि ।
कोके तोके कामरा, दहु राह रा दुबाहि ॥ १४ ॥

---

१२. पखराळ – घोडो के कवच । पमगां – घोडे । न ग – हाथी । बाहि – चलाते है । झप – तीव्र चाल । जग्गां – दुनिया मे, युद्ध मे । खडिया – पयान किया । आभि – आसमान । अडिया – लग गए । जोधा – योद्धा । जरदाळ – कवच युक्त । अनडां नडिया – वशन मे न आने वालो को वशन मे लिया । योहाळ – जाल (राजनीति) बिछा कर । दावं – दावा, दाव । गिडि – योद्धा । पौहमी – पृथ्वी । बिहट्ट – बिना राह के ही । अधाया – राज्य का भूखा, गति से ।

१३. पट्टण – शहर । पाट – कपाट । द्रहबट्ट – द्रव्य । मेक सहस – एक हजार । मूळ – जड से । गजनाळि – हाथियो द्वारा ढोई जाने वाली तोपें । सुत्रनाळि – ऊँटो द्वारा ढोई जाने वाली तोपें । जमूर – छोटी तोप । जगळा तई – एक प्रकार की बडी तोप । सीसांण – शीशा । सौरांण – बारूद ।

१४ कोके तोके – सूचना देकर इस अवसर पर बुलाया । दुबाहि – श्रेष्ठ योद्धा, दोनो हाथो मे प्रहार करने वाला ।

छंद छप्पय

दिली थंभ भड दूठ, कमध कूरंम कहाणा।
गणि हाडा बळि गौड, मोहरै पडी मडाणा ॥
'जसमंत' नै 'जैसीघ', 'सत्तो' दखि दीड सोहै।
धींगराज 'अनुरुद्ध', लाख लाखा दळ लोहै ॥
'दल्लेलखान' जेहादुरत्त, दळ प्रणाम तामे दुजा।
सिरदार 'साहिसल्लेमसा', भार सार 'रासा' भुज ॥१५॥

छंद त्रोटक

भुज भार यतां सिरदार भणै।
पति 'साहिजिहान' तिता प्रभणै ॥
दिस पूरब दुद पड़ै दहलं।
हुय कपिय भू द्रगपाळ हलं ॥
दर कूच खड़ैं 'जैसीघ' दिली।
मह अमर डमर रैंण मिळी ॥
तिण ऊपरि फौज उरैस तई।
गलवाज दिसौ दिसी फूटि गई ॥
सरदार 'सलेमा साह' जिसा।
उमराव 'जैसिंघ' 'रायसिंघ' असा ॥
'अनिरुद्ध' जोधार हरोळ अणी।
धरि पाण भुजां अजमेरि धणी ॥
कविलापति जोध विदा स किया।
गज हैंवर अमर कोटि दिया ॥ १६ ॥

छंद वेली भुजंगी

सजै साहि सल्लेम सेना सपाण।
प्रथमादि पूरब्ब कीधौ पयाण ॥

---

१५. **भडदूठ** – प्रचण्ड योद्धा। **मोहरै पडी** – सबसे आगे होकर। **सत्तो** – शत्रुशाल हाडा। **दीड** – (धीठ) योद्धा। **धींग** – बलवान्। **राज अनुरुद्ध** – राजा अनिरुद्ध गौड। **लोहै** – लोहा लेता है।

१६ **दुद** – द्वन्द्व, युद्ध। **हय कपिय** – कम्पायमान हुई। **उरैस** – तीव्र गति से चलायमान की। **गलवाज** – अफवाह। **हरोळअणी** – फौज के आगे का हिस्सा। **कविलापति** – बादशाह ने।

१७ **सपाणं** – दल बल सहित। **कीधौ पयाण** – प्रस्थान किया।

वजै सद्द नद्द छतीसं विहद्द ।
पुणै मेघ अग्राज तै भाद्रपद्द ।।
चढै सीघ 'जैसिंघ' राजा सचाळौ ।
सदा आतपत्तं दिली रख्खवाळौ ।।
वळै चढै 'रायसिंघ' राजा वडेरौ ।
भुजा जेमि मौजा गजा सीस फेरौ ।।
'अनौ' चढै राजा धणी अज्जमेरौ ।
सिहा पाखती झालिया समसेरौ ।।
'जसौ' चढै गिरमेर राजा विजाई ।
भुजा वणै 'अनुरुद्ध' रै जिसौ भाई ।।
'उदैभाण' जमराण चढियौ अकूणौ ।
दळा रीठ वागा मारुराव दूणौ ।।
'भोजौ' चढै 'खंगार' रौ लीध भारा ।
लखा भाजणा जोध चढै स लारा ।।
भड़ा 'भावसो' चढै 'रिणछोड़' भाई ।
पमाडा घणा खाटणां सिद्धि पाई ।।
दळा 'खान दल्लेल' चढै दुहेला ।
रुडा साथि चढै रुहेला रुहेला ।।
वळै सैद 'वादर' चढै स वेग ।
तिको वाहणो मैंगळा सीस तेग ।।
मुणै 'जाफर मीर' चढ्ढै मरद्द ।
सत्र कौण चपै जियारी सरद्द ।।
कडा-भीड चढै घडा सैद 'कासू' ।
वडा वाहरौ आणियो जिको वासू ।।

नद्द – नाद । छतीस – छत्तीस प्रकार के वाद्य । सचाळौ – युद्ध के लिए तत्पर । आतपत्तं – छत्र । विजाई – दूसरा । अकूणौ – पूर्ण ताकत रखने वाला । रीठ – शस्त्रों की झड़ी । वागां – वजने पर । लारां – पीछे । पमाडा घणा खाटणां – वीरोचित कीर्ति-गाथाओं का विजेता । रुहेला – मुसलमानों की जाति विशेष । सवेग – शीघ्रता से । मैंगळां – हाथियों के । चपै – दैया मर्के । कडा-भीड – कवच आदि से पूरी तरह सज्जित । घडा – फौज । वाहरौ – हथवाह करने वाला, प्रहार करने वाला ।

हलक्के दळ जमना नीर वावं ।
सतबीव जोधा तणा हूहरावं ॥ १७ ॥

वचनिका

दिली के कासीद दक्षिण को धाये ।
जिहानाबाद सेती रोज च्यारि मे औरगाबाद आये ।
फजरि का बखत था साहि 'औरंग' मिस करते थे ।
पातिसाहो के अदेसे दिल के बीच धरते थे ।
येते दरम्यान अरजबेगो अरज पौहोचाई ।
साहिब आलम हजरति की खबरि आई ।
कासीदो है अदरि बुलावो ये फुरमाया ।
तबै कासीद हजूरि आया ।
सरजा करि ऊकील नै निबस्ता गुदराया ।
तिस निस्ते मे ये ये खबरि आई ।
'साहिजिहा' पातिसाहि बफाति पाई ॥ १८ ॥

छव वडमाळी

'अवरग' साहसं ऊससै ।
केवाण दिल्ली सिर कसै ॥
जमराण जेहा जग्गिया ।
लख दळा मेळण लग्गिया ॥
फुरमाण बळ बळ फट्टिया ।
थिर थाट येहा थट्टिया ॥
किरनाट बीजापुर कहै ।
यळ गोळकुडा उल्लहै ॥

वासूं – पीछे। दळ – सैन्य दल से। वाव – हवा से। सतबीव – चौदह प्रमुख योद्धा। हूहराव – कोलाहल।

१८. कासीद – कासिद, हरकारा। धाये – शीघ्रता से चले। मिस – दत्तौन, प्रात कर्म। सरजाकरि – सिज्द, विशेष प्रकार से सलाम कर। निबस्ता – नविश्त, लेखपत्र। गुदराया – निवेदन किया। निस्ते – नविश्त। बफाति – मौत। ऊससै – अत्यधिक जोश मे आया। केवाण – तलवार। थाट – समूह। उल्लहै – उल्लसित होकर।

दिखणीस दिखण देसरा।
नर मेळि नेस स नेसरा ।।
सामान कीधौ समर रौ ।
चित चाव छत्र चमर रौ ।।
भरि सोर बाण भराविया ।
केइ लक्षि लक्षि कराविया ।।
हथनाळि तोपां रत्थय ।
सुत्रनाळि नाळि समथ्थय ।।
जबूर तोपा जेतली ।
यळ मधि भेळी येतली ।।
गोळीय गोळा गंज्जियं ।
भरि लोह सीसा भज्जिय ।।
मसहद्द बळी मुलतानये।
केई कोटि मेळि कबानये ।।
तीरां स बीरा ते हुवा ।
जे रिण सवारि गजे हुवा ।।
सिरोहिय समसेरय ।
ऊना जनब्बी वेरय ।।
असल्ली असल्ली आणिये ।
खग चाढि जे खुरसाणिये ।।
जमदाढ जिमा जम्म री ।
सार मे सार स सभरी ।।
सावळा कीजै सातरा ।
भूथाण भातिस भाति रा ।।
चाठां बगतर चाढिजै ।
केइ राग घूघी काढिजै ।।

मेळि – शामिल कर **नेसरा** – देश देश के, गाँव गाँव के। **जेतली** – जितनी। **भेळी** – शामिल कीं। **येतली** – इतनी। **मसहद्द** – ईरान देश के निवासी, ईरान के तूस नामक नगर वाले। **सिरोहिय समसेरय** – सिरोही की (प्रसिद्ध) तलवारें। **ऊना** – तलवार। **जनब्बी** – जेनब, विशेष प्रकार की तलवार। **जमदाढ़** – कटारी। **सार मे सार** – श्रेष्ठ लोहे। **सभरी** – साभर की। **सावळां** – भाला विशेष। **कीजै सातरा**– धार लगवा कर तैयार किये हुए। **भूथाण** – भाथा। **चाठां** – (?) **राग** – जघाओ का कवच। **घूघी** – सिर के कवच के लिए पहिना जाने वाला टोप विशेष।

पाखरां अबरा दीजिये ।
केकाण गज्जां कीजिये ।।
वडफर अपारण बंधिये ।
सुचिते अपारण सचिये ।।
सरियाह ओप सुधारिजे ।
घू काज सार उधारिजे ।।
मनसूब बाधे ऊमरा ।
खित मुगल हिंदू खूमरा ।।
सह वधै आघ सिपाहिया ।
अदभूत मन ऊमाहिया ।।
बोहो मोल चढियौ हैंमरा ।
गिणजे समव्वड गैमरां ।।
पीलाह मोल अपारये ।
हद बीस तीस हजारये ।।
यम साहि 'औरग' सज्जवे ।
बीराण नौबति वज्जवे ।।१९।।

छंद नीसांणी

यण समय 'औरग' साहि ये मता ऊपाये ।
जके विचक्षण जाणिया जासूस बुलाये ।।
मह दिल्ली गुजरात री सह खबरि मगाये ।
केइ अहमदाबाद दिस केइ दिल्ली आये ।।
जासूसी लगा लियण ठीक ठौहडा ठाये ।
वैरागी जोगी तणा घण सप बणाये ।।
जिम लगा खबरे लियण तिम तिम फुरमाये ।।२०।।

अबरा – पाखरो के ऊपर का कपडा । **केकाण** – घोडे । **वडफर** – ढाल । **सरियाह** – तीर, श्री । **ओप सुधारिजे** – नुकीले व चमकदार किये जा रहे है । **ऊमरा** – उमराव । **खूमरा** – शाही सेवक । **ऊमाहिया** – उत्साह । **वोहो** – अत्यधिक । **हैमरां** – घोडो का । **समव्वड़** – समान । **गैमरां** – हाथियो के । **पीलांह** – हाथियो ।

२० **मता ऊपाये** – विचार किया । **ठौहडा** – स्थान । **ठाये** – टिक कर । **सप** – मेल-जोल ।

छंद कवित्त

'औरंग' रा जासूस लीय, जासूसी दिल्लो ।
यते खबरि गुजरात, तणी जोगणिपुर हल्ली ।।
सुणे बिलद ये बात, साहि 'दारा' ये बत्त ।
मुरडे साहि 'मुराद', सीस धारे आतपत्त ।।
जण सीस बिरसि दिल्ली धणी, येहा मता उपाइया ।
मन सूध तोकि भड कामरा, 'जसमतसिंघ' बुलाइया ।।२१।।

दोहा

येहा मता उपाइया, साहि 'दारा' सिरताज ।
दळानाथ करिबा बिदा, जिण कोके 'जसराज' ।।२२।।

छंद नीसाणी

महाराजा 'जसमतसिंघ' यण काज बुलाये ।
धजावध जोधा धणी ऊससता आये ।।
करि सलाम ऊभा, कमध तेहा अद ताये ।
यम 'साहिदारा' ऊचरै हजरति फुरमाये ।।
तेज भुजा दिल्ली तखत 'गजपत्ती' जाये ।
पंच हजारी हूता पहलि मनसूभ बधाये ।।
सपत हजारी करी सही तिण कीध सवाये ।
सौ बाजिद गज पंच गणि सिरपाव मंगाये ।।
दिस उजेणि कीधा बिदा पोहो यौ पहराये ।
भारथ मूळ स भारथा यण बिधि ऊपाये ।।२३।।

छंद दोहा

किया बिदा राजा कमध, अनि कोके उमराव ।
महि 'अरजण' 'मुकदेस' सा, भारथ पारथ भाव ।।२४।।

---

२१ जोगणिपुर – दिल्ली । मुरडे – जबरदस्ती करके लौटे । बिरसि – नाराज होकर ।

२२ कोके – बुलाया । जसराज – यशवन्तसिंह ।

२३ धजावध – अपना ध्वज रखने वाला । जोधा धणी – जोधपुर का स्वामी । ऊससता – उद्यत होकर । कमध – राठौड । गजपत्ती जाये – गजसिंह का पुत्र । बाजिद– घोडे । सिरपाव – सिरोपाव । पोहो – राजा ।

२४ अरजण – अर्जुन गौड । मुकदेस – मुकन्दसिंह हाडा कोटा का स्वामी । पारथ – अर्जुन ।

छंद नीसांणी

बिदा किया उमराव बळि असुरेस अपार ।
'मुकदसिंह' 'अजमाल' मुणि सारा सिरदार ।।
'बीरभद्र' भद्रबीर सा येही अवतार ।
'मोहण सिंघ' अरोड महि 'जूझार' जूझार ।।
सूर 'किसोवरसिंघ' सा रिणधींग मडार ।
'कन्हीराम' वरियाम कहि बढि वार उबार ।।
'रतनागर' राठौड सा भुवडडा भार ।
राजा 'रायासिंघ' सा जोधा जोधार ।।
'दलथंभ' झालो जेहवा धज थंभ धरार ।
सीसोदीयो 'सूजाण सिंघ' जमरूप जसार ।।
'बैरीसिंघ' सेखा धणी येख अधियार ।
'गोवरधन' 'चद्रह' तणौ अणिया भमरार ।।
सगतावत 'केहरि' जिसा गज फौज प्रहार ।
बळि 'रुकमागद' बेखिये आरण अहंकार ।।
'राघवदे' जाहर गजां नाहर निहार ।
चद्रावत 'अमरेस' सा आमद उधार ।।
बळि 'अमरेस' नरेस सा कूरम करार ।
जुध 'बेळू' 'परसु' जिसा दक्षिण दुरतार ।।
'देबीसिंघ' 'सूजाणसिंघ' बुंदेल वडार ।
बळि राजा 'छत्रमणि' बणै जादम जी वार ।।
बळि हाडा 'बळिराम' सा आडा जुध बारं ।
भड मारू 'पातल' भुजा आकास अधार ।।
'सबळसिंघ' बाघाहरी दीपै उदियार ।

---

२५ मुणि – कहे जाने वाले । अरोड – न रुकने वाला । जूझार – जूझारसिंह हाडा । किसोवरसिंघ – किशोरसिंह हाडा । धींग – जबरदस्त । वरियाम – श्रेष्ठ वीर । वार – प्रहार । रतनागर – रत्नसिंह । भुवडडा – भुजदडो पर । रायासिंघ – रायसिंह । जेहवा – जैसे । धज – वीर । थंभ – स्तम्भ । अधियार – वीर । अणिया भमरार – सेना की शोभा वढाने वाले । केहरि – केशरीसिंह शक्तावत । वळि – फिर । वेखिये – देखिये । आरण – युद्ध मे । जाहर – प्रकट । कूरम – कछवाहा वशीय । करार – वलवान् । वेळू परसु – दो मरहठा सरदार । वाघाहरो – बाघा का वशज ।

वळि जखमी उजबक जिसा अणखामि अथारं ॥
कबला माझी कांमरा तवि 'खां अफितार' ।
'कासिम खान' अमान सा मुणि फौज मदार ॥
अनि उमराव अपार सो वरणता वारं ॥२५॥

छंद दोहा

यो दिल्ली दळ उल्लहे, आया खड़े उजेणि ।
कुर खेतर करू पंडवा, जुध रचसी विधि जेणि ॥२६॥
जो राजा 'सिवपति' जिसा, मंडिया माडी मंड ।
धर दखिण गुजरात धर, भड़ आगळि भुव दंड ॥२७॥
माडौ गढ 'सिवपति' जिसा, येमि 'मान' आमेर ।
राज करै वेऊ रावउ, आज लाज अजमेर ॥२८॥

छंद छप्पय

महाराजा 'सिवपति', मंड माडौ गढ मंट ।
वाबाटे अणबीह, खाग भूणैं नव खंट ।
थट्ट जेणि 'गोपाळ', अनै 'वळिराम' सुथट्ट ।
सूर धीर सामंत, बिरद लग्गा कुळ वट्ट ॥
अजमेर नाथ पारथ्थ सम, महि स भारथ मंडसी ।
छंडसी माण बीजा सपी, छळगढ गौड न छंडसी ॥२९॥

वचनिका

अहमदाबाद के जासूस जासूगी लाये ।
साह 'मुराद' की खबरि ले साह 'औरंग' पासि आये ॥
जिण जासूसे ये खबरि कही ।

२५. अणखामि – वचन में न आने वाले । मांझी – मुखिया ।
२७. सिवपति – शिवराम गौड़ । मंडिया – युद्ध प्रारंभ किया । मांडौ – मांडू का दुर्ग ।
आगळि – अर्गला ।
२८ मान – मानसिंह गौड़ । आमेर – आमेर का किला । वेऊ – दोनों ।
२९ वावाटे – ललकारते हैं । अणबीह – निर्भय । खाग धूणै – तलवार तोल कर ।
गोपाळ – गोपालदास गौड़ । वळिराम – बलिराम गौड़ । कुळवट्ट – कुल की परम्परा के अनुकूल । माण – मान । सपी – योद्धा । छळ – युद्ध ।

साहि 'मुराद' पातिसाही बैठा सही ॥
तिस ऊपरि दिल्ली की फौजे उजेणि आई ।
हाथ जोड़ि ये खबरि कहाई ॥३०॥

छंद त्रोटक

कुलि साह सुणे 'अवरंग' कथं ।
मडिया दळ खेति उजेणी मथ ॥
बद कोकिय साह 'मुराद' गजे ।
सह भूभ तणो तिण साज सजे ॥
सुग्त्ति खमावच कच्छ सह ।
महि सोरठ ईडर मेळि मह ॥
असवार हजार पचास पुणै ।
सिरदार मही अणपार सुणै ॥
गिरराज बिराज स राज गिर ।
थपि दीयण राज 'मुराद' थिर ॥
कुतब 'समसवे खान' कहै ।
मुणियै बळि 'खा मनसूर' मुहै ॥
हथनाळि पचास उभै हथिय ।
दुयसै दहनाळि रथा कथिय ॥
पचसै सुत्रनाळि सुत्रा परठै ।
करबा यम जूध महा कठठै ॥
तुपक पचसै सह दोय तवै ।
भर बाण कवाण अपार भवै ॥
अणपार स आउध उधरिय ।
बरनीन नवीन्ह बथरिय ॥
गयद मदमत्त असी गरजै ।
भड़ फौज गढा अनड़ां समजै ॥

---

३१. कुलि – सभी । खेति – रणक्षेत्र । पुणै – चले, कहे । पचास उभै – एक सौ । दुयसै – दो सौ । दहनाळि – दस नालो वाली तोपें । सुत्रा – ऊँटो पर । परठे – रख कर । कठठे – जोश के साथ चले । तुपक – तोपें । आउध – आयुध । विथरियं – (?) । असी – इस प्रकार । अनड़ा – अजयी, पर्वतो ।

तिण ऊपर पाखर ढाल दिपै ।
जुधवार प्रथीतळि कौण जिपै ।।
चगथा चतुरंगिय सेन चली ।
हलहल्ल नदी गिरमेर हली ।।
अवघट्ट घट्टा सिर वट्ट हुय ।
धरपत्ति तिया नह मेळ ध्रुय ।।
पर वाज जिसा अवगाज पड़ै ।
जुध रावळ समरसेनि जुडै ।।
यण रूप साह 'मुराद' अय ।
भणिये 'अवरंग' उछाह हुय ।।३१।।

छंद दोहा

दळ मिळिया साहा दहू , कळमळिया कूरम्म ।
सळसळिया वळ सेस रा, रळमळिया मन रम्भ ।।३२।

छंद छप्पय

मिळिया साह 'मुराद', साह 'अवरंग' सपाणे ।
कीधा कौल करार, बीच दीधा रहिमाणे ।
दहु साहा चित येक, करै मसलति दुबाह ।
दिली सीस दौडिया, धरा चहुवै पडि धाह ।।
मरिजाद लोपि सातो महण, वारै इन्द्र महाबळी ।
तवि येमि दहु साहा तणी, चमू येहि विधि ऊ चली ।।३३।।

जिपै – जीतें । चगथा – मुगलो की । गिरमेर – सुमेरु पर्वत । अवघट्ट – दुर्गम । वट्ट – राह । परवाज – बाज पक्षी के पखो के समान । रावल समरसेनि – रावल समरसिंह के समान । भणिये – कहने पर ।

३२. कळमळिया – विचलित हुआ । कूरम्म – कच्छप । सळसळिया – व्याकुल हो गया । सेस रा – शेषनाग का । रळमळिया – रागानुरंजित हुए । रंभ – रम्भा, अप्सरा ।

३३. मसलति – सलाह । धाह – हाहाकार । मरिजाद – मर्यादा । लोपि – छोड कर । महण – समुद्र ।

चमू साहि चल्लाय, येमि मसलत्ति उपाये ।
राण पाण राखिया, कत्थ हिंदवाण कहाये ।।
आजि ऊह ऊरड़ै, सुजड गहि समा विसमा ।
साहिजादा साहि रा, दिली बैठमा दुगमा ।।
लखि येह खास कलमो लखी, पेखि खत्रबट पाण नै ।
जवहार बाज करि जरजरी, दीधौ पेस दिवाण नै ।।३४।।

वचनिका

'औरगसाह' 'मुरादसाह' ये लिक्षा किया ।
दिली का तखत पातिसाहो कौ राणो का दिया ।।
साह दिली बैठे तिसे राणा बिठलावै ।
सोही दिली का पातिसाह कहावै ।।
जिस रवेस आगै राणा 'करण' 'साहिजिहा' कौ पातिसाही लै दीनी
सो साहिनामौं मे दाखलि कीनी ।
अब दिवान की टुकेक यमदादि पावै ।।
तो दिली को फौजे सौं लडने कौ आवै ।
यस बात का अदेसा कीजो ।।
उदियापुर 'औरगसाह' 'मुरादसाह' की मदति कीजो ।।३५।।

छद झमाळि

हय गय रथ पैदल हले, सहस फटै फण सेस ।
उडि गिरद मडल अडो, भाण थयौ सम भेस ।।
भाण थयौ सम भेस, असा दळ ऊलटै ।
प्रळैकार रा पूर, पुहमी पालटै ।।
लगथा जूथ बिरूथ, लडगा चल्लये ।
कसमस पीठि कमठ, हेमगिर हल्लये ।।३६।।

---

३४ ऊपाये – उपाय निकाला । ऊह – वह । ऊरडै – शीघ्रता से आये । सुजड – तलवार । समाविसमा – विषम परिस्थति मे । दुगमा – कठिन । खास कलमो – खासा रुक्का । दिवांण नै – उदयपुर के महाराणा राजसिंह को ।

३५ रवेस – रीति से । टुकेक – थोडी भी । यमदाद्रि – मदद । अदेसा – अन्देश:, विचार ।

३६ हले – चले । गरद – गर्द । भाण – सूर्य । पुहमी – पृथ्वी । जूथ बिरूथ – समूह के समूह । लड़ंगा – पक्तियाँ । हेमगिर – हिमालय, सुमेरु पहाड ।

हेमगिरी सा हल्लये, अनड बळी कहि ओर ।
दह द्रिगपाल दहकिया, ठभै न दिग्गज ठोर ।।
ठभै न दिग्गज ठोड, तटाका तूटिया ।
पट्टण हट्ट पह, छंछाळा छूटिया ।।
गज··· ····· हरवल्ल, लगै पै लगरा ।
पुळता जाणि पहाड, समद सगरां ।।३७।।

अराखी अरबिया, तवी ताता तोखारा ।
कई तुरकी ताजी कच्छि, सेराजी सिरदारा ।।
सेराजी सिरदार, परट्ठै पाखरा ।
बळि सिरया सिर बद्धि, लहै सोइ लाखरा ।।
घूघर चमर घोर, मजीठा मडियै ।
तबल बध तोखार, तिके बैतडयै ।।३८।।

पायक बरकदार पुणि, बाणदार बेपार ।
कमणैता माझी किता, हेक लख्ख असवार ।।
हेक लख्ख असवार, बगतर बाधिया ।
जिरहा जूसण जेमि, सिलारा साधिया ।।
मुणि चिलखतो मडि, हजारा मेखियै ।
घण घूघी सिर घति, दुगम्मो देखियै ।।३९।।

रागा दसता मोरचे, नख सिक ढकि निराट ।
काळाकीट स कामरा, घड़चा येरसै घाट ।।

---

३७. अनड – पहाड । द्रिगपाल – दिक्पाल । दहकिया – दहल गए । तटाका – तडक कर । छछाळा – हाथी । लगरा – कतारें । पुळता – चलते हुए । समद सगरां – समुद्र (सैन्य) को साथ लिए हुए ।

३८. ताता – चचल, तेज चाल वाले । तोखारां – घोडे । परट्ठ पाखरा – जिरहबख्तरों से सजे हुए । सिरया – श्री, जालीदार आभूपण । घोर – ध्वनि । मजीठा मडियै – मजिष्ठ में चर्चित । तबल बध – पायगाहो मे बधे रहने वाले । बैतडयै – बलवान् ।

३९. पायक – पैदल । बरकदार – बरकदाज, बन्दूकधारी सैनिक । बाणदार – तीरन्दाज । कमणैता – कमानधारी । जिरहा जूसण – जिरहबख्तर । सिलारा – सिलह । साधिया – बाधे हुए । चिलखतो – चिल्कत कवच विशेष । मडि – मडित । घति – पहनाई हुई । दुगम्मा – भयानक ।

४०. रांगा – जघाओ के कवच । दसतां – दस्ताने । निराट – पूर्णतया । काळाकीट – काले नाग के बच्चे के समान । येरसै – ऐसे ।

घडया येरसै घाट रवद्दा रूपय ।
रातबर मुख रग जम वड़ी जू पय ।।
चाचर थूर स्कंध तुच्छि चसम्मय ।
भाभड भूत भराड़ि अगमागम्मय ।।४०।।

बहौ काळा कज्जळवणै निरखंता नैण ।
बाहूदड प्रचंडउ जे बोल अबूझै वैण ।।
बोल अबूझै वैण अरब्बी ऊचरै ।
पस्तो जपि पठाण कई तुरकी करै ।।
कोलाहळ बहौ कथ्थि तेणि बिधि तक्कियं ।
वहौ पथा वहौ बोल सुणै तर पक्खियं ।।४१।।

सौ सौ तीर तरकसा करडी कट्ठ कबाण ।
दोड़ै यक दोय दोय दुमौ जेहा सेर जवांण ।।
जेहा सेर जवाण चगत्ता चावरा ।
पुणियै सैद पठाण दुबाहा दावरा ।।
खोखर भक्खर नक्खि खरै खुरसाणिया ।
कक्कड़ लक्कड कथ्थि पुणै पीराणिया ।।४२।।

कट्ठ भट्टी करगची कायमखानी केह ।
गूग अतगी वलितगा साहि कदम्मा सेह ।।
साहि कदम्मा सेह मिराणी मांमरा ।
कवोरणी उजबक्क निहाणी नामरा ।।

घाट – शरीर । रवद्दा – मुसलमान योद्धा । जंम बडी जू – जवुक के मुख की आकृति जैसे । चाचर – मस्तक । थूर – स्थूल । तुच्छ चसम्मयं – छोटी आंखो वाले । भाभड भूत – विकराल भूत । भराड़ि – भरे हुए । अगमा गम्मयं – अगम्य स्थान पर भी जाने वाले ।

४१. बहौ – अत्यधिक । कज्जळ – काजल । अबूझै – समझ मे न आने वाले । वैण – वचन । अरब्बी – अरबी भाषा । ऊचरै – बोलते है । पस्तो – पश्तो भाषा । तुरकी – तुर्किस्तान की भाषा । वहौ पथां – विभिन्न प्रकार के पथो वाले । तर – तरफ । पक्खियं – पक्षो के ।

४२. करड़ी कट्ठ – अत्यधिक कठोर । दोय दुमौ – दो कमानो को एक साथ मोडने वाले । दुबाहा – दोनो हाथो से प्रहार करने वाले । नक्खि – शाखा के ।

४३. केह – कितने ही । साहि कदम्मा सेह – बादशाह की सेवा मे रहने वाले । मांमरा – सेवक ।

गुरगानी तुरकान गिणै फिरंगियां ।
चचवाणी चहुंवाण चगती चंगियां ॥४३॥
बंग तिलंगी इराकियां मगमाणि मगियाण ।
मुलतानी कशमीर का बैतांडी नागांण ॥
बैतांडी नागांण कुलची कलझा ।
उलची जुलची अरिगा औरापी अनंझा ॥
जमला नकला जूथ सयाणा मारफा ।
चूमारी अणबीह गधारी गारफा ॥४४॥
लहुवाणी ऊबिलग ऊगर गूमर ' अगार ।
गूमानी पैनी मुगल गिरजानी गिरदार ॥
गिरजानी गिरदार बलेची बगगियां ।
गगचट बंबी गब्धि मलेला रगियायां ॥
गराहदी गराहद्दी नदकारी बात्रळा ।
कूरेगी गीरेम दशपर्छ आवळा ॥४५॥
गमरकदि गोरी गही बागी काजळ बार ।
हजारी इमाखिया कहि गरादति कलाग ॥
कहि मगदनि कलांरा गगी नही रगिया ।
ऊरफाजई अगीठ बिहुरवे ' हुगियां ॥
जाया गिरजा जांप बळि धे वंगियां ।
तेहा सेर तीन रा हूनी गंगियां ॥४६॥
लभदाडी पजाबियां दागिणी टफाल्या दखिण ।
कीधा थेता वरनि फवि ओर हजारे दखिण ॥४७॥

चसती – चिदती मानस्थान माहि । चंगियां – जोरावर ।

४४. बंग – बंगाल के । मगियाण – मगमाला गोत्र के । बैतांडी – बलवान । कलझा – कलयान नगर के निवासी । औरापी – ईराक के । अनंझा – अनघ ।

४५. बलेची – बलूचिस्तान के । बगगियां – मगध देश के । बात्रळा – वीर । कूरेगी – कुरेशी । आवळा – बांकुरे, टक मार्ग करने वाले ।

४६. मगी – मगका के निवासी । घणी – बहुत से । अगीठ – पीठ न मुड़ने वाले । जाया – जातिया वंश के । जांप – कहे । तेहा – प्रचण्ड, ऐसे । हूनी – हूणवंश ।

४७. दखिणी – दक्षिण के । थेता – इतने । ओर – और भी । दखिण – इसके स्थान पर अगिम पाठ होना चाहिए ।

छंद दोहा

येहा दळ आलोमला, आय लगा आसेर ।
मान न छंडै 'मांनड़ो', उजवाळै अजमेर ॥४८॥

छंद छप्पय

'ओरगसाहि' अवोह, कोप करि येमि कहाये ।
गढ छडौ भड़ गौड, मिळो वोहळा मो आये ॥
वहौ देसा मनसूभ, बिन मिळ्या गढचढिमारा ।
आज न ल्या आसेर, धरा दिली किम धारां ॥
असुरेस बिसेठो उल्लहे, हठी साहि 'अकबर' हरो ।
'गिरमेर' तणो गाढौ गुरु, मान नही''' '' ' हमरो ॥४९॥
मुणै येमि भड़ 'मांन', सुणो 'अवरग' सुलिताण ।
'साहिजिहा' पतिसाह, जाणि राखै जमिराण ॥
दूठ जेणि मो दियो, दुरग जिण रीतिस देस्या ।
दूजा सो गहि दुजड, येमि खळखट्ट रचेस्या ॥
जिण बात फेरि जाणो रखे, जुद्ध बळाबळ जूटसी ।
तूटिसी सीस असुरा तणा, तवि आसेर न तूटसी ॥५०॥

छद चौपाई

गौड अरौड देखि गढ गाढौ ।
ठभे असुर मेळियो ठाढो ।

---

४८. आलोमला – चारो ओर। आसेर – आसेर नाम का दुर्ग। मानडो – मानसिंह गौड। उजवाळै – उज्वल करे।

४९. अबीह – निर्भीकता से। येमि – इस प्रकार। बोहळा – बहुत से। मनसूभ – मनसबदारी। मिळ्या – मिले। गढ़ चढि मारा – उनके गढो को घेर कर मार दिये, अधिकार मे ले लिए। ल्या – लें। किम धारा – किस प्रकार अधिकार मे लें। बिसेठी – मध्यस्थ, बीच-बचाव करने वाला। गिरमेर तणो – गोपालदास का वशज। गाढौ गुरु – दृढ वीर, श्रेष्ठ वीर।

५०. जाणि – जान कर। दूठ – वीर। जेणि – जिसने। देस्यां – देंगे। दूजां – अन्यथा। दुजड – तलवार। खळ खट्ट रचेस्या – युद्ध लडेंगे। रखे – निश्चय। बळाबळ – भयानक। तवि – तब भी।

५१ ठभे – ठहर गए, छोड दिये। मेळियौ ठाढ़ौ – यो खडा छोड कर।

दावा पहली दिल्ली देस्यां ।
लडि पाछे आसेर स लेस्यां ।।५१।।

छंद दोहा

उलट्टि दळ आसेर हूं, सपता माडौ सार ।
गढ ऊपरि राजा गवड, जूंझारां जूंझार ।।५२।।

छंद छप्पय

'अवरंग' साहि 'मुराद', येखि माडौ गढ येहौ ।
करि बीजौ कयळास, जकौ हेमाचळ जेहौ ।।
रुद्र रूप 'सिवराम', रुद्र जेहौ रीसाणौ ।
नेत्र-डाळ किरमाळ, प्रळै कारण पहिचाणौ ।।
असुरेस क्रोध करि ऊचरै, मौ सो हठ न मंडिये ।
लुळि आय वेगि पावा लगौ, छछाळा गढ छंडिये ।।५३।।

छंद रसावळा

असपत्ति उच्चरै, मत्ति हिंदू मरै ।
काय जौहर करै, सौ कहूं सभरै ।।
मिळौ मौ मझ्झरै, करै सौह तै सिरै ।
तिम करू तुझ्झरै, झिलौ ति भूझरै ।।
साहि जंपै यरै, धजबंध गौड माडौ धरै ।
बिसटाळी " " कहब करै ।।

---

५२ उलट्टि – लौट कर, उमड कर । सपता (स. सपत् = सपदि) – शीघ्रता से । गवड – गौड ।

५३. येखि – देख, जान कर । येहौ – ऐसा । करि – मानो । बीजौ – दूसरा । जकौ – जो, ज्यो । जेहौ – जैसा । सिवराम – शिवराम गौड ।, रीसाणौ – कुपित हुआ । नेत्र-डाळ किरमाळ – शिव के नेत्र के समान तलवार की धार । लुळि – नम्र बन कर । पावा लगौ – सेवा स्वीकार करो, अधीन बनो । छछाळा – हाथी, दीर्घकाय योद्धा ।

५४. काय – क्यों । सभरै – सुन । मौ मझ्झरै – मेरे शामिल । सौह – सब । सिरै – सिरह, ऊपर । तिम – उसी प्रकार । झिलौ – मरने को तैयार । यरै – अरे । धजबंध – ध्वजधारी । बिसटाळी – मध्यस्थ, दूत । कहब – कहना ।

पाण झल्लै पथ, कहै राजा कथ।
मडि माडौ मथ, साहि सेना सथं।।
आय लागा अथं, हथ्थ तेग हथ।
रच्चसी भारथं, रंभ खड़िया रथ।।
बीर लौथि बथं, तेणि आजै तथ।।५४।।

छंद दोहा

जो राजा 'सिवपति' जिसा, मडिया माडौ मंड।
घर दखिण गुजरात घर, भड आगळि भुवडड।।५५।।

छंद छप्पय

महाराजा 'सिवपति', मड माडौ गढ मडं।
बाबाड़ै अणवीह, खाग धूणै नवखड।।
थट्ट जेमि 'गोपाळ', अनै 'बळिराम' सुथट्ट।
सूर धीर सामत, विरद लग्गै कुळबट्ट।।
अजमेरि नाथ पाराथ जिम, महाभारथ सम मडसी।
छडसी माण बीजा सपोह, छळ गढ गोड न छडसी।।५६।।

छंद दोहा

विसटाळी सुरताण हू, आय कही आरोड।
सो देखौ राजा 'सिवौ', गाढै मतै स गोड।।५७।।

---

५५. पाण – तलवार। झल्लै – पकडे हुए। पथं – मार्ग मे। मथं – पर, सिर पर। सथं – साथ मे। अथं – यहाँ। तेग – तलवार। हथ – हाथ मे। भारथं – युद्ध। रंभ – अप्सराएँ। खड़िया – चलाए। लौथि-बथं – गुत्थमगुत्थ। तथं – वहाँ, उसी प्रकार।

५६. जिसा – जैसा। आगळि – अर्गला। भुवडंड – भुजदण्ड।

५७. मड – युद्ध। मंडं – लडने को उद्यत हुआ। बाबाड़ै – ललकारे। खाग धूणै – तलवार तोले हुए। थट्ट – समूह, दल। जेमि – जैसा। सुथट्ट – श्रेष्ठ समूह, प्रबल दल। कुळबट्ट – कुल की परम्परा, कुल मार्ग। पाराथ अर्जुन। बीजा – दूसरे। सपोह – राजा, योद्धा। छळ – युद्ध से।

५८. विसटाळी – बीच-बचाव करनें वाला, दूत। आय – आकर के। सिवौ – शिवरसिंह गौड। गाढै मतै – दृढ निश्चयी। स – वह।

ताती ठढी सब कही, लगी न चित्त लगार ।
सो दीठो 'बळिराम' सुत, सारधार सिरदार ।।५८।।

छंद वेग्रखरी

साह कहै 'ग्रवरंग' सपाणौ ।
काळजवन जेहौ कोपाणौ ।।
कितौ गौड माडौ गढ केतौ ।
ग्रम्हां हूत कहियो बळ येतौ ।।
ग्राजि दुरग द्रहबट्ट उडाडौ ।
प्रात सूध जड़ हूता पाड़ौ ।।
करै कोप साहि हला कीधा ।
दावा भड़ा सूं ग्रग्या दीधा ।।
सुलिताण 'महमूद' सिंघाळौ ।
लाख फौज लीधां लकाळौ ।।
'खान निजाबति' हरवल खडिया ।
येण रूप ग्राय माडौ ग्रडिया ।।
गढ़े राजा 'सिवपती' गाढौ ।
ठौर दिया त्रामागळा ठाढौ ।।
दरवाजा मडिया ग्राय दावा ।
चावा नृपति भडा ग्रनचावा ।।
'पौहकरदास' जिसा बध पासै ।
तिण री धाक खळा उर त्रासै ।।

---

५६. **ताती ठढ़ी** – गर्म-नर्म । **लगार** – तनिक प्रभाव नहीं हुग्रा ।

६०. **काळजवन** – कालयवन । **कोपाणौ** – कुपित हुग्रा । **कितौ** – कितना सा । **केतौ** – कितना । **ग्रम्हा हूत** – हम से । **बळ** – शक्ति । **द्रहबट्ट** – ध्वस्त कर । **उडाड़ौ** – समाप्त कर दूं, उडा दूं । **प्रात सूध** – प्रात काल होते ही । **पाडौं** – गिरा दूं, उखाड डालूं । **हला** – ग्राक्रमण । **दावा** – दावा रखने वाले, गढ पर ग्रधिकार करने की उत्कण्ठा वाले । **ग्रग्या** – ग्राज्ञा । **दीधा** – दिया, दी । **सिंघाळौ** – श्रेष्ठ । **लीधां** – लेकर, लिए हुए । **लंकाळौ** – सिंह । **हरवल** – हरावल, सेना की ग्रग्रिम पंक्ति । **खड़िया** – चला कर । **येण रूप** – इस रूप मे, इस तरह । **माडौ** – माण्डूगढ, माण्डव का किला । **ग्रडिया** – जुडे , ग्राकर लग गये । **गाढौ** – दृढ वीर । **ठौर** – चोट, प्रहार । **त्रामांगळ** – ताम्बे के पेंदे वाले नक्कारे । **बध** – बाधव, भाई । **पासै** – पास में, पार्श्व मे । **तिणरी** – उसकी । **खळा**– शत्रुग्रो के ।

मार करै हथनाळि कमाणां ।
वळे बन्दूक बाण बरसाणां ।।
दळा असुर आय लग्गा दौळां ।
गौड तणां छूटै यम गौळा ।।
तचियौ साह दुरग न तूटै ।
जिकौ गौड आरौड स जूटै ।।
कहै साह हव कूच स कीजै ।
लै दिल्ली सिर माडी लीजै ।।
सिवपति' बात रही जग सारै ।
चद सूर भी नाम उचारै ।।
खडिया साह बिन्है खड़ि खाथा ।
सकल सेन पडिया खडि साथा ।।
जग सूर अहि नर कौतिग जोसी ।
हव भारत ऊजेणि स होसी ।।५६।।

अथ अवन्तिकापुरी महातम

छद छप्पय

बिस्वेसर महाकाळ, तट्टि गगा सिफरह तट ।
मनिकनिका मोचन्न, पिसाच घट ऊभय घट ।।
उमासिद्ध हरिसिद्ध, अऊक्षिर अहक्षर कही ।
प्रातकाल मध्यान, ध्यान सुर धरत सझ्या तही ।।
कासी ऊजेणि मुकत पुर, काळस नर बिरळो करय ।
द्वादस कोस मधि पसु पक्षी, मरै सोही फिर नामरय ।।६०।।

मार करै – प्रहार करे । **हथनाळी** – छोटी तोपो । **कमाणां** कमानो । **वळे** – फिर । **दौळा** – चारो तरफ । **तचियौ** – प्रयत्न कर के थक गया, तप गया । **दुरंग न तूटै** – किला नही टूटता, किले पर अधिकार नही हुआ । **जूटै** – जुडा । **हव** – अब । **कूच** – प्रयाण । **लै दिल्ली** – दिल्ली को हस्तगत कर, दिल्ली लेकर । **सारै** – समस्त, समूचे । **चद सूर** – चद्र-सूर्य तक । **खाथा** – तीव्र गति से, तेज चाल से । **अहि** – नाग लोक । **कौतिग** – कौतूहल । **जोसी** – देख सी । **भारत** – युद्ध । **होसी** – होगा । **अवन्तिकापुरी** – उज्जैन ।

६१. **तटि** – किनारे । **सिफरह** – क्षिप्रा नदी । **मनिकनिका** – मणिकर्णिका । **संझ्या** – सध्या । **तही** – वहा पर, त्रिकाल । **मुकत** – मुक्ति । **काळ** – मृत्यु । **बिरळो** – बिरल, कोई सा । **ना मरय** – नही मरते मोक्ष को प्राप्त कर लेने से उनका जीवन-मरण छूट जाता है ।

छंद लघु निराज

कमंध ये सुणी कथं।
सुमेळ सुभट सथ ॥
करै विचार काम रै।
नरिंद इंद नाम रै॥
'औरंग' ही आवियौ।
धैंधीग मत्त धावियौ॥
'मुरादसाह' मंझ ले।
सिरै ऊजेणि सालुळे॥
अपार सेनि आविया।
सपार निद्ध पाविया॥
उजेणि हूत ऊ चले।
कमध सूर सकळे॥
खुमाण वस खीचिय।
नवै न अखि नीचय॥
गरौ स गौड गाढ रा।
व्रजागि खाग वाढ रा॥
चह्वाण पाण चाव रा।
दखै पमार दाव रा॥
हाला झाला हूळसै।
केवाण देवडा कसै॥
कुरम भींच भाटिय।
खगे स व्रद खाटिय॥

---

६२. धैंधींग – हाथी, प्रचण्ड वीर। मत्त – मस्त, उन्मत्त। धावियौ – चल कर आया। मझ – मे, मध्य। सिरै – पर, सिर पर। सालुळे – उमड कर आए। आविया – आया, आई। निद्ध – नदी, शिप्रा, क्षिप्रा। सकळे – समस्त। नवै न – नमते नही। अखि – आँख। व्रजागि – वज्राग्नि। वाढ रा – प्रहार करने वाले, तीक्ष्ण धार की। चावरा – चाह वाले, चालुक्य वशी। दाव रा – दाव देने वाले। हूळसै – उल्लमित होते है। केवाण – तलवार। कसै – बांधे। कुरम – कछवाहे। भींच – योद्धा। व्रद – विरुद। खाटिय – प्राप्त करने वाले, उपार्जित कर्ता।

चाहिल मौहिलं चवै ।
खभे अकास ते खवै ॥

जाड़ेच जेठवा जिता ।
पुडीर धीर पं पिता ॥

सोळख सूमर सजै ।
गहीर तूवर गजै ॥

पुर्णै स पढियार य ।
सीसोध जोध सारय ॥

साखूळ हूल सैगर ।
भदौड ठौड़ ते भर ॥

कठोड़ जौड धाकड़ ।
लखे स लोह लाकड़ ॥

गोहील पब्बिया गर्णै ।
रूपै स अगद रणै ॥

ऊमट थट वौवच ।
पुणै नूबाण पौवच ॥

वड स गूजर बर ।
सुभट्ट ब्रद्धि सूधर ॥

रावत्त चदरावत ।
अपार ते सेखावत ॥

खैराड़ डोडिया खडे ।
अकास सीस ते अडे ॥

चवै – कहे । खवै – कघे । जिता – जितने । पुंडीरघीर – धीर पुडीर के वशज । सूमरं – सूमरे, जाति विशेष । गहीर – घाव, गम्भीर । गजै – गर्जना करे । पढ़ियार – पडिहार । सांखूळ – साखले । हूल – जाति विशेष । सैगरं – सैगर-वशीय । भदौड – भदौरिये । ठौड – स्थान । भरं – भरा पूरा । गोहील – गोहिल, गुहिल । अंगदं – अगद के सदृश्य । थट – समूह । वौवचं – जाति विशेप । नूबाण – निर्वाण वश के । वडं स गूजरं – बडगूजर, क्षत्रियो की जाति विशेष । ब्रद्धि – विरुद । चंदरावतं – चन्द्रावत रामपुरा के शासक । खैराड़ – खैराड़े । डौडिया – डोडिया राजपूत ।

कटोछ मौछ टाकय ।
धरा असीस धाकय ॥

बढ़ेल बाघैला बळी ।
रहै स झूझ री रळी ॥

देवत्त तन्न दाहिवा ।
गयद फौज गाहिवा ॥

सम्हलवास मझ रै ।
सुणैल जादवा सिरै ॥

चवै चदेल चूगडा ।
दळां खळां स द्रगडा ॥

सौढा दौडा सोनगरा ।
खडग हथ्थ ते खरा ॥

दह्या स जौहिया दखे ।
प्रमाण चाढणा पखे ॥

बाळेस गोहिल बह ।
मुडै न खग्ग ते मुह ॥

हाडा आडा पैडै हठी ।
करै स्कध कठठी ॥

तवै स भीच तावरा ।
चवै अगद चावरा ॥

बणै छतीस बसय ।
अबीह ते अससय ॥

टाकय – टाक क्षत्रिय । थाकय – जिनका रौब है । बढ़ेल – वाढेला, राठौडो की एक शाखा । रळी – खेल, आनन्द । दाहिवा – दाहिमा । गाहिवां – नष्ट करने वाले । सम्हलवास – (?) । सुणैल – क्षत्रियो की एक जाति । द्रगडा – दुर्ग, किला । दह्या – दहिया । पखे – पक्षो के, कुल के । वाळेस – वालेचा । बह – वश विशेष । मुह – सामने से । हाडा – कोटा-बूदी के शासक, चौहानो की एक शाखा । आडा – टेढे, मार्ग रोक कर । पैडै – मार्ग । कठठी – प्रस्थान, कठठ की ध्वनि । तावरा – तेज वाले, दूसरो के आतक न सहने वाले । चवै – कहे । चावरा – चावडा, चाह वाले । अबीह – निडर । ते – वे । अससय – असशय, निश्चयी ।

चढ़ै इती चमू चली ।
हैकपि प्रथमी हली ॥
पछीन मग्ग पाबिया ।
खाचरोद आविया ॥६१॥

छंद गाथा

उलटि दळ अणभगो, आय खाचरोद पड़े येखै ।
जुडसी सुरदन् जगो, खडसी रथ नथ जाम मुर मानौ ॥६२॥

छंद छप्पय

इतें गल महि उल्लही, उभै साहा दळ आया ।
साभळिये 'जसवत', बीर नीसाण बजाया ॥
कियौ कटक सह कूच, गिणै सर ऊसर गाह ।
दूठ अकूठ दुबाह, अनै सूरा ऊमाह ॥
खाचरौद आय दळ खंमिया, पेखै भडा पटतरौ ।
दळ 'औरग' 'साहिजिहान', उभै कोस दस अंतरौ ॥६३॥

अथ जुध आगम
छंद भुजंगीप्रियात

पळ बीर बैताल भाराथ पूक्षे ।
भये ते जगै आजि होय भूक्षे ॥
पिसाच स प्रेत स भूत भयान ।
गिन गीध ते गीध गूद गियान ॥

इती – इतनी । मग्ग – राह । पाबिया – पाया, मिला । खाचरोद – मालवे का एक नगर ।

६२. अणभगो – एक समान क्रम से, अटूट क्रम । आय – आ कर । सुरंदन् – रविवार के दिन । जंगो – युद्ध । नथ – नही । जाममुर – तीन प्रहर ।

६३. गल – अफवाह, चर्चा । सांभळिये – सुनकर । कटक – सेना । कूच – प्रस्थान । सर – उपजाऊ भूमि । ऊसर – बजड भूमि । गाहं – ध्वश करते हुए । दूठ – वीर । अकूठ – अपार, अपरिमित । खमिया – रुके, ठहरे । पटंतरौ – दूरी, फासला । अंतरौ – अन्तर, दूरी ।

६४. पळं – मास । पूक्षे – पोषण के लिए, तृप्ति के लिए । भूक्षे – भूखे । भयानं – भयानक । गिनं – निगलते । गीध – गृद्ध । गूद – मास, मज्जा । गियानं – ज्ञान, ध्यान ।

चवसट्ठि ते जुग्गनां तत्थ जानी ।
अनै डाकिनी साकिनी सेनि आनी ॥
गुमाय गुमाय तत्तो सगि डोलैं ।
बहो पयोकरी फैंन तै मद्धि बोलैं ॥
हर रुण्डमाळ वरं सूर रभ ।
मनो बावन वीर आये अचभ ॥
नृत नारद प्रोय तै ब्रह्मपूत ।
तहा तड नदीगन महामत्तं ॥
डम डम तै वाजि डोरू डहक्क ।
करै काळ भैरो तहा यो किलक्क ॥
खिळ खेचर भूचर मद्धि खेळा ।
भये जुद्ध आगम येते सु भेळा ॥६४॥

छद दोहा

निमधै चौरनरायणी, 'जसवत' डेरा जाय ।
ऊगन्तै दिन दीखसी, लगसी सीसो लाय ॥६५॥

छद छप्पय

अष्टम तिथि गुरवार, पुणै वयमाख कृष्ण पक्षि ।
रविये स्रवण नक्षित्र, रचै सोइ जोग सुकल रक्षि ॥
बालवकरण वखाणि, सवत नौ सत वळि ऐक ।
पद्रै तणो प्रमाणि, विढण आराणि विसेक ॥
कामरा भडा आरभ कियौ, वहसि सूर अवरी वरो ।
चाव गुर मद्धि धारा चढी, लीजै सुख सुरलोक रो ॥६६॥

कर । जुग्गना – योगिनियाँ । तत्य – वहाँ । अनै – और, अन्य । सेनि – सेना मे । आनी – आई । गुमायं – गोमायु । डोलै – घूमे, फिरे । वहो – बहुतेरी । पयोकरी – लोमडी विशेष, फैं फैं की ध्वनि । हरं – शिव । बावन वीर – बावन भैरव । ब्रह्मपूत – ब्रह्मा के पुत्र । तंड – गभीर घोष । नंदीगन – नदिगण । महामत्त – अत्यधिक मस्ती मे । डोरू – डैरव, शिव का वाद्य, डमरू । डहक्क – वजना, ध्वनि होना । काळ भैरों – काला भैरव, यमराज । किलक्कं – किलकारी । खिळ – खेल । खेळा – युद्ध । भेळा – शामिल ।

६५ निमधै – विचार किया । जसवत – जसवतसिंह । डेरा – पडाव, खेमे । दीखसी – दीखेगा । लगसी – लगेगी । सीसो – सीसा । लाय – अग्नि ।

छंद नीसांणी

दळ वेळा पैला दळा, मोरचा मडाणा।
बळा बळी बन्दूकची, ब्रळ भरिया बाणा।।
गजनाळया पगति गिणै, निघसे नीसाणा।
गोळा मण नव नव भिळै, वड़ तोप बखाणा।।
निमधे यक यक नाळि नख, गोळा गजाणा।
सौ सौ भरिया सीधडा, दारू दरसाणा।।
सूत पलीता जामगी अणपार स आणा।
मंडिये केइक मोरचैं, बुरज्यौ बिचाणा।।
तरकस वध अपार तवि, कर झल्लि कमाणा।
केइक ऊभा असवार, होय चढिया केकाणा।।
केइक बगत्तर पहरिया, सिर टोप सुभाणा।
केइक चिलकत पहरिया, मेखे सहनाणा।।
केइक समाहा पहरिया, जिरहा जूसाणा।
केइक रोछड पख, मूच्छली टोप सुभाणा।।
मडिया सूरां मोरचा, आये अप्रमाणा।।६७।।

छंद छप्पय

दळ दहुवन घन घोर, सौर नीसान स बज्जहि।
दळ दहुवन सूरन, सनाह पक्खर गज सज्जहि।।
दळ दहुवन मोरचा, बिचे पायक्क करारे।
दळ दहुवन रही चढी, अनी भवित्तबि सम्हारे।।
दळ दहुवन आजि दुदन भयौ, कवि 'महेस' कविता कही।
यह भाय तदिन दिन ऑथियो, दळ दहुवै आसर रही।।६८।।

---

६७. **वेळा** – इधर वाले। **पैलां** – उधर वाले, पहिले। **ब्रळ** – ताकत से। **निघसे** – बजे। **गिळै** – गटके, खाये। **निमधै** – विचार कर। **नाळि** – नालें तोपें। **नख** – समीप। **गजाणा** – गर्जने वाले, गजो से, लोहे की छडो से। **सीधड़ा** – बारूद रखने के चमडे के थैले। **दारू** – बारूद। **पलीता** – तोपो के आग लगाने की सूत की बत्ती। **जामगी** – तोप या बन्दूक का पलीता। **अणपार** – अपरिमित। **आणा** – आना, लाए गए। **बुरज्यौ** – बुर्जे। **बिचाणा** – मध्य मे। **कर** – हाथ। **झल्लि** – लिए हुए। **केकाणा** – घोडो पर। **सुभाणा** – सुहावने, शोभित। **चिलकत** – कवच। **मेखे** – काटा, हुक। **समाहा** – कवच। **जिरहा जूसाणां** – जिरह-बख्तर। **रोछड** – रीछ जैसे। **पख** – पक्ष। **मूचलो** – मूछो वाले।

६८. **पायक्क** – पैदल सैनिक, पदाति। **करारे** – प्रबल। **अनी** – फौज। **भवित्तवि** – भविष्य, होनहार। **भाय** – प्रकार। **तदिन** – उस दिन। **आथियो** – अस्त हुआ। **आसर** – आशा, इच्छा।

बासुर भयौ बितीति, अस्त थियौ अरक उजास ।
तिण खवास कौकियो, पुणै जा 'जसमत' पास ।।
कह्या जूझ मति करौ, हवे दिल्ली दिस हल्लौ ।
येकण बळ दळ अम्हा, चढा बळ हेकण चल्लौ ।।
पित पूत सपूत मिळता प्रथी, रहसी केमि स राखिया ।
सिरदार ज्यार भ्रत साहि रै, यो 'जसमत' सो आखिया ।।६९।।

छद नीसांणी

जोधपुरो यम जपियौ राजा रोसाणौ ।
पकडो 'औरग' दिखणी कर घंति कवाणौ ।।
वळे 'मुरादसाहि' दस्यौ रसवादि रचाणौं ।
पतिसाहा घरि पूतनो कीमति कहाणौ ।।
हलि हो 'साहिजिहान' नखि झलौ फुरमाणौं ।
लारै पंच हजार लै असवार तुम्हाणौ ।।
तो दिल्ली पतसाह रै परठीयां पयाणौं ।
जूह बड़ा दळ जौडिया मसलत्ति न जाणौ ।।
खरी मसलति यम रक्खिहो पति हुकम प्रमाणौ ।
मडो तो गजगाह मंडि ऊगीये बिहाणौं ।।७०।।

छंद छप्पय

रटियौ जे 'जसराज', सुणै बाहुड्यौ बसीठी ।
'अवरग' हू की अरज, तवि सोइ कमध नतीठी ।।
साहि घणौ रोसियौ, काळ जेहौ कुदरत्ति ।
यते राति अधरात, नाद घूरिया नौबत्ति ।।

---

६९. **बासुर** – दिवस । **भयौ** – हुआ । **थियौ** – हुआ । **उजास** – प्रकाश । **खवास** – निजी सेवक । **कौकियो** – भेजा । **पुणै** – कहो । **जूझ** – युद्ध । **हवे** - अभी, इस समय । **हल्लौ** – चलो । **अम्हा** – अपना । **रहसी** – रहेंगे । **केमि** – किस प्रकार, कैसे । **ज्यार** – जाकर । **भ्रत** – सेवक । **आखिया** – कहा ।

७०. **जपियौ** – कहा, बोला । **घति** – डाल कर । **रसवादि** – प्रेमभाव । **हलिहो** – चलेंगे, जायेंगे । **नखि** – पास । **झलौ** – मानो, स्वीकार करो । **लारै** – पीछे, साथ मे । **तुम्हाणौं** – तुम्हारा अपना । **पयाणौं** – प्रस्थान । **जूह** – समूह । **मसलत्ति** – गुप्त मत्रणा कर । **न जाणौं** – नही जाना । **पति** – स्वामी ।

७१. **रटियौ** – कहा । **जसराज** – जसवतसिंह । **बाहुड्यौ** – लौटा । **बसीठी** – दूत । **नतीठी** – कठोर बात, चुभते वचन । **घूरिया** – बजे ।

कमधज्ज फौज ऊपरि कहर, कह्यौ मार बाणा करो।
ऊगत दीत रवि रै अवसि, राड़ि धाडि मसलति धरो ॥७१॥

सतरासै समत्त, व्रख पद्रमौ स जाणै।
नवमी बदि वैसाख, वार भ्रगवार बखाणैं॥
सो नक्षित्र घनिष्ठ, जोग व्रह्म नाम स जग्गे।
तइतल नामह करण, करण आराण उमग्गे॥
सुरताण बिन्है घमसाण सिर, कडाभीड़ चढ़सी कडै।
कफराण जके ऊजू करै, सुर नर देव सस पडै ॥७२॥

जाम येक जामनी, रही अस्टमी सुमद्धि।
तिह समय सब जगै, सूर सामत सुबुद्धि॥
मुख मजन आदि दै, विविध देह क्रम कीनौ।
करि सनान ध्रम ध्यान, दान विप्रन बहो दीनौ॥
असवार ततसार निज, नितक्रम जे इहि विधि करै।
मुर फौज आजि हळमळ हुई, यष्ट यष्ट सब उच्चरै ॥७३॥

छंद दोहा

जाम येक रहीं जामनी, मधि अस्टमि उनमान।
जगै सूर सामंत सब, करहि दान सनान ॥७४॥

वीर सिंगार

छंद पधरी

यत करही सूर सनान दान।
उत रभ करही मजन बिधान॥

कहर – कोप। दीत – सूर्य। राडि-धाडि – मार-काट, युद्ध-विग्रह।

७२. सतरासै समत्तव्रख पद्रमो – सवत् १७१५ का वर्ष। भ्रगवार – शुक्रवार। घनिष्ठ – घनिष्ठा। जोगव्रह्म – व्रह्मयोग। तइतल नामह करण – तैतिल नामका करण। आराण – युद्ध। कडाभीड़ – कटिवद्ध होकर। कडै – निकट, समीप। कफराण – मुसलमान। ऊजू – विशेष प्रकार से वन्दना, नमस्कार। सस – सशय।

७३. जामनी – रात्रि। कीनौ – किया। दीनौ – दिया। ततसार – तत्वसार। मुर – तीन। हळमळ – हलचल। यष्ट यष्ट – अपने अपने इष्टदेव।

७४ उनमान – अनुमान। जगै – जागे। सनान – स्नान।

७५. यत – इधर। उत – उधर। बिधान – आयोजन।

यत सूर राग बधै असकि ।
उत सूर सजै लहगानि लकि ।।
पहरै सु सूर मोजन सु पांय ।
उत नूपरनि रभ पहरि बनाय ।।
यत सूर कमरि बधै कसाय ।
उत रभ सजै कटि-मेखळाय ।।
यत सूर कवचि पहरै सुहेत ।
उत रभ कचुकि तनी देत ।।
यत सूर पाघ बधै सुवीर ।
उत रग चीर पहरै सुधीर ।।
यत सूर टोप बधै अतूल ।
उत रंभ दहै सिर सीसफूल ।।
यत सूर ढाल बधै अमान ।
उत रभ तरौंना पहरि कान ।।
यत दस्तान सूर बधै अभग ।
उत रभ करत महदीन रग ।।
कर सूर खाग मजै कराळ ।
बहौ रभ नैन अजै विसाल ।।
पहरै सु सूर तुळछी सु माळ ।
सुभ रभ हार पहरै सुढाळ ।।
सूर रभ बरनै समान ।
उन सजै बाज उन सजि विमान ।।७५।।

सूर – हूरें, अप्सराएँ । लकि – कमर । कसाय – कस कर । कटिमेखळाय – करधनी । कवचि – कवच । सुहेत – प्रीतिपूर्वक । तनी – कसना, कचुकी की डोरी । अतूल – अतुल्य, बहुत प्रकार के । दहै – देती है, लगाती है, पहिनती है । सीसफूल – सिर का आभूषण । अमान – बहुत । तरौंना – कर्ण-भूषण । दस्तान – दस्तानें, हाथो के कवच । अभंग – निश्चयी । महदीन – मेहदी, महावर । खाग – तलवार । मजे – माज कर पैनी करें, धार सुधारे । कराळ – भयानक । बहौ – बहुत । अजै – काजल डाले, कज्जल लगावें । माळ – माला । सुढ़ाळ – सुन्दर । बाज – घाडे ।

छंद अलिला

जिण वेळां 'अजमाल' स जग्गै ।
जगि-हृथ जैतखंभ रण जग्गै ॥
जूह बिडाळ खळां सिर जग्गै ।
जुडतां जुद्ध सनानन जग्गै ॥७६॥

छंद दोहा

मरदन कारण मंगियौ, फौजां बीद फुलेल ।
अजमेरा 'अजमाल' नै, तेल चढै करि तेल ॥७७॥

छंद त्रोटक

करि अ्रदन अंग सु अ्रदन य ।
बिहु बाहु अजान सु व्रनय ॥
जघ पीडिय अ्रदन पाय करै ।
भर भूप सु अगद रूप धरै ॥
करि अ्रदन अग सुबारि मगै ।
हरद्वारि जटाहर तैं उमगै ॥
हर कै चरचा रस व्रदन तैं ।
ब्रहमा कै कमडळ मडळ तैं ॥
गंग कै जळ कंक निकासु कितै ।
कहि भंजति कौटिक पाप कितै ॥
हिम-आसन आसन भूप किय ।
करि सनांन सकल्प सु लियं ॥

---

७६. जगिहृथ – दिग्विजय की क्रिया का भाव, सूर्य । जैतखंभ – विजय के लिए स्तम्भ-तुल्य । बिड़ाळ – सहार करने ।

७७. बींद – दूल्हा । फुलेल – इत्र । तेल चढ़ै – विवाह के लिए तेल चढा कर दूल्हा बनाते है उसी प्रकार सज कर तैयार हुए ।

७८. करि – कर के । बिहु बाहु – दोनो भुजाओ । सुव्रनयं – सुन्दर वर्ण, रग । पींडिय – पिंडली । पांय – पैरों के । सुबारि – पवित्र जल । जटाहर तैं – शिव की जटा से । व्रदन – देवताओ । मंडळ – घेरा, वृत्त । निकासु – निकलने के स्थान । भंजति – नाश करती । कितै – कितने ही । हिम आसन – स्वर्ण के सिंहासन पर ।

कळसा जु गगा बारि भरै।
करि छाय सु दान सनान करै॥
सहधारि जनेउ अचन्न लिय।
रिखराज मनौ रिख ब्रह्म भय॥
द्विज भारथ वेद उचार करै।
मनु देव सभा मधि तै बिछुरै॥
नृप धारि पितबर बधि सिखं।
मनु देवन मे दिवराज दिख॥
तिलक करि केसरि द्वादसय।
द्विज बोलिय जुद्ध सदा जसय॥
अरक अरघ मुर अजुळिय।
पढि वेद सुमत्रन भेद दिय॥
हर पूजन कारन कौ हुळसै।
मन माझ रहै नित प्रति बसै॥
येकादस अतक सिभु किय।
जिण काज सुपारि सुगध लिय॥
चरचै हर केसरि चदन तै।
अनखडित अक्षित बदन तै॥
कुसम कमळ अरक बिविध।
दुरब मजरि धारि सिध॥
करि धूप दीप नइवैद करै।
गुर मत्र स जोउ ध्यान धरै॥
यतनौ करि कै किये आरतिय।
सबद धुनि वेद स स्वारथिय॥

कळसा – कलश, जलपात्र। छाय सु दांन – छायादान, तेल या घृत मे मुख देख कर स्वर्ण का दान देने की क्रिया छायादान कहलाती है। अचन – आचमन। रिखराज – ऋषिराज। रिखब्रह्म – ब्रह्मर्षि। भयं – हुए। भारथ – महाभारत ग्रथ। पितबर – पीत वस्त्र। सिख – शिखा, चोटी। दिवराज – देवराज, सूर्य। जसय – विजय, यश। अरघ – अर्घ्य। मुर – तीन। हर – शिव। चरचै – चर्चित किया। अक्षित – अक्षत, चावल। वदन – वन्दना। कुसम कमळ – कमल पुष्प। अरक – आक के फूल, मदार के फूल। दुरब – दुर्वा। नइवेद – नैवेद्य। स्वारथिय – अपने कल्याण के हेतु।

करि जाप सुपात्र दान दियं।
हिमथाळ सु द्विजन बाटि दियं ॥
भणि छद सु ओटिक मांहि सुयं।
जग-हत्थ 'अज्जमल' तै जसयं ॥७८॥

छंद दोहा

करि नित-क्रम सुध्रम किय, जोध 'अजण' जिण वार।
यम बगसी सौं अक्खिये, तवै भीछ हो त्यार ॥७९॥

छंद छप्पय

महाराजा 'अजमाळ', येह गला उचारी।
चवै सकळ चाकरा, तवै ठाकुरां तयारी ॥
मजि बडा हैमरा, जीण पाखर सुमडौ।
जडौ भड़ां जूसणा, बिजड बे घडा बिहंडौ ॥
सिरदार ज्यार मगी सिलह, सिलेदार बुलावियो।
जिण सिलह जैत भग्गा म जुध, वाहि सिलह लै आवियो ॥८०॥
विप्र सिलह बरदार, सिलह सामत स्रिगारे।
निमधै 'ओमणि' नाम, पासि ऊभो पोतारे ॥
आज काज येरसौ, पाज ध्रम स्याम परख्खो।
समरि घसौ सामहा, ब्ळे पाछमा न दख्खो ॥
आटौ काटौ धारा अणी, 'अजण' साथि अहकारिया।
ब्राह्मण ब्रजागि रिण बकडौ, ब्रह्म तेज बाधारिया ॥८१॥
आखै येमि नकीब, सिलह बधौ सामता।
मागी सिलह महाराज, दुजड भजौ गजदता ॥

हिमथाळ – स्वर्ण के थाल। द्विजन – ब्राह्मणो को। मांहि – मे।

७९. अजण – अर्जुन। जिण वार – उस समय। बगसी सौं–फौजबक्षी से। त्यार–तैयार।

८०. मंजि – मञ्जन करा के, स्नान करा के। जीण – जीन, पलांण। जूसणा – कवचें। बिजड़ – तलवार। वे – दोनो, दो। घड़ा – सेना। जैत – जीत। म – नही। वाहि – वही।

८१. सिलह बरदार – सिलहखाने का अधिकारी। ओमणि – शिवमणि। ध्रमस्याम – स्वामिधर्म। घसौ – प्रवेश करो। पाछमा – पीछे। दख्यो – देखो। आटौ-काटौ – सहार करो, नमक हलाल बनो।

८२. दुजड – वीर, तलवार।

रचो भीछ जुध रूप, जडो रांगां सनांहां ।
जडो टोप सिरदार, दळां जो भीछ दुबाहां ॥
कइ करै आजि भड़ केसरचां, थंभ भुजां गज थाट रा ।
'अजमाल' तणा भड़ येरसा, बणै रूप बैराट रा ॥८२॥

छंद दोहा

पाको मतो परठियो, काको पासि कंठीर ।
साको राखण जग सिरै, वणै 'बीरभद्र' बीर ॥८३॥

छंद बीराज

बणै 'बीरभद्दं' । जड़ै तै जरद्दं ॥
दिय सीस टोप । अरक्केस वोपं ॥
जड़ै राग जोधा । अकासे स वोधा ॥
दस्तान दक्खै । अड़ा-जूण अक्खै ॥
कडा-भीड काळं । बधै प्रत्तमाळं ॥
बळै खग्ग बधै । सर चाप सधै ॥
भळक्केस भालं । ढळक्केस ढाल ॥८४॥

छंद छप्पय

बणै 'बीरभद्र' बीर, भड़ां सिरदार भुजाळं ।
अड़ा - भीड़ अक्खै, कडा भीड़ै छकड़ाळं ॥
करि सनान ध्रम ध्यान, पूजि हर रूप पहल्लां ।
केकाणां ऊकढी, विढ़ो सुरताण बहल्लां ॥

भीछ – योद्धा । कइ – कई । भड – भट, वीर । केसरचा – केशरिया वस्त्र धारण करें । गजथाट रा – गज-समूह के । बैराट रा – विराट का ।

८३. पाको – दृढ । मतो – निश्चय । परठियो – किया । कंठीर – सिंह । साको राखण – कीर्ति रखने । जगसिरै – जगत मे श्रेष्ठ, संसार मे ।

८४. जरद्दं – कवच । अरक्केस – सूर्य । वोपं – शोभा । राग – पीडली के कवच । अकासे – आकास । स वोधा – ज्ञान वाले । अड़ाजूण – भिडाकर । कडाभीड – कवच कस कर । प्रत्तमाळ – कटार । सरं – तीर । चाप – धनुष । सधै – सधान किये । भळक्केस – चमकते है । भालं – भाले । ढळक्केस – लुढकती है । ढाल – ढालें ।

८५. भुजाळ – वलवान, प्रचण्ड वाहु । अडाभीड – जमघट्ट, भीड । छकडाळं – कवच । ऊकढ़ो – वाहर निकालो । विढ़ो – लडो, युद्ध करो । बहल्लां – जोशीले ।

'पाळ' रौ जोध लकाळपति, भीछां कहै सु भल्ल रै।
पड़ियां भ्रकुट आघा पड़ो, लड़ो साथि 'अजमल्ल' रै ॥८५॥

छंद दोहा

सूरां गुर बधी सिलह, मेर सरूप 'मुरारि'।
आखाडां आखाड़ सिघ, अगद रै अवतारि ॥८६॥

छंद बेली भुजंगी

रचै सिल्लह येम जोधा 'मुरारी'।
यळा राडि जाती स खाटे उधारी ॥
सनांन जप ध्यान कीधा स सूर।
हियं जुद्ध काजे स बाधै हिलूरं ॥
भड़ा नाथ भाराथ पाराथ भेखे।
भुजा भीम अगद पायै स पेखे ॥
दरजोधन माण जेहा दुबाहं।
रिम सूर चदं ग्रहै जेमि राहं ॥
भ्रकुट दिय टोप सन्नाह सज्जे।
बळै बांधिया दसतानां सु बज्जे ॥
रागा बांधिया राग मौजा सु मडै।
बिन्हे आजि सुरताण सेना बिहडै ॥
कम्मरे वाधिया बादि बूदी कटारी।
सिरोही बळै तेग बधै संवारी ॥

पाळ रौ – गोपालदास का। जोध – पुत्र। लंकाळपति – सिहराज। भ्रकुट – मस्तक। आघा – आगे, दुश्मनो की ओर।

८६. सूरांगुर – शूर श्रेष्ठ। मेर – सुमेरु गिरि। आखाड़ां – युद्ध मे। आखाड़सिघ – युद्धवीर, अनेक युद्धो का विजेता।

८७. सिल्लह – सिलह, अस्त्र-शस्त्र। यळा – पृथ्वी पर। राड़ि जाती – जाते हुए युद्ध को, दूसरो की लडाई को। खाटै उधारी – उधारी मोल लेता है। हियं – हृदय मे। वाधै – बढे। हिलूर – हिलोर, लहर। भड़ांनाथ – योद्धाओ का स्वामी। भाराथ – युद्ध मे। भेखे – भेष मे। पायै – पैर। सपेखे – दीखते हैं। दुबाहं – वीर। रिमं – शत्रुओ को। राह – राहु। भ्रकुटं – मस्तक पर। बळै – फिर। सुबज्जे – सुन्दर बाजुओ पर। रागा – जघाएं। मौजा – जुराब। बिन्हे – दोनो। बिहंडै – विनष्ट करें। बूदी कटारी – बूदी स्थान की बनी हुई कटार। संवारी – पैनी की हुई।

तुरस अलीवंद बधै स चावं।
बणै रूप जोगिंद्र राड़ राव ॥
बळै तौन बधै सिलीमुख्ख सज्जे।
धनख बळै धारिया वाम कज्जे ॥
भडां आपरा चालिका मद्धि भेळो।
खळा फौज गाढा सु बाढा उखेळो ॥
भडा आपरा कहै भारी 'मुरारी'।
ततो हुई सेना तयारी तयारी ॥
खत्री माल 'अजमाल' रौ घणौ खायो।
लडौ आजि मोटौ परबे सु पायो ॥
परब येरसो फेर नौ कदे पावो।
अडौ आजि सोहडो भडो कामि आवो ॥
चढै गौड राजा तिय साथि चढ्ढो।
विढो सेनि साहा बळै गात बढ्ढो ॥८७॥

छंद छप्पय

'प्रथीराज' सामत, बस रावता बिरद्द।
जेणि भुजां जोधार, दूठ 'आसकन' मरद्द ॥
प्रथी मौड परचड, सूर जुध काज उमाहे।
केसरिया रण कीध, अंग सिलहे नही लाहे ॥
मन जाणि मरण कीधा अमल, परी बरी नौ पावस्या।
आवस्या कामि 'अजमाल' रै, आवागवणि न आवस्या ॥८८॥

तुरस – ढाल। अलीवद – ऊपर का लपेटा, ऊपर का वस्त्र। सचावं – चाह सहित। जोगिन्द्रं – शिव। राडरावं – युद्ध मे रावत। तौन – तर्कश। सिली-मुख्ख – वाण। वाम – बाँए तरफ। चालिका – समान वीरो के। खत्री – क्षत्रिय। माल – घन, खाद्य आदि। अजमाल रौ – अर्जुन गौड को। घणौ – वहुत अधिक। परबे सु – पर्व। येरसो – ऐसा। कदे – कब। सोहडो – योद्धाओ। भडो – सुभट्टो। कामि आवो – युद्ध मे वीर गति प्राप्त करो। तिय – उसके। विढो – लडो। गात – शरीर। बढ्ढो – कटवाओ।

८८. दूठ – दुर्घर्ष वीर। मौड – मुकट, मोर। उमाहे – उमगित। केसरियां – केशर के रग मे रगे हुए वस्त्र। लाहे – धारण की, लगाई। अमल – अफीम। परी – अप्सरा। पावस्या – प्राप्त करेंगे। आवस्यां – आयेंगे।

छंद चोपई

'प्रथियराज' सामत सिघाळो, आसकन' बघव अडसाळो ।
'लिखमीदास' सुतन लकाळो, अजमेरा अजमेरि उजाळो ।।८९।।

छंद छप्पय

'राजसिंघ' रिमराह, सूर 'केहलण' सिंघाळो ।
यसे रूप पेखियै, भीछ करि भीम बडाळो ।।
करि बागा केसरया, सजे नौ अग सनाह ।
पेखि मरम पाधरो, येमि मन बधै उमाह ।।
वर येह कवर अबरी बरै, बरै न अपछर जो बरी ।
'परताप' सुतण भेदण पतग, ध्यान जोति मनसा धरी ।।९०।।

'मानसिंघ' तरसिंघ, 'जोध' हर जोध जनम्मे ।
भड कमधं भूजाळ, अग अवतार अनम्मे ।।
आजि गौड़ ऊससौ, बीर बहसो जुध बेळां ।
ऊखेळा आवधा, भडा गज फौज स भेळा ।।
लकाळ कहै 'केहलण' हरो, लाख फौज हूता लडू ।
'अजमाल' फौज मुह आगळे, पडिया सिर आघौ पडू ।।९१।।

'भाखर' भाखर भीछ, सार बोढण सिरदारा ।
दीपै 'साईदास', भिड़ै भजण गज भारा ।।
सुत 'जसराज' सकाज, आज अजमेरि उजाळो ।
खत्रवट बट पूरियो, चितचाळो धमचाळो ।।

---

८९ सिघाळो – श्रेष्ठ। अड़साळो – अरियो के लिए शल्य स्वरूप। लंकाळो – सिंह। उजाळो – उज्ज्वल करने वाला।

९०. भीछ – योद्धा। बडाळो – बडा। नौ – नूतन। पाधरो – सीधा, प्रत्यक्ष। अबरी – कुमारी। पतग – सूर्य। मनसाधरी – मन मे निश्चित की।

९१. ऊससो – उत्साहित हो। बहसो – प्रवेश करो। बेळा – समय। ऊखेळां – युद्ध मे। भेळा – नाश करें, शामिल हो। हूतां – से। आगळे – सामने। आघौ – आगे।

९२. भाखर – पर्वत तुल्य। भाखर – भाखरसिंह। सार बोढ़ण – तलवार से काटने वाला। भंजण गज भारा – गज सेनाओ का विनाश करने के लिए। खत्रवटबट – क्षत्रियत्व के बल से। पूरियौ – परिपूर्ण। चितचाळो – मनचला। धमचाळो – युद्ध मे।

बरजागि आगि खग बांधियां, अडाजूड लागो अरसि ।
'अजमाल' सुछळि भड़ अज्जरो, आजि कांमि आवै अवसि ॥९२॥

'कुसळसिंघ' रण धीग, अक्खि अक्खो अणबीह ।
गौडी रव गैमरां, सुणै किरि भूखो सीह ॥
'भाखर' हूर भैभीत, सदा मुहरी सिरदारां ।
हेठ हेठ अविनास, झूझ मचतै झूझारां ॥
महारथी जोध जोधां मंहि, रिढ़ रावण ची राखतो ।
भिड़बा आज मोहरे भिड़ज, आजि घणो भड़ आखतो ॥९३॥

'इद्रभाण' जमराण, किसूं बाखांण कहीजै ।
आजि अत ऊपरै, लडै गज दत स लीजै ॥
कवर-सूरां हुय कंत, मत येहो भडै मडै ।
अवसि काम आविजै, छोह बंधि मोह स छडै ॥
'सुदर' सुजाव अहिराव सिर, ऊहस यो पण दाखियो ।
पाण गहि गवड सारा पहलि, पांणे भड उपडांखियो ॥९४॥

'पातळ' वस प्रमाण, सिद्ध अवसांण सदा ही ।
सूर धीर सामंत, जको भगवाट न जाही ॥
पाट धणी आगळे, भुजा गज थाट स थभै ।
आजि सूर उल्लहे, आजि कायरा अचभै ॥

बरजागि आगि – वज्राग्नि तुल्य । अड़ाजूड – भिडे हुए । अरसि – आकास । सुछळि – युद्ध मे, लिए । अज्जरो – अजयी, काबू मे न आने वाला ।

९३ रणधींग – युद्ध वीर । अणबीह – अभीरु, निडर । गौड़ीरव–गर्जना, ध्वनि । गैमरां – हाथियो । मुहरी – मुखाग्र । हेठहेठ – (?) । झूझ – जूझते समय । मंहि – मे । रिढ़ – प्रण, हठ । ची – की । राखतो – रखता था । मोहरे भिड़ज – आगे की पक्ति के घोडो, वीरो से । आखतो – उतावला ।

९४. जमराण – यमराज । किसू – किससे, कैसे । बाखांण – वखान । अंत ऊपरै – मृत्यु पर । मत – मत्रणा, विचार । छोह – उत्साह । सुन्दर सुजाव – सुन्दरदास का पुत्र । अहिराव – शेष नाग । ऊहस – जोश में भर कर । उपड़ांखियो – जोशीला वीर, आक्रमणार्थ तैयार ।

९५. पातळ – प्रतापसिंह का । सिद्ध अवसाण – अवसर सिद्ध । जको – वह । भगवाट – भागने के मार्ग । न जाही – नही जायेगा । पाटधणी – गद्दी के स्वामी । थाट – समूह । थंभै – रोके ।

तिण बार स 'राघवदास' तण, 'किसनदास' बाधै कळा ।
'अजमाल' लूण ऊजळ करा, आजि लडा मुंह आगळा ॥९६॥

मोड़ गौड मारोठ, ठवै आरौड़ ठिकाणो ।
तै बाकी तरवारि, सिर सारे सुरिताणो ॥
दौमजि 'नरहरदास', गास बळ सास गमाड़ै ।
'जसमत' तणौ जड़ागि, आगि पाडै आखाड़ै ॥

बाडै न खाग उभौ अबीह, सीमाड़ै दळ साहरौ ।
बरजागि जोध 'बाहड' हरौ, निज पोतारै नाहरौ ॥९७॥

नर नाहर भर समर, अडर गैमर आखाड़ै ।
छर किरमर छडियाळ, भूळ बकी अवभाड़ै ॥
बाबाड़ै दळ बिखम, अन्न महारोठ उधारै ।
सो दीठां 'नरसीघ', धीग मोटा ब्रद धारै ॥

कोटा किमाड अजमेरि का, आजि स मुहरै पेखियौ ।
'मानसिंघ' तणौ घरियां मछर, दळ दहुवै बळ देखियौ ॥९८॥

भिडी सिलह 'जगभाण', पाण दइवाण प्रमाणै ।
जैत खभ जमराण, तकौ मूछा बळ ताणै ॥
सुतण 'दीपचद' सूर, नूर खत्रवाट निमधे ।
प्रतिमाळी पडीर, हबसि भूथाण स बधे ॥

तिण बार – उस समय । तण – तनय, पुत्र । बाधै कळा – कान्ति बढी । लूण – नमक ।

९७ मारोठ – मारवाड के गोडावाटी परगने का केन्द्र स्थान । ठवै – मान्यता प्राप्त । सारे – खेंची । दौमजि – युद्ध मे । गांसबळ – तीर की ताकत से । गमाडै – नाश करता है । जड़ागि – पुत्र । आग पाडै – अग्नि प्रज्वलित करे । बाडै न खाग – तलवार को म्यान (कोश) नही करता । उभौ – खडा । सीमाड़ै – सीमा पर, पास मे । बाहड हरौ – बाहड का पौत्र, वशज । पोतारै – उत्साहित करने पर ।

९८. गैमर – हाथी । आखाडै – युद्ध-स्थल मे । छर – कटार । किरमर – तलवार । छडियाळ – बल्लम, भाला । भूळ – समूह । अवभाडै – पछाडता है, हटकारता है । बाबाडै – ललकारता है । बिखम – विकट । उधारै – उज्ज्वल करे ।

९९. भिड़ी सिलह – सिलह सनद्ध हुआ । जैतखंभ – विजय के लिए स्तभ स्वरूप । तकौ– वह । नूर – काति । निमधे – निमित्त किया हुआ । प्रतिमाळी – कटार । पडीर – तलवार । हबसि – हब्शी, अफगानी, उत्साह सहित ।

स्याम रै कामि आखाड सिध, खैराडो धाड खळा ।
गौड छळि आजि चढ अणी, वाजि लडैसो वीजळां ॥९९॥

रिणवट कूरमराव, चाव आमैरि चढावण ।
धाडि धाडि रजपूत, राडि दिढ दूजो रावण ॥
सती तणो नारेळ, तिको वेहड़ो उताळी ।
कहियो नाम 'किसोर', जोर भरियो जभाळी ॥
'क्रमसीह' तणो अणवीह कहि, रूपक सो राजा धरा ।
'अजमाल' मुहरि आपायतो, आज लडैसो अज्जरा ॥१००॥

छंद त्रोटिक

तवियै भड येह 'मुरारि' तणा । घण घाय विभाडण फौज घणा ॥
सजि सूर सनाह सनाह सजै । रणरूप जिसा नवनाथ रजै ॥
द्रुयणा घण घालण दूद दळा । वळि 'वैरियसाल' जिसा सवळा ॥
थळ खींचिय खंड स आभरण । मन सूध तके दियण मरण ॥
'कुंभक्रन्न' जिसा जुध क्रन्न तणा । 'भगवान' हरा अदभूत भणा ॥
महि 'मोहणदास' गहे मरट । भणियै सुत 'केहरि' री सुभट ॥
पत चाढण आजि स जाजपुर । 'द्रुगभाण' हरो गिणि सूरगुर ॥
'जयराम' जिसा वरियाम जगे । पडि खाटण जग्गिस ध्रम जगे ॥
'कलियाण' तणो रिणराव कथ । भणि 'भैरवदास' हरो समथ ॥

अणी – सेना । वीजळा – तलवारो से ।

१००. रिणवट–युद्ध मार्ग मे । धाडि धाडि – धन्य-धन्य । राडि – युद्ध मे । सती तणो नारेळ – सती के हाथ का नारियल, नष्ट होने को उद्यत । वेहडो – द्विघट । उताळी – अधीर । जोर भरियो – बल से परिपूर्ण । जभाळी – जम्भासुर । क्रमसीह तणो–कर्मसिंह का तनय । रूपक – शृङ्गार । राजाधरा – राजावाटी, भूतपूर्व जयपुर राज्य का एक परगना । आपायतो – अपनापन रखने वाला ।

१०१. तवियै – कहे, कहलाते है । घाय – घाव लगा कर । विभाडण – नष्ट करने । घणा – बहुत । रजै – शोभा पाते है । द्रुयणा–दुश्मनो को । घालण – नष्ट करने वाले । दूद – द्वन्द्व । खीचिय खड – खीचीवाडा । भणां – कहे, कहलाते है । महि – पृथ्वी पर । गहे – ग्रहण किए हुए, लिए हुए । मरट – मरोड, ऐंठ । भणियै – कहिए । पत – प्रतिष्ठा, आव । सूरगुर – शूर गुरु, वीरो मे श्रेष्ठ । वरियाम - श्रेष्ठ वीर । पडि – युद्ध मे । जगे – यज्ञ मे । समथ – समर्थ ।

खयराड पहाड़ बराड खत्री । खत्रिया मणि 'राघवदास' खत्री ।।
'खेतसीह' तणौ जुधसीह खरौ । हद हद्द मरद्द 'कल्याण' हरौ ।।
'मनराम' पमार स धार मह । गजगाह खळा दळ जोध गह ।।
'बुधसेणि' तणौ अवरी स बरं । घण नीर चढावण हार घर ।।
द्रभराज पतीवत गौड दखै । अजमेरि स खोखर बस अखै ।।
'भीमेणि' सु कवर बे सुभड । पति पूत पिता पति साथि पड़ ।।
'तजखांन' हरौ सिरताज तवै । भखि भारथ कौपणहार खवै ।।
थट भाजण 'चौंड' तणौ सु तमै । 'कुभक्रन' खवास स पास खमै ।।
सुधि ये तिण जाति अभग सही । कवि भारथ कथ्थ 'महेस' कही ।।१०१।।

छंद पद्धरी

सजि सूर अने सामत सार । येखियै जोध येहा उदार ।।
आकास भुजा तोलण अबीह । सो जडै पाव पायाळ सीह ।।
ऊगिया भाण पेखै प्रभाति । भड हुवा येकठा येणि भाति ।।
नीद्दसै येमि दूजौ निसाण । दीपिया जोध माझी दिवाण ।।
बरजागि आगि खट तीस बस । वोपिया रथी महारथी अस ।।
नख सिखा सिलह सज्जै निराट । घण मिळै जागि जोगिंद्र घाट ।।
भड केडक जाफरा रग भीन । लडि जौति मद्धि है बास लीन ।।

खयराड – खैराड प्रान्त । बराड खत्री – विकट क्षत्रिय । मणि–सिरमौर, मणि तुल्य । खत्री – क्षत्रिय । जुधसीह खरौ – युद्ध मे खरा सिंह । हद हद्द मरद्द – मर्दानगी की सीमा । धार महं – धारा महि, मालवे का धार प्रान्त । गजगाह – युद्ध । गहं – गहरा, समूह । बर – वरने वाला । नीर – जल, आब, कीर्ति । घर – कुल के, घर के । द्रभराज – (?) । बे – दो । सुभडं – सुभट । तवै – कहिये, कहें । भखि – कहिये । खवै – कहलाता है । थट – समूह । चौंड – चूडा । खवास – सदा निकट रहने वाला सेवक । खमै – बिल्कुल समीप । येतिण – इतनी । कथ्य – वर्णन कर । महेस – महेशदास कवि ।

१०२. सार – लोह, शस्त्र-अस्त्र । येखियै – कहिये, देखिये । येहा – ऐसे । तोलण – तोलने वाले । पायाळ – पाताल लोक । ऊगिया – उदय होते । भाण –भानु, सूर्य । पेखै – देख कर । येकठा – एकत्रित । येणि – इस । नीघसै – बजे । येमि – इस प्रकार । निसाण – वाद्य, नक्कारे । दीपिया – देदीप्यमान हुए । मांझी – मध्य मे, मुखिया । खट तीस बस – छत्तीस वशो के । वोपिया – सुशोभित हुए । निराट– बिल्कुल, पूर्ण । घण – गण, रुद्र के सैनिक, बहुत से । केइक – कतिपय । जाफरां – केशर । रंगभीन – रग से भीगे हुए, रग से सराबोर । बास – निवास ।

जाणिजै जान कारण जगीस। सह वधि सेहरौ टोप सीस ॥
सिरदार अवै सज्जै सनाह। वर गौड़ 'अजमल' वाह वाह ॥१०२॥

छंद दोहा

कवि वेदे दे...कही, यह गल्लां सो अच्छ।
पीछै सिलह परठीयै, पहली कीजै कच्छ ॥१०३॥

छंद भुजंगी

कछे काछ जोधार मेवास वाछं। सरूप मनौ मल्ल ते भल्ल साछं ॥
विहू बाहुवं दंड परचंड वीरं। मनौ भीम आकास सूवन सरीरं ॥
द्रग राजत तेज तै सूर वारं। अरी फौज फारांन तै अधियारं ॥
यह भाय देखै यते चख्खि भीनं। मनौ नवौ नाथांन पाराथ वीनं ॥
करै काछ पहरै उभै पाय जामं। यकं पट्ट दुतियं अगछाळ नामं ॥
जड़ै राग भूजा अड़ै आसमांनं। जबै पाय मौजा सचौजा जवानं ॥
विपद हरै स्वेदक वाय वीरं। वधै छोह पचाळिका जांनि चीरं ॥
जरद्दं तस ऊपर बांधि जेहा। तस्समा तणै ताणि जूवाणि तेहा ॥
दस्सता वळै बाधिया दस्सतानां। वहै आजि फौजा गजा तणा बानां ॥
धरै टोप तै सीस ये वोप पूगै। अरक्क जिका ऊदिया सीस ऊगै ॥

जान – बारात। जगीस – जगदीश, शिव। वर – वर, दूल्हा। अजमल – अर्जुन।

१०३. वेदे – विग्रह, युद्ध। गल्ला – कथा। परठीयै – दीजिए, भेजिए। कच्छ – कच्छा।

१०४. कछे – कसे, कच्छे। मेवास – रक्षा का स्थान। वाछं – वास, इच्छा। साछं – सच्चे। विहु – दोनो। बाहुवं – भुजा। सूवनं – स्वर्ण का। द्रग – नेत्र। राजंत – शोभा। तै – वे। वारं – समय। फरांन – फाडने के लिए, विदीर्ण करने के लिए। अधियारं – अधीर, उतावले। भाय – भाँति। चख्खि – चक्षु, नेत्र। नवौ नाथांन – नव नाथो मे, नव सिद्धो मे। पाराथ – अर्जुन गौड। वीन – दूल्हा। उभै – दोनो। पाय – पैरो। पाय जामं – पजामा। यक – एक। पट्टं – वस्त्र। राग – जघाओ का कवच। अड़ै – स्पर्श करे। सचौज – उत्साह सहित। वाय वीरं – हनुमान (?)। छोह – जोश। पचाळिका – द्रौपदी। जरद्दं – कवच। तस – तश्मे, उस पर। तस्समां – तश्मे। तणै – के। ताणि – खीच कर। दस्सता – हाथो के। वळै – फिर। बानां – भेप। वोप पूगै – शोभा को प्राप्त हुए। अरक्क – सूर्य। ऊदिया – उदयाचल।

वधै गाढ मे वाढ जमदाढ गाढ़ । बहै खाबळं डाडरा आणि बाढ़ं ।।
असै खड़ग वधै अंगजे अगंजे । गुमर जेणि दरगै 'अमर' राव भजै ।।
बळै बाधि भूथाण मे भरै बाणां । करां झालि गांजीव जेही कबांणां ।।
अलीबंद बांमी भुजा भल्लि धारै । प्रथीनाथ कीरत्ति काजे पवारै ।।
पुणै छंद येतो भुजगीप्रियातं । छत्री बस खटतीस 'अजमाल' छातं ।।१०४।।

छंद छप्पय

सिलहबध सिरदार, सूर सामंत सिघाळो ।
येक येक आगमै, लाख लाखां लकाळो ।।
जुडिया भड़ जोगिंद्र, जाणि सिवराति स जग्गे ।
क्रम क्रम जुद्ध ज'''करै, बरै अपछर बग मगै ।।
'अजमाल' गउडि मधि वोपियौ, सिधि गोरख चद्रसेख सा ।
येखियै जोध भेखै यसा, आजि अलेख अलेख सा ।।१०५।।

छंद दोहा

आजि अलेख अलेख सा, भडांनाथ यण भति ।
'अजमल' हैमर मगियो, गैमर जेहो गति ।।१०६।।

छंद ऊधोर

गैमर जिसै हैमर गात । पेखै सूर रग प्रभात ।।
साकुर बालिनो सिरदार । ऊचिस्रवा नौ अवतार ।।

जमदाढ़ – तलवार, कटार । खाबळं – नाले, टेढे चलने वाले । डाडरा – वक्षस्थल की हड्डी । बाढ़ं – बाढ, प्रहार । असै – इस प्रकार के । अगजै – अजयी । गुमर – गर्व । जेणि – जिसने । दरगै – दरगाह मे, दरबार मे, आमखास मे । अमर राव – राव अमरसिंह को । भजै – मारा । गाजीव– गाडीव धनुष । जेही– जैसी । पवारै – प्रवाडे, प्रशस्ति । छात – छत्र, शीर्षस्थ ।

१०५ येक येक आगमै – एक से एक आगे । जोगिंद्र – योगिराज, शिव । सिवराति – शिवरात्रि । क्रमक्रम – क्रमश । मगै – माग कर । गउडि – गौड । मधि – मध्य मे । सिधि गोरख – सिद्ध गौरक्षनाथ । चंद्रसेख सा – शिव जैसा । भेखै – भेष मे । यसा – ऐसे । अलेख – अलक्ष्य ।

१०६. हैमर – घोडा । मगियौ – मगवाया, मागा । गैमर – हाथी । जेहो – जैसा । गति – गात्र वाला, चाल वाला ।

१०७. सूर – सूर्य । रग प्रभात – लाल वर्ण । साकुर – घोडा । बालिनौ – वालिनो राजा या वादशाहो की ओर से सामतो को सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला घोडा जो उन्ही की ओर से सदा चारा दाना आदि पाता था । ऊचिस्रवा नौ – उच्चैश्रवा का, इन्द्र के घोडेका ।

असली थेट धर अैराक। हुवै बिळंद बागा हाक ।।
जिण रौ बहै येहो जाणि। मेक हजार मुहरि प्रमाणि ।।
पडव आय चहुवै पासि। बिफर पेखियौ वरहासि ।।
छोडै भूल तगी छोडि। लीधा खुरहरा कर लोडि ।।
करि करि खाति भाति कुमाय। परचड कध पूठीय पाय ।।
दूजा फेरियौ दुसमाल। लागौ आजि आभा लाल ।।
माडै पीठि गदिय पलाण। येहो दीध मुख अहलाण ।।
ताणै तेज तंग दुतग। आणै कडा-भीडै अग ।।
सोवन गात मे सिणगार। येहो पेखि लूण उतार ।।
चमर स्याह पख्खर चाढि। बहळौ आजि बढसी बाढि ।।
उतमग सिरी वोपै येह। जे झळकत मुकर जेह ।।
बहळौ कहै अखता वेगि। त्रहसौ बाधि भूप स तेगि ।।
उलटा बाटका सुम अेह। जडिया नाळ चंद्रस जेह ।।
पाये उडती पखराज। येहो तुरि नकौ आज ।।
बितड उवर जे बाजोट। कळहणि पाडणौ धसि कोट ।।
बेफर जांणि वडफर बध। कध बिळद अनमी कध ।।
बाजै बिन्है नासा बस। स्वासा गिणै तेज असस ।।

थेट – ठेठ। धर – धरा। अैराक – ईराक देश। बिळद – बुलद, वडी। बागां हाक – हाक बजने पर। मेक – एक। मुहरि – मोहरें, स्वर्ण मुद्राएं। पडव – साईस। बिफर – जोश मे उतावला। वरहासि – घोड़ा। छोडै – उतार कर। भूल – पाखर। तगी – तग, जीन का कसना। खुरहरा- खुर्रा व्रश। खाति – ध्यान दे दे कर। कुमाय – अच्छी प्रकार मालिश कर तैयार किया। पूठीय – पीठ। दुसमाल – घोडे को पोछने का कपडा। आभा–काति, आकाश। पलाण – जीन। दुतग – दो तग। आणै – मिलाए। कडा-भीडै – कस कर कडे जड़े। बहळौ – जोशीला, उतावला। उतसंग – सिर। सिरी – श्री, मस्तक का जालीदार आभूषण। मुकर – शीशा। अखता – उतावला, तेज। त्रहसौ – तरह से, विधि से (?)। बाटका – कटोरे। सुम – खुर। नाळ चंद्र – चद्राकार लोहे का नाल। पखराज – पक्षीराज, गरुड। नकौ – कोई नही। बितड – घोडे का, विशाल। उवर – उर। बाजोट – वडी चौकी। कळहणि – युद्ध मे। पाडणौ – गिराने वाला। धसि – प्रवेश कर। कोट – दुर्ग। बेफर – दोनो बाजू, घोडे के अगले दोनो कधे। वड़फर – ढालें। अनमी – अनम्र, उत्तुग। बाजै – बजते हैं। नासा – नासिका। बस – बांसुरी। असस – बहुत।

पीवै अजुळी जळ पाणि। घाये घातणौ घमसाणि ॥
नयणे येह सोभा नाम। रचिया जाणि साळिगराम ॥
श्रवणे जौति सारग सूघ। धज बिळद जीपण जूघ ॥
पूठी येह मे परमाण। समरथ गात मे सोभाण ॥
चमर जेमि चमर चार। डमर दाखणौ जुध बार ॥
जघे नूत नटवा जाणि। पेखै फाळ ग्रग प्रमाणि ॥
खजन जेमि चचळ खाति। भर वौ झाप मक्कड भाति ॥
छैडि बाळि हूत उछाह। रेसम डोरि लेतौ लाह ॥
यण आरूढि सी 'अजमाल'। ढाहण आजि गयदां ढाल ॥
रचि उघौर छद कविराज। बुधि प्रमाण वरण्यौ बाज ॥१०७॥

छंद छप्पय

ढाल गजा ढाहसी, आजि बेगागळ येही।
लालबे बाहा नाम, तिकौ उचिस्रवा तेही ॥
लखि धूप खेवजं, पमग येहौ पाखरियौ।
जुधि बेळा जाणिजै, अरस हूता ऊतरियौ ॥
यम आय दरोगै अग्गळै, कही अरज जोडै करा।
कासा अन बारीगरा, हुई तैयारी हैमरा ॥१०८॥

घाये – घाव। घातणै – करने वाला। घमसाणि – युद्ध, सहार। सारग – हरिण। धज – घोडा। जीपण – जीतने वाला। पूठी – पीठ। गात – गात्र। सोभाण – शोभित। चमर – पूछ, दुम। चार – चारु, सुदर। डमर – ठाटबाट, आडम्बर। नटवा – नट। फाळ – छलाग। चचळ – चपल। खाति - सावधान। झाप – छलाग। मक्कड़ – बन्दर। छैडि – छेडने पर। बाळि – (?) उछाह – उत्साह। लाह – लाभ आनन्द। आरूढिसी – चढेगा। ढाहण – ध्वस करने। गयदा – हाथियो के। ढाल – रक्षको को। बाज – घोडा।

१०८. वेगागळ – तीव्र गति वाला। लालवे – लालवेग, घोडे का नाम। वाहा – वाहन। तेहौ – जैसा, समान। धूप खेवजै – धूप आदि खेने योग्य। पमंग - घोडा। पाखरियौ – जिरह से सज्जित। अरस – आकाश। दरोगै – दरोगा, रावणा जाति का सेवक। अग्गळै – आगे, सामने। करा – हाथ। कासा – खासा। बारीगरा – बारगीर, साधारण।

समर चढै 'साईदास' आयो स पाणै । 'जसा' रौ यसो वोपियो जमराणै ॥
जकौ आजि साहां बिन्है हूत जूटै । तिकौ पाव आडिग सो सीस तूटै ॥
'कुसळसिंघ' रणधीग चढियौ करारौ । सदा भाखरा पौतरां माहि सूरौ ॥
चढै भाण 'इंद्रभाण' आयौ भुजाळौ । राजा गौड री पाखती रख्खवाळौ ॥
'किसनदास' चढियौ असौ सूर कोपै । अणी बींद पातळौत रै बस ओपै ॥
चढै गौड मारौठ रा घणा गाढा । ठिकाणै ठिकाणै रहै जोध ठाढा ॥
नरानाथ 'नरहर' इसौ कहर निरखे । पुणे घात पाती अग नी काढि परखे ॥
बळै सीह 'नरसीह' चढियौ बहस्सै । कसै बाग केकाण केवाण कस्सै ॥
बळै चढै 'जगभाण' दइवाण बाकौ । यळा ऊपरा राखबा बात आकौ ॥
कहर चढै कूरम्म माझी 'किसोरौ' । तको ताणिया सीस आमैरि तोरौ ॥
हवे चढियौ विप्र 'श्रीमणि' दुबाहौ । वडौ 'खेम' जोसी तणौ खग्ग बाहौ ॥
बिढैबा जकौ नही आणै बिचार । द्विज 'सोमदत्त' चढै सत्त सार ॥
बळै 'तेजसी' भाट चढियौ विकट्टै । घणा भाजणो गांजणो घाघरट्टै ॥
'हरज्जी' जिय बध दूजौ हठीह । सिधू बाजिया पाधरौ तकौ सीह ॥
बळै दरोगो रसोई तणौ बारी । कही नाम 'मेघौ' घणौ यत्तबारी ॥
'नरो' चढै नाई खरो ही नजीकी । जकौ जाणतौ बात आघात जोकी ॥

आयो – आया । जसा रौ – जसवत का पुत्र । आडिग – अडिग । भाखरा – भाखरसिंह के । पौतरा – पौत्रो मे । भुजालौ – बलवान, बलिष्ठ बाहु । अणी बींद – सेना का दूल्हा । पातलौत रै – प्रतापसिंह के बस – कुल मे । ओपै – शोभा पाते है । घणा – बहुत । ठिकाणै ठिकाणै – स्थान-स्थान पर रहने वाले । जोध – योद्धा । ठाढा – प्रबल । नरांनाथ – सेनानायक, स्वामी । इसौ – ऐसा । कहर – कडवा, आपत्तिकारी, युद्ध । घात-पाती – तलवार के दावपेंच । काढि – निकाल कर । बहस्सै – जोश से । केकाण – घोडा । केवाण – तलवार । कस्सै – बाधे हुए, बाध कर । दइवाण – राजा, वीर । बाकौ – बाकुरा । यळा – पृथ्वी । राखबा – रखने हेतु । आंकौ – अङ्क, निशान, प्रसिद्धि की वार्त्ता । माझी – मुखिया । किसोरौ – किशोरसिंह । ताणियां – तनाये हुए, ऊपर उठाए हुए । आमैरि तोरौ – आमेर का गर्व । श्रीमणि – शिवमणि । दुबाहौ – वीर । खेम जोसी तणौ – खेमराज जोशी का पुत्र । बाहौ – चलाने वाला । बिढ़ै – युद्ध । आणै – लाता । सत्त – वीर, बलवान्, सबके । सारं – तलवार, साथ मे । तेजसी – तेजसिंह । भाट – राव, भाट जाति का । घाघरट्टै – युद्ध मे । हरज्जी – हरजी, हरि नाम का । दूजी – दूसरा । हठीह – हठीला । सिधू – सैंधव । पाधरौ – सीधा, प्रत्यक्ष । बारी – जाति विशेष । मेघौ – मेघराज । यत्तबारी – विश्वास का । नरो – नरो नाम का ।

बरणिया सरीकी मरण रा यता आछा। पुळै आवसी ओर ते घणां पाछा ।।
सूरा जकै पंचसै लार सज्जे। बीरारस्स रौ तीसरौ नाद बज्जै ।।
चमू सामता येमि हल्ली सुचल्ली। भोळानाथ री जाणि जम्माति भल्ली ।।
सिलहदारिया सेल सूर स पाणे। पुणै सूर झाले यता सूळपाणे ।।
बड़े तोबची मोहरै दोय खासा। पछै पाखती ओर खवास पासा ।।
खडे कौतिल मोहरै करै खूंदा। फबै रैसमी डौरि झिलमेस फूदा ।।
जिया सोवनी जीन नै तेसो जगीसै। दूजा सूर जाणै तुरघा पीठ दीसै ।।
दियां सीस टोप सिफर बणै दौळा। दिपै हूदादार ढिगे चमरं ढौळा ।।
खडे एक हू एक भड खडे आगा। बळै कह्यौ राजा खड़ौ जौड़ि बागा ।।
धीरा खडौ हो रावतो धीर धारो। बडा ठाकुरे बात मोटी विचारो ।।
जडौ मारुवा दुसारा बोचि जाडी। अबै मरण री घड़ी दो तीन आडी ।।
चमूनाथ 'अजमाल' सामा चलाया। अबै आपरा मोरछा बीचि आया ।।
बड़ौ मोरछौ हरवल्ल वामी। नरानाथ ऊभौ स पाराथ नामी ।।११०

सरीकी – भागीदार। यता – इतने। पुळै – दौड़ कर, चल कर। आवसी – आयेंगे। पाछा – लौट कर। जकै – वे। पंचसै – पाच सौ। लार – पीछे। नाद – वाद्य। सामता – सामन्ता, योद्धा। भोळानाथ री – शिव की। जमाति – समूह, सेना। सेल – भाले। पांणे – हाथो मे। झाले – लिए हुए, पकडे हुए। सूळपाणे – त्रिशूल हाथ मे लिए। तोबची – तोपची। मोहरै – आगे। दोय – दो। पछै – उनके पीछे। पाखती – बगल मे। ओर – अन्य, तरफ। खवास-पासा – सदैव पास रहने वाले सेवक। कौतिल – जलूसी घोडा, बिना सवार का घोडा जो आवश्यकता पर योद्धा काम मे लेते थे। खूदा – पैरो से धरती को पीटतें है। झिलमे – चमकती है। जीन – घोडे का चारजामा। सिफर – ढाल। दौळा – चहुं ओर। हूदादार – सेवक (?)। ढिगे – पास मे। चमर ढौळा – चमर ढुलाने वाले। खडौ – चलो। रावतो – योद्धाओ, सामन्तो। मोटी – बडी। जडौ – प्रहार करो, कसो। मरुवा – राठोडो। दुसारा – तलवारें। जाडी – गहरी, घनी, बहुत। आडी – बाकी। चमूनाथ – सेनापति। सांमां – सामने। चलाया – चल कर गया। मोरछा – मोरचा। ऊभौ – खडा। पाराथ – अर्जुन। नामी – नाम का, प्रसिद्ध।

अबरी बर 'अजमाल', चढै नरइद सचावौ।
तीन बाधि तरवारि, दोय सुलिताणां दावौ॥
लालबे बाहा नाम, तुरी चढिया रिण तावै।
लख घाव लागिया, बळै लख घाव बहावै॥
सिरदार सूर चढिया सकौ, सार कोट बधि सिली।
तिण बार सीह अरजण' तणी, मूछ जाय भौंहां मिळी॥१०९॥

छंद भुजंगी

असवारी अरजनजी की वरनन

चढै गौड़ पीडी तणा घणा चावा। दळा ऊपरां हांकबा तणै दावा॥
चढ़ै 'बीरभद्र' बीर काकौ करारौ। सकौ बाज आरूढ़ जेहौ सिरारौ॥
जिय रग कूमैत अैराक जाती। छिलै बाग ढीली पड़ै कोट छाती॥
अणी राव तिणं वोपै अभगे। करां माळ घल्लं तजितौ कुरगे॥
जिह ऊपरां पाखर सिरी जाणै। वडा सामत बड़ौ घोड़ौ बखाणै॥
असौ आज दंता घड़ा नै उखेळै। मुहामूह सूलिताण नै मूह मेळै॥
जिय पाखती भीच अेहा जगीसै। दळा ऊपरा पार रा सिरै दीसै॥
जियं पाखती दसौंधी 'स्याम' जांणै। तिय अणी बाणी तणा ब्रद ताणै॥
'केसौदास' रौ खौहरी तणौ खाटै। बहै लोह बहतौ जकै अध्ध बाटै॥

---

१०९. अबरीवर – विना लडी हुई फौज को वरने वाला। नरइन्द – नरेन्द्र। चावौ – प्रसिद्ध। दावौ – युद्ध, दाव। तुरी – घोडा। रिणतावै – रण के लिए। सकौ – सब कोई। सार कोट – लोह दुर्ग। सिली – सिलह। भौंहां मिळी – भोहो के जा लगी।

११०. पीडी – युद्ध। सिरारौ – सिरह, श्रेष्ठ। जियं – जिसका। कूमैत – लाखी, स्याही लिए लाल रग। छिलै – छलकती। बाग – रास। ढीली – विना खीची हुई। करा माळ – हाथ मे माला। घल्लं – लिए। तजितौ – झोका। कुरगे – कुमेत रग का, मृग। दंता घडा नै – गजसेना को। उखेळै – उखाडे, उखाडने की क्रिया का भाव। मुंहामूह – मुह के आगे। मुंह मेळै – मुह मिलावे। जगीसै – इच्छा वाले, युद्ध मे। पार रा – पराये, दूसरो के, विपक्ष के। सिरै – श्रेष्ठ, सिर के ऊपर से। पाखती – पार्श्व मे, बगल मे। दसौंधी – राव, भाट, दान का दशमांश लेने वाला। स्याम – श्याम नाम का। अणी बाणी – सेना और काव्य। खौहरी – खोरी स्थान। बहै – बहते हुए। जकै – वह, जो।

विया जेमि नह बाट भगवाट लहसी। राजा गौड री मीढ राखै सु रहसी ॥
महीराव खेराड चढियो 'मुरारो'। असौ सूर घोडौ असौ आसवारी ॥
जिय रग नीलौ घणौ स्वेत जांगो। वडा मोल रौ बडौ मोती बखाणै ॥
सुणै नाम हस सरस घणौ सूरो। पूर क्यावर जे बळै गात पूरौ ॥
उड़ै वोयणा नै नही कमी आणै। बडा सूर देखै तिकौ ही बखाणै ॥
'प्रथीराज' कूमैत चढिया पमगे। अड़ै सीस ब्रहमड हूता उमगे ॥
तवै गात उतमग नै तेज तातौ। कटारा तणा घाव वाहे करातौ ॥
गवड 'राजसी' चढै तिणै बार गहरौ। पुणै गौड राजा सनाहा स पहरौ ॥
जिकै सिल्लहां जेयणै काज जडजै। घणा पाड बैरी घणां बीच पड़जै ॥
कहै कवर 'केलण' हरो सिलह केही। दूणा जतन कीधा नकौ रहै देही ॥
रहै नही देही परम राम रहसी। कळहां तणी जो जगै बात रहसी ॥
सुणै बात रजपूत री अजं सारौ। कहै भीछ भीछां स हूता करारौ ॥
चढै तुरी नीलै खुरी खूम चालै। घणा घाव लागा पछै घाव घालै ॥
बळै 'मानसी' चढै 'केलण' बिजाई। भाई भलै जोड़ै खडा भला भाई ॥
लडे आजि वेऊ सुरा थान लेसी। दळां आज रै मोहरै मरण देसी ॥
चढ़ै 'आसकन्न' जोधा जोध चाळौ। मुणै बीस बीर मरै मच्छराळौ ॥
जकौ भांजणे खळा खग 'धीर' जायौ। उछाटे तुरी 'अजा' री गोढि आयौ ॥

अध बाटै – आधा बांट लेता है। बाट – मार्ग। भगवाट – युद्ध से भागने का। लहसी – लेगा। मीढ़ – बराबरी। असौ – ऐसा। मोल रौ – मूल्य का। हंसं – हस नाम का घोडा। पूर – पूर्ण। क्यावरं – श्रेष्ठ कार्य, बडा कार्य। गात पूरौ – पूरे शरीर का, लबे-चौडे कद का। वोयणा – पैरो से। अड़ै – स्पर्श करे। ब्रहमड – ब्रह्माण्ड। उतमग – सिर। तेज तातौ – चाल और मिजाज का तेज। वाहे करातौ – प्रहार कराते हुए। जेयणै – दाहिनी ओर। जडजै – बांधे। पाड़ – गिरा कर। केही – कैसी। दूणा – द्विगुना। नकौ – नही। देही – देह, शरीर। रहसी – रहेगा। कळहा तणी – युद्धो की। जगै – ससार मे। अजं – आज तक। सारौ – सब। खुरी – सुम, खुर। खूम – रोदता हुआ। पछै – पश्चात्। घाव घालै – शत्रुओ के घाव लगावे। मानसी – मानसिंह। बिजाई – दूसरा। भलै – अच्छे। जोडै – युग्म। बेऊ – दोनो। सुराथांन – स्वर्ग, देवताओ का स्थान। देसी – देंगे। आसक्रनं – आशकर्ण। चाळौ – युद्ध। मुणै – कहता हुआ, ललकारता हुआ। मच्छराळौ – वीर। जकौ – वह, जो। धीर जायौ – धीर का पुत्र। उछाटे – उछाल कर, कूदा कर। अजा री–अर्जुन की। गोढि – पास।

छंद दोहा

'अजण' बसीठी उल्लहे, दळ 'मुकदेस' दुबाह ।
'जसमत' अजै न जागियौ, सिर लग्गा पतिसाह ।।१११।।

छंद त्रोटक

मुणै 'अजमाल' 'मुकदेस' हूता मरद्द । साहिजादा बिन्है आय चढिया सरद्द ।।
मारुवै राव काचौ मतौ मडियौ । तिजड गही बिन्है फौजा सिरै ताडियौ ।।
पहर राति हूता गहर बाणा पडै । असुर दिल्ली तणौ राज लेबा अडै ।।
'सूर' हर देखिये नकौ झाझो सम्मरा । दाखवै यता ऊपरी खाली डम्मरा ।।
जुडण री बात जाणै खित्री जेतला । आणिया नही मसलत्ति मे येतला ।।
जीतिया जूध ये जकौही जीतसी । बिजड धारा गहर तिता सिरै बीतसी ।।
आजि मोटौ भुजा भार पडियौ असौ । केकाण केवाण सिलहां कसौ ।।
मारकौ तुड कहियै पिता 'मधुकरौ' । हुवे दळ भाजियौ 'खुरम्म' 'अकबर'हरौ ।।
फतै राव 'रतन' बुरहानपुर फवाणी । कळू भारथ कथा मांझल कहाणी ।।
'भोज'राव चोज दोय राह सिर भुजाळौ । लाख लाखा खळा भाजणौ लकाळौ ।।
राखियो नीर जिण हीर हिंदवाण रौ । खिजै रहियौ मने धणी खुरसाण रौ ।।

---

१११. अजण – अर्जुन गौड । बसीठी – दूत । उल्लहे – उमग युक्त । मुकदेस – मुकन्दसिंह हाडा । दुबाह – वीर । सिरलग्गा – सिर पर आ लगे, समीप आ गए।

११२. सरद्द – सीमा पर । मारुवै राव – महाराजा जसवन्तसिंह ने । काचौ मतौ – अधूरा विचार, कायरतापूर्ण निश्चय । मांडियौ – किया । तिजड़ गही – तलवार पकड कर । सिरै – सिर पर । तांडियौ – गर्जा । गहर – सघन, गहरी । राजलेवा – राज्य लेने के लिए । अडै – भिडे, हठपूर्वक सामने खडे, रुपे । सूरहर– महाराजा शूरसिंह का पौत्र, जसवन्तसिंह । झाझो – अधिक, तत्पर । सम्मरां – समर मे । खाली डम्मरां – खाली आडम्बर । आणिया नहीं – आए नही । जीतिया – जिन्होने जीते है । जकौ ही – वेही । जीतसी – जीतेंगे । बिजड धारा – तलवारो की धारें । तिता – उन्ही के । बीतसी – पडेगी । भार – वजन, दायित्व । असौ – ऐसा । कसौ – बांधो, जडो । मारकौ तुंड – महापराक्रमी, हाथी को मारने वाला । मधुकरौ – माधवसिंह । हुवे – भिट कर । खुरम्म – बादशाह शाहजहाँ का शाहजादे पने का नाम । अकबर हरौ – अकबर का पौत्र । फतै – फतह । फवांण– फबी । मांझल – मध्य, मे । चोज – विनोद मे । दोय राह – हिन्दू-मुसलमान दोनो धर्मवालो मे । नीर – कान्ति, जल । हीर – चमक, आभ । खिजै – नाराज होकर । रहियौ – रह गया । मनै – मन मे । धणी खुरसाण री – बादशाह ।

'दूदरज' अडीलो रहे अनमी दुझल्ल । हूह पड सीकरी जेण-दीधी हमल्लं ॥
सूर 'रतनेस' सूवर अणी साभियौ । वाझिया घाव तिण घाव सिर वाझियौ ॥
आजि चहूवांण हाडा बिरद उजाळै । सुतण 'मधुसाह' फौजा सिरै सिघाळै ॥
आजि पतिसाही रै कामि यण आवस्या । पटै सुरलोक बळि मुकतिबा पावस्या ॥११२

छंद नीसाणी

बिसठाळी 'मुकदेस' हू भणिये कथ भारी ।
'अजमल' जेती ऊचरी सो दक्खी सारी ॥
येहा हाडा देखिये तेहा अवतारी ।
सजिया राग सनाह सजि घुव टोप सुधारी ॥
बीजळ बीजळ बाधिया कडि बद कटारी ।
बळैस वडफर बाधिया आरणि अहकारी ॥
ठावा स भूखण ठौड ठौड सह देह सिगारी ।
मुकता माळ बिसाल मडि नगहार निहारी ॥
मणि माणिक पना अमोल बोहौ मोल जुहारी ।
आजि अत देबा अवसि करि मत करारी ॥

दूदरज – राव दूदा हाडा बूदीपति । अडीलौ – हठीला । दुझल्लं – वीर । हूह – (?) । सीकरी – फतेहपुर सीकरी स्थान । जेण – जिसने । रतनेस – राव रतन हाडा ने । अणी साभियौ – भाले की नोक से मार दिया । वाझिया घाव – घाव होने पर । वाझियौ – दूसरों पर हुए । सुतण मधुसाह – माधवसिंह का पुत्र । यण – इस । पटै सुरलोक – स्वर्ग का पट्टा, स्वर्ग का राज्य ।

११३. बिसठाळी – आपस मे सन्देश लाने ले जाने वाले ने । मुकदेस हूं – मुकन्दसिंह से । भणिये – कही । कथ – कथन, बात, समाचार । जेती ऊचरी – जितनी कही । सो – वह । दक्खी सारी – समस्त कही । येहा – ऐसे । तेहा – जैसे । घुव-टोप – शिरस्त्राण । बीजळ बीजळ – बिजली जैसी तलवारें । कडिबद – कटिबद्ध कटि पर । बळैस – फिर । वडफर – ढाल । आरणि – युद्ध । ठावा – चुने हुए । ठौड ठौड – स्थान स्थान पर, अग अग पर । मुकतामाळ – मोतियो की माला । नगहार – जवाहिरातो के हार, नगीनो के हार । मणि माणिक पनां – मणि- माणिक्य पन्ना । अमोल – बहुमूल्य । बोहौमोल – बेशकीमती । जुहारी– जवाहिरात । अतदेबा – मृत्यु प्राप्त करने । करि – कर के । मत – मन्त्रणा, निश्चय ।

हाडा आडा लोहडां झडां झूझारी ।
भाई सुभटा भाहरां तवि सेनि तयारी ।।
धज निसाण बाणां धरे गजदत प्रहारी ।
गवड़ राव दक्खी गला तेती अवधारी ।।११३।।

छंद छप्पय

मुणै येम 'मुकदेस', भडा भाइया स भेळौ ।
सिर लग्गा पतिसाह, आजि घर दिली उखेळौ ।।
गवड राव यह गल्ल, कहै सौइ भीछ करारा ।
येह अत आघात, बात जुग च्यार उबारा ।।
कवचट्ट बट्ट भरियौ कहर, अणियां बीद स अग्गरी ।
कळि अकळि येह नामौ करौ, बरौ घड़ा सो अब्बरो ।।११४।।

छंद सागर

'मोहणसिंघ' हाडौ अमोड । रोडवै कौंण जोधा अरौड ।।
कांम रौ कोट कहिये 'किसोर' । जिकौ जाणि भाराथ पाराथ जोर ।।
कहै सूर झूझार 'झूझारसिंघ' । धजा बधि धैंधीगरा मारि धींग ।।
'कन्हीराम' बरियाम माझी करारौ । भिडै काजि ब्रदा तणौ बाधि भारौ ।।

आडा लोहडां – तलवारो की आडी धाराओ में । झंडा झूझारी – सेनापतियो के झण्डो तक पहुच कर जूझने वाले । भाहरा– भाई बधुओ । धज– ध्वज, घोडे । तेती – उतनी । अवधारी – निश्चय की ।

११४. भेळौ – मिलाओ, भिडाओ । उखेळौ – युद्ध । सौइ – वही । आघात – युद्ध, प्रहार । जुग च्यार – चारो युगो मे । उबारा – प्रसिद्ध करें, बचाए रक्खे । कवचट्ट – कवच, कवच से जुडा हुआ । बट्ट – बल, ऐठ । भरियौ – भरा हुआ । अणियां – सेनाओ का । स – सबसे, वह । अग्गरी – अगाडी । कळि अकळि – युद्ध और बिना युद्ध, कलियुग मे सत्य युग । नामौ करौ – नाम करो ।

११५ अमौड – नही मुडने वाला । रोडवै – रोके । कौंण – कौन । अरौड़ – नही रुकने वाले को । काम रौ कोट – कार्य के लिए दुर्ग जैसा दृढ । किसोरं – किशोरसिंह हाडा । भाराथ – युद्ध में । पाराथ जोरं – अर्जुन की भांति पराक्रमी । झूझारसिंघ – जूझारसिंह हाडा । धजाबधि – ध्वजधारी । धेधीगरां – हाथियो की सेना । धींग – वीर । बरियाम – वीर । ब्रदा – विरुदो । भारौ – समूह ।

चवै सामंत मंत जोधा चव्हाण। अड़ो आजि सुरताण सेना अग्राण ।।
दिलो साहि रै कामि बरियाम दूठ। अडा-जूड सिलहाण, बधै अकूठ ।।
कही गौड़ 'अजमाल' वाता करारी। भिदी तकौ हाडा तणै मत भारी ।।११५

छंद छप्पय

दळानाथ चढै तै, 'मुकद' नीघस्स निगारां।
खळि भळिया खरहडा, हसि जोघा तिण बारा ।।
खळकता बखतरा, रौड पडतां पखराळां।
अधारी ऊघडी, सिरी गज झप सूंडाळा ।।
वाणा निसाण पीतव बरणि, गजां धजा फरके गयण।
'दूदरज' चढ़ै राव 'भोज' दळां, राव किना चढ़ियौ 'रयण' ।।११६।।

छंद नीसाणी

'मोहनसिंघ' चढिये अमौड घण डोहण घावा।
सीझोवण दळ सामठा दावानळ दावा ।।

चव्हाण – चौहान वश के। अग्राणं – अगाडी। दूठं – दुधर्ष वीर। अडाजूड़– भीडे हुए। अकूठं – वहुत। करारी – जवर्दस्त। भिदी – भेद कर गई, मन मे बैठ गई। तकौ – वे, जो। हाडा तणै – हाडाओ के।

नोट —इस छन्द मे राव मुकन्दसिंह और उसके अन्य चारो भाइयो के युद्धार्थ सजने का वर्णन है।

११६. दळानाथ – दलपति, सेनाध्यक्ष। नीघस्स – बजा कर। खळिभळिया – आदोलित हुए। खरहडा – मुसलमान। हसि – प्राण, हसे। बारां – समय। खळकतां – छलकते हुए, ध्वनि करते हुए। रौड – प्रहार। पखराळा – हाथी, घोडे, पक्खरधारी। अधारी – हाथियो और घोडो की आखो का आभूषण। ऊघडी – खुली। सिरी – हाथियो का आभूषण, श्री। गजझप – आभूषण विशेष। सूडाळां – हाथियो। पीतव बरणि – पीले रग के। धजा फरके गयण – ध्वजाएँ आकाश मे उडी। दूदरज – राव दूदा। भोज – राव भोज। किना – अथवा। रयण – राव रतन हाडा।

नोट :—ये तीनो राव मुकन्दसिंह हाडा बूंदी-कोटा वाले के पूर्वज थे।

११७ अमौड – पीछे न हटने वाला, वीर। घणा – बहुत। डोहण – मथन करने वाला। सीझोवण – सहार करने के लिए। सामठां – बहुत।

बळ बळ सूरा बहसिया ग्रणकळ उमरावां ।
हूंकळ कळहळ हैमरा चलिया दळ चावा ।।
सिलहां झळहळ साबळां झळहळि झळकावां ।
बिसरे टामक बाजिया सिंधू सहनावां ।।
मिळिया दळ 'मुकदस' रै बधव बहसावा ।
जांणे लछिमण राम जिम बाणे भुज बावा ।।११७।।

छंद दोहा

भुज वामां बणिया भुजां, भाई च्यार सुभट्ट ।
सूर चढ़े 'झूझारसिंघ', बाजे नद्द बिकट्ट ।।११८।।

छंद नीसांणी

सूर चढे 'झूझारसिंघ' रिणधींग स रत्तां ।
मद्द दुरद्दा मारवा मद खत्रवट मत्तां ।।
सूरा सिरदारां सजे तोखारा तत्ता ।
गढ़ बूंदी ग्रजमेर गढ पख बेऊ प्रभत्ता ।।
ग्रनड़ा जडां उखेळ वड वेछाड़ै वत्तां ।
ग्राखाडां ग्राखाड सिद्ध चवि ढाल चगत्तां ।।
भाई मिळिया भाहरा बर बीर बिरत्ता ।।११९।।

बहसिया – उत्साहित हुए। ग्रणकळ – वीर। हूंकळ – घोडो की ग्रावाजें। कळहळ – युद्ध मे। चावा – प्रसिद्ध। झळहळ – चमकते। साबला – भालो के। झलहलि – चमक। झलकावां – झरलाट। बिसरे – भयावने, युद्ध-सूचक, ग्रप्रिय। टामक – नक्कारे। सहनावां – शहनाइयां। बहसावा – जोशीले। बावा – चलाने वाले, वांयी भुजा।

११८. भुजवामां – वांयी भुजा पर, सहायक। नद्द – वाद्य, ध्वनि।

११९. रत्तां – ग्रनुरक्त, लीन। दुरद्दां – हाथियों का। मद खत्रवट मत्तां – क्षत्रियत्व के मद मे मस्त। तोखारा – घोडे। तत्ता – तेज, तीव्रगामी। पख – पक्ष। प्रभत्ता – प्रभुत्व सम्पन्न। ग्रनडा जडां उखेल – पहाडो को जडमूल मे उखाडने वाले। वेछाड़ै वत्तां – भयानककर्मा, दुर्धर्ष वीर। ग्राखाडा – युद्धो मे। चगत्तां – मुसलमान। मिलिया – मिले। भाहरा – बाधव (?)। बिरत्ता – विकराल, भयावह, ग्रनुरक्त।

छंद दोहा

बर बीरां मिळिया बहसि, मन घोरा मन मोट ।
'कन्हीराम' चढ़िया कहर, काळो मेवट कोट ।।१२०।।

छंद निसांणी

'कन्हीराम' चढिया करूर सत सूर सपाण ।
मन बसिया सुरलोक कमधि कसिया केकाण ।।
चाव विरद्दा चाढ़िवा सभरि चहुवाण ।
गजगाहा आगळि गरीठ साहां सुलिताण ।।
बे वाहा बणिया विरद बेहद बाखाण ।
'दूदा' लक्कड़खांन सा दळ भीछ बिपाण ।।
पहला बहलां पाडसी सैदां पाठाण ।।१२१।।

छंद दोहा

सैदां पाठाणां सही, पडसी ऊही ठांण ।
'कीसोवर' चढ़िया कहर, निघसियां नीसाण ।।१२२।।

छंद नीसांणी

चहुवाणे नीसाण बीर बीरारस बग्गा ।
'कीसोवर' चढिया कठीर आरणि उमग्गा ।।

---

१२०. बहसि – जोशीले । मन मोट – विशाल मन वाले । कहर – युद्ध, आपत्ति । काळो – वीर, सर्प । मेवट कोट – मरोड, अत्यत बलवान ।

१२१. सपांणं – बलवान् । केकाणं – घोडे । चाव – इच्छुक । संभरि – साभर के, साभर राजधानी के कारण सभरी कहलाने वाले चौहान । गजगाहां – युद्ध के । गरीठ – बलवान् । बे बाहा – योद्धा, दोनो भुजाएँ । बेहद – असीम । दूदा – कन्हीराम हाडा का पूर्वज दूदा । लक्खडखांन सा – दूदा हाडा का पिता लक्कडखान हाडा जैसा । बिपाणं – (?) बहळां – तेजी से बढ कर । सैदा – सैयदो ।

१२२. ऊही ठांण – उसी स्थान पर । कीसोवर – किशोरसिंह । निघसियां – बजे, ध्वनित हुए ।

१२३. नीसांण – वाद्य विशेष, नक्कारे । बग्गा – बजे । कठीर – सिंह । आरणि– युद्ध मे ।

काळजिमन सिर कोपियौ जिम मुचकद जग्गा ।
पग जडिया सिर पनग रा गयणे सिर लग्गा ।।
भड जीता कइ भारथौ भडि कदे न भग्गा ।
सुत 'मधसाह' दुबाह सोइ यम खडिया अग्गा ।।
खग झाळा बिकराळ खित दळ दोयण दग्गा ।।१२३।।

छंद दोहा

दळ दग्गा द्रोयण दुरत्त, सिर लग्गा पतिसाह ।
'मुकर्दसिघ' 'मधुसाह' सुत, रिण चढिया रिम राह ।।१२४।।

छंद छप्पय

दळ चढतै 'मुकदेस', बीर चढिया खग-बाहा ।
सीसोदा परमार, कमध चढिया कछवाहा ।।
चहुवाणा चावडा, गौड भाटियां गहीरा ।
तवि चाळक तूबरा, धाडि दहिया रणधीरा ।।
गोहिल्ल चढै वडगूजरा, हैकपे प्रथमी हली ।
रवदाण सीस चहुवाण री, चतुरगी सेन्या चली ।।१२५।।

छद नीसाणी

चतुरगी सेना चली यम सभरि वार ।
सहस येक भड सज्जिया वोपै असवार ।।

काळजमन – कालयवन । जिम – जिस प्रकार । मुचकंद – मुचुकद । जग्गा – जाग कर, जगने पर। पनग रा – शेष नाग का । गयणे – आकाश । लग्गा – लग गया । भारथौं – युद्धो । कदे न – कभी नही, कभी भी । मधसाह – माधवसिह का । खित – क्षिति । दोयण – शत्रु ।

१२४ दग्गा – जलने लगा । दुरत – प्रचण्ड ।

१२५. खगवाहा – तलवार चलाने वाले। कमध – राठौड । चाळक – चालुक्य । धाडि – वीर। हली – विचलित हुई। रवदांण – मुसलमानो के । सेन्या – सेना ।

१२६. संभरि – चौहानो की । वारं – समय, वालो। वोपै – शोभा पाते हैं ।

जडिया टोप सनाह जड़ि जडि राग जियार ।
टोपां ऊपरि बांधिया फैटा जरतारं ।।
बळै मौरचद्र बाधिया सूरा सिरदार ।
द्वादस तिलक बणाविया विध वेद विचार ।।
सिलहां झळमळ सामता भळहळ भालार ।
सहस किरण धरि ऊगियो किरि सूर सवार ।।
दूजा दणियर दीपिया 'मुकदेस' मझार ।
गज मोहरै अग्राजता बाजता नगार ।।
पैदल पायक धायका नायकां निहार ।
बाणदार तौबच्चिया येखै अणपार ।।
ताता आगळि कौतिला खिलता खूंदारं ।
साज झळबे सोवनी फबिया फूदार ।।
पाणे डौरि सपाट मे धरिया पर धार ।
जग ठणकै बाजता ठवि तेठी मार ।।
सुत्रनाळि गजनाळि रथा रथनाळि निहार ।
हडवड़ माची हैवरा धर पुड धूजार ।।
उडि गिरद मडळ अड़ि येखे अधियार ।
मडिया आपज मौरछा करि मत करार ।।१२६।।

फैटा जरतार – जरी के धागो के साफे । **मौरचंद्र** – चद्राकृति जैसे आभूषण । **विध** – विधि से । **भालारं** – भाले । **सहस किरण** – सहस्र किरण, सूर्य । **धरि** – धरा पर । **ऊगियो** – उदय हुआ । **सवार** – प्रातःकालीन । **दूजा दणियर** – दूसरा सूर्य । **दीपिया** – देदीप्यमान हुआ । **मझारं** – मध्य मे । **अग्राजतां** – गर्जना करते समय । **धायका** – धावा मारने वाले । **येखैं** – देखे । **ताता** – तेज, तीव्रगामी । **कौतिला** – आवश्यकता के लिए सज्जित रिजर्व घोडे । **खिलता खूदारं** – मस्ती मे पैरो की टाप मारते हुए । **झळबे** – चमके । **सोवनी** – स्वर्णमयी । **फूदार** – फूदे । **पाणे डौरि** – हाथ मे लगाम लिए हुए, सूत की दो डोरो के बल । **सपाट मे** – चाल विशेष । **धरिया पर धारं** – शत्रु सेना पर झोके । **ठणकै** – ठरणरण ठरणरण की ध्वनि । **ठवि तेठी मारं** – वैसे ही प्रहार । **हडवड़ मांची हैमरां** – घोडो की हडबडाहट हुई । **धरपुड़** – पृथ्वी तल । **धूजार** – कपायमान हो गया । **मडळ** – आकाश । **अड़ि** – जा लगी । **आपज** – अपने अपने, अपने आप । **मत** – निश्चय, सलाह । **करारं** – करारी ।

छंद छप्पय

कही स हाडा कथ्थ, सुणे बाहुडचो बसीठी ।
आच जौड़ि की अरज, मुणै कथ भारथ मोठी ॥
मन ये धार 'मुकद', इद जेहा व्रत धारी ।
छत्रपति बूदी छात, बात आघात बिचारी ॥
पच आत जिसा सुत पड रा, भारथ स्वारथ भारिया ।
सुतण 'मधुसाह' 'बीठळ' सुतण, विसठाळे ऊबारिया ॥१२७॥

यम आखै 'अजमाल', भडा कमधा अडसाला ।
खळे खेत पाधरै, नेत बाधिया निहाला ॥
किसू धरम रजपूत, पाण सिर सहै परायौ ।
जोवै की 'जसमत', उलटि दळ अणसिख आयौ ॥
चितराव चढै उहि लोक नै, करेस गौड करारवा ।
कळह साही चढीया कडै, मसलति माडी मारुवा ॥१२८॥

छन्द नीसाणी

मारू केइक मोट मन येहा अडसाला ।
'जसमतसीघ' बुलाविया मसलति मझाला ॥
'बीठळ' जेहा बाकुडा अणिया भमराळा ।
जे चापा ब्रद चाढणा आगा अजुवाळा ॥

---

१२७. सुणे – सुन कर । आच जौडि – हाथ जोड कर । मुणै – कहे । कथ – कथन । मोठी – मधुर, प्रिय । इंद जेहा – इन्द्र जैसा । बूदी छात – बूदी राज्य का स्वामी । आघात – भिडने की, आक्रमण करने की । पड रा – पाण्डु के । भारियां – भारी, प्रबल । सुतण मधुसाह – राव माधवसिंह के पुत्र । बीठळ सुतण – राजा विट्ठलदास के पुत्र ।

१२८. अडसालां – अरिशल्यो, हठीले वीरो । खळे – शत्रु । खेत पाधरै – सीधे रणक्षेत्र मे । नेत – ध्वजाएं, बाना विशेष । निहालां – (?) । पाण – पराक्रम, हाथ । परायौ – अन्यो का, दूसरो का । कीं – क्या । अणसिख – असख्य, जिसका सिरा न हो । चितराव – राव मुकदसिंह का मन । उहि लोक – उस लोक, परलोक । माडी – रची, विचारी । मारुवा – राठौड वीरो ने ।

१२९. मारू – मारवाड वाले, राठौड । मंझाला – मध्य में, मुखिया । बीठळ – विट्ठलदास चापावत । अणियां भमराळा – सेना के भवर, सेना के दूल्हे । आगा – भविष्य को ।

'गोवरधन' 'चदह' तणौ कूपा किरनाळा।
महि देणा अरि मारणा बेऊ विरदाळा ॥
जोधा रिणमल चोड रा बीका बाहाळा।
सळखा बीरम जैमला धूहल धज्जाळा ॥
जैता ऊदा सिंधला चदेल सचाळा।
मेडतिया जैतारण्या यळ सोभित याळा ॥
मडौवर कनवज्ज का धाधळ विगताळा।
चादा ईसर वरसिंघा कहिया काधाळा ॥
चाचिग बीदा राहणा रणधीग रढाळा।
ईडरिया राडेद्रहा छपन्या छतराळा ॥
बाढेला रणधीर का भारमल भुजाळा।
ऊहडवा पातावता बाहडमेराळा ॥
कोटडिया जळखेडिया माहेछ मूछाळा।
पौहौकरणा रागड़ पुणा पौहौ करणा चाळा ॥
कमध मिळे नवकोट का करि कोट स काळा ॥१२९॥

छद छप्पय

दाखै 'बीठळदास', राजि सुणिजे महाराजा।
जैसे मरण जीव, असौ आयौ अब आजा ॥

चंदह तणौ – चद्र का पुत्र। कूपा – कूपावत। किरनाळा – सूर्य। महि देणा– दातार। मारणा – मारने वाले। धज्जाळा – ध्वज पताका वाले। सचाळा – योद्धा। जैतारण्या – जैतारण वाले, राठौडो की शाखा विशेष। यळ – पृथ्वी। सोभित – सोजत स्थान के। याळा – वाले। विगताळा – विगत वाले। कांधाळा – काधलोत, बडे कधेवाले, बलवान। रढ़ाळा – हठधारी वीर। छतराळा – छत्रधारी। भुजाळा – प्रचण्ड बाहु, वीर। मूछाळा – मूंछो वाले। चाळा – युद्ध, छेडछाड। करि कोट स काळा – ऋुद्ध काले हाथियो जैसे, मानो यमराज के समूह हो।

नोट :—इस निशानी छंद मे राठौड क्षत्रियो की विभिन्न उपशाखाओ के नामोल्लेख है।

१३०. राजि – श्रीमान्। महाराजा – जसवतसिंह के प्रति। असौ – ऐसा। अब – पवं।

किसू ढील कीजिये, मिळै भजौ खत्रवाटां ।
साहि बिन्है सपत मे, ऊह करि जूह उलाटा ।।
सिरदार सूर बधो सिलह, तवौ तयारी जुध तणो ।
हरवल्ल गौळ चदौळ भुज, यसै रूप बटी अणी ।।१३०।।

छंद किलकिला

जसमंतसिघजी की असवारी को वरनन

सजै यम मारुव सैनि सपाण । निघस्सिय कस्सिय डक निसाण ।।
उस्सिय जोध यसा अवनाड । वधै सिलहाण वराड वराड़ ।।
सजै गज हैमर पखर साज । पलट्टियै जाणि महोदध पाज ।।
मिळै घण घोर क भाद्रव मास । वरण दळ बद्दळ जेमि विकास ।।
चमकिय अग्गीय अग्र छडाळ । दमकिय दामणि धज्ज दीठाळ ।।
बजै गज घंट सदद्धर बाणि । बळै बुग पक्ति सदत बखाणि ।।
झरै मदमत्त स अब झरत । कुळाहळ हैमर पीक करत ।।
सपीह सपीह वजै सहनाय । बळै अभ्र जेमि पयद्दळ पाय ।।
सजै यम मारुव सैनि सिघाळ । गजै नद घोर बजै किरनाळ ।।१३१।।

छंद कवित्त

चढ़ै रतन कमधज्ज, जतन जीव री न जाणै ।
दुसासण दईवांण, पांण जमराण प्रमाणै ।।

ढील – विलम्ब । मिळै – भिड कर । खत्रवाटा – क्षत्रिय मार्ग से । सपत मे – शीघ्रता से । ऊह – विचार । जूह – समूह, युद्ध । चंदौळ – सेना की पृष्ठ रक्षक पक्ति । वंटौ अणी – सेना को विभाजित करो ।

१३१. निघस्सिय – वजे । कस्सिय – कसे, बांधे । डंक – डके, दण्डक । निसांण – नक्कारे, वाद्य । उस्सिय – जोश मे आए । वराड वराड – वडे जवर्दस्त । पलट्टिये– उमड पडा हो । जाणि – मानो । महोदध – महासागर । पाज – सीमा, मर्यादा । घण – वादल । दळ-वद्दल – सेना रूपी वादल । अग्गीय – अग्नि, आगे । छडाळ – भाले । दामणि – विजली । धज्ज – तलवार । दीठाळ – दिखाई पडी । सदद्धर – ध्वनि । वुग – वगुले, वक । दंत – हाथियो के दन्त । अव – वादल । पीक – सभवतया पील-हाथी । सपीह सपीह – शहनाई वाद्य की ध्वनि । अभ्र – वादल । सिघाळ – श्रेष्ठ । गजै नद – वाद्य गर्जे । किरनाळ – वाद्य विशेष ।

१३२. दुसासण – दुशासन । दईवांण – योद्धा । पांण – वल, शक्ति ।

सजे घडा सावळी, तजे माया सहसारी।
जुध माचत यसौ, जिसौ रावण अहकारी ।।
चावगुर राव बहळौ चढै, सिर फट्टै फण सेस रौ।
दिनपती खुरा खेहा दुडै, मुडे नही 'माहेस' रौ ।।१३२।।

छंद पद्धरी

'दळथभ' चढै झालो दुझल्ल। होय गौम वौम बे हल्लमल्ल ।।
सामत मत रावत्त सूर। केवाण पाण झल्ले करूर ।।
बधवै 'राघवोदे' ब्रजागि। खळ खड तिकौ परचड खागि ।।
रसबीर रगै पाट्डीय रांण। भळहळै जेमि रत प्रात भाण ।।
पखर सबह सज्जे प्रचड। मारका भडां भिडजा स मड ।।
सार का कोट येही सबोघ। जगहथ्थ पथ्थ सायक्क जोघ ।।
भारथ्थ कथ्थ राखण भुजाळ। समरथ्थ जिसा माझी सिंघाळ ।।
कथ येह सुणी चढै कमध। बरजागि चढै बेऊ बधबध ।।१३३।।

छंद छप्पय

सकतावत सिरदार, कोट चित्रकोट कपाटं।
मुडै नही माम रा, थूर पडता गज थाटं ।।
हरवल्ला हरवल्ल, लगौ चंदौळ सुगठी।
समरि घसै सामहा, (अरी) नह दियै अपूठी ।।

घडा सावळी – श्यामल घटा, हाथियो की सेना। बहळौ – उतावला, जोशीला। फणसेस रौ – शेषनाग का सिर। दिनपती – सूर्य। खुरां खेहा दुडै – घोडो के पैरो से उडी हुई रजराशि से छिप गया। माहेस रौ – महेशदास का पुत्र, राव रतनसिंह।

१३३. गौम वौम – पृथ्वी और आकाश। बे – दोनो। रसबीर – वीर रस। पाटडीय – पाटन नगर का। रांण – स्वामी, राणा। रत – लालिमायुक्त। भाण – सूर्य। मारका – वीर। भिडजां – घोडो। जगहथ्थ – दिग्विजयी वीर। पथ्थ – अर्जुन। सायक्क – सहायक, बाण। बेऊ – दोनो। बंघ-बंघ – बधु, बढ कर भाई, हठपूर्वक (दोनो) भाई।

१३४. कोट – किला। चित्रकोट – चित्तौड दुर्ग। कपाटं – किवाड। मुडै नहीं – पीछे नही हटे। माम रा – प्रतिष्ठा वाले। थूर – बडी, विशाल। थाटं – सेना। सुगंठी – सुगठित सुदृढ। घसै – प्रवेश करें। अरी – वैरी। अपूठी – पीठ।

दुबाहो झालो 'दयाळ' केवी हंदी घड़ा काळ,
लोहा जो बोहां लकाळ ज्वाळ जग्गणं ।
दूजो बध 'राघोदास' ताणे खित्री ध्रम तास,
रचेबा जोगणी रास रणे अंग्गण ।।
सीसोदो 'सुजाणसीघ' धार बाहां खित्री धींग,
उभै कांधै अरडीग रीध राखणं ।
'भीमाणी' रासो' भयक साबळा वोपै असंक,
दीवाड़ै निसाण डक लक लेयण ।।
वोपै बेऊ 'अम्मरेस' आमद अबा नरेस,
देसपत्ती देस देस दाव देयणं ।
'बैरीसीघ' सेखाउत्त धाडि धाडि रज्जपूत,
देखे अद्‌भूत घाय मेळण घण ।।
'गोरधन्न' चदरावत सूर वीर भरे सतं,
धारी याये ध्यान धूत अत दीयण ।
'मोहण' 'झूझार' मड पहाडा जेहा प्रचड,
भूवडड मंड ब्रहमड वोडण ।।
'कन्हीराम' तेहो काळ भारथा माझी भुजाळ,
बेऊ पक्खां बिरद्दाळ खळे खडण ।
असुर येहा अमान खागे 'अफितार खांन',
दताळां ज्यू छोडै क्षान गज्जे गयण ।।१३८।।

दुबाहो – वीर । दयाळ – दयालदास । केवी हदी – बैरियो की । घडा काळ– सेना का काल । लोहां – शस्त्रो । बोहां – बहुत-बहुत । तांणे – ऊपर बढाता है । तास – उसके । रचेबा – रचने के लिए । जोगणी रास – योगिनियो की क्रीडा । अंग्गण – आगन मे, अगाडी । धार बाहां – शस्त्र प्रहार करने वालो मे । धींग – वीर । उभै कांधे – दोनो कधे, उन्नत-कध । अरडींग – दुर्जयी वीर । रीध – ऋद्धि । भीमाणीं रासो – भीमसिंह का पुत्र रायसिंह । साबळां – भालो से । दीवाड़े – दिलवाता है । डंक – डके, चोट । लंक – लका । बेऊ अम्मरेस – दोनो अमरसिंह । आमंद – आए हुए । अंबा नरेश – आमेर के स्वामी । धाड़ि-धाडि – धन्य धन्य । भरे सत – शौर्य से परिपूर्ण । धूत – योद्धा । अत-दीयणं – अत देने के लिए, मरने के लिए उद्यत । मोहण झूझार – मोहनसिंह और जूझारसिंह । वोडणं – धारण करने वाले । भुजाळ – वीर । पक्खां – पक्षो । अमान – अतुलनीय, अविचल । दंताळा – राक्षसो, हाथियो । क्षान – (?) । गयणं – आकाश ।

छंद छप्पय

तत्त काम यम तुरी, पटा सोहि लहै उपट्टा।
तत्त काम यम तुरी, घाव भजै गज घट्टा।
तत्त काम यम तुरी, तुरी बड करी न आवै।
तत्त काम यम तुरी, बरां तोरण बदावै।
दरबार स मडण दहुबळा, खट सवाद लीघा खुरी।
सामत मत राखो सकौ, तत काम पहले तुरी ॥१३९॥

छंद रोमकध

सजि सूर सुभट्ट थूरण थट्ट थट्ट गरट्ट तेथइया।
वीरारस बट्ट ऊपट पट्ट ऊभट भट्ट ऊलहिया ॥
जमराव जसार क्रोध करार बेढि विचार फौजबर।
असवार अपार पख्खर सार भूझ भूझार मद्दझरं ॥
पुणिये रजपूत भाभड भूत-धीरज धूत मजेज धर।
खटतीस वस ईसुर अस सीस असस बुद्धिसर ॥
बरणौ अब बाज साज सजाज कदळ काज जे कसिय।
रिण सारति राग बेऊ वाग ऊपट आग ते असिय ॥
अैराक अरब्बिय सूरती सब्बिय काबि सु कब्बिय ते कथिय।
तुरकी कहि ताजिय सूध सिराजिय सूरिज बाजिय ते सथय ॥

---

१३९. तत्त – सारयुक्त, महत्वपूर्ण। पटा – एक शस्त्र, चाल विशेष। लहै – लेते हैं। उपट्टा – छलाग। घाव – रोद कर। भजै – नाश करें। गज घट्टा – गज सेना। बरां – दूल्हो। तोरण वंदावै – विवाह मे तोरण पर वन्दना करवाये। दरबार – राज सभा। मंडण – शोभा। खट सवाद – पूर्ण अघाया हुआ। खुरी – पैर की टाप मारता हुआ। मंत – श्रीमन्त, मित्र। सकौ – सब कोई। तत काम – तत्व कार्य, महत्त्वपूर्ण कार्य।

१४० थूरण – नाश करने के लिए। गरट्टं – समूह, सेना। तेथइया – तत्थेई। वट्टं – मार्ग। ऊपट पट्टं – शस्त्र प्रहारो पर। ऊभट भट्टं – विकट प्रहारो का मुकाबिला। जसारं – जैसे। बेढ़िं – युद्ध। मद्दझर – हाथी। पुणिये – कहिये। भाभड़ भूतं–भाभरा प्रेत की भाति विकराल। मजेजधर–मिजाज वाले। खटतीसं – छत्तीस। ईसुर अंसं – ईश्वर के अश। असंस – असशय। बाजं – घोडे। कंदळ – युद्ध। सारति – खेंचते ही। रागं – जवाएं। असिय – घोडे।

सादूळ मेह गाज न सुणै, वणै विरद वेछाड रा।
प्राभीस कथ्थ राखण प्रथी, मांभी थभ मेवाड रा ॥१३४॥

सीसोदिया 'सुजाण', मरण कारण ऊमाहै।
भाण मंडळ भेदवा, चित्त येहा सह चाहै॥
कडा-भीड़ कग्गळा, गला राखण अगजी।
खग चाढ़ै खरसांण, मेटि मटसाण समजी॥
चीतौड नीर चाढण चढ़ै, चालै केमि अचल्ल रौ।
सिरदार बिन्है फौजा सिरै, मुणियै सूरजमल्ल रौ ॥१३५॥

खग बाहो 'अफितार,-खान' मुगलाण स माभी।
हूर पूर हूळसै, दूर घण पिसण स दाभी॥
चिळखतो दसतान, घट्ट पग्गे सिर घूघी।
कसि तरकस कमाण, लडत दीसै अनि लूघी॥
भाभड़ा भूत अनि भूत जम, (गमन) भिस्ती मारिग गही।
बिढ़ण रा सबब जैत बळ, आजि सैद होसी सही ॥१३६॥

छंद दोहा

खभ उजेणी खभ यों, असुरा सुरा आराण।
'साहिजहा' पतिसाहि रा, जुडिया भड़ जमराण ॥१३७॥

सादूळ – सिंह, केशरी सिंह शक्तावत। मेह – मेघ की। गाज – गर्जना। **वेछाड रा** – जबरदस्ती का। **प्राभीस** – गहरी, मोटी, बडी। **थंभ** – स्तम्भ।

१३५. **सुजाण** – सुजानसिंह शाहपुरा का स्वामी। **भाण मडळ** – सूर्य लोक। **कड़ाभीड** – कडिया कस कर। **कग्गळां** – कवचो की। **गला** – कहानी। **अगजी** – अजेय। **खरसांण** – सान यत्र। **मटसांण** – जर्रे, शान मिटाने वाला, गर्व मिटाने वाला। **समंजी** – बराबरी के, माज कर। **नीर चाढ़ण** – कान्ति चढाने के लिए।

१३६. **खगबाहो** – तलवार चलाने वाला। **हूर** – अप्सरा। **पिसण** – शत्रु। **दाभी** – जलने लगी। **चिळखतो वसतान** – हाथो का कवच। **घट्ट** – शरीर। **दीसै** – दिखाई पडे। **लूघी** – लुब्ध। **भाभड़ा भूत** – विकराल प्रेत जैसा। **भिस्ती** – बहिस्त। **सैद होसी** – शहीद होगा।

१३७. **असुरां** – मुसलमानो। **सुरां** – हिन्दुओ। **आराण** – युद्ध।

छंद रेड़की

जोधा मारका जवाण जम्मरांण मिळै जोधां जोध,
खागां तणा डांडीहड़ां घड़ां खेलण ।
बाघळा छत्तीस बस वोपै महारथ्थी अस,
केवाणां हंदा स काट झाट झेलण ।।

कमधज्ज घड़ा काळ वोपै सिलहां ऊजाळ,
बरच्छियां छळै वाळ भाले भूवण ।
सोभे माझी 'जस्सराज' ऊससै चढ़ै स आज,
'सूर' राजा हरो 'गाजीसाहि' सूवण ।।

'माधाणी' हाडौ 'मुकद' मैंगळा खळां मयद,
महारथ्थी जेम सद भारथ भणं ।
'अजण' जेहा अजण रचेवा सु महारण,
बाणां री सोका बहण कळे करणं ।।

भणे भद्र 'बीरभद्र' रीसाणो जेहो स रुद्र,
मौजा स फौजां समद्र मथे महणां ।
'रतन' जोधाणो राव चाळ-बंधि चढ़ै चाव,
घूमाड़े त्रबद्धि घाव अडे गयण ।।

---

१३८. जोधा – योद्धा । मारका – प्रहार करने वाले । मिळै – मिले, भिडे । तणा – का । डाहीहड़ां – डडो, दण्डको । घड़ां – सेनाओ से । खेलणं – खेलने वाले । बाघळा – वीर, सिह । वोपे – शोभित होते हैं । हंदा – का । झाट झेलणं– प्रहार झेलने वाले । कमधज्ज – राठौड । घड़ां काळ – सेनाओ के सहारक । छळे वाळ – प्रहार करने वाले, छल्लेदार । भाले भूवणं – भाले घुमाने वाले । जस्स-राज – महाराजा जसवन्तसिह । ऊससै – जोश मे आकर । सूरराजाहरो – राजा शूरसिह का पौत्र । गाजीसाहि सूवणं – गजसिह का पुत्र । माधाणी – माधव-सिह का । मुकंद – मुकदसिह । मंगळां खळां मयंद – शत्रुओ रूपी हाथियो के लिए सिंह । संद – (?) । अजण जेहा अजण – अर्जुन पाण्डव जैसा अर्जुन गौड । सोकां बहण – अनवरत प्रहारकर्ता । कळे करणं – युद्ध करने के लिए । रीसाणो – रोषान्वित । महणं – समुद्र । रतन – राजा रतन सिंह । चाळ-बंधि – कटिबद्ध होकर । त्रबद्धि – तीन प्रकार के । अडे गयणं – आकाश को स्पर्श करे ।

खधार खधारिय व्रनि बुखारिय मोल हजारिय तोल मिळं ।
कुहि कोही सु कच्छिय ऊभति अच्छिय गोन सपच्छिय पोन गिळ ।।
बलख्खिय भुजक्किय कयकि लक्किय लक्षि सु लक्किय लाह लिय ।
अणपार उरग्गिय लक्खि दुरग्गिय गत्ति गुरग्गिय जाति जियं ।।
घुरघ्घिय करि चिग्गिय नृत सु नच्चिय मारुव मच्चिय जगय ।
जगळा सिंघ वालिय बद्दकसानिय गच्छि गुमानिय ते वड यम ।।
बहो बाळसमदिय समरकदिय फाळ सु फदिय ते फरर ।
घन घूंघट वारिय तेज तुखारिय घूघर चमर ते घरर ।।
कवि जाति कहानिय बुद्धि प्रमानिय ऊकति आंनिय ते अमर ।
बरणौं अब रगिय चाल सु चगिय माळ सु मडिय ते समरं ।।१४०।।

छंद बेअक्खरी

घोडो का रंग बरनन

वाजा बरण बरण बणाव । जेज मजेज भरै सोइ ताव ।।
प्रथम स्याह रग स्याम परख्खे । दुतिय रग गगाजळ दख्खे ।।
अबलख अबर सुरग अनूप । भिडज कुमैत चढ़ै बड भूपं ।।
सुरख सज्याब समद सुरगा । काळी गाठि कुमैत कुरगा ।।

व्रनि – वर्ण । कुहि कोही – कोई एक । ऊभति – ऊभ करते । कयकि – कैकेय देश के । लक्किय – लक्खी रग के । सुलक्किय – सुन्दर कटि वाले, कबूतर की भाँति । लाह – आनन्द उरग्गिय – सर्प की भाँति सीधे चलने वाले । दुरग्गिय – दूरगामी । गत्ति–गति, चाल । गुरग्गिय – गरुड । जियं – जिन की । चिग्गिय–(?) । फाळ –छलाग । फदीय – कूदने वाले । घन घूघट वारिय– बिजली की गति वाले । समरं – युद्ध ।

नोट –इस छद मे देशो के नामो एव उन उन स्थानो मे उत्पन्न घोडो का वर्णन किया हुआ है ।

१४१. वाजा – घोडे । बरण-बरण – रंगरग के । बणावं – बने ठने, सजे हुए । जे जम जेज – धीरे और मिजाज के साथ । तावं – तेजी से । स्याह – श्यामलता लिए हुए । अबलख – रग विशेष । अंबर – आसमानी । सुरंग – लाल । भिडज – घोडा । कुमैत – रग विशेप । सुरख – सुर्ख । सज्याब – एक रग विशेष । समद – समुद्री रग । कालि गाठि – रग विशेप का । कुरगा – रग विशेप का घोडा । तरता – (?) । लखी – लाखी रग के । करड़ा – रग विशेप । पंच कल्याण – चारो पैर और मस्तक पर सफेद टीके वाला घोडा ।

तरता लाल लखी बोह ताव । करड़ा पंच कल्याण कहाव ।।
सुरगा बळे समद स सेली । बहता घाव निबाहै बेली ।।
जरद्दा काळिस गांठि स जाणै । बळि केइ ऊजळ पाव बखाणै ।।
चपरा केइ गुलदार स चीनी । भारी फुलवारी रग भीनी ।।
नीले सुरखे केई नीले । ढहै कोट दे बाग स ढीले ।।
रग जडाव पना पीरोजा । मटवा नीले रग समोजा ।।
प्रथम रहवाळ येबिया धामं । बीक रा कहि ओर दुगाम ।।१४ ।।

छंद दोहा

जाति रग बर चालि जे, बरणी कबी बणाय ।
जो दीठा नह सभळै, ते बरणै नह जाय ।।१४२।।

हुइ तैयारी हैमरा, जडिया सेर जवाण ।
दावौ दिली दूजो 'मुकद', चावौ गुर चहुवाण ।।१४३।।

छंद छप्पय

'मुकदसिंघ' 'अजमाळ', आय मोरछां अटक्के ।
चाय-दाय चालणा, खळां उर सीस खटक्के ।।

बळे – पुनः । सेली – रग विशेष का घोडा । बहता घाव – घावो से लहू बहते हुए । बेली – सहायक, स्वामी । जरद्दां – पीत वर्ण के । काळिस गांठिस – घोडे का रग विशेष । केइ – कई । पाव – पैर । चपरा – चपरे रग का घोडा । गुलदार – रग विशेष का घोडा । चीनी–चीनी रग का घोडा । रंगभीनी – रग से परिपूर्ण । बाग – रास, वल्गा । ढीले – ढीली । पीरोजा – पिरोजी रग । मटवा – मटियाले, मिट्टी जैसे रग के । रहवाळ – घोडे की चाल विशेष । येबिया धामं – ऐबिया और धाम नामकी चालें । बीक रा – बीक नाम की चाल । दुगांम – घोडे की चाल का नाम ।

१४२. बर – श्रेष्ठ । संभळै – सुने । ते – वे । नंह – नही ।

१४३. जडिया – जडे हुए । जवाण – तरुण, योद्धा । दावो – हक, दाव । चावौ गुर – प्रसिद्ध वीर ।

१४४. अटक्के – ठहरे, रुके । चायदाय – इच्छानुगामी । चालणां – चलने वाले । उर – हृदय । खटक्के – खटकें, खटकते हैं ।

सांभळियौ 'जसमत', भिडण दोय भीछ बहल्लां ।
चावा पहली चढै, करेसी भूझ पहल्ला ।।
कनवज्जनाथ चढियौ कहर, पहर दीत चढियौ परै ।
केई नकीब हो ठाकुरो, चढ़ौ चढौ यम ऊचरै ।।१४४।।

छंद त्रोटक

असवारी जसोतसीघजी की को वरनन

'जसराज' चढै महाराज जरै । तिहुवै पडि हैकपि धूजि तरैं ।।
बियडाण कसेस नीसाण वजै । गति मेघ किना महराण गजै ।।
ध्रह ध्रह धौसारव धूहलय । करनाळि स भेरिय कूहलय ।।
तुरही रिण तूरस ते त्रहिय । वरघू सहनाइय सु वज्जहिय ।।
झिणकार झिंगार स झंझरय । पडिसाद स नाद गि(रां)पडियं ।।
गजझप गजांगज कौर गिणै । बहता पच बीस हरौळ वणै ।।
हरवल्लह 'कासिमखान' हुवै । दळनाथ दिली पडि झाळि दुवै ।।
तिण साथि यता उमराव तवै । चतुरगिय नाथ स पाथ चवै ।।
गजनाळि गजा सय दोय गिणै । बणि ऊपरि नाळि उभैंस वणै ।।
बणि बैरख च्यारि हरे बरण । बणिया गिर सिखर केळि बणं ।।
बहो रग गजा सिर धज्ज बणै । रिण रावत पक्खर सार रणै ।।

सांभळियौ – सुना । बहल्लां – अधीर, उत्कठित । चावा – प्रसिद्ध । झूझ – युद्ध । कनवज्जनाथ – कन्नौजपति, जसवर्तसिह । कहर – युद्ध, आपत्ति मे । दीत – सूर्य । परै – ऊपर । नकीब – राजा महाराजाओ के आगे आवाज लगाते हुए चलने वाला चोबदार ।

१४५. जरै – जव । तिहुवै – तीनो सेनाओ मे । हैकंपि – कपकपी । तरै – तव । बियडांण – हाथियो पर । कसेस – कसे हुए । नीसांण – वाद्य, नक्कारे । किनां – किंवा, अथवा । महराण – समुद्र । ध्रह ध्रह धौंसारव – धूंसे वाद्य की ध्वनि । धूहलय – ध्रुव को विचलित करते हुए । फूहलय – कोलाहल, वाद्य विशेष । तूर – तूर वाद्य, तुरही । त्रहियं – बजे । वरघू – वाद्य विशेष । झिंगार – झिंगुर । झंझरयं – झाझरें, आभूषण । पड़िसाद – प्रति शब्द । नाद – ध्वनि । गजझंप – लम्बी छलाग । गज कौर – हाथियो की पक्ति । पचबीस – पच्चीस, एक सौ । पड़ि – युद्ध । झाळि दुवै – दूसरी अग्नि । तिण – उसके । तवै – कहे । नाथ – स्वामी । पाथ – अर्जुन । चवै – कहे । सय दोय – दो सौ । बणि – उन पर । नाळि – तोपें । ऊभैंस – द्विगुनी । बैरख – पताकाए । हरे बरणं – हरे रंग की । गिर सिखर – गिरि शिखर । केळिबणं – कदली वन । धज्ज – ध्वजाएँ । सार – लोहा, शस्त्र-अस्त्र ।

गउनाळि उभैसय दोय गिरीठ। रिम सेनि सिरा दिय गोळिय रीठ ॥
बाणां भरिया लबग्रीव बणै । सीसाण सोरांण अपार सुणै ॥
सुत्रनाळि सुत्रा सयतीन सजै । गौड़ीरव कार गजा गरजै ॥
खडि खूर खधार अपार खडे । पखराळ गजाय हरौळ पड़ै ॥
असवार पचीस हजार हरौळ। गरीठ सु युद्धि 'जसमतह' गोळ ॥
हरोळह 'रत्तन' मारुव राव। दिढै पग अगद रै सोहि दाव ॥
हरोलह 'गोवरधन्न हठीह। बजावै आप तणै वह जीह ॥
हरोल 'दयाल' धणी हळवद्द । बहै सोइ रावत कध बिड़द्द ॥
हरवल्लह 'राघवदास' हुय । भणिय जिण सो नही कोय भुय ॥
हरवल्ल 'किसनह' रावत हेक । टळै किम आजि चित्रागढ टेक ॥
बसेस कसेस चढाड़न बान । जके बध पाचस सेर जवान ॥
वळे हरवल्लह 'देबियसीग' । रखै मन माहि स मोटिय रीग ॥
सुणै हरवल्लह 'सिंघ सुजाण' । बुदेल स खडण खड बखाण ॥
तवै हरवल्लह 'खा अफितार' । बणै बड रूप स ते रिण बार ॥
मुगलाण पठाण सैदाण मुणै । गहि बाण कमाण स दीध गुणै ॥
खडि आइय मोरछां माझ खभे। थट सायर फुट्टस केमि थभे ॥

गउनाळि – बैलो से धकेली जाने वाली तोपें। उभै सय दोय – चार सौ। गिरीठ– जबरदस्त, अति भारी। रिम – शत्रु। रीठ – प्रहार। लंबग्रीव – ऊँट, क्रमेलक। सीसाण सोराण – सीसा और बारूद। सुत्रनाळि – ऊँटो पर ले जाने वाली तोपें। सीयतीन – तीन सौ। गौड़ीरवकार – समुद्र के गर्जने की ध्वनि। खड़ि – चलकर। खूर – घोडे। पखराळ – पाखरें। गजाय – हाथियो के। गरीठ – समूह, सेना, वीर। पुट्ठि – पृष्ठ भाग पर। गोळ – मध्य भाग की सेना। मारुव – राठौड, मारवाड के। दिढै – दृढ। सोहि – वह, जो। दाव – युद्ध, दाव। बजावै – बजवाता है। आप तणौ – आपके, स्वय के। जीह – जीव मे आये, इच्छानुसार। धणी – स्वामी। हळवद्द – हलवद राज्य का। बिड़द्द – विरुद। हुयं – हुआ। जिण सो – जिसके सदृश्य। कोय – कोई। भुयं – पृथ्वी पर। हेक – एक। टळै – व्यर्थ, चूके। किम – कैसे। चित्रागढ़ – चितौड गढ। बसेस कसेस – विशेष रूप से खीच कर। बांन – बाण, तीर। जके – जो, जिनके। बध – बन्धु। रीग – ऋद्धि। खड – भूमि। तवै – कहे। बणै – बनें। वड रूप – विशाल रूप। ते – वह। रिणवार – युद्ध समय। मुगलांण – मुगल। पठांण – पठान। सैदाण – सैय्यद। मुणै – कहे। गहि – पकड़ कर। गुणै – प्रत्यचा, धनुष की डोरी। खड़ि आइये – चल कर आये। मांझ – मे। खभे – ठहरे। थट – समूह, तट। सायर – समुद्र। फुट्टस – फूटने पर, टूटने पर। केमि – कैसे। थभे – रुके, ठहरे।

वरंगाळ वळे 'रायसिंघ' वणै । सुत 'भीम'तणो खत्रि स्याम मुणै ॥
वरंगाळ वळे 'सवळेस' अबीह । 'सुरतांण' सुतो सुरतांणं रीह ॥
'फतो' नखि कुंवर येमि फवंत । दुबाहो आजि भंज गजदंत ॥
तरंगाळ वळे 'वरसीघ' असोग । घघूणे आजि छड़ाळां घींग ॥
अनै तरगाळ उभै 'अमर' । गहवत भरै गुमरं गुमरं ॥
चरावत कूरम जोध चढै । गढ़ राम नृपं नरवल्ल गढै ॥
तरंगाळ वळे 'सिनु' 'मानु' तवै । वळि राव 'छत्रमणि' गो धस वै ॥ १४५ ॥

छंद दोहा

करि अजू निवाजय(करी), ने साईं दे नांम ।
'औरंगसाहि' 'मुरादरया', बे चढिया वरियांम ॥ १४६ ॥

छंद पद्धरी

औरंगसाहि मुरादसाहि की असवारी को वरनन

सुरिताण बिन्है चढिया सपाण । निवसे गजा कसिया निसांण ॥
निरखिये गजा चाली स नद्द । बहो रूप वजे वाजा विहद्द ॥
करनाळि भेरि वरघू कहाळ । सहनाय नफीरी वजिय सुढ़ाळ ॥
त्रह त्रहे त्यार रण-तूर तूर । सुणि मुणै नाद वळ भरै सूर ॥

वरंगाळ – दाहिने बाजू की सेना । वळे – फिर । तणो – का । खत्रि स्याम – क्षत्रियों का स्वामी । अबीह – निडर । सुतो – पुत्र । सुरतांणां – सुल्तानों, शाहजादों । रीह – कोप । नखि – पास में । फवंत – फबता है । दुबाहो – बड़ा वीर । आजि – आज युद्ध में । भंजं – नाश करने । तरंगाळ – बाएं पार्श्व की सेना । असींग – वीर । घघूणे – घुमावे । छड़ाळां – भाले । धींग – दुर्धर्ष वीर । अनै – अन्य । उभै – दोनों । अमरं – अमरसिंह । गहवंत – गर्व जबरदस्त । भरै – पूरित । गुमरं – गर्व पूरित । चरावत – चरा के वंशज (?)। नरवल्ल गढै – नरवरगढ़ के । गो – गया, चला । धसवै – प्रवेश करने ।

१४६. अजू – वजू । निवाजय – नमाज पढ़ी । बे – दोनों । वरियाम – वीरश्रेष्ठ । सपाण – बल पूर्वक । निवसे – बजे । निसांण – नक्कारे । नद्द – नदी । बहो रूप – भिन्न भिन्न रूप से, विविध आकृति के । विहद्द – बेहद, अपार । कहाळ – वाद्य का नाम, विशेष प्रकार का वाद्य । सुढ़ाल – सुन्दर ढाल से । त्रह त्रहे – बजे । त्यार – तैयार । रणतूर – रण वाद्य विशेष । तूर – तुरही । वळ भरे – जोश से आए ।

सिंधुरां सिरी पाखर सुसधि । बरदार बळै भाला सुबधि ।।
ढुळि काळी पीळी गजा ढाल । लखिये बरन केइ लाल लाल ।।
दोय सै गयद येहास दखि । वोयणा चलत अवनाड अखि ।।
झरनाळि जेमि दांनां झरत । तन काळा अनै ऊजळा दत ।।
तळ तोड़ लगै परनाळ तक्क । खायाळ जेमि आदू खळक्क ।।
हूलिया गयद मोहरै बिहद्द । साभळै गयण गाजे समद्द ।।
घगडै पडी सहस तोपां उधम । जाणिजै येह परिवार जम ।।
सुत्रनाळि सुत्रा दोय सहस सज्जि । ऊधडी राडि जीपसी अज्जि ।।
असवार सहस दस दोय चीय । लडि जिका किलाणी मारि लीय ।।
खधार तीस हज्जार खूर । पाकडे बदूका करा पूर ।।
ढौपिया तो·······ह अनत । पैदळ अपार आवै न पत ।।
बाणा निसाण (नाना) बरन्न । वेखिये जाणि कदळीस वन्न ।।
बाण येक लक्ष आगि ले बणाय । जामगी पलीता ते जगाय ।।
हरवल्ल 'निजाबति खान' हेक । आरत काम येहा अनेक ।।
सुणियै हरौळ 'भगवत सीग' । घूहळां बगा रिणवार धीग ।।

सिंधुरां – हाथियो । सिरी – श्री, आभूषण विशेष । सुसधि – भली प्रकार सधी हुई । बरदार – रखने वाले । ढुळी – लुढकी । काळी-पीळी – श्याम व पीत वर्णीय । येहास – ऐसे । वोयणा – पैरो से । अवनाड़ – अनम्र, न नमने वाले । अखि – कहे, आँखें । झरनाळि – निर्झर । दानां – मद । झरत – बहता है । अनै – और । तळ तोड – जडमूल से उखाडने वाले, पाताल तोड । परनाळ – पनाला । तक्क – तलक, तक । खायाळ – बडा नाला । आदू – प्रारभ, मूल से । खळक्क – वेग से बहा । हुलिया – आक्रमणार्थ झोके । समद्द – समुद्र । घगड़े – मैदान मे । उधम – उत्पात, युद्ध । जम – यमराज । सुत्रा – ऊटो पर । ऊघड़ी – मैदान का । राड़ि – युद्ध । जीपसी – जीतेंगे, विजय करेंगे । अज्जि – आज । सहस दस दोय – वीस हजार, बारह हजार । चीय – की, पहिचाने जाने वाले । जिकां – जिन्होने । किलाणी – कल्याणी स्थान । मारि-लीय – विजय कर लिया । खूर – घोडे, अश्व सैनिक । ढौपिया – सुशोभित हुए । पत – पथ, मार्ग, पक्ति । बरन्न – रग, वर्णन । वेखिये – देखिए । जांणि – मानो । कदळीस वन्न – कदली वन । जांमगी – सूत की रस्सियो का बना हुआ तोप या बदूक का पलीता । पलीतां – तोप की बत्ती । ते – से, मे । जगाय – प्रज्वलित कर । हेक – एक । आरंत कांम – ध्वश करने वाला, आर्त्तकाम- । घूहळां – तोपें । बगां – बजने पर, गजने पर । धींग – वीर ।

'केसरी सिंघ' हरवळ कमध । बाधणो तिकी ऊबध वध ।।
खडियो हरोळ स 'चिकन खान' । श्रवनाड दळा दीठो श्रमान ।।
हरवल्ल 'वहादर खा' हठीह । बेछाड कध ऊभो श्रबीह ।।
हरवल्ल 'श्रलया खान' हूव । धज येमि टळै तो टळै धूव ।।
हरवल्ल राण दूजो 'हमीर' । गिरमेर दळा श्रागळि गहीर ।।
'मनसूर खान' हरवल्ल मड । खभणो खहे व्रहमंड खंड ।।
हरवल्ल 'सेख मीरक' हठाळ । केविया दळा पाधरो काळ ।।१४७।।

छंद छप्पय

चयि हजार चाळीस, हुवो श्रसवार हरोळह ।
खड़ि येतो श्रारबो, गणे वै साहस गोळह ।।
तरगाळ बरगाळ, चवै चदोळ स तेता ।
सो दीठां सभळै, वरणै कवी येता ।।
जोधार जकै जुधवार रा, धार मार जोपण धरा ।
सिरदार खरा चढिया सिरै, दळ 'श्रवरग' 'मुराद' रा ।।१४८।।

कमंध – राठोड । बांधणो – बाधने वाला, बधन मे लेने वाला । तिको – वह । ऊबध वध – निर्बन्धो को बधन मे लेने वाला । खडियो – चला । श्रवनाड – न झुकने वाला । दळां – सेना मे । दीठो – दिखाई पडा, जान पडा । श्रमान – श्रतुल्य । बेछाड – विकट वीर, किसी के श्रातक को न मानने वाला । ऊभो – खडा । श्रबीह – श्रभीरु, निर्भय । हूव – हुश्रा । धज – वीर । टळै – डिगे, चले, किनारा काटें । धूव – ध्रुव । दूजो – दूसरा, श्रन्य । गिरमेर – सुमेरु गिरि, गिरिशिखर । श्रागळि – श्रगाडी, श्रगला । गहीर – जबर्दस्त, बाँकुरा, भारी । मंड – शोभित हुश्रा । खभणो खहे – रोक दे, युद्ध करके स्थिर करदे । हठाळ – हठी । केविया – शत्रुश्रो के । दळा – समूहो के । पाधरो काळ – सीधा यमराज, प्रत्यक्ष मृत्यु ।

१४८ चवि – कहे । खडि – प्रस्थान कर । ये तो – इतना । श्रारबो – तोपखाना । गोळह – सेना का मध्य भाग । चदोळ – चंदावल, सेना का पीठ रक्षक सैन्य दल, पृष्ठ भाग । तेता – उतने ही । येता – इतना । जोधार – योद्धा । जकै – वे, जो । धार मार – युद्ध मे शस्त्र धाराश्रो से मार कर । जोपण धरा – पृथ्वी को जीतने वाले । खरा – दृढ वीर, पक्के । सिरै – सिरह, श्रागे, श्रेष्ठ । दळ – सेना । मुराद रा – मुराद के ।

छद पद्धरी

असवार गौळ चदौळ अखिख । दहु दळ तरगाळ बरगाळ दखिख ।।
गौळ मधि साहि बेऊ गरीठ । सह सीस छत्र चामर स दीठ ।।
गजरूढ़ बिन्है गजखभ गात । बेछाड बिन्है औनाड़ बात ।।
चहबच्चा गदेला गजा चाव । बेखिये मेघ-डमर बणाव ।।
डोरि रा गजा नीसाण डम । झळमळै सूर किरणा झिलम ।।
आलम तोग पजा सु अखिख । दहु दळा सिरै सोभाण दखिख ।।
गजनाळि गजा दोय सहस गजि । सोइ धरे आगळी येमि सजि ।।
पाखर अपार कोतिळ पमगि । वोपिया जाणि नटवा- नरग ।।
नरजान बळै तखतरेबान । छाहागीर जाणि रच्चे स मान ।।
ध्रड बहल अनै खडसल बहल । माडिया रथ चळळवा महल ।।
बे सहस बाण भरिया गुराब । अणपार सोर सीसा अराब ।।
गणिये हजार पचास गौळ । चविये हजार यकसठि चदौळ ।।
बरगाळ बीस हजार विखिख । तरगाळ सहस उगणीस लखिख ।।
पेखिये लख येक सिलह पोस । सुलताण बिन्है सहता स रोस ।।

असवार – अश्वारोही । गौळ – सेना के मध्य भाग की टुकडी । चदौळ – सेना के पृष्ठ भाग की टुकडी । दहु – दोनो । तरगाळ – बाएँ पार्श्व की सेना । बेऊ – दोनो । गरीठ – वीर । सह – सहित । चामर – चँवर । गजरूढ़ – गजारोही । बिन्है – दोनो । गात – गात्र, शरीर के । बेछाड़ – विकट । औनाड़ बात – अपनी बात पर अटल । चहबच्चा – चारजामा, हौदा । गदेला – गद्दियाँ । चाव – चाह, उत्साह । बेखिये – देखिये । मेघडमर – बडा छत्र । डोरि – रस्सी । डम – ध्वनि । झळमळै – चमकते है । किरणां – रश्मियाँ, किरणो वाली छतरी । झिलंम – चमकते । तोग – ध्वज विशेष । पंजा – पज्जा । सोभांण – शोभित । गजि – समूह, विशेष । आगळी – अगाडी । सजि – सारे सामान से सज्जित । पमंगि – घोडे । नटवानरंग – (?) । नरजान – पालकी । तखतरेबांन – (?) । ध्रड बहल – रथ विशेष । खडसल बहल – रथाकृति वाहन । चळळवा महल – चलते हुए महल । गुराब – छोटी तोपें । सोर – बारूद । अराब – बडी तोपें । हजार पंचास – पच्चास हजार । गौळ – मध्य मे स्थित सेना । चंदौल – पीठ भाग की सेना । बरंगाळ – दाहिने पार्श्व की सेना । विखिख – देखी गई । तरगाळ – वाम पार्श्व की सेना । लखिख – लक्षित करें। पेखिये – देखिए । सिलहपोस – सिलहधारी, सिलहयुक्त । सहता – साथ मे । सरोस – रोश मे, सकोप ।

येखिये धजा बहरख अपार । अति रग रग नाना प्रकार ।।
वोपिया गजा ऊपरि अनत । बन-मास अनै फूलै बसत ।।१४६।।

छंद छप्पय

साहि बिन्है दळ साजि, खड़ा ग्रहिया खळ खडण ।
रचिये किण विधि राडि, मने मसलत्ति मडण ।।
मुणियो 'साहि मुराद', मंडो बे फौज मरद्दां ।
दिली बेध दखिया, राड़ि (य)हि वार रवद्दां ।।
पेखिये गाति पूरा प्रचड, सूरा पूत सिपाहिका ।
रीस री आजि इजति रखो, अखो नाम अल्लाहिका ।।१५०।।

वचनिका

'औरगसाहि' 'मुरादसाहि' येसौं फुरमाया ।
जग की बखत नजीक आया ।।
येते सिताब दिन की खबरि मगाई ।
केतेक दोड़ीया सिपाई ।।
सो घडावळो पास सै खबरि लाये ।
'औरग साहि' की हजूरि आये ।।
सो खबरिदारो यो अरज कीनी ।
सात घड़ी दिन चढिया ये खबरि दीनी ।।१५१।।

येखिये – देखिए । धजा – ध्वज । बहरख – पताकाएँ । बनमास – चैत्र मास, वन मे । फूलै – पुष्पित । बसंत – वसन्त ऋतु ।

५०. बिन्है – दोनो । खळ खडण – शत्रुओ के नाश के लिए । किणविधि – किस विधि से । राडि – युद्ध । मने – मन मे, चित्त मे । मसलत्ति – गुप्त सलाह । मुणियो – कहा । मंडो – रचो, विरचित करो । बेध – युद्ध । रवद्दां – मुसलमानो । गाति पूरा – भरे पूरे पुष्ट शरीर वाले । रीस री – क्रोध की । अखो – कहो, उच्चारण करो ।

५१. येसौं – ऐसा, इस प्रकार । फुरमाया – कहा । जग – युद्ध । बखत – वक्त, समय । येते – इतने मे । सिताब – शीघ्रता से । केतेक – कतिपय । घडावळो – समय सूचक घडियालें वजाने वालो से । कीनी – की । चढ़िया – चढ गया, बीत गया । दीनी – दी ।

छंद दोहा

येकण बळ 'मुरादस्या', बळ येकण 'अवरग'।
उभै अणी करि हल्लिया, जीपण आजिस जग ॥१५२॥

छंद नीसांणी

फौज गजा धजा फरकि दहुवां दीठाळा।
वैळा पैला येखिये करि कोट स काळा॥
सदी दुसदी मुर सदी चौ सदी चाळा।
पंच सदी खट सदियां सत सदी सम्हाळा॥
उभै हजारी ऊमरा मांझी मछराळा।
तीन हजारी तावरा केइक काधाळा॥
च्यार हजारी चालिया भालिया भुजाळा।
पच हजारी पेखिये सिरदार सिघाळा॥
छोटा मोटा ऊमरा त्रहसें त्रमाळा।
बाजीतर रसबीर का बाजै बिसराळा॥
असुरा सुरा आराण का तिण आजि न टाळा ॥१५३॥

छंद भुजंगी
जुध समय

रटै हिंदवां नाम सिव रांम रांम। दळां दख्खि बेहुवे बाजै दमाम॥
अला अला ऊचार कीधो अभगा। रवहा मरद्दां मुखे रब्ब रंगा॥

---

१५२. **येकण बळ** – एक ओर, एक सेना। **अवरंग** – औरगजेब। **उभै अणी** – दो सेनाएँ। **हल्लिया** – चले, रवाना हुए। **जीपण** – जीतने।

१५३. **फौज गजां धजां** – गज सेनाओ की ध्वजाएँ। **फरकि** – फहराती हुई। **दहुवां** – दोनो पक्षो ने, औरगजेब, मुराद और दारा शिकोह के पक्ष। **दीठाळा** – दिखाई दी, देखी गई। **वैळां** – इधर। **पैलां** – उधर। **करि कोट** – हाथियो के दुर्ग। **सदी** – ओहदे विशेष वाले। **चाळा** – उमग वाले, युद्ध। **सम्हाळा** – शामिल। **ऊमरा** – उमराव। **मछराळा** – मत्सर वाले, योद्धा। **काधाळा** – बलिष्ठ स्कध, वीर। **भुजाळा** – बलवान् भुज वाले वीर। **सिंघाळा** – श्रेष्ठ वीर। **त्रहसें** – बजे। **त्रमाळा** – नक्कारे, तांबे के पैंदे वाले नक्कारे। **बाजीतर** – वाद्ययत्र। **रसबीर** – वीर रस। **बिसराळा** – भयावह। **असुरा-सुरां** – हिन्दू-मुसलमानो। **आराण** – युद्ध। **न टाळा** – न टलने वाले।

१५४. **दख्खि** – देखकर। **बेहुवे** – दोनो पक्षो मे। **दमांम** – ढोल वाद्य। **अभंगा** – अभग, निर्भय। **रब्ब** – ईश्वर।

असा बाण वेऊ दळा तणा ऊडै । वबे भाण धूवाण मझ्झेस वूडै ।।
पलीता जगे नाळि सुत्रनाळि पग्गै । लगे पाखरा ऊपरै ऊक लग्गै ।।
दगे मग्ग पक्षी स आकास दाह । हुवे येमि आकास खडे उलाह ।।
अई तोप छूटै वडी व्है अवाज । गोई धमक्कै मेघ गयणाग गाज ।।
अनै गज खोटा स खोली अधारी । भणो आदुवा लंगरां खोल्नि भारी ।।
वजै राग सिंधूव जोधा वहस्सै । तटा कायरा सायरां ते तरस्सै ।।
छित गीध पखी(स) गयणाग छाये । अनै अच्छरी वैठि वीमाण आये ।।
पड़ै गोळिया मार गोळा प्रहार । तुटै वाण असमांण हूं जाणि तार ।।
तीरा मार माची सही दुतरफां । फुटै कट्टि छाती स मोरा फरक्कां ।।
धमधम सेला वहै व्है धमका । चव धारवारा स पारा चमका ।।
सेला वाहि ऊपाडता तेवि सूरा । पूरा जोध वेहरी गाते स पूरा ।।
सेला घाव हू स्रोण री धार छूटै । फव्वारा बाध मद्धै ऊपटै ।।
खापां छेक कीधी किता जोध खग्ग । मिले गूदरी जाणि वाजार मग्ग ।।
तुरक्का कढीस तेग मूठी स मेल्है । खेलै पूर ते रोज दाहाज खेल्है ।।
मुणे भीड भाराथ मत्तै स मच्ची । भडा ढाल खडक्कै पडी आणि पच्ची ।।

असां – इस तरह के । बंबे – अमित, विम्व । भाण – सूर्य । धूवाण – धुआँ । वूडै – डूवे, छिपे । जगे – जलें । ऊक – अग्नि । दगे – जले । मग्ग – मार्ग । अई – ऐसी । गोई – पृथ्वी । गयणाग – गगन । खोटा – खूटो से । अधारी – आँखो की जाली । आदुवां – प्रारम्भ की । लंगरां – हाथी के पदा-भूषण । वहस्सै – उत्साहित हुए । तटां – किनारे । सायरां – समुद्रो के । तरस्सै – प्यासें, डरे । छितं – क्षिति, पृथ्वी । गीध पखी – गृद्ध पक्षी । गयणाग छाये – आकाश मे फैल गए, आकाश छा गया । अच्छरी – अप्सरा । वीमाण – विमान । तुटै – टूटे । जाणि – मानो । तार – तारे, नक्षत्र । मार माची – प्रहारो की झडी लग गई । कट्टि – कटकर । मोरां – पीठ का शरीर । फरक्कां – वाजू, पार्श्व भाग । धमधम – आवाज । सेलां – भाले । वहै – चले । चवधार – चार धार वाले भाले । पारां – उस ओर, इधर से उधर । ऊपाडता – उठाते ही । तेमि – तैसे । वेहरी – (?) । गाते स पूरां – परिपूर्ण देह । स्रोणरी – लहू की । छटै – तेजी से चले । ऊपटै– बहे, चले । खापा छेक – (मु०) लड़ने मरने को तत्पर, म्यान से वाहर । खग्गं – तलवारें । गूदरी – झडियाँ, छोटी पताकाएँ । कढ़ीस – निकाली । मूठी – मूठ पर, मुष्टिका मे । समेल्है – लें, पकडे । रोजदाहाज – रोजः, मुहर्रम पर । खडक्कै – ध्वनि करे । पच्ची – (?) ।

झिलै सूर सामंत बाहै झटक्का। घडा ढग कुढ़ग रा लै घटक्का ॥
गजा तणा कुभाथळा सेल लग्गै। बळे धार हू धार डंकार बग्गै ॥
कडी झडै जरद्दा तणी जोध कट्टै। झटक्का केइ ढाल हूता उभट्टै ॥
बाहै येमि जमदाढ जोधा बिरत्ता। हुवै वार-हूपार हाथा सहत्ता ॥
बहै येमि गुरज्जा फरस्यां गुपत्ति। ढहैं जोध असवार जाये धरत्ति ॥
वहै येमि चूगा चपेटा स बाहं। गजा टूक पडिया मचै गज्जगाहं ॥
बहै हूल धूपा जियानं बुगद्दा। गमा-गम माचै ही मार गद्दा ॥
नचे नारदं बीर बैताळ नच्चै। महाखेत ऊजेणि भाराथ मच्चै ॥
झडै सार हू सार अणपार झड़िया। प्रथम पांच सै खेत राठौड पडिया ॥
खरी बार जदि कायरा हुई खाटी। भड़ै तीन सै पडे संग्राम भाटी ॥
पडै मोरछा ऊपरां भार पूरा। सिरदार रिणराव लडै सूरा ॥
'गाजिसाहिरौ' येमि 'जसराज' आयो। धके 'साहिमुराद' 'अवरग' धायो ॥
दहू अणी जुदी दहू साहिजादा। बहैं बाण वे लाख माचै स बादा ॥
हल्ला करै सुरताण बे चढै हाथी। सूर सैद पाठाण मुगलाण साथी ॥
उरां करै 'जसराज' हल्ला करारौ। मुणै स ग्रहौ साहि सेना सधारौ ॥

झिलै – शोभा पा रहे हैं। झटक्का – प्रबल आघात। घटक्का – आनन्द, शरीर। तणा – का। कुंभायळां – कुभस्थल। सेल – भाले। बळे – फिर। धार हूं धार – शस्त्रो की धाराओ से धाराएँ। डंकार बग्गै – ध्वनि हुए। कड़ी झडै जरद्दा – कवचो की लोह कडिया गिर कर। झटक्का – प्रबल वार। उभटै – उछलें। जमदाढ़ – कटार। बिरत्ता – वीरतायुक्त, लीन। हाथा सहत्ता – हत्थे सहित। गुरज्जा – गुर्ज, मुग्दराकृति शस्त्र। फरस्यां – परशु शस्त्र। गुपत्ति – गुप्ति शस्त्र। ढ़हैं – गिर पडते हैं। जाये – जा कर। चूगा – चुग्गा नामक तलवार। चपेटा स बाहं – भुजाओं की थप्पडें। गज्ज-गाहं – युद्ध। हूल – तलवार का प्रहार विशेष। धूपां – तलवारें। जियान – जिस प्रकार। बुगद्दां – शस्त्र विशेष। गमागम – घमाघम की ध्वनि, अनवरत। गद्दां – गदा नाम का शस्त्र। भाराथ – युद्ध। झडै – टकराकर गिरें। सार हूं सार – लोहे से लोहा। खेत – रणक्षेत्र। खरी बार – परीक्षा के असली समय। जदि – जब। हुई खाटी – खट्टापन आ गया, सकटापन्न। सग्राम – युद्ध मे। भाटी – भाटी राजपूत। भारपूरां – जबरदस्त वज़न, पूरी आपत्ति। गाजिसाहिरौ – महाराजा गजसिंह का पुत्र। धके – सामने। धायो – बढा, चला। दहू-अणी – दोनो सेना। जुदी – अलग-अलग। बहैं – चलते है। सबादा – विशेष विवाद। हल्ला करै – हमल्ला करके, वीरोत्तेजक घोष कर। बे – दो। उरां – इस ओर, इधर। ग्रहौ – पकडो। सधारौ – सहार करो।

चमरे ढुळताव साम्हा चलाया। अनै ऊरड़ै बेऊ साहि आया ॥
प्रळैकार रा जाणि सामुद्र पूरा। हूवै सेनि गरगाफ माझे हिलूरां ॥
हुवै हाथिया हूत चवदत हाथी। पड़ै चाचरा फुट्टि दाता पराथी ॥
लडै येक भग्गै यक लार लग्गै। अड़ै बज्र हूं जाय मैनाक अग्गै ॥
कटै केई भरसूंडि मारै चिकार। पडै पीलवान धजा अपार ॥
गजे बाण गोळा आराबा स गज्जे। भद्र-जातिया स किते मद्द भज्जे ॥
महा जोध जोधा मिळै माचि मार। घडा बेहड़ां तेहडा तूटि धार ॥
घरा बासता घूवळा नाद ढक्के। झिलै झिल्लरी देवद्वारे झणक्के ॥
पड़ै जूजुवा टूक यू हाथ पाव। बहै श्रोणितं नाळ खाळं बहाव ॥
पडै सीस रुड नचै रुड प्रेत। खिलै जुग्गनी खप्र लै मझे खेत ॥
पडै लंक हू टूटि जोधा अनत। कलेज स बूक बिसथरी अत ॥
पडै फेफर गूद नै मेद फूटै। तिन ऊपरा गिद्धझणी झूड तूटै ॥
घटा घाव लग्गा स घूमै घुरक्कै। फटा सीस फूटा स केई फरक्कै ॥
उडी खोपरी मझिझ भेजो स येखी। दहेडी जाणै ढाकणी खोलि देखी ॥

चमरे ढुळताव – चँवर झलते हुए। **साम्हां चलाया** – सामने बढे। **ऊरड़ै** – उत्साहित हो, साहसकर। **प्रळैकार रा** – प्रलयकाल का। **जांणि** – मानो। **सामुद्र पूरा** – पूर्ण तूफान पर आए हुए समुद्र। **गरगाफ** – गर्क। **हिलूरां** – लहरें। **हूंत** – से। **चवदत** – चार दात, मुकाविला, टक्कर। **चाचरा** – मस्तक। **फुट्टि** – विदीर्ण होकर। **दाता पराथी** – दन्तो से अलग, दन्तो से ऊपर। **लार** – पीछे। **वज्रहू जाय** – वज्रास्त्र से जाकर। **भरसूंडि** – अशुण्ड। **मारै चिकारं** – चिंघाड करते है। **पीलवान** – महावत। **धजा अपारं** – असख्य ध्वजाएं। **गजे** – गर्जती है। **आरावा** – तोपें। **भद्रजातियां** – हाथी। **किते** – कितने ही। **मद्द भज्जै** – मद नष्ट हो जाता है। **मिळै** – मिले, भिड़े। **माचि मारं** – अनवरत प्रहार। **घडा** – शरीरो। **बेहड़ा तेहडां** – दुगुनी-तिगनी। **तूटि धार** – शस्त्रो की धारें टूट कर। **घूवळा** – तोपें। **ढकै** – छिपे। **झिलै** – वजे। **झिल्लरी** – झालर। **देवद्वारे** – देव मन्दिर। **झणके** – वजे। **जूजुवा** – अलग हो कर, अलग-अलग। **यूं** – यो। **नाळ खाळं** – नाले-खाले। **बहावं** – वहते है। **रुंडं** – घड। **खिलै** – खेले, प्रसन्नता प्रकट करे। **खप्र** – खप्पर, पात्र। **मझे खेत** – रणक्षेत्र मे। **लंक** – कटि, कमर। **फेफरं** – फेंफडे। **गूद** – मज्जा युक्त मास। **मेद** – चर्वी। **तिनं** – उन। **गिद्धझणी झूड** – गृद्ध समूह। **तूटै** – टूट पडते है। **घटां** – शरीरो पर। **घुरक्कै** – घुरघुर की आवाज करें। **फरक्कै** – फांके, टुकडे। **भेजो** – मस्तक की मज्जा। **दहेडी** – दधि की मटकी। **ढांकणी** – ढक्कन।

अनै छातियां घाव केता स आगे । पुळैवां लजे जोध लकाळ पागे ॥
कितां छातिया घाव लागे कटारी । बणै राज आवास जाणै स बारी ॥
सूरा पड़ै ऊठै लोह साहैं । बडां मैंगळा रिणगळा सीस बाहैं ॥
पडे हैमरां पाखरां तूटि पासैं । निजोडै पगा फीच ते केई नासैं ॥
अबै पडै नाही कमध पांव आघा । भडा राचतां कायरा धीर भागा ॥
अबै कामि आया तिया नाम आखूं । भड़ै जोध भागा जियां नाम भाखू ॥
ठिकाणे ठिकाणे रहे जुद्ध ठाढा । गाढ़ा पाव रोपै अनै आप गाढ़ा ॥१५४॥

छन्द दोहा

भड़ि भागा कमधज्ज भड़, लागा साहि स लार ।
पग मांडे रहिया स पग, सल हूं जे सिरदार ॥१५५॥

छन्द सोरठा

'रायसिंघ' 'जसराज', चंदरावत कूरम चले ।
'अजण' न भाजै आज, बढ़ि पडसी बानैत उत ॥१५६॥

आखाडै अवनाड, बाबाडै ऊभो बिकट ।
पुळै न 'अजण' पहाड, बढ़ि पडसी बानैत उत ॥१५७।

केतां स – कितने ही के । पुळैवा – भागने मे । लंकाळ पागे – सिंह की भांति स्थिर पैर, सिंह की तरह अडिग । राज आवास – राजप्रासाद । बारी – मोरी, खिडकी । लोह साहैं – शस्त्र उठाते है । मैंगळां – हाथियो के । रिणगळा – रणमस्त । बाहैं – प्रहार करते हैं । हैमरां पाखरा – घोडो के कवच । पासैं – पार्श्व मे, पास मे । निजोडै – कटे हुए । फीच – जघा का पिछला भाग । कमध – राठौड, महाराजा जसवन्तसिंह के । आघा – अगाडी । राचतां – अनुरक्त होते । धीर – धैर्य, स्थिरता । कामि आया – मारे गये । तियां – उनके । जियां – जिनके । ठाढ़ा – दृढ, स्थिर, खडे । गाढ़ा – दृढता से । रोपै – स्थिर किये । आप – स्वय ।

१५५. लागा – लगे । साहि – शाहजादे । लार – पीछे । पग मांडे – पैर रोपे । सल – असल, दृढ वीर । जे – जो, वे ।

१५६. अजण – अर्जुन गौड । बढ़ि – आगे बढ, कट कर । बानैत – वीरता का चिन्ह विशेष ।

१५७. आखाड़ै – युद्ध मे । अवनाड – अनम्र । बाबाड़ै – ललकारे । ऊभो – खडा । पुळै न – चले नही । बानैत – वीरता सूचक चिन्ह । उत – वहाँ, पुत्र ।

छन्द छप्पय

भड़ै आजि भाजियां, भाग मो आजि अकुट ।
आजि कामि आवस्या, आजि थूरण गज थट्ट ॥
आजि दिल्ली ऊथळी, आजि 'अवरंग' उमगे ।
आजि आणद अपछरा, पतग खड़ै न पगे ॥
अबरी आजि बरस्या अवसि, सूर कवरि नौ सचरा ।
रवि मडळ भेदि अति लोक तजि, क्रस्ण लोक क्रीडा करां ॥१५८॥

बाप स बामी - बध, कध अवकध कहाणो ।
'खानजिहा' भजियो, पच्छधर बलख पछांणो ॥
येह सीख ऊचरै, भिडै कुळ रीति न भज्जण ।
परखे पूत सपूत, जये मो नाम अरज्जण ॥
ऊजेणि करू कुरखेत जिम, धारा - तीरथ ऊधरूं ।
हिवाळै गळू नही हमरकै, ध्यान जोति मनसा धरू ॥१५९॥

गज केसरि ब्रद गौड, अहळ ब्रद गौड बखाणै ।
गिणे सूर ब्रद गौड, करण ब्रद गौड कहाणै ॥
गढ राखण ब्रद गौड, गढा गाहण ब्रद गौड़ ।
गहर धीर ब्रद गौड़, अनै ब्रद गौड़ अरोड़ ॥

---

१५८. अकुटं – मस्तक । आवस्यां – आयेंगे । थूरण – नाश कर । गजथट्टं – गज सेना । ऊथळी – डगमगा गई, उलट-पलट हो गई । उमंगे – उत्साह बढ़ा । अपछरां – अप्सराएं । पतंग – सूर्य । खड़ै – चलावे । पंगे – अरुण, सूर्य का सारथी जो पगु है । अबरी – अविवाहित, अविजित । बरस्या – वरेंगे । नौ – नही । सचरां – जायेंगे । रविमंडळ – रविमण्डल । भेदि – भेद कर । क्रस्ण-लोक – वैकुण्ठ लोक । क्रीड़ा – केलि ।

१५९ बामी बंध – बांए ओर पेच लगा कर पगड़ी बांधने वाला वीर । अवकध – दृढ़ स्कन्ध वीर । कहांणो – कहा जाने वाला । भंजियो – नाश कर दिया । पच्छ-धर – पक्षधर । बलख – बल्खराज्य । भज्जण – भागने की । परखे – परीक्षा कर । जये – जन्मसे ही । अरज्जण – अर्जुन । कुरखेत – कुरुक्षेत्र । धारा तीरथ – तलवार धारा रूपी तीर्थ, युद्ध । हिवाळै – हिमालय । गळू – गलने की क्रिया का भाव । हमरकै – इस बार ।

१६०. ब्रद – विरुद । अहळ – अविचल, युद्ध मे स्थिर । करण – दानदाता का, कर्ण का । गाहण – ध्वस्त करने वाला । अरोड़ं – न रुकने वाला, बलवान् ।

ओहट्टमाल ब्रद गौड कहि येक, बळ गौड़ समत्थ कहै ।
कवित्त माहि ब्रद आंणियां, 'बीरभद्र' येता बहै ॥१६०।

छन्द दोहा

अणहळ करां उदार, खैराड़ो अणहळ खत्री ।
मेर सरूप 'मुरारि', जुध मचिया 'जसराज' उत ॥१६१॥

छन्द नीसांणी

पग मंडै रहिया सपोह अणभग असका ।
'रतनागर' राठोड़ सा बढ़ि कमळे बका ॥
दढिया पांव दयाळदास लूटावण लका ।
सुणि भाजै न 'सुजाणसिंघ' धूवाळ धमक्का ॥
फबियो नखि कुवर 'फतो' मांझी माझरक्का ।
सकतावत 'केहरी' सुथिर आराणि अढंका ॥
'रुकमागद' सुरताण रै जुद्ध रूप जमका ।
'राघवदे' झालो रणे उपजै न अतका ॥
'गोवरधन' गळियार रिण उबारण अका ।
भडि 'बीठळ' भाजै नही पुणि जोधपुरका ॥
खगबाहो 'अफितारखान' मोहो मौड मतका ॥१६२॥

छन्द त्रोटक

सह जुद्ध पड़ै खत्रवाट सत । मडि मांडण पाव तिता परत ॥

ओहट्टमाल – अविचल वीर । समत्थ – समर्थ । आणियां – लाया, कहे गए । येता बहै – इतने ग्रहण कर चले ।

१६१. अणहळ – अटल । करां – हाथो का । मेर सरूप – सुमेरुगिरि सदृश्य ।

१६२. सपोंह – राजा । रतनागर – रतनसिंह । कमळे – मस्तक । दढियां पाव – दृढ पैर, अडिग । धूवाळ – धूम्रमाला, तोपें । धमक्का – आवाज । नखि – समीप । माझरक्कां – गर्वधारी । आराणि – युद्ध । अढ़ंका – जबरदस्त । जमंका – यम का । अतंका – आतक । गळियार – उन्मत्त, मस्त । अंकां – अक्षर, अक, कीर्ति । पुणि – कहो । खगबाहो – तलवार चलाने वाला । मोहो मौड़ – मुह फिराने वाला । मतंका – हाथियों का ।

१६३. खत्रवाट – क्षत्रियत्व । सतं – शौर्य वाले । परतं – प्रत्यक्ष, सप्रतिज्ञ ।

बल तेणि स धारिय ते बिरथ। 'मुकदेस' मडे पग सेस मथ ॥
मडिया पग 'मोहणसिंघ' मड। छळि साहि अनै ध्रम केमि छड ॥
मडिया पग 'सिंघ जूझार' मह। दळ लाकड पावक जेमि दह ॥
'कन्हीराम' मडे पग जोध कन्ह। बिरचे करि सीह गयद वन्ह ॥
पिडि मडि 'किसोवर सिंघ' पग। खित मार झालिये जोध खग ॥१६३॥

छन्द छप्पय

'मुकदसिंघ' पग मडे, अनै चहुँवै भड आगै।
पुणि 'कलियांण' पमार, बणै केसरिये बागै ॥
रिण 'दळथभ' राठौड, जिसौ राव निडर स जाणै।
बणि 'हरियद' राव भाट, विमळ बौल ब्रद बांणै ॥
सामत अवर 'मुकदेस' रा, करण आजि अगद कळा।
बरणाव जियां वेह वेह करो, येक येक सौ आगळा ॥१६४॥

छन्द दोहा

पग हाडा जडिया पनग, अड़िया सिर असमाण।
ऊपडिया कर आवधां, खडिया दळ खुरसाण ॥१६५॥

बिरथं – (?) । सेस मथ – शेषनाग के सिर पर। छळि – युद्ध। केमि – किस प्रकार। छडं – त्यागें। लाकड़ – लकडी। पावक – अग्नि। दह – जलती है। कन्हं – पास, वीर कन्ह की भाँति। बिरचे – कोप कर के विचरण करे। करि – हाथी। गयंद बन्हं – कदली वन मे। पिडि – युद्ध मे। खितमारं – राजा, पृथ्वी को जीतने वाला। झालिये – लिए हुए। खगं – तलवार।

१६४. पुणि – पुन, फिर। केसरिये बागै – केशर के रग मे रगा बागा वस्त्र। जिसौ – जैसा। राव भाट – राजाओ महाराजाओ तथा क्षत्रिय मात्र के विरुद वर्णन करने वाली जाति विशेष। बौल – बोलने वाली। ब्रद बाणै – विरुद वाणी, प्रशसा-काव्य। जिया – जिनके। बेह बेह – तरह तरह से, बार-बार। आगळा – बढचढ कर, आगे।

१६५. पनंग – शेष नाग। अड़िया – लगे हुए। ऊपड़िया – उठाए हुए। आवधां – हथियारों। खडिया – चले। खुरसांण – मुसलमान।

छंद ताटंक

खड़ि सेन अपार अंधार, खरडा मांभी साहि 'मुराद' ।
धखि बीरर धीर बजे रण धूहळ, बेऊ दळा मचि बाद ।।
मिळि घोर नगार हीसार तुरगां, माची अमेळा-मेळ ।
मिळि बाण कबाण गुणाथिय मेळा, खग खापां हू ऊखेळ ।।१६६।।

छंद दोहा

खग खांपा हू ऊखेळ, अड़े अराब अपार ।
बाण मुराड अगार बड, धूवा रै अधार ।।१६७।।

छंद ताटंक

धूंवा रै अधार धिखाणा, गोळा नाळि गरज्जि ।
पहाड ऊजाड़ बिभाड परद्दळ, गोम मिळै धज गज्जि ।।
तड मार तडक्क भडक्क तुपका, गोळीया गणणांव ।
फर पत्त जही नर पाखर फूटै, बाज सरभ्भळ बाव ।।१६८।।

छंद दोहा

बाव सरभ्भल बाजतां, मचियौ रिण घमसाण ।
गुडै सिलारा गौडिया, पड़ै सैद पाठाण ।।१६९।।

छंद ताटंक

पड़ै सैद पाठाण जवाण अपार, सेल सुरगा साथ ।
रिण हाडो राव दुबाह रचतां, हाथिया पडि हाथ ।।

---

१६६. खरडा – घोडा, मुसलमान, सेना । धखि – धधकते हुए । धूहळ – (?) । बाद – युद्ध, विवाद । नगार – नगारे । हींसार – हिनहिनाहट । गुणांथिय – प्रत्यचाए । खांपां हूं – म्यानो से । ऊखेळ – युद्ध ।

१६७. अराब – तोपो के । मुराड – इधन आदि का ढेर । धूवा रै – धुए के ।

१६८. धिखाणा – प्रज्वलित । नाळि – तोपें । बिभाड़ – नाश कर । गोम – आकाश मे, पृथ्वी पर । धज गज्जि – ध्वजाएँ और गर्जन । तड़ मार – तड तड प्रहार ध्वनि । सरभ्भल – तीरो का समूह । बाव – वायु ।

१६९. गुडै सिलारां गौड़िया – हाथियो के जोडे लुढकते हैं, सिलह से सजे हुए हाथी गिरते हैं ।

१७०. सेल – भाले । दुबाह – वीर । रचतां – करते ।

कुभाथळ ऊजळदंत कटाणां, डोलैह सूडा डड ।
पग नेवर घूघर चमर पाखर, खड किया बिब खड ॥१७०॥

छंद दोहा

खड खड पड़िया खळां, रण भौमे रळियाह ।
घड हू घड़ बागा धका, भड हू भड भिडियाह ॥१७१॥

छंद ताटंक

भिडिया भड हू भड भभड़ भाहर, घज्जबड़ां वहिधार ।
बढि कोपर टोपर कध नगत्तर, अस्सि अनै असवार ॥
तड़फत्त भड़ा घड़ टूटै तडळ, बढि सधाण बधाण ।
फबिया रत घट जाणै फूटा, रग मजीठ मचाण ॥१७२॥

छंद दोहा

रग मजीठे रळतळे, ऊकळियौ आराण ।
बधव पाचौं बौळिया, काळेजळि केकाण ॥१७३॥

छंद ताटंक

केकाण जवांण घसै जळ काळे, माझी सूर 'मुकद' ।
महरांण 'भूझार' 'कन्हीराम' जेहा, रण केहरि राजद ॥
अवनाड बिछाड पछाड़ असग्गां, सूर बखाणै सांच ।
खळ खडण मडण बीर अखाडे, पाड़व जेहा पाच ॥१७४॥

डोलैह – डोलते है, चलायमान होते हैं । सूंडा डड – शुण्डा दण्ड । बिब – दो दो ।

१७१. रळियाह – मिल गए । बागा – बजा, लगा । भिडियाह – भिडे ।

१७२. भभड़ भाहर – बडे और विकट । घज्ज बड़ां– बडी तलवारें, खांडे । बढ़ि – कट कर । कोपर – कोहनी । टोपर – लोहे का टोप । अस्सि – अश्व । तंडळ – टुकड़े । सधाण – सधि स्थलो के । बंधाण – वन्धन, जोड । रत – रक्त । मजीठे – मजिण्ठ ।

१७३. रळतळ – फैल गया । ऊकळियौ – तेज होने से । बौळिया – डुबा दिये । काळेजळि – रक्त मे । केकाण – घोडे ।

१७४ घसै – घुसे, पैठे । सूर – शूर । महरांण – महार्णव, महासागर । जेहा – जैसे [। अवनाड – अवनत । बिछाड – भयकर वीर । असग्गां – असम्बन्धी, वैरी । अखाडै – युद्ध-स्थल । जेहा – जैसे, सदृश्य ।

छंद दोहा

पांडव जेहा पाच पुणि, जाडै दळ जाडाह ।
लडिया आडै लोहडै, हैवै सो हाडाह ॥१७५॥

छंद ताटंक

हैवै पति हाडा माडी हुचक, जागी खभ उजेण ।
महि साहि 'मुराद' कठीरण माता, ताता हैहय तेण ॥
मुडता आफेळ उछाळ भिडज्जां, भाभे बाह ऊभेल ।
गज ठेल गया, अणठेल गुडावै, सूर समाहे सेल ॥१७६॥

छंद छप्पय

अध फौज मुह अग्गै, पड़ि अध फौज स पूठी ।
अध फौज आखती, अध पाखती स ऊठी ॥
निडर बीच सभरी, नरेस हैवै पति हेरै ।
बधि रोहियौ बराह, घडा दसहौ दिस घेरै ॥
लागै तिम तिम लोहड़ा, लोयण नह बिमना लसै ।
मछार जही हाडौ 'मुकद', सार धार साम्हौ धसै ॥१७७॥

---

१७५. जाडै दळ – घने दल मे । जाडाह – मजबूत, घनें । आडै लोहड़ै – तिरछी धाराओ मे, विकट प्रहारो मे । हैवै – बादशाह के लिए, अश्वपति ।

१७६. मांडी – की, रची । हुचक – युद्ध, टक्कर । जागी – युद्ध, वाद्य । कंठीरण – सिंह । माता-ताता – मोटे ताजे, पुष्ट और तेज । हैहय – घोडे । आफेळ – आस्फाल, टक्कर । उलाळ – उलट कर, पछाड कर । भिड़ज्जां – घोडे । भाभे – बहुत, अधिक । बाह – भुजा । ऊभेल – उभेल, पकड कर । गजठेल – शक्तिशाली, हाथियो को धकेल कर । अणठेल – जो धकेले नहीं जा सकते थे । गुडावै – गुडका दिये । समाहें – उठा कर, सम्हाल कर ।

१७७. अध फौज – आधी सेना । अग्गै – अगाडी । पूठी – पीठ पीछे । आखती – अगल । पाखती – पार्श्व, बगल । ऊठी – उधर, उस ओर । संभरी नरेस – राव मुकदसिंह । हेरै – तलाश करे । बंधि – बधन मे । रोहियौ – रोका गया । बराह – शूकर । घड़ा – सेना । घेरै – घेरा, मण्डल । तिमतिम – जैसे जैसे, त्यो त्यो । लोहड़ा – शस्त्र । लोयण – नेत्र । मंछार जंहीं – बड़े मच्छ की तरह ।

छंद बिराज

धसे सार धार। मुखे मार मारं ॥
बकारै बहस्सै। धका मारि घस्सै ॥
झडै धू झटक्कां। बटक्का बटक्का ॥
जमदाढ जोरै। फरां ऊर फोरै ॥
गुरज्जा गंमकां। धमका धमका ॥
लपेटा स लग्गै। बळा मार बग्गै ॥
चमू मार चावा। दळा माचि दावा ॥
फरस्सी फबती। गदावे गुपत्ती ॥
करां बै करद्दां। मरद्दा मरद्दा ॥
पड़े लट्ट - चट्ट। बिकट्ट बिकट्ट ॥
गळे बांह गथ्थ। बढै लोथि बथ्थ ॥
कच ग्राच रख्ख। बणे दाव बख्ख ॥
मडे मत्तिवाळं। क ग्रहे कलाळ ॥
'मुकदे' मरट्ट। ठेलै गज थट्ट ॥
'मुराद' स मडे। झाझा रोपि झडे ॥
घणै घट्ट घावं। असै रूप ग्रावं ॥
हठी रूप हाडो। जाडि सेनि जाडो ॥
मुंहामूंह मेळै। भिड़ज्जा स भेळै ॥
सेला सूर साहै। गड़ां घडां गाहै ॥
किरम्माळ काटं। पडै तूटि पाट ॥
ग्रावधे अपारं। सहै वाहि सारं ॥१७८॥

---

१७८. सार धार – शस्त्रो की धाराओ मे। बहस्सै – उत्साहित होकर। झड़ै – गिरें। धू – मस्तक। झटक्कां – प्रहारो से। बटक्कां – टुकडे। फरां ऊर – हृदय और बाहु का भाग। गुरज्जां – गदाओ के। करद्दां – तलवारों के। लट्ट चट्टं – गुत्थमगुत्थ होकर। गळे बाह गथ्थं – गले बांह डाल कर, कण्ठालिगन होकर। बढै – कटे। लोथिबथ्थं – लथोपथ होकर। कच ग्राच – काछ मे हाथ डाल कर, सिर के केश पकड कर। बख्ख – काबू मे। क – मानो। कलाळ – कलाल, शराब विक्रेता। मरट्ट – गर्व, झुण्ड। ठेलै – धकेलें। झाझा – दृढ़, गहरे। मडे – ध्वज। घणै – बहुत। घट्ट – शरीर। असै – ऐसे। जाडि – घनी। मुहामूह – मुह से मुह, सामने आकर। भेळै – भिडाये, मिलाये। गड़ां घड़ां – सेनाओ से सेनाओ को किरम्माळ – तलवार। सारं – शस्त्र-घात, तलवार।

छंद नीसांणी

सह आवध बाहैं सहैं ।भड पांच भुजाळा ।
तण 'मधकर' नाहर जिसा थाहर रखवाळा ।।
बाहर दिली बहसिया जाहर जम जाळा ।
पचाहर पाडै पिसण साथ सूडाळा ।।
माहो मिळि 'साह मुराद' सो बदि ब्राद वडाळा ।
कनडा पायक कचरिया केइ बहसे काळा ।।
च्यार पहर नहिं चालिया रथ दणियर वाळा ।
भागे दळ भागा नही च्हुवाण सचाळा ।।
वो 'मुकदा' 'मधुसाह' रा पडिया पाचाळा ।।१७९।।

छंद नीसाणी

'मोहणसीघ' पडिया मरद भड पाडि भयकर ।
माझी 'साहि मुराद' गाळे रिण गूमर ।।
उजवाळे ब्रद आप रा बाप रा बरबर ।
अते आखती आवती उमाही अपछर ।।
नारद आवै नाचता सिर कारण सकर ।
केइ बरमाळ बणावती केइ करती चंमर ।।
चौसठि रुहिर चाखती पीती भरि खप्पर ।
अंत तत ले उडती यम ग्रीभणि अमर ।।

---

१७९. बाहैं – चलाते । सहैं – सहन करते । भड़ – भट । तण – तनय, पुत्र । मधकर – माधवसिंह के । थाहर – सिंह कन्दरा । बाहर – रक्षार्थ । बहसिया – जोश मे आए । जाहर – प्रकट । पंचाहर – सिंह । पाड़ै – गिरावें । पिसण – वैरी । सूडाळा – हाथी । बदि बाद – जबरदस्ती, विवाद कर, बढचढकर । कनडा – पास रहने वाला । पायक – सेवक, पदाति । कचरिया – नष्ट किए । काळा – वीर । दणियर वाळा – सूर्य का । सचाळा – सच्चे वीर । मधुसाह रा – माधवसिंह का । पांचाळा – पाचोभाई ।

१८०. पाड़ि – गिरा कर । गाळे – गलाये, मिटाए । गूमर – घमण्ड, गर्व । आप रा – अपना । बाप रा – पिता के । बरबर – बराबर । अते – इतने मे । आखती– अधीर, कहती हुई । उमाही – उत्साह युक्त, उल्लासमय । बरमाळ – वर-माला । बणावती – बनाती हुई, पिरोती । चौसठि – चौसठ युद्ध देवियां । रुहिर – रुधिर । चाखती – चखती हुई, स्वाद लेती हुई । पीती – पान करती । अंत तत – आतो के तन्तु । ग्रीभणि – गृद्धनी । अंमर – आकाश मे ।

जाणै अजब खिलाड की गुडि उडि अदोफर ।
बडो तमासो बिसथरें विच समरे बमर ।।
मिळिया 'मोहणसिंघ' मधि अमरायण अमर ।।१८०।।

छंद दोहा

अमरायण मिळिया अमर, अमरा किय अधिकार ।
भाड़ै खग जाडा झडा, उडि पडिया 'भूझार' ।।१८१।।

छद नीसांणी

झड़ि पडतै 'भूझारसिंघ' अडिया भूझार ।
है भड गजां चागाहट पडिया अणपार ।।
धारा कुंतारा घिपै बढि पडै बगार ।
वरापारा येखिजै वारा चौबारं ।।
धाव सूरां पूरा घटा नटा उणिहार ।
विधि करि भगळ वणावियो बहो रूप बबार ।।
धड माथा तवि जूजुवा धड वाहै धारं ।
वोयण लारा आवता आता उळझार ।।
जड़िया जाणि जंजीर गति खुटिया खभार ।
तत मत पचै तणा सिर झल्ले सार ।।

गुडी – पतग । अदोफर – मध्य आकाश मे । विसथरें – फैले । समरे– समर मे । बमर – महादेव । अमरायण – अमरपुर मे । अमर – देवता, सुरगण, आकाश मे ।

१८१. अमरा – सुरो पर । भाड़ै – पछाड़ें, प्रहार कर । जाडा – घनें, गहरे ।

१८२. झडि – झड कर, कट कर । अडिया – अडे, सामने रुपे । है – घोडे । चागाहट – चगताई वश के मुसलमानो के, मथन किए हुए । कुंतारां – भालो से । घिपै – लड-खडाते । बगार – बडे छेद, मोटे घाव । वारां पारां – इधर से उधर पार । वारा – प्रहारो से, द्वार । चौंबार – चार द्वारे । घटां – शरीरो । नटा – नटो के । उणिहारं – समान आकृति । विधि करि – विधाता के हाथ से, विधि सहित । भगळ – इन्द्रजाल, भगल विद्या । बबारं – घाव, छेद । तवि – कह, तव । वोयण – पैर । लारां – पीछे । आतां – आँतें । उळझारं – उलझती । खुटिया – मुले । खभारां – खभो से, स्तभो से । तत मंत – ठीक समय । पचं तणा – पार्चो के । झल्ले – झेलने की क्रिया का भाव । सारं – अस्त्र-शस्त्र ।

बाकारे माथा बहसि राता वबकार ।
तत्ता जाणि मजीठ का रण ढुळे रगार ॥
सुत 'मधुसाह' दुबाह सुज सँफळि सिरदारं ।
जुडी मूकेती जोरवर ले लाडो लार ॥
माडो हाडा माणवी मिळि जोति मझार ॥१८२॥

छंद दोहा

जोति मझारे जोरवर, झळमळियो 'झूझार' ।
जड़े ध्यान जिण जोति रो, सिव ब्रह्मा मुनिसार ॥१८३॥

बटका बटका बीथरे, तटका झटका तान ।
घटका बिढ़ि पडिया घणा, कुटका कुटका 'कान' ॥१८४॥

घटका बिढि पडिया घणा, बटका वोपै बोस ।
कुटका कुटका 'केहरी', जोड़वियो जगदीस ॥१८५॥

जुध अरजनजी गौड़ को

छंद भाखडी

'अरजन' उरडै जीक, 'ओरंग' आहुडै ।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घड़ै ॥

राता – लाल । बबकारं – बडे छिद्र, गहरे लाल । ढुळे – लुढक कर, बहे । रंगारं – रगरेज । सँफळि – युद्ध । जुड़ी मूकेती – बहुतेरी एकत्रित हुई । लाडी – दुल्हिन, अप्सरा । लारं – पीछे, साथ । मांडो – जबरदस्ती से । मांणवी – उपभोग की, मानवी । मिळि – मिली । मंझारं – मे, मध्य ।

१८३ झळमळियो – दैदिप्यमान हुआ । मुनिसार – श्रेष्ठ मुनि ।

१८४. बीथरं – फैले । तटकां – तट तट की ध्वनि । झटकां – प्रहार । घटका – शरीर का । बिढ़ – कट कर, लड कर । कुटका कुटका – छोटे छोटे टुकडे । कान – कन्हीराम के ।

१८५. बटका – टुकडे । वोपै – शोभा पाते जोड़वियो – जोडे ।

१८६. अरजन – अर्जुन गौड । उरडै – जोश करे, उत्साह से आगे बढे । ओरंग – औरगजेब । बजे न बाहुडै – न भागे, न पीछे मुडे । त्रबधि – तीन विधि से ।

घड बहै त्रबधि येमि, घावा सार झडि सोक ।
घड होय खड बिहड धारा, लह सके मुर लोक ।।

चवधार बाह दुबाह चवरग, झिलै बाहै झोक ।
ऊपटै चळवळ धार येहो, करे जोगणि वोक ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

बेबाह लाल दुझाळ बजियौ, वोरतौ 'अजमाल' ।
पाडतौ सैदां पठाणां, ढाहतौ गज ढ़ाल ।।

मुख चढे जेता पडै माथा, दूठ कूठ दुडाळ ।
घैघीग माता जेमि धसियौ, साहिजादा साल ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै ।
वजे न बाहुडै जी, घाव त्रवधि घडै ।।

जुध 'वीरभद्र' वीर जेहो, घसे साम्ही धार ।
भूझार रिण वाहतौ झटका, सपेखि सिरदार ।।

असवार असि परिहार आवध, मैगळां सिरमार ।
तिण वार अछर अपार राती, हिंडूळै गळिहार ।।

'अरजन' उरडै जीक, 'औरग' आहुडै ।
वजे न बाहुडै जी, घाव त्रवधि घडै ।।

सोक – आवाज । मुरलोक – तीन लोक । चवधार – भाला । चवरग – सेना । झिलै – झेलते है, सहन करते हैं । झोक – जोश मे, प्रहार करते है । ऊपटै – वेग से वहे । चळवळ – रक्त, खून । येहो – ऐसा । जोगणि – योगिनी । वोक – हाथ की अंजुलि । वेवाह लाल – लाल वेग नाम का अश्व । दुझाल – वीर । वोरतौ – झोकता । पाडतौ – गिरता हुआ । सैदा – सैयद जाति के मुसलमानो को । ढ़ाहतौ – गिराता । जेता – जितने । दूठ – वीर, दुष्ट । कूठ – वृक्ष, कुटिल । दुडाळ – दो टुकड़े होकर, द्वि खण्ड, दो चीर । घैघीग माता – मस्त हाथी । धसियौ – घुसा, प्रवेश किया हुआ । साल – चुभने वाला, शल्य । जेहो – जैसा । वाहतौ – वहाता, चलाता । झटका – प्रहार । असि – घोडा । परिहार – निवारण कर के, हटा कर । मैगळां – हाथियों के । तिण वार – उस समय । अछर – अप्सराए । राती – अनुरक्त । हिंडूळै – लहराये, हिंडोले लें । गळिहार – कण्ठाभूषण, घायलो से लिपट कर ।

माझिया जोध 'मुरारि' मुहियड, बधै करतो बाह।
पाडतो आदूठ पिसणा, रचे केत्तर राह॥
भेदितो गयदा येमि भाले, लेयतो असिलाह।
वाह जी वाह सराह जपै, नरिंद सेन्या नाह॥
'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घड़ै॥

'प्रथिराज' सूर सकाज पाहड, दुजड अरिया दाट।
घट घाट फूल फलास धाये, कग्गळा सिर काट॥
कघाळ धड जघाळ 'पोहकर', बढ व्है द्रहबाट।
झट डाट बडफर सिर स ऊझट, निहसि बाह निराट॥
'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै॥

'राजसी' रीघ सधीग राखण, सार हथ्यो सीह।
सैद गौडा भूझ मचियौ, बिरचियौ अणबीह॥
गाजिया बहो बाण गोळा, बाजिया बाजीह।
आजिरो सिरदार आगै, हणु जेमि हठीह॥
'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घड़ै॥

मुहियड – अगुआ, मुह आगे। बधै – बढ कर। वाह – प्रहार। आदूठ – आदि दुश्मन, वलवान शत्रुओ को। पिसणां – शत्रुओ को। रचे केत्तर राह – राह और केतु की तरह, एक ओर माथा और एक ओर धड। येमि – इस प्रकार। लेयतो – लेता हुआ। असि लाह – तलवार का लाभ, तलवार का आनन्द। जपै – कहे। सेन्या नाह – सेनापति। दुजड़ – तलवार। दाट – रोक कर। घट-घाट – शरीर की आकृति। फूल फळास – पलास वृक्ष के पुष्प। कंग्गळां – कवचो, तलवारो से। कंघाळ – स्कध। जंघाळ – जंघाए। द्रहबाट – ध्वस्त। झट डाट – प्रहार रोक कर, चोट झेल कर। बडफर – ढाल। ऊझट – उछल कर। निहसि – मार कर, सहार कर। निराट – अधिक। रीघ – ऋद्धि। सधींग – धीर। सार हथ्यो सीह – अस्त्र शस्त्र हाथ मे धारण किया हुआ सिह। भूझ – युद्ध। बिरचियो – रचा, किया। अणबीह – अभय। बाजीह – युद्ध वाद्य। हणु – वीर हनुमान।

भैंभीत जोध अभीत भारथ, 'मानसी' मन मोट ।
भड वोट राखण जिकौ भिडता, कहै मैवट कोट ।।
सिर हणैं येकणि चोट सामत, दुजड खेलै दोट ।
केइ लोट खाता फिरै कुजर, अरि घडा अणबोट ।।

'अरजन' उरडै जीक, 'औरग' आहुड़ै ।
बजे न बाहुड़ै जी, घाव त्रबधि घडै ।।

'साईदास' 'भाखर' हर सूरो, बढं जोबराड़ि ।
गज ब्यूह गाहण गौड़ गहवत, भूळ हैं भड़ भाडि ।।
पाधरै पाधर लोह पैठो, फौज द्रोयण फाड़ि ।
धाड़ि जी धाडि बजाडि धजवड़, अनड लेय ऊपाड़ि ।।

'अरजन' उरड़ै जीक, 'औरग' आहुडै ।
बजे न वाहुढ़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

'कुसळेस' जोध कळेस कारण, राखिया अवरेस ।
लघु वेस गौड़ लंकाळ लाजे, सिर जडै पग सेस ।।
आहणो रवदा येमि असमर, कहर रूप कहेस ।
चवसट्ठि चड चड रुहिर चाखै, माळ भर माहेस ।।

'अरजन' उरडै जीक, 'औरग' आहुड़ै ।
वजे न वाहुढ़ै जी, घाव त्रबधि घड़ै ।।

भैंभीत – भयातुर । अभीत – निडर । भारथ – युद्ध मे । मोट – विशाल, बडा । वोट – ओट, रक्षा । जिकौ – वह । मेवट कोट – शरणागत रक्षक । हणैं – काटे । येकणि – एक ही । चोट – वार । दुजड – तलवार । दोट – दोटे मार कर, वल्ले के प्रहार की भांति प्रहार कर । लोट – गुलाँचे । कुंजर– हाथी । अणवोट – बिना कटी, अक्षत । जोबराड़ि – जोशीला, उत्साही । भूळ– समूह । हैं – घोडे । भाड़ि – गिराकर । पाधरै – सीधा, खुला मैदान । द्रोयण – दुर्जन, दुश्मन । फाडि – चीर कर, विदीर्ण कर । धाडि जी धाडि – धन्य है, धन्य है । बजाडि – वजा कर, चला कर । धजवड – तलवार । अनड़ – पर्वत । कळेस – युद्ध । अवरेस – प्रतिज्ञाबद्ध होकर । वेस – आयु । लंकाळ– सिंह । जडै – रोपे । सेस – शेष नाग । आहणो – मारने वाला । रवदां – मुसलमानों । असमर – तलवार । कहर – भयकर । कहेस – कहे । चवसट्ठि चंड – चौसठ चण्डिकाएँ । चड़ – पीने की ध्वनि । रुहिर – लहू, रक्त । चाखैं – स्वाद से, चखे । माळ – माला । भर – पूर्ण कर, पिरोकर ।

'इंद्रभाण' सिर असमाण अडियौ, आछटै केवांण।
निजूडै जोधा पडै निरळग, माडियौ घमसाण।।
'केहरी' जोध जवाण कहियौ, पातळोत प्रमाण।
बप रूप बहसै सेल बाहै, पं सराहै पाण।।
'अरजन' उरडै जीक, 'ओरग' आहुडै।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घडै।।

'नरपाळ' जूह स ढाळ नागा, धसै येही ढाळ।
पखराळ भड जरदाळ पमगा, नडै घड निरवाळ।।
नरसीघ रूप भयान भाळे, लागूवा लकाळ।
गाहिया गोपदंत गैमर, डोळिया तर डाळ।।
'अरजन' उरडै जीक, 'ओरग' आहुडै।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घड़ै।।

'जगभाण' भीम समाण जाणै, दोयणां दूसास।
चमू साह री हीडोळि चलियौ, करै अतक पास।।
कूरम राव 'किसोर' कटियौ, अछर पूरी आस।
बढै 'श्रीमणि' विप्र बढियौ, बसे सुरपुर वास।।
'अरजन' उरडै जीक, 'ओरग' आहुडै।
बजे न बाहुडै जी, घाव त्रबधि घडै।।

अडियौ – जा लगा। **आछटै** – पछाटें, आघात करे। **केवांण** – तलवार। **निजूडै** – कटे हुए। **निरळंग** – सीधे। **घमसाण** – युद्ध। **पातळोत** – प्रताप-सिहोत। **बहसै** – उत्साह करके। **पांण** – हाथ, बल। **जूह** – समूह, यूथ। **ढाळ** – गिरा। **नागा** – हाथियो। **येही ढाळ** – ऐसे तरीके से। **पखराळ** – पाखरधारी। **जरदाळ** – कवचधारी। **पंमंगां** – घोडो। **नड़ै** – बढे हुए, निकट। **निरवाळ** – अलग। **भयान** – भयावह। **भाळे** – दिखाई पडे। **लागूवा** – शत्रुओ। **गाहिया** – नष्ट किये हुए। **गोपदंत** – पृथ्वी पर हाथी दात। **गैमर** – हाथी। **डोळिया** – काट छाग कर, छिन्न किए हुए। **तर डाळ** – तरुशाखा। **दोयणा** – दुश्मनो को। **दूसास** – दुस्साहस, दु:शासन। **चमू** – सेना। **हींडोळि** – आन्दोलित कर, विचलित कर। **अंतक** – यमराज, अन्तकर। **अछर** – अप्सरा। **पूरी आस** – आशा पूर्ण कर। **बढ़ियौ** – कट गया। **बसे** – निवास किया।

'सोमदत्त' 'जेहा' हरी 'सुदर', मडे खेत मरद्द ।
पुळि घरे नही आविया पाछा, बजाडै बम हद्द ।।
ध्रमस्याम छळि तूटिया धारां, दाखियौ न दरद्द ।
ध्रुव जेमि राखै नाम धज्जा, गजा मेळि गरद्द ।।१८६।।

छंद छप्पय

उरडि उरड़ि 'अजमाल', फौज सुलताणी फाड़ै ।
कुत वाण कव्वाण, अनै असमर अवभाडै ।।
चुगला रा चाचरा, फाडि फाचरा फटाणा ।
वार पार आवधां, ववकि कर वार वहाणा ।।
अतार तार चीहुर उळझि, धार मार वाजी धरा ।
सामता सहित आखाडसिध, आच वहै 'अजमाल' रा ।।१८७।।
येक फौज आहुटे, कटै आवटे किताही ।
लटें - चटे लूबटे, रटै ऊपटै रता ही ।।
घाव घटे घूमटे, झीक खागा अवझट्टै ।
खत्रवटे खेलिया, चाव थट्टै कवचट्टै ।।
गट गटे गीध पळ गटकिया, वड़ हू घड चाढ़ै घटे ।
अण घटे वटे ऊभौ 'अजण', परा साहि दळ पालटे ।।१८८।।

जेहा हरी – जैसा का पौत्र । पुळे – भग कर । बजाडै – वजवाये । बम – वाद्य, नगारा । छळि – लिए, युद्ध । धारां – शस्त्रो की धाराओ मे । दाखियौ – कहा । न दरद्द – दर्द नही । ध्रुव जेमि – ध्रुव की भाति, अमर, अटल । धज्जा – वीरो ने । मेळि – मिला कर । गरद्द – मिट्टी मे, भूमि में ।

१८७. फाड़ै – फाडे, विदीर्ण करे । कुंत – वर्छा, भाला । अवभाडै – चोटें मारें, तिरछे प्रहार करें । चुगला रा – मुसलमानो के । चाचरां – माथे । फाचरा – चीरे हुए काष्ठ-खण्ड । फटाणां – फटे हुए, फट गए । ववकि – उमड कर । वार – वाहर । अंतार तार – आतो के तन्तु । चीहुर – केश, वाल । आच – हाथ ।

१८८. आहुटे – युद्ध करे । आवटै – सहार करे, क्रोध करे । कितां ही – कितने ही । लटें घटें – वाहुयुद्ध । लूबटें – गुत्थमगुत्थी । ऊपटै – उछल, वहे । रतांही – रक्त धाराएँ । घटे – शरीर । घूमटे – चक्कर काटे, घूमे । झीक – प्रहार । अवझट्टै – पछाटे । खत्रवटे – क्षत्रियत्व वाले । कवचट्टै – कवच मे आवद्ध । गट गटे – गटगट की ध्वनि के साथ । पळ – मांस । गटकिया – गटकें, खाती हैं । घटे – शस्त्रो के घाट । अणघटे – इस प्रकार, इस घाट से । वटे – मार्ग । ऊभौ – खडा । परा – दूर से ही, उधर का ।

गज फौजां बेहडि, हठी हरवळ बगाळा ।
खग वाहे हौलाळ, खूंदि ढौहिया बढाळा ॥
भड़ा चौळ बबाळ, घटा पूरै कस घावा ।
मुणि 'बीरभद्र' 'मुरारि', 'किसू' 'पीथळळ' कहावा ॥
'साईदास' 'राजसी' 'मानसी', हद्द मरद 'कुसळौ' हठी ।
'क्रनग्रास' 'भाण' बेऊ कहै, कहो बाग लीजै कठी ॥१८९॥

दसहु दिसन दिस नगज, घुरिघ द्रुदभि निसांन घन ।
दसहु दिसन भूझे सुभट, कटत सन्नाह तन ॥
दसहु दिसन ऊचार मार, मारत बीर घन ।
दसहु दिसन ध्वजा पताक, बिचरत फौज बन ॥
धूंधरिय भान दसहू दिसन, दिसहूं दिस किरमर बहै ।
हकीय तुरी ग्रव की दिसन, कहा साहि 'ग्रज्जन' कहै ॥१९०॥

छंद छप्पय ग्रजण बाक्य

ग्राजि छत्र ग्रौरठी, साहि ग्रौरठी स जाणो ।
ग्राजि घरै जोछ, वात ग्राघात बखाणो ॥
केइ जोध कामरा, भूल गज फौजां भाडै ।
मेघ डमर ग्रर छत्र, ग्रवसि पाडै ही पाड़ै ॥
.... , ... ।
'ग्रजमाल' कहै 'मूरारि' हू, खित कारण रण खत्रिया ॥१९१॥

---

१८९. बेहडी – नाश कर। हरवळ बंगाळां – हरावल के मुसलमान योद्धाग्रो को। हौलाळ – तलवार का वार। खूंदि – रोद कर। ढौहिया – उठा दिये, मथ दिए। बढ़ाळां – बढने वाले, बडे योद्धाग्रो को। चौळ बबाळ – मजीठ जैसे लाल। बेऊ – दोनो। बाग – लगाम। कठी – किस तरफ।

१९० नगज – दिशाग्रो के हाथी। घुरिघ – घुर घुर की ग्रावाज हुई। घन – मेघ, गम्भीर। घन – बहुत। धूधरिय – धुधला होकर। किरमर – तलवारें। कीं दिसन – किस दिशा मे।

१९१. ग्रौरठी – ग्रन्य स्थान, दूसरी जगह। जोछ – जोश। ग्राघात – भयकर, ग्राक्रमण। भूळ – गजो की भूल, समूह। मेघडंमर – बडा छत्र। पाड़ै ही पाड़ै – गिरावें ही गिरावें। हू – से। खित – पृथ्वी। कारण – लिए। खत्रियां – क्षत्रियो।

छद दोहा

यम 'वीरभद्र' स ऊचरै, प्रतिवै 'अजण' दुबाह।
कुण निसाण झडा किसा, समझावौ कहि राह ।।१९२।।

छंद भुजगी

जित साह सन्नाह तें सूर सज्जे। जित गजति नाळि गजं-बान गज्जे ।।
जित्त सूधर पख्खर बाज सारे। जित सैद पाठान सेख सेलारे ।।
जित पायक नगीया झळकती। झिल माळ ते तोय क्रना झिलती ।।
जित गूर्जिबरदार ते मीर बदे। जित द्रदभि घोर बाजंत द्रंदे ।।
जित नादरी लाल खधार लख्खं। जित हब्बसी दक्षिणी भाल दख्ख ।।
जित गज मेक रद दख्खिणाव। तस ऊपरा 'लोह सदूक लाव ।।
दिढै गाढ माझीस बैठो दुबाह। सही जाणजै वोह अवरग साह ।।
लिये राम रो नाम अब वाग लीजै। दिढावौ जठी ही तठी ही दाव दीजै ।।१९३।।

छंद छप्पय

जाहनवी जळ पूर, हेक सीसी असि हानै।
पोह कीधौ तति पानि, कवल भड छंटै कानै ।।

---

१९२. प्रतिवै – उसके प्रति, उसके लिए। दुवाह – वीर। कुण – कौन। किसा – कैसा। कहि – कह कर। राह – मार्ग, रुख।

१९३. जितं – जिस ओर। तें – मे, वे। नाळि – तोपें। गज-बान – बन्दूक विशेप। सूधरं – सुन्दर। वाज – घोडे। सारे – सब, खेंचे। सेलारे – भाला धारी। पायक – पदाति। नगीया – नगीनें, नग्न। झळकती – चमकती। क्रना – करणिया, छतरी विशेप। गूर्जिबरदार – गदाधारी। द्रदंभि – दुदुभि वाद्य। नादरी – नादिर शाह के वशज, मुसलमान। खधार – कधार के। भाल – ललाट। दख्ख – दिखते है। मेकरदं – एक दत वाले। दख्खिणाव – दक्षिण से आए हुए, दक्षिण के। तस – उन। लोह संदूक – लोहे का सदूक, लाहे का हौदा। दिढै – दृढ़। गाढ – मजबूत। मांझीस – मुखिया। दुबाह – वीर। वोह – वही, वह। वाग – वल्गा। जठी ही – उसी ओर। तठी ही – उधर ही, वही पर।

१९४. जाहनवी – गगा। जळपूर – जल से परिपूर्ण। हेक – एक। सीसी – शीशे का पात्र। असि हानै – घोडे के जीन के आगे के भाग पर। पौह – राजा। तति – तभी। कवल – कुल्ला। छटै – थूका, फेंका। कानै – तरफ, एक ओर।

दूजा अमल दिढाय, घाय भजण गज घट्टे ।
उलट्टे अजमाल, अरक्क भेदवा अघट्टे ।।
थट थाट सूर पूर थटे, पाथ थाट लागी पटे ।
आळ करि काळ खग ऊभटे, राम राम मुख्खा रटे ।।१९४।।

छंद रसावळो

राम राम रटे, 'अजण' उल्लटे ।
द्रुजण दावटे, झीक खागा झटे ।।
कघवाळा कटे, घाव घूमे घटे ।
छीछ रत्त छटे, फिफराळ फटे ।।
मजि ढाळ मटे, घडा चाढे घटे ।
लोथि लोथि लुटे, गूद गीधा गटे ।।
हुवा चागाहटे, के पडे कुलट्टे ।
उलथ्थे उलट्टे, नृत जाण नट्टे ।।
थाट गौडा थटे, पेलि बहता पटे ।
महा भय मेवटे, अवरग अटे ।।
घाव गज घटे, ... ।।१९५।।

छद छप्पय

घाव कियो गज घटे, असुर ऊलटे अपारा ।
बीर 'अजण' बाकुडे, सार मेळै सिरदारा ।।
पिसण तिता पाडिया, जिता आवध सिर तुट्टा ।
पडियो खेत पहाड, करै गज आवट कुट्टा ।।

दूजा – दूसरी बार, अन्य लोगो को । अमल – अफीम । अरक्क – सूर्य, रवि – मण्डल । पाथ – पथ, अर्जुन । पटे – अधिकार । आळ करि काळ – काल से छेड कर ।

१९५. द्रुजणं – शत्रुओ को । दावटे – दबाये । झीक – प्रहार । छीछ रत्तं – खून के फव्वारे, छीछडे । गूद – मज्जा । गीधां – गृद्ध पक्षी । गटे – निगलें । कुलटे – कुलांचें खाकर, नीच । उलथ्थे – उथल कर । उलट्टे – उलटें, औंधे । नट्टे – नट । मेवटे – मेरवाडा वाले, अजमेर मेरवाडा के अधिपति, गर्व वाले ।

१९६. सार – लोहा । पिसण – शत्रु । तिता – उतने, वहां । जिता – जितने । आवट कुट्टा – सहार, युद्ध ।

क्रामति सूर आलम कहै, छिप किम रहे छिपाइयौ ।
सुरति गात 'अजमाल' रौ, 'औरग' देखण आइयौ ॥१९६॥

पेखि साहि 'अवरग', भडां ग्रत भेख भयानह ।
देव जाणि उदबुद्द, मुणे जक्षि किन्नर मानह ॥
आसि पासि उमराव, पडै पाडिया पचाहर ।
बाहिर बहलायता रहे, नाहर नखि नाहर ॥
रिण भौम सेज 'अजमाळ' रचि, अबर अबर वौडियौ ।
जुति खभ खेत ऊजेणि रै, पैतासा बिचि पौढियौ ॥१९७॥

छंद भुजगी

पडै खेत 'बीरभद्र' भूझि पडै । पडै खेत 'मुरारी' पूरे पमडे ॥
'प्रथीराज' जेऊ 'आसक्रन' पासै । तठै देव दाणव्व आयै तमासै ॥
पडै 'राजसी' 'मानसी' बघ पूरा । सपेड़े 'साईदास' 'कुसळेस' सूरा ॥
पडै 'किसनदास' पातळौत पाट । भड पडै 'स्यामदास' अजमेरि भाट ॥
पडै 'इद्रभाण' 'जगभाण' पाथ । नरापाळ 'नरसिंघ' मारौठ नाथ ॥
पडै 'किसोर्वरि' 'सिरोमणि' वाहिपाणा । अडै भाट तीनू पडे जी अमाणा ॥
पडै 'मलौ' बाघावत 'सोमदत्त' । सुणै बारि'मेघौ' पडे जी समत्त ॥
नौऊ पडै 'मुरारि' रा जोध नीडा । बधै आखता लेयता तकै बीडा ॥
पडै जोध 'अजमाल' रा यता पासै । तठै साहि 'अवरग' आयै तमासै ॥१९८॥

क्रामति – कांति, चमत्कारी । सुरति – सूरत ।

१९७. भेख – भेष । उदबुद्द – अद्भुत । मानह – मानव । आसि पासि – आस पास । पचाहर – सिंह । बहलायत – अत्यधिक वीर, उतावले वीर । नखि – निकट, नाखून । अवर – आकाश । अवर – वस्त्र । जुति – जुड कर । पैतासा – (?)।

१९८. खेत – रणक्षेत्र । पूरे पमडे – प्रसिद्ध वीर, पूरे प्रवाडो वाला । जेऊ – जैसे, जिसके । पासै – पार्श्व मे, पास मे । तठै – वहाँ । दाणव्व– दानव । सपेडै – सगोत्री । पाट – पाट का अधिकारी, सिंहासनाधिकारी । भाट – भट्ट, राव जाति के । पाथ – अर्जुन की तरह, पथ । मारौठ नाथ – मारोठ ठिकाने का स्वामी । वाहि पाणा – हाथो से प्रहार करते । अड़ै – अडकर । अमाणा – मान धनी । वारि मेघौ – बारी जाति का मेघराज । समत्त – समर्थ, वलवान् । नौऊ – नौ, नव । नीडा – पास मे । वधै – आगे वढे । आखता – अधीरतापूर्वक । लेयता – लेते थे । तकै – वे । यता – इतने । पासै – निकट मे, पार्श्व मे । तठै – तहाँ, महाँ ।

छंद पद्धरी

वीभछ बरनन

कहु परै बीर खडह बिहंड। कहु परै सुण्ड दण्डह प्रचंड ॥
कहु परै दत अतह उळझिझ। मसिहार फिरै तिह बार मझिझ ॥
कहु परै रुण्ड मुण्डह भ्रसुण्ड। कहु परै तुग कहु परै झुण्ड ॥
कहु परै लुथ्थि ऊपरि सुलुथ्थि। कहु परै मस कहु परै बुथ्थि ॥
खळकत श्रोण तवि नाळ खाळ। तहा तीर बीर भैरू विताळ ॥
चवसट्ठि तहा भरि पीवै पत्त। सारद्द तड नारद्द नृत्त ॥
तहा लिये ईस सीसह सुभट्ट। किरमार धार धड हूं बिच्छुट्ट ॥
कहु झुकै सूर ऊठै कमध। कहु परै सध कहु परै बध ॥
कहु परै सूर आघाय घाय। कहु परै हाथ कहु परै पाय ॥
कहु परै जिरह पाखर जवान। कहु परै ढाल बरछी कमान ॥
कहु परै सूर सिरदार सार। असि परै कहु परै येसवार ॥
तरफत कहू मछ तुच्छ तोय। कहु परै येक कहु परै दोय ॥
कहु परै बाह गळबाह गथ्थ। कहु परै चक्र कहु परै रथ्थ ॥
कहु परै नेज धज्जह निसान। कहु परै द्रव्य अनगनत जान ॥१९९॥

---

१९९. **बीभछ** – वीभत्स। **खंडह बिहंड** – खण्ड विहण्ड हुए। **सुण्ड दण्डह** – शुण्डा-दण्ड। **अतह** – आँतें, अत्र। **उळझिझ** – उलझ कर। **मसिहार** – मासाहारी। **तिह बार** – उस समय। **मझिझ** – बीच बीच मे। **भ्रसुण्ड** – हाथियो के भ्रशुण्ड। **तुंग**–टुकडी, सिर। **लुथ्थि** – लोथें। **बुथ्थि** – मास की बूथे, मास-पिण्ड। **खळकत** – बहते है, सवेगप्रवाह। **तवि** – कहो। **नाळ खाळ** – नाले-खाले। **तीर** – किनारे। **बीर** – शकर के बावन गण, वीर। **विताळ** – वैताल। **पत्त** – पात्र, खप्पर। **सारद्द** – शारदा, दुर्गा। **ईस** – शकर। **किरमार धार**– तलवार की धारा। **बिछुट्ट** – अलग होकर। **कमध** – कबन्ध, शीश रहित धड। **संध** – अस्थियो के जोड, सधिस्थल। **बंध** – बधन, जोडने वाली हड्डियाँ। **आघाय** – दूर, चक्कर खाए हुए। **घाय** – घायल होकर। **पाय** – पैर। **जिरह** – कवच। **असि** – घोडे। **येसवार** – अश्व सैनिक। **तरफत** – तडफते है। **मछ** – मछली। **तुच्छ** – थोडे। **तोय** – जल। **येक** – एक। **बांह** – भुजदण्ड। **गळबांह** – कण्ठो मे भुजा। **गथ्थ** – डाले हुए। **चक्र** – पहिये। **नेज** – नेजे, रस्से। **धज्जह** – ध्वजाएँ। **निसांन** – निशान, चिन्ह।

छंद छप्पय

साहि खेत सम्हाळि, बीच दस कौस स बड्डुं ।
हुकम हुवौ हिंदू, जळाय मेछन गहौ गड्डुं ।।
सार अग सम्हाळि, जिता घायळा उचावौ ।
केइ डोळिया पालखी, केइ डोळिया बणावौ ।।
केइ धिको गडो बड़ खेत बिचि, जुध भयानक जाणिजै ।
डोळिया झोळिया झूलता, ऊपाड़ै केइ आणिजै ।।२००।।

येमि साहि 'अवरग', सकळ आराण सम्हारै ।
लूटि कूटि लसकरा, बीचि डेरा बिसतारे ।।
सैदाना बाजाडि, जैति हदा जोराई ।
जुद्ध यण हि जाणि जै, दिल्ली फेरसी दोहाई ।।
मुर पहर जूप थइयो मह्रा, अस्त थियो रवि अठियो ।
घायला सूरा सामता घटा, पाटा पीडि परठियो ।।२०१।।

किता घाव सेंकीजै, किता घाव बाधीजै ।
बळे नीब बाधि, किता लापरिया लगीजै ।।
किता कध खोपरी, किता छाती पसवाडां ।
सनमुख मुख केतला, सोभ चा चढ़ै सवाडा ।।

---

२००. **बड्डुं** – बडा, बढे । **मेछन** – म्लेच्छो, मुसलमानो को । **गड्डुं** – गड्ढे मे, दफनाओ । **सार** – तलवार या लोहे के घावो को । **उचावौ** – ऊपर उठा कर सिर पर लो । **डोळिया** – एक किस्म की पालखी । **झोळिया** – कपडे की झोली, जो कमर के बाँध कर बनाई जाती है, झूलो मे ।

२०१. **येमि** – इस प्रकार । **आराण** – युद्ध । **लूटि कूटि** – लूट मार कर । **लसकरा** – सेना, खेमे । **डेरा** – तम्बू विशेष । **सैदाना** – विजय की खुशी के वाद्य । **बाजाडि** – बजवा कर । **जैति हंदा** – विजय के । **जोराई** – प्रबलता के । **फेरसी** – फिरायेंगे, फेरेंगे । **जूप** – जुडा हुआ । **थइयो** – रहा । **अठियो** – खिन्नचित्त हो । **पाटा पीडि** – मरहम पट्टी । **परठियो** – भेजो, प्रारभ करो ।

२०२. **कितां** – कितने ही के । **सेंकीजै** – सेंक किये जाते है । **बळे** – फिर । **नींब** – नीम वृक्ष के पत्तो के रस मे बनी हुई पट्टियां । **लापरियां** – आटे को पानी मे पका कर बनाई गई पुल्टिश । **पसवाडा** – पार्श्व । **केतला** – कितने ही । **सोभ चा** – कीर्तिका । **सवाडा** – सवाये, विशेष ।

येमि करत दिन ऊगीयो, बिसरि प्रात नौबति बजी।
कवि कहे 'महेस' दसमी दिवसि, रात्तम्म ऊड़ी रजी ॥२०२॥

छंद भुजगी

धरा गाहि ऊजेणि 'अवरग' धायौ।
अबै चाल्निवै आगरा सीस आयौ॥
चढै चालियौ 'साहि मुरयाद' चावौ।
दिल्ली तखत रौ राखियौ मने दावौ॥
चला चली जीह बेर सैदां पठाणा।
मारिका भडा हिंदुवे मुसल्लमाणां॥
बळे हूलिया मोहरै मद्द बहता।
खड़े आपणो छावळो हूत खहता॥
फतै पाय मोटी बिन्है साहि फूलै।
हबै कौण आवै हमैं सम्मतूलै॥
सुणै 'साहिजिहान' 'दारा स साह'।
दहू साहि आये नतीठा दुबाह॥
कळह जीति ऊजेणि हू कूच कीधौ।
दिल्ली आगरा ऊपरां दाव दीधौ॥२०३॥

॥ इति श्रीमहेसदास राव कृत ऊजेणि-भारथ संपूरण ॥

बिसरि – शोक सूचक, भयावने। रात्तम – रक्तिम, लाल रग की। रजी – धूलि।
२०३. गाहि – रौंद, युद्ध। धायो – आगे बढा। चावौ – प्रसिद्ध, चाह वाला। दावौ – हक, अधिकार। मारिका – प्रहार करने वाले। हूलिया – चलाये, ढकेले। मोहरै – सबसे आगे। मद्द बहता – मद बहते हाथी। खड़ै – चले। छावळी– छाया। खहता – कसते, टक्कर लेते, रगड खाते। हबै – अब। समतूलै – समतुल्य। नतीठा – उतावले, अधीर बनें। कळह – युद्ध। कूच – प्रस्थान। दाव दीधौ – घात लगाई।

अथ धौलपुर भारथ दुतीय सग्राम लिख्यते

छंद निसांणी

वाका येह ऊजेणि रा आगरेस आया ।
असपति आगळ ऊघडे बद खोलि बचाया ।।
भागा 'जसमत' 'रायसिघ' प्रम हुकम स पाया ।
'अमरसिघ' भागा उभै गणि 'बरसिघ' गाया ।।
क्रुमिया 'कासिमखान' कहि लडंता ललचाया ।
'बेळू' 'परसू' बलखिया कारिमा कहाया ।।
सुज 'देवी' 'सुजाणसिघ' मिळिया मुरझाया ।
'सबळसिघ' 'बळिराम' सा यामोह ऊपाया ।।
जुध 'छत्रमणि' जादम जिसा घड मिळै न घाया ।।१।।

छंद वीजूमाळ

ऊघड़े वाका येह । उजेणि रा अणछेह ।।
'मोहण' 'झूझार' मसंद (मुकद)। रण बे रहे राजिंद ।।
'बीरभद्र' 'कान्ह' बिहद्द । मडि रहे खेत मरद्द ।।
'रतनेस' 'गोवरधन्न' । तिजडेस तूटा तन्न ।।
'दळथभ' 'राघवदेव' । भड रहे पिड़ि अणभेव ।।
'राघवे' 'केसरि सीघ' । सुजड़ां खिरचा त्रसीघ ।।
'सूजाण' 'फतो' सुच ढहिया रणे ढीचाळ ।।

---

१. वाका – घटना, वाकियात । आगळ – आगे, सामने । ऊघडे – प्रकट हुए । प्रम – परम, पवित्र । उभै – दोनो । क्रुमिया – चला गया । बलखिया – व्याकुल हो । कारिमा – कायर । यामोह – व्यामोह । घड़ – सेना । मिळै – मिलते समय, भिडते समय ।

२. अणछेह – अपार । अबीह – अभय । समहरे – युद्ध मे । मसंद – सभवतः राव मुकुन्दसिह । वे – वे । रहे खेत – खेत रहे, युद्ध क्षेत्र मे काम आये । तिजडेस – तलवारो से । तूटा – टूटा, कट गए । तन्न – तन, शरीर । पिडि – युद्ध, पडकर । अणभेव – निर्भय, वीर । सुजडां – तलवारो से । खिरचा – कट कर गिर पडे, टुकडे होकर गिर गये । त्रसींघ – विकट वीर । ढ़हिया – ढह पडे, गिराकर मार दिए । ढींचाळ – हाथी ।

पड़ियौ स 'खा अफितार' । भडां तणौ भूझार ॥
'बीठळौ' रहियो बढ़िढ । चवरग धारां चढ़िढ ॥
'रुकम' 'किसीवर' राड़ि । पाड़े गजां धज पाडि ॥
आघाय घाय असक । ऊपाड़िया अवरक ॥२॥

छंद छप्पय

येता कामि आविया, भिड़े येता भड भागा ।
जाणै 'साहिजिहान', दिली 'दारासाहि' दागा ॥
अवर भीछ कोकिया, अवर मन मता उपाये ।
'दारासाहि' दुबाह, लडण सिर अमर लाये ॥
जुध राव जिसा 'रुसतम जमा', जपि राजा 'सिवपति' जुवा ।
फुरमांण यतां जोधां दिसे, हुवै हुकम सादर हुवा ॥३॥

बूंदी राज बिराज, चाव येहा चहुवाण ।
विढि गयद बावळा, घुरै नौबत्ति निसाण ॥
लाख पटा दीजिये, लाख दीजै कवि लाखां ।
मौज गजा सासणां, सिरै खटतीस स साखा ॥
तिण काज दिली सुरतांण री, अहदी लेबा आइयो ।
येकत चित अत भाव सौं, राव सीस चढि लाइयो ॥४॥

चवरंग – सेना । धारां चढ़िढ – शस्त्र धारा मे चढ कर । राडि – युद्ध । धज – घोडे, वीर । आघाय घाय – घायल करके । अवरक – (?) ।

३. दागा – दाग लगा, धोखा हुआ । अवर – अन्य । भीछ – योद्धा । कोकिया – बुलवाये । दुबाह – वीर, योद्धा । राव – राव पदधारी शत्रुशाल हाडा बूंदी का स्वामी । सिवपति – शिवराम गौड । जुवा – भिन्न, पृथक, दूसरा । फुरमाण – फरमान, आदेश । दिसे – तरफ ।

४. विढ़ि – युद्ध । बावळा – उन्मत्त । घुरै – बजते समय । लाख – लक्ष द्रव्य । सासणां – चारण आदि कवियो को दिये जाने वाले गाँव, शासनिक ग्राम । सिरै, – श्रेष्ठ । खटतीस – छत्तीस, क्षत्रियो के छत्तीस प्रसिद्ध कुल । साखा – शाखाऐं, उपजातियाँ । अहदी – बादशाह का वह सेवक जो किसी राजा या सामत को बुलाने के लिए भेजा जाता था और बुलाने वाले को साथ लेकर आता था । लेवा– लेने के लिए ।

वाचि राव फुरमांण, कियै पायाण रिसांणं ।
धर लंका घूजियौ, निहसि डके नीसाणं ।।
बाधै जूथ बिरूथ, कीट काळा कुदरत्ती ।
दिली मदति दौड़िया, पाण घरी बूदी पत्ती ।।
जळ थळा थळा जळ थबकिया, भूझ बिरद्दा झालिया ।
जाडा विभाड़ दळ जोरवर, हाडा राव यम हालियां ।।५।।

आय राव आगरै, पाव देखै असपत्ती ।
आदर कीध अनत, पूर चाढ़ै परभत्ती ।।
हय गय हीर कटार, तेग झळअम रतन्ना ।
जग मग सोन ज हार, परठि मणी नग्गसु पन्ना ।।
असुरेस राव यम अरछियौ, हुवै त्यार ठढ्ढौ हियौ ।
दियौ सिरपाव बीड़ो दियौ, दिली भार भुज्जां दियौ ।।६।।

छंद भुजंगप्रयात

मिळै सभरी नाथ हाडा अमान । गरू गाहरे मल्ल पूरै गुमांन ।।
जिनै बस धारै बिरुद्द उजारै । बिरद्द जित्तानै सुरक्षा पगारै ।।

---

५. बाँचि – पढ कर । पायांण – प्रमाण, प्रस्थान । रिसाण – क्रुद्ध हो । घर लंका – दक्षिण की धरा तक । निहसि – ध्वनि । नीसांण – नक्कारे । जूथ – समूह । विरूथ – योद्धा, सेना । कीट काळा – श्याम वर्ण, सर्प के बच्चे जैसे, हाथी । कुदरत्ती – स्वभाव से ही । पांण धरि – शक्तिशाली । थबकिया – प्रकट हो गया । भूझ – युद्ध मे, भूझने के । झालियां – लिए हुए । विभाड़ – नाश करने वाले । हालियां – चला ।

६. असपत्ती – अश्वपति, बादशाह । पूर – पूरी, अधिक । परभत्ती – प्रभुता, सम्मान । हीर कटार – हीरो से जडी हुई कटार । तेग – तलवार । झळअम – चमकती । सोन ज – स्वर्ण का । परठि – लगाये हुए भेजकर । नग – नगीने, जवाहिरात । अरछियौ – सम्मानित किया । ठढ्ढौ – बडा । हियौ – हृदय । सिरपाव – सिरोपाव । भार – दायित्व (रक्षा) का भार ।

७. सभरी नाथ – राव शत्रुशाल । नोट :—चौहानो का सांभर क्षेत्र पर बहुत समय तक राज्य रहने के कारण चौहानो के लिए सभरीनाथ जातीय सम्बोधन रूढ हो गया था । गरू गाहरे – गभीर या वडे योद्धा । पगारै – मार्ग, परकोटे ।

अरी राय तारां मयंक सतुल्लं। लुभीराय माथै गजां अक सुल्लं ॥
बळाबध रै पातिसाह बखान। चिर राज बूंदी गढ़ चाहुवान ॥
दळे राय बीजापुर साहि दडा। जग हेम नग्ग लिये गोळकुडा ॥
गढं लिय सो दौलताबाद गाढै। ठभै और दूजै गढं कौन ठाढ़ै ॥
लियं राय नाग गढ बगलाना। टोरे बिद रोहे तुटे तिलंगांना ॥
गुढी भांय ज्यौं राय गढ उडाये। लरै राय दक्षिन ढिल्ली सु लाये ॥
खिचीखंड ज्यौ राय खप्पाय खग्गं। मिळै केइ मारै परै केइ पग्ग ॥
धरै उत्तरं राय खग्गं धपाये। खळं मूगळं कज्जल बाज खाये ॥
मरोरत लक्ख दुवै राह नामी। कहे भारथ कथ्थ कथ्था कहानी ॥
पुणीजै कहालौं 'सता' के पवारे। तित अमर मद्धि ऊदोत तारे ॥७॥

छंद छप्पय

असपत्ति हू मिळी, राव आप डेरा पाधारे।
बड़ौ क्षत्री वट बीज, वळे पतसाह बधारे ॥
हट्ठ राव 'हम्मीर', दळां दूभर राव दारण।
दिली थभ राव दूठ, अवर राव बोट उबारण ॥
हिंदवाण राव खुरसाण हद्द, मडै राव ऊडौ मतो।
राव 'महेस' बाखाण किये, 'सुंदर' राव जेहो 'सतो' ॥८॥

अरी – शत्रु। मंयकं – चन्द्र। अंक सुल्लं – अकुश। बळाबंध – पहाड आंडावाला के कारण बूदी नरेशो को बलावंध कहते हैं। दळे – नाश किया, दबाया। जंगं – युद्ध मे। हेम नग्गं – स्वर्ण और जवाहिरात। गाढ़ै – सुदृढ। ठभै – ठहरे। ठाढ़ै – दृढता पकड कर। नागगढ़ं – नागपुर। टोरे – तोडे, विजय किये। बिदरोहे – बीदर का दुर्ग। गुढी भांय – पतग की भाति। खिचीखड – खीचीवाडा। खप्पाय – नाश कर। खग्गं – तलवार से। मिळै– मिल गए, अधीनता मान गए। मारै – मारे गये। पग्ग – पैरो मे, शरण मे। धपाये – तृप्त की। कज्जळ – हाथी। बाज – घोडे। खाय – नाश किये। दुवै राह – हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्मों के मानने वालो मे। नामी–विख्यात। भारथ्थं – युद्धो की। पुणीजै – कहे जावें। कहालौं – कहाँ तक। सता के – राव शत्रुशाल के। पंवारे – प्रवाडे, कीर्तिगाथाएं। अमर – आकाश। ऊदोत – उदयमान्। तारे – नक्षत्र, सितारे।

८. बडौ क्षत्रीवट बीज – क्षत्रियत्व का अश। वळे – पुन, फिर। बधारे – सम्मान देकर बढा दिया, उत्साह दिलवाया। दूभर – कठिन, प्रवल। दारुण – दारुण, भयकर। दूठ – महान् वीर। बोट – ओट, रक्षक। हद्द – सीमा। ऊडौ मतौ – गहरा विचार।

अथ वचनिका

बखत निमा स्याम का दिवान दिवानी किया।
कुलि लोग हजूरि दरवानो को हुकम दिया॥
चिराको की जलूसि आई सब ठौर रोसनाई हुई।
वडे बडे ठाकुर लोग आये बैठे हैं वडे वडे ठाकुर आवते हैं।

तिनकी ताजीम होती है। पान आगू धरते हैं। और खवास पासवान सब हुदादार आपणे आपणे हुदे लिये खडे हैं। इतने मे मतिवाळै हाथी वेडी झाडि लडे लहसकर मे सौर हुवा। दिवान कह्या सौर किसका। कह्या दिवान के हाथी लडे जिसका। गडदारो चरखीदारो को हुकम हुवा। हाथी ठान लगावो। बधनै सौ बधावो। फिरते हैं निजरि के घोडे। ऊचिश्रवा के से जोडे। लाख-लाख रूपइयो के काज। सिरताजाँ सिरताज। असे हाथी घोड़े ब्रहमण भाट चारणा कौ दीजै तो राव की क्या तारीफ कीजै॥६॥

छंद चामर

बीचि राव तखत विराज ही। सिर छत्र चामर साज ही॥
छत्रीस बस छत्तीस के। अवतार सारस ईस के॥
चावक बिरद्द स चोज के। भड 'रतन' 'दूदा' 'भोज' के॥
भाराथ सिंघ अभग सा। पब्बै 'स आरणि पमग सा॥

---

६. निमा – (?) । दरवानों – द्वारपालो। चिराकों – चिरागो। जलूसि – जलूस। रोसनाई – रोशनी, प्रकाश। तिनकी – उनकी। ताजीम– सम्मानार्थ उठ कर आदर करने को ताजीम कहा जाता है। आगू – सन्मुख। हुदादार – (ओहदेधारी ?)। हुदे – ओहदे। झाडि – तोडी। लहसकर – सेना। गड़दारो – हाथियो को काबू मे करने वाले भालाधारी सैनिक। चरखीदारो – हाथियो को वश मे करने के लिए चर्खी नाम के यन्त्रधारी सेवक। ठान – स्थान। बधनै – रस्से, बंधन से। निजरि के घोडे – खासा घोडे, राजा की सवारी के घोडे। ऊचिश्रवा – उच्चै श्रवा, इन्द्र का घोडा। जोड़े – समान।

१० सारस – सदृश्य, अश वाले। ईस – ईश्वर। चावक – इच्छावान्। चोज – आनन्द, खुशी। भाराथ – युद्ध मे। अभंग – निडर। पब्बै – पहाड। आरणि – अर्णव, समुद्र। पमंग सा – घोडे जैसा।

कवरां स बिरद्द कहावबा। रिव जितै सूर रहावबा ॥
लघु बेस लाज स लोयण। पति जेमि उत्पळ पौयण ॥
ब्रख पच दस सा बूलय। लहु बाणि जिम सादूळय ॥
मोहौक्कमं जेहा 'महोक्कम'। 'नर' 'दूदा' जेहा (नर) ग्रनम ॥
गुमान पूर 'गूमान' रा। ग्रोहट्ठ 'इदरसाल' रा ॥
'जोरार' 'नाहर' जाणियै। फरमाण तेणि पिछाणियै ॥
जगपत्ति गौड उजास रा। दळनाथ 'गोव्यददास' रा ॥
'सिवराम' खैराडा सिरै। कथ ग्राजि रण बिमगो करै ॥
दळ सोड जिता दीवाण रा। पाहडां तोल प्रमाण रा ॥
घोडां भडां घासारये। पेखै गजा नौ पारये ॥
दुंदभि घौस स द्वंद रा। ग्राखाड गाढ स इंद रा ॥
यम दिल्ली मदति ऊससै। केवाण सुरताणा कसै ॥
ग्रागरै मिळिया ऊमरा। खड खड खूम स खूमरा ॥१०॥

छंद छप्पय

येक साह ईरान, येक तुरकान ग्रधारे।
साहि बिन्है घर सधि, कोट काबली करारे ॥

रिव – रवि, सूर्य। **जितै** – जितने, जब तक है। **बेस** – ग्रायु। **लोयणं** – नेत्रो मे। **उत्पल पोयणं** – पुष्पो मे कमल तुल्य, कमल पुष्प। **ब्रख** – वर्ष। **पचदस** – पन्द्रह। **बूलय** – बोला जाता है। **लहुवाणि** – लघु ग्रावाज। **सादूळयं** – शार्दूल जैसे, सिंह सदृश्य। **महोक्कम** – वीर, मोहजित्। **ग्रनम** – बली, उद्दण्ड। **गुमांन पूर** – गर्व से भरे पूरे। **गूमांन** – गुमानसिंह। **ग्रौहट्ठ** – हठीले। **जोरार** – जोरावरसिंह, बलवान्। **नाहर** – नाहरसिंह, सिंह। **तेणि** – उसके। **दळनाथ** – सेनाध्यक्ष, राजा। **खैराडा** – खैराड वालो का। **सिरै** – सिरमौर, प्रमुखिया। **बिमगो** – विपरीत। **सोड** – सुभट, योद्धा। **जिता** – जितने। **दीवाण** – राजा। **घासारये** – सेना। **नौं** – नहीं। **द्वंद** – युद्ध। **ग्राखाड गाढ़** – ग्रखाडे मे दृढ रहने वाले, मल, याद्धा। **इद रा** – इन्द्र के, राजा के। **ऊससै** – जोश मे ग्राये। **केवाण** – तलवार। **सुरताणां** – सुल्तानो, शाहजादे मुराद ग्रौर ग्रौरगजेब के लिए 'सुरताणा' शब्द का प्रयोग किया गया है। **फसै** – बांधे। **ऊमरा** – उमराव। **खूमस खूमरा** – जाति जाति के।

११. **तुरकांन** – तुर्की, टर्की। **ग्रधारे** – ग्राधार, सहायक। **बिन्है** – दोनो।

जहा 'खांन रुसतम', जमान दिल्ली छळि जग्गै ।
कर झालै किरमाळ, भभकि खुरसाण स भग्गै ॥
बगदाद रूम खधार बळि, हूनर वे ओदक हुवै ।
यम पहस बलख अैराक कहि, सू के कौ नर बस हुवै ॥११॥

ले डाक चौकियां, साह फुरमांण स झल्ले ।
अहोराति येकसा, हाथ हाथा केइ हल्ले ॥
तें काबिल पौतिया, दीह सातमे नतीठा ।
खास कलम 'रुसतम, खान' दिल बांचि स दीठा ॥
तिण, माहि येह कथ ऊघडी, बाता हुई बिरग री ।
जोधार 'जसौ' भाजे जुडे, राड़ि फतै 'अवरंग' री ॥१२॥

'ओरगसाहि' 'मुराद', फतै ऊजेणि फबांणी ।
'अजण' कांमि आवियौ, अनै हाडौ 'माधांणी' ॥
हवै कूच आगरै, सीस कीधौ सुलितांणां ।
काजि तेणि कोकियौ, अभग 'रुसतम' अमाणा ॥
स्यायत्त तुरत्त देखै सही, उतकठा घरिया हिया ।
चतुरग सेनि करि चल्लिये, दर कूचा डेरा दिया ॥१३॥

खडियौ 'रुसतम खान', लिये सिफर सेलार ।
सेर पचास स तोल, भीछ राखै भालार ॥

छळि–युद्ध । कर झालैं – हाथ मे लें । किरमाळ – तलवार । भभकि – क्रोध में आकर । खुरसाण – मुसलमान, खुरासान देश । हूनर वे – कला से । ओदक – भय, आतक । के कौं – किन के ।

१२. डाक चौकियां – पत्र, फरमान आदि लेने जाने वाले व्यक्तियो के ठहरने आदि के निश्चित स्थान, । झल्ले – लिये । अहोराति – रात-दिन । हाथ हाथो – दस्त-बदस्त । काबिल – काबुल । पौतिया – पहुँचे । दीह – दिन । नतीठा – व्यग्रता से । कथ – कथन, वृत्तान्त । ऊघड़ी – निकला, पढा गया । बिरग – बिना आनन्द, बिरस । राड़ि – युद्ध मे ।

१३. कोकियौ – बुलवाया । अभंग – अभय । स्यायत्त – साक्षी सहित ।

१४. खड़ियौ – चला । सिफरं – ढाल । भालारं – भाला ।

सिफर सेर दस दोय, सिलह मण येक सवारी।
सत्त सेर समसेर कहै, मुर सेर कटारी ॥
दस सेर टोप अधमण सनाह, रांग सेर दस है रळी।
भड यता सजै ऊभो रहै, कुसम भार लागै कळी ॥१४॥

येक अवलि हलवांन, बिरचि कब्बाब बणावै।
दोय सेर रोगनी, नान रोगन्न गणावै ॥
सेर तीन सुखदास, बहोत प्रति बास सु बासै।
और और नाना, प्रकार खाणा अप्रकासै ॥
पच सै खांन हूता प्रभति, जीमि जिमावै येतलो।
जमदूत 'खान रुसतम' जमा, आप अरोगै जेतलो ॥१५॥

मिळी आयै 'रुसतम खान' आगरै अगंजी।
दिली छळि दईवाण, भिड़ै दसही दिस भजी ॥
पच सहस तोखार, रूढ़ि बाहण पडियाळ॑।
गज पचीस मदगळ, ढुळै तिण ऊपरि ढाल ॥
पैदल अपार खंधार पुणि, कर नग्गो झल्लै किती।
पायक सहस आगळि पुळै, येमि मिळै सो असपती ॥१६॥

वोपै सिर अहदिया, बेबै साहा फुरमाण।
दूजारै सिर दक्खि, 'साहिदारा' नीसाण ॥

सिफर – ढाल। संवारी – सजी हुई। मुर – तीन। अधमण – आधे मन वजन की। सनाह – कवच। राग – जघा के कवच। रळी – अच्छी लगने वाली। कुसम – पुष्प। कळी – कली, पखुडी।

१५. अवलि – अव्वल, प्रथम, अच्छा। हलवांन – ताजा एव कोमल वकरा। बिरचि – काट कर। कब्बाब – कबाब, लोह शलाकाओ पर भुना हुआ मास। रोगनी – स्निग्धता युक्त मास। सुखदास – मांस विशेष । प्रति बास सु बास – सुगधि प्रति सुगधि। खाणां – भोज्य पदार्थ। प्रभति – प्रख्यात, कीर्तिवान्। जिमि – भोजन कर। अरोगै – खाये, जीमें। जेतलो – जितना।

१६. अगंजी – अविजित। भजी – नष्ट की। तोखार – घोडे। रूढ़ि – चढे। बाहण – वाहन। पडियाळ – तलवार। मदगळत – मदगलित। ढुळै – ढलकती हुई, ढुलती। किती – तलवार, कितनी। पुळै – चलें।

१७. वोपै – शोभित हो। अहदियां – अहदी, मुगलकालीन सेवक विशेष। दूजारै – इसके बाद मे, इसके अलावा।

येमाऊ आविया, पासि राजा 'सिवपत्ती'।
बडे वेग बोलिया, बात ये हुई बिभत्ती ॥

फरमांण सुणै नर फूलिया, कूच तणा द्वदभि किया।
गढ राखि गौड़ भड गाढ रा, दिल्ली दिस डेरा दिया ॥१७॥

दियण अदट्टा दाट, पाट अजमेरि उजाळो।
अरी जाड ऊबाड़, बिददड भालिया बहाळो ॥
अनथ्या नाथणो, साहि छळि गौड़ सपांणो।
अबरी घडा स बींद, रूक बाजै जमराणो ॥

कवचट्ट बट्ट भरियो कहर, बिढण आगि बरजागि रै।
आवबा कामि 'बळिराम' उत, वो भड़ आयो आगरै ॥१८॥

छन्द नीसाणी

येहा 'सिवपती' आगरै आया ऊलट्टै।
खत्रवट्टै रिण खेलवा थट थाट स थट्टै ॥
पौहमी लियण असपती घण घाट अघट्टै।
असपती भुवदड अरघिया घोड़ां गजघट्टै ॥
हियौ नयण ठढा हुवा डर द्रोयण फट्टै।
गढ माडू रक्खै गूमर रक्खै रजवट्टै ॥
भाई 'पौहकर' जेहुवा अदभूत अघट्टै।

येमाऊ – उत्साह सहित। विभत्ती – विविध प्रकार, अद्भुत, अनहोनी। फूलिया– विकसित, फूले, प्रसन्न हुए। कूच तणा – प्रस्थान करने का।

१८ अदट्टा दाट – वेकाबू को रोकने वाला। पाट – सिंहासन। अरी – शत्रु की। जाड़ ऊबाड – द्रंष्टाएँ उखाडने का। वहाळो – उतावला। अनथ्या नाथणो– कावू मे न आने वालो को कावू मे लेने वाला। अबरी घडा – विना लडी सेना। बींद – दूल्हा। रूक बाजै – तलवारे चलने पर, युद्ध होते। कवचट्ट बट्ट – जोश व कवच मे आवद्ध। बिढ़ण – लडने को। आगि बरजागि – वज्र की आग।

१९. ऊलट्टै – लौट कर, उमड कर। घण – वहुत से। घाट अघट्टै – दुष्कर प्रयत्न या हुए। अरघिया – पूजे, सम्मान प्रकट किया। गजघट्टै – गज वदन, गज सेना। हियौ नयण – हृदय और नेत्र। उर द्रोयण – शत्रुओ के हृदय। अघट्टै– शरीर वाला।

मोसरां ऊगां मोसरा खग ब्रदा खट्टे।
जर बंट्टे जिण जाचिगां द्रोयण रिण दट्टे ॥१६॥

छंद निराज डंमर

मिळै स गौड़ 'सिव्वराम' धाम नांम ऊधरं।
दिल्ली सथभ द्रोन दाह ध्रमस्याम सूधर ॥
जे राजरिख्ख ध्रमराज सूरता बाखानियै।
दिल्ली दिवांन मध्य आन चित्त मे न आनियै ॥
जे लोह लाठ कध काठ 'साहिजिहा' कौ नवै।
आकास पास भ्रूह जास भ्रगही जही भवै ॥
करूर कट्ठ सूर हट्ठ उभै सीस सै हुवै।
जें तब नास ते प्रकास लख्ख लख्ख कौ खिवै ॥
कहे 'महेस' भुजा केस जेस कीत्ति कीजियै।
गयंद बाज सोन साज पूजिये स दीजियै ॥२०॥

छंद छप्पय

असपत्ति हू भुंज अरंधि, सूर राजा 'सिवपत्ती'।
गौडा पाटि गरीठ, थाट भाजण खळ थत्ती ॥
विकट रूप वैराट, कीध जिण घाट भयकर।
भुज 'पौहकर' भैभीत, सुतण 'गोपाळ' असकर ॥

मोसरां – मूंछे। ऊगां – निकलते। मोसरा – अवसर। ब्रदा खट्टे – विरुद प्राप्त किये। जर बंट्टे – द्रव्य दान किया। जाचिगां – याचेको को। रिण दट्टे – रण मे रोके; कर्ज से मुक्त किए।

२०. धाम नांम – स्थान व नाम का। ऊधरं – उद्धार करने वाला, धारण करने वाला। द्रोन दाह – द्रोहियो को नष्ट करने। राजरिख्ख – राजर्षि। ध्रमराज – धर्मराज, युधिष्ठर। दिवान – सभा। आन – अन्य। लोह लाठ – लोह-स्तभ। कध काठ – कठोर कधे, प्रचण्ड कध। भ्रूह – भ्रकुटि, मस्तक। जास – जिसके। भ्रगही – भृङ्गी; भौंरा। जहीं – जहां पर। भवै – घूमते हैं। कट्ठ – मजबूत, दृढ। तंब नास – अंधकार को नष्ट कर। खिवै – सहते। कीत्ति – कीर्त्ति। सोन – स्वर्ण।

२१. गरीठ – वीर। थाट – समूह, ऐश्वर्य। थत्ती – शक्ति, समूह। घाट – आकृति। भैभीत – निडर, शत्रुओ के लिए भयकारी। असंकर – निर्भय।

तवि भीछ अवर 'सिवपति' तणा, वैण वधे वधि बोलणां ।
घट भगन विधे भनि वडे, ते केहा हस तोलणा ॥२१॥

रहियो नही रुके, मिळेय कर साहि 'मुराद' ।
उरडि मुरडि आवियौ, वरडि दाखै रसवाद ॥
साहि मुर्णे जीवतो, येमि ऊचरै अमान ।
जीवै 'साहिजिहान', तपे तप साहिजिहान ॥
नर विया कध नावै नही, धजावध कांधौ धरै ।
दीप-कल्यानह देखिये, जिसी लाय जोध पूरै ॥२२॥

छद भुजगी

यसौ 'रामसी' रायठोर स रजे । भिडे 'भीम' रावत जसो न भजे ॥
करा 'रामसीग' भजे करारी । मनै वज्जर साहि पव्वैस वारी ॥
जिय 'रामसो' चूक जाणै अचूक । भडा लेत हू मारि कीध सभूक ॥
जिय 'रामसो' रोट वटे जगत्तं । सवै ऊपरा ऊव्वरो जेणि वत्त ॥
लडे 'रामसी' ईडर गढ लीध । कहे तें अगम्म तहा गम्म कीध ॥
जको 'रामसी' 'क्रमसेणे' मु जायो । जिण साहि 'मूराद' रीझै खिजायो ॥
जको 'रामसो' ध्रम स्याम सनाह । वदै राह वेऊ जिण वाह वाह ॥
असो 'रामसी' आगरै चालि आयो । भडा साहि रा काम रा मन भायो ॥२३॥

तवि–कहे । भीछ – योद्धा । तणा – का । वैण – वचन । वधेवधि – बढ बढ कर । बोलणां – बोलने वाले । घट – शरीर । हस – हस, प्राण । तोलणा – तोलने वाले ।

२२. मिळेय कर – मिल कर । उरडि – जोश मे आकर । मुरड़ि – नाराज होकर, मुड कर । वरडि – क्रुद्ध होकर । रसवाद – भेदपूर्ण । जीवतो – जीवित । येमि – इस प्रकार । विया – अन्य को । नावै – नमावे । धजावंध – ध्वजधारी । दीप कल्यानह – (?) । जिसी – जैसी । लाय – प्रचण्ड अग्नि ।

२३. यसो – ऐसा । रजे – शोभा पावे । मनै – मानो । वज्जर – वज्र, इन्द्रायुध । पव्वैस – पहाड़ो पर । अचूक – न चूकने को, अमोघता । सभूक – चूर चूर । रोट वटे – आगतो को भोजन करावे । नोट .—रामसिह अपने यहा आने वालों को रोटियां देता था, इसलिए वह रामसिह रोटला के नाम से प्रसिद्ध हुआ । ऊवरी – वची रही । जेणि – जिसकी । वत्त – वात, प्रसिद्धि । अगम्म – अगमनीय । तहा – वहां । गम्म कीध – गमन किया । जको – वह । जायो – पुत्र । रीझै – प्रसन्न होकर । खिझायो – रुष्ट किया । वदै – कहती है । वेऊ – दोनो । असो – ऐसा । मन भायो – पसन्द आया ।

छंद छप्पय

परम नाम अति प्रेम, धरम सोही स्याम उधारै।
करम बाट कुळ बाट, सरम री यों वप धारै।।
राज रिख ध्रमराज, पाज दिल्ली पतिसाही।
भड़ानाथ भैभीत, कुळे लागै नही काही।।
'भारमल' तणौ मांझी भुजां, लडि रह बाकारि अरि पचै।
भाजियौ सुणे 'जसमत' भड़, 'रूपसिंघ' ऊंडा रचै।।२४।।

रूप नरा मुरधरा, रूप सूरा दातारा।
'रूप' दिली साहि रा, कवलि अवलिया करारा।।
अनड रूप अबखास, पिसण सिंघ रूप सपेखे।
'हणूं' रूप हाथाळ, दिली पति राम सदेखे।।
जस रूप जेणि भरियौ जगत, तिजड़ रूप चपळा तणे।
भाजियौ सुणे 'जसवत' भड, 'रूप' रूप चढियौ रणे।।२५।।

अथ भीवजी बीठळदासोत गौड़ में

छंद पद्धरी

अजमेरि धरा आदीत ऊगि। पयनिधी परां परकास पूगि।।
'भीमाळ' बस उजवाळ भूप। धर खळा तेज परजाळ धूप।।

---

२४. परम – परमेश्वर। करम बाट कुळ बाट – कर्त्तव्य और वश का परम्परागत मार्ग। वप – वपु, शरीर। काही – कलक, लाछन। बाकारि – ललकार कर। अरि – शत्रु। ऊंडा रचै – गहरा विचार करे।

२५. मुरधरा – मरुधरा, मारवाड। कवलि – कौल, वचन। अवलिया – उदार, प्रथम दर्जे के। अनड़ रूप – गिरिस्वरूप, पर्वतकाय। पिसण – रिपु। सपेखे – देखते है। हणू – हनुमान। हाथाळ – भुजाओ वाला। दिली पती – बादशाह। जस रूप – यश रूप। जेणि – जो, जिसके। भरियौ – भरा है, छाया है। तिजड – तलवार। चपळा – विजली। तणै – के।

२६. आदीत – आदित्य, सूर्य। पयनिधी परां – समुद्र के उस पार तक। पूगि – पहुंचा। भीमाळ – भीमसिह। परजाळ – जला कर। धूप – तलवार।

सोयणा सोज चदह सुभाव। रजवट्ट वट्ट अजमेर राव ॥
रिख ब्रंमराज रिख गौड़ राज। परमाण हद्द हिंदवाण पाज ॥
'गोपालमल्ल' दादौ गरीठ। पूरक प्रमाडा पीठ पीठ ॥
ता तणै पाटि 'भीमह' असीग। रजवाट रखण कुळवाट रीग ॥
अडवडत जोस आभै अधार। जुध लाख दळां जीतण ज-वार ॥
खय लाख दळां भाजण खडग्गि। असपती दळा सिणगार अग्गि ॥
असपती दळा आगळि अमोड। गैंढल्लमल्ल गैंढल्ल गौड़ ॥
हींसल्ल मल्ल बाहणों हाथ। अंनडा नडा ऊनथां नाथ ॥
गजीव धरण जेहा अगज। सायक्क जोध पायक्क सज ॥
'भीम' जिम 'भीम' गयदा भ्रमाड। कळहणे भीछ भीछा किमाड ॥
अगद्द पाव मांडण अबीह। धूवळां तणै सिर बगा धीह ॥
वीर जिम वीर जुजिस्ट वाच। ऊपाड पहाडा जड़ा आच ॥
बाकुडा भडा बळ काढ वढ्ढ। गढ़ रखण बिभाडणहार गढ्ढ ॥
त्रासिया भडा तरसीघ वाक। छड़ियाळ भडां ऊतार छाक ॥
त्यागिया राय जस तिल्ल तेह। मौजिया राय तेरहो मेह ॥२६॥

सोयणां – सज्जनो। **सोज** – वह। **रजवट्ट वट्ट** – क्षत्रियत्व के मार्ग, क्षत्रियत्व के बल। **गरीठ** – वीर। **पूरक** – पूर्ण। **पीठ पीठ** – पूर्वजो के पिछले। **ता तणै** – उसके। **पाट** – सिंहासन। **असीग** – वीर। **रीग** – वैभव की ऋद्धि। **अड़वड़त** – धक्कमधक्का, भिडते है। **आभै** – आकाश। **ज-वार** – उस समय मे। **खय** – विनाश, क्षय। **खडग्गि** – तलवार से। **अग्गि** – आगे। **आगळि** – अर्गला, अगाडी। **अमोड** – न मोडा जाने वाला, अडिग। **गैंढल्ल मल्ल**– हाथियो के रक्षक या गिरने वाले वीर। **हींसल्ल मल्ल** – घोडे के समान तीव्र गति से आक्रमणकर्त्ता। **बाहणो** – चलाने वाला। **अंनडां नड़ा** – नही झुकने वालो को झुकाने वाला। **ऊनथां नाथ** – स्वच्छदो को अधिकार मे लेने वाला। **गंजीव धरण** – अर्जुन। **जेहा** – जैसा। **अगज** – अविजयी। **सायक्क** – बाण। **पायक्क संज** – सजे हुए पदाति। **गयदा** – हाथियो को। **भ्रमाड** – फिरा कर फेंकने वाला। **कळहणे** – युद्ध मे। **भीछां** – योद्धाओ। **किमाड** – किवाड। **मांडण** – रोपने, स्थिर करने। **अबीह** – निर्भीक। **धूवळा** – तोपें। **बगा** – बजने, लगने। **धीह** – ध्वनि। **जुजिस्ट** – युधिष्ठिर। **वाच** – वाणी का। **जड़ा** – मूल। **आच** – हाथ। **बळ काढ़ बढ्ढ** – बढ कर ऐंठ निकालने वाला, गर्व को नष्ट करने वाला। **बिभाडणहार गढ्ढ** – दुर्गों को ध्वस्त करने वाला। **त्रासियां** – डरे हुए, काट दिए। **तरसींघ** – वीर। **वांक** – बांकुरा, टेढापन रखने वालो को। **छडियाळ** – भालेधारी। **छाक** – मद, गर्व। **त्यागियां** – दातारो। **जस तिल्ल** – यशरूपी तिलक। **तेह** – वह। **मेह** – मेघ।

वचनिका

मोसाळ की तरफ मेडता ददसाळ की तरफ अजमेर ।
नानां 'गोपाळदास' दादा 'गिरमेर' ।।
बेऊ पखा राजहस बेऊ पखां बिरदैत ।
बेऊ पख गैमर गुडै बेऊ पख बानैत ।।
अजमेरि का आभरण अजमेरि के पाट ।
अजमेरि के दुसमनों के दाट ।।
अजमेरि के मेर के राखणहार ।
वैर - बराह बिरदों का भारा ।।
जेतै पवाड़े दीजै, जेतै पवाड़े बणै ।
यो यारो मा पूत जणै तो अैसा जणै ।।२७।।

दवावैत

हठ का हमीर । ओहठ माल । भावतां के भावता । अणभावता के नाटसाल । सत का समूह । ध्रम की पाज । गदाई का कल्पितरु । जोग की जिहाज । तेज का सूरिज । मूरति का मैण । दुसमनो के दावानळ । सैणो का सैण । दिल का दरियाव । दरियावो सा गहर । दरियावो का फेर । दरियावो की लहर ।।२८।।

---

२७. मोसाळ – ननिहाल । ददसाळ – पितामह के वश के पक्ष मे । गिरमेर – गोपालदास गौड । बेऊ पखा – दोनो पक्षो । राजहंस – उज्ज्वल । गैमर – हाथी । बानैत – वीरता सूचक चिन्ह धारण करने वाले । आभरण – आभूषण । पाट – सिंहासन पर । दाट – रोक, बंधन । मेर – मर्यादा, सीमा । वैर-बराह – वैर लेने वाले । बिरदों का भारा – विरुदो का समूह । जेतै – जितने । पवाडे– कीर्ति कथा । जणै – उत्पन्न करे, जन्म दे । अैसा – ऐसा ।

२८ हठ का हमीर – राव हमीर जैसा हठीला । भावता के भावता – चाहने वालो को चाहने वाला । अणभावतां – न चाहने वालो । नाटसाल – नाटशल्य, योद्धा । सत – सत्य, शौर्य । गदाई – राजसिंहासन का वैभव । जोग – योग । मूरति – मूर्त्ति, सूरत । मैण – कामदेव । सैणों – सयानो, मित्रो । गहर – गहरा, गभीर । फेर – घुमाव, चक्र ।

छंद पद्धरी

चित येह बिहू बळ चमर ढाळ । भळहळै दिवाकर जेमि भाल ।।
सिंघासण आसण बणै सोज । जगमगै बदन जाणै सरोज ।।
छत्तीस बस ओळगै छात । पह पढै जिता बिरदाव पात ।।
बिरदाव जिता वोपै अबीह । समहरे जाणि पखहरे सीह ।।
सतबाद जुजिस्टर जेमि सोय । हठवार जाणि जरजोध होय ।।
गगैव जेम अणभेव ग्यान । सरणाय राय राखण स मान ।।
सक-बध तियागी करण सम्म । पर दुख्ख काजण जिमि बिक्रम्म ।।
भेदगर विद्या जेमि भोज । चाढिया पैंज प्रसराम चोज ।।
सग्राम राय जगहथ्थ सूर । गहवत भडा भाजण गरूर ।।
भागिया राय जुध जेत-खभ । थिर रखण गवड पतिसाहि थभ ।।
सूरपण अनै खत्रवाट सीव । भुजां येता बिरद बणै 'भीव' ।।
आगरै थाट मिळिया उपाट । बीथिया मद्धि लहजे न बाट ।।
घाघरट गजा घोडा घमस । धम धमे धरा रथ्था धमस ।।
गहमह दिवाण सुरताण गाढ । बीजळा झेरि खरसाण बाढ ।।

---

२६. **चमर ढाळ** – चँवर ढुलाने वाला । **भळहळै** – चमके । **दिवाकर** – सूर्य । **जेमि** – जैसे । **भाल** – ललाट । **आसण** – आसन । **सोज** – वह । **बदन** – मुख । **जाणै** – मानो । **जगमगै** – चमकता है । **सरोज** – कमल । **ओळगै** – याद करें, पहिचानें, सेवा करें । **छात** – राजा, क्षत्रिय । **पह** – राजा । **जिता** – जितने । **पात** – कवि । **वोपै** – शोभा पावे । **अबीह** – निडर । **समहरे** – युद्ध मे । **पखहरे** – कवचादि सज्जित । **सतबाद** – सत्यवादी । **सोय** – वह । **जरजोध** – दुर्योधन । **गगैव** – गगा पुत्र, भीष्म । **अणभेव ग्यान** – प्रत्युत्पन्नज्ञानी, निर्भय ज्ञानी । **सरणाय** – शरणागत । **स मान** – मान सहित । **सकबध** – योद्धा, कीर्त्ति-स्थापित करने वाला । **करण** – कर्ण दानवीर कर्ण । **सम्म** – समान । **काजण** – लिए । **बिक्रम्म** – विक्रम, विक्रमादित्य । **भेदगर** – भेद या रहस्य का ज्ञाता । **पैंज** – प्रण, प्रतिज्ञा, सीमा । **चोज** – आनन्द, उत्साह । **सग्राम** – युद्ध । **जगहथ्थ** – सूर्य, ससार पर हाथ रखने वाला । **गहवत** – गर्वीले । **गरूर** – गर्व । **जैतखभ** – विजय-स्तम्भ । **सींव** – सीमा, हद । **येता** – इतने । **बर्ण** – बने, धारण किये हुए । **थाट** – समूह, सेना । **मिळिया** – मिले । **उपाट** – उन्मूलन करने वाले । **बीथिया** – वीथिकाओ, गलियो । **बाट** – मार्ग । **घाघरट** – युद्ध । **घमंस** – समूह । **धम धमे** – धम धम की ध्वनि । **धमंस** – ध्वनि । **गहमह** – भीड, अधिकता । **दिवाण** – राजा । **बीजळा** – तलवारों । **झेरि** – गिरा कर । **खरसांण बाढ** – खरशान पर धार लगाई हुई, शानचक्र पर धार दी हुई ।

सावळा अणी सायक सळक्क। भळहळै जमदाढा भळक्क ॥
तेरवा आघ बढिया तयार। बड राव बुलावै बार बार ॥
'सत्रसाल' राव जमराव सोज। भारत्थ स्वारथो बियो 'भोज' ॥
'रुसतम खान' जेहा रवद्द। हिंदवाण अनै खुरसाण हद्द ॥
'सिवराम' जिसा राजा सधीर। 'बळिराम' तणौ बीराधि-बीर ॥
'रूपसी' जिसा जोधाण राव। घातणौं घडा तेवडा घाव ॥
'भीवडो' जिसौ पडूरौ भीव। सात्रवा गढा ऊपाड सीव ॥
'पौहकरो' जिसौ सूरति पहाड। बेछाड खळा कधा ऊबाड ॥
राठौड 'रामसो' सा अरोड। ठिलि ठाठ काट दे ठौड ठौड ॥
'भाराथसी' कवरा भयक। यळ तणा कवरा सीस अक ॥
'सत्रसाल' तणौ अवतार सूर। गहवत तिको भरियो गरूर ॥
'मोहकम्मसिंघ' रण धींग मल्ल। 'सत्रसाल' भुजा अरि सालसल्ल ॥
'गूमानसीघ' अम्मान गाढ। डाकियौ सीह जिम लोह दाढ ॥
'जोरार' भुजा अणपार जोर। घट फाटि पडै सुणि बीर घोर ॥
'केसरीसीघ' जेहा कमध। बाधणो तिको ऊबध बध ॥
सैदा स नूर 'नाहर' स सैद। कुळ आप तणौ आणै न कैद ॥

सावळां – भालो की। अणी – नोक। सायक – बाण। सळक्क – चमक कर। जमदाढां – कटारिया। भळक्क – चमक। तेरवां – बुला कर लाने वालो। आघ – सम्मान। सोज – वह। भारत्थ – युद्ध। स्वारथी – स्वार्थी, लोभी। बियो – दूसरा। रवद्द – मुसलमान। हिंदवाण – हिन्दू। खुरसांण – मुसलमान। घातणौं – चोट करने वाला, प्रहार करने वाला। घड़ां – सेना। तेवडां – तिगुना। भींवड़ो – भीमसिंह। पंडू रौ – राजा पण्डु का। सात्रवा – शत्रुओ। ऊपाड – उखाड। सींव – सीमा, नीव। सूरति – आकृति। बेछाड– विकट। खळां – शत्रुओ के। ऊबाड – उखाडने वाला। अरोड – जबरदस्त। ठिलि – ठेलकर, लुढका कर। ठाठ – शान-शौकत। काट दे – नष्ट कर दे। ठौड़ ठौड – स्थान-स्थान। भयक – भयानक, वीर। यळ तणा – पृथ्वी के तमाम राजकुमारो का। सीस अंक – सिरोमणि। धींग मल्ल – महान् योद्धा। भुजा – भाई, सहायक। अरि – दुश्मन। साल सल्ल – चुभने वाला कांटा। गाढ़ – दृढ। जोर – बल। घट फाटि – शरीर टुकडे होकर। कमध – राठौड। बांधणो – बांधने वाला। तिकौ – वह। ऊबध बध – निर्बन्धो को बन्धन मे। स – का, सहित। नूर – कान्ति, शोभा। आप तणौ – अपने का। आणै – लाने देता, जाने देता। कैद – कारागृह।

खगवध जोध 'अलियार खान'। जुध 'रहमतुला' जेहवा जवांन ।।
'सत्रसाल' अनै 'महासिंघ' साथ। हाथिया नरूके वहण हाथ ।।
'अखैराज' तणा अका उजाळ। 'चद्रभाण' हरा माझी सचाळ ।।
'नरपाळ' जिसा चहुवांण नीर। सांचोर बळै चाढण सधीर ।।
'रिणछोडि' जिसा राठौड राडि। धूहळा वगा धाडि जी धाडि ।।
'सूजाणसीघ' अवसाण-सिद्ध। आज रौ जोध वाधै उदद्ध ।।
जहा 'नाथ' हरी जुध पाथ जेमि। कुळ अटळ वीर सो टळै केमि ।।
भैरवी जके झापा भरन्त। आराणि करै अत रै अत ।।
सुज 'राम' कुंवर 'कीरत्तिसीघ'। राखिया वस कूरम्म रीध ।।
त्या तणै मौहर 'कुसळो' कठीर। सामत सूर रिण धीर धीर ।।
कुसळैस तणो 'कनको' कुमार। अणवरी घडा वरवा उदार ।।
खूरेस ईस 'दाऊद खान'। पयनिधी जिसौ करि जाय पान ।।
'नरपाळ' जिसा भाखरां नाह। सुज जेमि वदै भुज पातिसाह ।।
असपती विदा कीधा सऊह। सिरदार माझि 'दारासकूह' ।।
घुरि घोर त्रम्ब ऐहास घट्टि। फण सहस धरा आकास फट्टि ।।
हाथिया तणा हलका हलत। ढुळि ढाल अनै नेजा ढलत ।।
ठकार वीर घटा ठमक। घम घमे सिरी पाखर घमक ।।

खगबंध – खड्गधारी। **जेहवा** – जैसा। **अका उजाळ** – अक्षरो को उज्ज्वल करने वाले, भाग्य को उज्ज्वल करने वाले। **नीर** – कान्ति, आव। **बळै** – फिर से। **जिसा** – जैसा। **राडि** – लडाई, युद्ध। **धूहळा बगा** – तोपें चलने पर। **धाडि जी धाड़ि** – धन्य है, धन्य है। **अवसाण सिद्ध** – अवसर सिद्ध, युद्ध निपुण। **आजरौ** – युद्ध का, आज का। **उदद्ध** – समुद्र। **पाथ** – अर्जुन। **जेमि** – जैसे। **टळै** – चूके, किनारा काटे। **केमि** – कैसे। **भैरवी जके झापा भरन्त** – भैरव झाप लेते है। **आराणि** – सग्राम मे। **अंत रै अंत** – मृत्यु पर्यन्त। **कूरम्म** – कूर्म, कछवाहा। **रीध** – ऋद्धि, प्रसिद्धि। **त्या तणै** – उनके। **मौहर** – अगाडी। **कंठीर** – सिंह। **अणवरी** – बिना लडी, अविवाहित। **घडा** – सेना। **वरवा** – वरने के लिए। **खूरेस ईस** – कुरेशियो का स्वामी या मुखिया। **पयनिधी** – सागर। **जिसौ** – जैसा। **सुज** – उसके। **वदै** – कहे, सराहना करे। **सऊह** – सब। **त्रम्ब** – नगारे। **ऐहास** – ऐसे। **घट्टि** – घाट के, आकृति के। **फण सहस** – शेषनाग का फन। **हलका** – समूह। **नोट** :—सेना मे एक सौ हाथियो का समूह एक हलका कहलाता था। **हलंत** – चलते। **ढुळि** – लुढक कर। **नेजा** – पताका, भाले। **ठकार** – टकार, ध्वनि। **वीर घटा** – वीर घटो की। **ठंमक** – आवाज। **सिरी** – हाथियो का सिरोभूषण, श्री। **घमक** – घम घम की अवाज।

बेडिया केई लग्गं पबेडि। तावरां लगरां बधै सतेडि ॥
चम्मरा लगै लगै श्रोतरा चग। गिरि स्याम हूत किरि झरै गग ॥
हैरखां तणा झकार हद्द। बेलाल डाण भरता बिहद्द ॥
भळकता सैल ऐहैं सुभाय। तारुबी तेज झळकत लाय ॥
तूगा लडग बारूद तत्थ। साबग रग बाणी सुसत्थ ॥
गाडिया झरणक ध्राण गाज। सुत्रनाळि नाळि लाखां समाज ॥
चवि नाळि रथा तोपा चलत। हाथिया ठेलि बेला हलत ॥
जे खड़े सहस कइ सहा जौडि। कन्नडां खड़े पायक करोड़ि ॥
बेपार खडे गुरजा-ग्रदार। सूडिया ग्रसूडां मडे सार ॥
नारगी हरे पीळे नीसाण। सुरग स्याम नीले सुभान ॥
रग येक दुरगे तीन रग। वोपिया चाप पावस्स ग्रग ॥
चौरग केई पचरग चित्र। जे जत्र इस्ट मे जत्र जत्र ॥
खट रग सात रगह खरूड। फाबिया गजा ऊपरि फरूड ॥
बारा ग्रपार ग्रणपार बाण। मूराड जेमि बहता मुसाण ॥
धौळपुर राडि मडण उधाम। माडिया तटं चावळि मुकाम ॥२६॥

बेड़िया – हाथियो को रोकने या बाँधने की लोह शृ खलाग्रो की बेडिया। **पबेड़ि** – बेडी के ऊपर ग्रौर बेडी, पर-बेडी। **तावरां** – तेज स्वभाव के, क्रोधी। **लगरां** – बेडी विशेष, ग्राभूषण। **सतेड़ि** – सावधानीपूर्वक बुला कर। **श्रोतरां** – कानो के। **चग** – पताकाएँ। **किरि** – मानो। **झरै** – गिरती हो। **गग** – गंगा। **हैरखा** – पाखर, घोडो पर चलने वाले ध्वज। **बेलाल** – वलाल, घोडे का जाति। **डाण भरता** – चाल विशेष से चलते हुए। **सैल** – भाले, ग्रकुश। **ऐहै** – ऐसे। **सुभाय** – शोभित होते, स्वभाव से। **तारुबी** – धातु के वध। **लाय** – दावाग्नि। **तूगां** – बारूद रखने के पात्र, टुकडी, सेना। **लडग** – पक्तिबद्ध समूह। **तत्थ** – वहाँ। **साबग** – चित कबरे। **सुसत्थ** – सहित। **झरणक** – ग्रावाज। **ध्राण** – नासिका। **ठेलि** – धकेल कर। **बेला** – युग्म, जोड़े। **सहा-जौडि** – एक साथ जोते हुए। **गुरजां-ग्रदार** – गुर्जधारी। **सुंडिया** – शूण्डें। **ग्रसुडा** – माथे पर। **मडे** – बधे हुए। **सार** – लोह, शस्त्र। **नीसांण** – निशान, पताकाएँ। **दुरगे** – द्विरग के। **चाप** – धनुष, इन्द्र धनुष। **पावस्स** – वर्षाकाल। **चौरंग** – चार रग के। **जत्र इस्ट** – इष्ट या ग्राराध्य की सानुकूलता के लिए बने हुए यत्र। **खरूड** – घोडे, सेना। **फरूंड** – झण्डे। **बारा** – भारा, समूह। **मूराड़** – जलता हुग्रा पुग्राल। **बहता** – चलते हुए। **मुसाण** – श्मशान। **माडिया** – कायम किये। **तटं** – किनारे। **चावळि** – चम्बल नद।

छंद छप्पय

मंडिया तट चामळि, मुकाम साह 'दारासकोह' ।
सो दूजै पतिसाहि, जपै तिण तात स जकोह ।।
एक लक्ष असवार, सुणै सत्तरि सहसाणां ।
नौ हजार भर नाग, मिळे कज्जळ वन मांणा ।।
रथनाळि अनै सुत्रा अखभ, पैदल पार न पाइयो ।
'अवरग' सीसि 'दारासकोह', येता दळ सो आइया ।।३०।।

येता दळ अणपारि, दीध चामळि सिर डेरा ।
तोजी गजा तुरग, फवै करि सागर फेरा ।।
प्राति राड़ि परठवा, आजि आरंभ अरभे ।
सिलहदार कोठार, सिलह कढवाय असभे ।।
पड़ि ढेर टोप बखतर पखर, भाखर आकर सांभळे ।
काम रा भडा डेरा किता, बाटि वाटि दीजै वळे ।।३१।।

पडि पाखर हैमरां, जडै सिलहांण जवाणा ।
चढै ढाळ गैमरा, अडै भूजा असमाणा ।।
'औरग' साहि 'मुराद', 'साहि दारा' सगराम ।
रवि ऊगते रचै, ठौक ये ठाम स ठाम ।।

---

३०. दूजै – दूसरा । जपै – कहा जाता है । तिण – उसको । तात – पिता । जकोह – जिसको, उसको । सहसाणां – सहस्र । नाग – हाथी । कज्जळ-घन– कदली वन । मांणा – मे के, वाले । रथनाळि – रथो पर ढोई जाने वाली तोपें । अखभ – बैल । सीसि – सिर, पर । येता – इतने । दळ सो – सेना से । आइया – आया ।

३१. दीध – दिया । डेरा – पडाव । तोजी – घनुष, एक विशेष जाति के घोडे । परठवा – रचने, करने । आरंभ आरभे – बडा कार्य प्रारम्भ किया । कोठार – भण्डार । कढ़वाय – निकलवा कर । असभे – अपार । ढेर – समूह । भाखर – पर्वत । आकर – आकृति, समूह । डेरां – तम्बुओ मे । किता – कितने ही । दीजै – दिये । वळे – फिर ।

३२. हैमरा – घोड़ो के । जडै – बांधे । सिलहाण – सिलह । ढाळ – बैठा कर, ढाल । गैमरा – हाथियो के । अड़ै – छूती, स्पर्श करती । सगरामं – सग्राम, युद्ध । ऊगते – उगते, प्रात काल होते । रचैं – करे । ठाम स ठाम – स्थान-स्थान पर ।

मडि रहे पहर यक मोरछा, कळह व्योम टीकम हुई।
दसयेक घडी चढतैं दिवस, दळां साहि चढ़िया दुई ॥३२॥

बीर सनाहां बधि, धीर बधे रजपूतां।
बाधि चाळ बाजिबा, राडि बधि मजबूतां ॥
नद्द सिंधु नीहाव, भाव बीरा रस बीरां।
भवण चहू भैचक्क, ऊवर अवदक्क अधीरा ॥
'सत्रसाल' आदि हिंदू अवर, 'रुसतमखा' आधे खद ॥
तोखार अग तगां तणै, बणै सनाहा हद बिहद ॥३३॥

अति ही हित 'सिवराम', मत मडियो ऊमडे।
छड सिंगार परठियो, सिलह सामता छडे ॥
कपडदार कोठयार, वेगि तिण बार बुलाये।
महगा बहो-मोल रा, बडा उमराव बटाये ॥
सिरपाव लिया सिर चाढि कै, धनि राजा रजपूत धनि।
प्रहर तें बदन नित पहरता, दसरावा हदे स दनि ॥३४॥

कळह – युद्ध। व्योम – आकाश। टीकम – दौड, आक्रमण। दसयेक – ग्यारह। दुई – दोनो, एक ओर औरगजेब व मुराद और दूसरी तरफ दाराशिकोह।

३३. बाधि चाळ – चाल बांध, वस्त्रो के छोर बांध, पक्ति बद्ध होकर। बाजिवा – लडने के लिए। राड़ि – सग्राम। मजबूता – दृढ़ता से। नद्द सिंधु – सिंधु नाद नीहाव – घोष। भवण चहूं – चारो ओर, चारो दिशाओ मे। भैचक्क – भय से चकित, भयभीत। ऊवर – हृदय। अवदक्क – भय, आतक। अधीरां – अधीरता-वालो, कायरो। आधे – अर्द्ध। खद – मुसलमान। तोखार – घोडो के। तगा – जीन के कसने, तस्मे। तणै – खीचे। बणै – सजे, पहिने।

३४. मत – विचार। मंडियो – किया। ऊमडे – उमड कर, जोश मे आ कर। छड – छोड, त्याग। कपड़दार – वस्त्र भण्डार के अधिकारी को। वेगि – शीघ्र। तिण बार – उस समय। बहो मोल रा – बहुमूल्य के। चाढि कै – चढा कर। बदन – शरीर। दसरावा – दशहरा, विजयादशमी। हदे – के। दनि – दिन।

छंद भुजंगी

जरू साहिजादा स चढै जवांन ।
महा जोध चढै अमान अमान ।।
खरे खेस गीखूं खुमान खुमानं ।
चढ़ै चाहुवान चढ़ै चाहुवान ।।
गरूर गरूरं चढै गौर गौरं ।
रुरे रायठौर रुरे रायठौरं ।।
कहे कूरम्म वस केते स केते ।
जुरे बस सीसोद जेते स जेते ।।
बड़े बस सूरिज्ज यो चद्रबसी ।
सबै सूर चढै अससी अससी ।।
अनै दीन के दीन चढै स केते ।
सबै काफरं वस चढै स जेते ।।३५।।

छंद छप्पय

बजे बीर बाजि, सजे सेना सुलताणी ।
गजे भद्द गैमरा, भजे कायर मुखपाणी ।।
बजि रजे रवी बब, अब झळहळे सऊह ।
अधोफर अपच्छरा, सूर मिळिया स समूह ।।
पाखरा रोळ वगतर पसर, होय कळळ कळ हूकळां ।
बळ बळा सूर चढिया बहसि, दीठाळा दहुवे दळां ।।३६।।

---

३५. जरू – मजबूत, जब । अमानं अमानं – मानधनी, असख्य । खरे खेस – युद्ध मे दृढता धारण करने वाले । गरूर गरूर – अत्यधिक गरूर वाले । गौर – गौड । रुरे – सुदर, अच्छे, कुलीन । केते स केते – कितने ही । जुरे – जुडे । जेते स जेते – जितने थे उतने सारे । अससी – निर्भय, अशक । अनै – अन्य । दीन – धर्म । काफरं – मुसलमान । जेते – जितने थे ।

३६. वाजि – वाद्य । भद्द गैमरा – मस्त हाथी । मुखपाणी – मुख की कान्ति । रजे – धूलि । रवी वब – रवि बिम्ब । अंब – आकाश, बादल । सऊह – समग्र । अधोफर – आकाश और पृथ्वी के मध्य, आधे ऊपर । रोळ – ध्वनि । पसर – फैल कर । कळळ कळ हूकळा – युद्ध का कोलाहल । बळ बळा – क्रमश । बहसि – जोश मे आकर । दीठाळा – देखने योग्य, दिखाई दिये ।

छंद किलकिला

मिळि दीठि दीठि दहू दळां मद्धि ।
उलट्टिय फट्टिय सात उदधि ॥
निघस्सिय खोड़ हजार सुनद्ध ।
सुणै मुर-लोक मही पड़ि सद्द ॥
भन्नकिय सद्द नफेरिन भेरि ।
रुन्नकिय डडन की बजि भेरि ॥
धुन्नै सिर सेस गिरां सिर धूजि ।
हयख्खुर खेह बिभाकर बूजि ॥
करी जिन नाळि करी जिन कोर ।
घटा घहरी जनुं चारोहि ओर ॥
छटा जिम पावक बान छुटन्त ।
तहा धनु ते मनौं बान छुटन्त ॥
तिती बड़ तोप लगी अररान ।
परयौ मनौं वज्र फटयौ असमान ॥
उडी अनपार अराबनि आगि ।
जगी जमगी स जबूरनि जागि ॥
मनौ गुरमन्त्र दियौ सत आनि ।
.. . . ॥
गरू गुन गोळ रही गुननाय ।
परै गज कुम्भ दरी परि जाय ॥

---

३७. उलट्टिय – उमड कर। फट्टिय – फूट कर। उदधि – समुद्र। निघस्सिय – ध्वनि होकर। खोड़ हजार – सोलह हजार। सुनद्ध – नदियां, सुनाद। मुर लोक – तीनो लोक। मही – पृथ्वी। सद्द – आवाज, शब्द। भन्नकिय – भनन की ध्वनि। नफेरिन – नफीरी, वाद्य। भेरि – भेरी वाद्य, । रुन्नकिय – ध्वनि कर। भेरि – चौकडी, अनवरत प्रहार। गिरा – पर्वतो। धूजि – कपित हो कर। हयख्खुर – घोडो के पैरो के सुम। खेह – धूलि। बिभाकर – सूर्य। बूजि – प्रकाशहीन हो गया। घहरी – उमडी, घहराई। धनु तें– धनुप से। अररान – तोपो के गर्जने की ध्वनि। वज्र – इन्द्रायुध। अराबनि – तोपो की। आगि – अग्नि। जगी – जली। जमगी – पलीतें। जबूरनि – छोटी तोपें। गुन गोळ – गुण रूपी गोले, ज्ञान रूपी गोले। गुननाय– गुनगुना, आवाज कर। कुम्भ – हाथी। दरी – नदी, दरारें।

तुपक्कन ताड पड़ै यक तार।
मनौ बरिखा यह होत अगार॥
समट्टिय छुट्टिय स्त्रिगनि बान।
मनौं अहि पक्खि उडै असमान॥
सफुट्टिय पक्खर और पमग।
खनकिय भौमि सभाळि खतग॥
घमकिय सागि बहै यक घाय।
चमकिय वारस पारस जाय॥
भमकिय श्रोनन के भभकार।
पयो मनि बूडत कुभ प्रकार॥
घनै गय छक्कि परै घन घाय।
मनौ दिग मदिर से ढहि जाय॥
सनकिय तेगन की वह साट।
कनकिय कध बगत्तर काट॥
बहै पुळिवाद सिरोहिन बाढ।
झरै तन डार परै अवगाढ़॥
बहैमि सरीर असील बहन्त।
खिरै नही मुक्ख खिरै गजदन्त॥
बहै स जनव्बर ऊननि बाह।
गज रुण्ड मुण्ड परै गजगाह॥

ताड़ – मार। यक तार – एक समान। बरिखा – वर्षा। समट्टिय – सिकुड कर। स्त्रिगनि – धनुष विशेष। अहि पक्खि – पखधर सर्प। पमग – घोडे। खन्नकिय – खनन की आवाज कर। खतग – साहसी, तीर, क्षताग। सागि – साग नाम का शस्त्र। वारस पारस – इधर से उधर, आर-पार। भमकिय – उमड कर। श्रोनन – रक्त के। भभकार – भक् भक् की ध्वनि। पयो – जल मे। कुंभ – घडा, कलश। घन घाय – घने घावो से। दिग मदिर – दिशाओ के स्थानो से। सनकिय – सन् सन् की ध्वनि करते हुए। तेगन की – तलवारो की। सांट – प्रहार, कोरड़े विशेष। कनकिय – कान के समीप। कंध – कधे। पुळिवाद – वाद करके, चल कर। सिरोहिन – सिरोही नगर मे बनी तलवारें। बाढ – धार, पैना भाग। डार – डाल, शाखा, द्विदल। अवगाढ़ – दृढता, बलवान्, युद्ध। बहैंमि – बहते हैं। असील – एक प्रकार का शस्त्र। खिरै – गिरें। जनव्बर – तलवार विशेष। ऊननि – तलवार विशेष। गजगाह – युद्ध, झूलें, समूह।

गुरज्जन मार परैं गमकार ।
मनौं घन कुट्टत लोह लुहार ।।
उरै प्रतमाळिय काळिय जानि ।
मुडै मुडकै बध सध समांनि ।।
फटै उर काळिज फेफर फुट्टि ।
कड़ी छकडी छकडाह बिछुट्टि ।।
झड़ाझड़ ओझडसी बढि झेलि ।
करै मनु पायक घायक केळि ।।
झरफ्फर पंखनि पख झुकत ।
तरफ्फत ताखिन ते बिझकत ।।
जुरै बरबत्त स केऊ जवांन ।
घटै जिनके हथियार निदांन ।।
करै रदघातनि खांन पखान ।
जुरै मनु बंदर बीदर जांन ।।
परै बिब खड भये बिब खड ।
नचै जह रुण्ड रु रुण्ड बिहड ।।
भयो अधकार महा भय रूप ।
भिरै मिरजा रु नवाबनि भूप ।।
भिरै पतिसाहन सो पतिसाह ।
महा जुध ऊध भयो दहु राह ।।३७।।

गुरज्जन – गुर्जों की, गदाओ की । गमकार – गभीर घोष । घन – मोटा भारी हथोडा । लुहार – लोहे का काम करने वाली जाति का व्यक्ति । उरै – हृदयो मे । प्रतमाळिय – कटारें । काळिय – सर्पिणी, यमराज की । मुड़ै मुड़कै – मुड कर मरोड खाए । सध – सधिस्थान । कड़ी छकड़ी – कवचधारियो के कवचो की कडियाँ । छकड़ाह – कवच । बिछुट्टि – छूट कर, टूट कर । झड़ाझड़ – लगातार । ओझड – भयकर प्रहार, अपार । पायक – पैदल । घायक – घायल । केळि – क्रीडा । झरफ्फर – फडफडाहट । पंखनि – पक्षियो के । तरफ्फत – तडफते । ताखिन – तत्क्षण । बिझकत – चौंक कर । बरबत्त – बाहु युद्ध । केऊ – कई । निदांन – अन्त मे । रदघातनि – दन्त प्रहार । बीदर – वद्रिकानन के । बिब खड – दो दो खड हो । बिहड – क्षत-विक्षत । भिरै – भिडे । भूप – राजा । ऊध – बडा, भयानक । दहु राह – हिन्दू और मुसलमानो, दोनो धर्मो वालो मे ।

छद दोहा

दोऊ राह दुदह भयौ, परचौ 'रुस्तमा खांन'।
'दारा' 'नाहर' सैद को, पलो गह्यौ सुलितान ।।३८।।

छद छप्पय

परचौ 'केसरी सिंघ', साहि आलम छळ जग्यौ।
'नरहर' परचौ निदान, लरत यक जिसम लग्यौ ।।
परचौ गौर 'पौहकर', बरत अपछरा स बिख्यौ।
मुरचौ साहि आलम, जुरत जुध आलम दिख्यौ ।।
हळमळी सेनि चल चल भई, सारी सरम सिपाहिया।
'दारा साहि' पल्लौ गह्यौ, 'नाहर' सैद निबाहियां ।।३९।।
'नाहर' किम नीसरै, नांम नाहर किम रख्यौ।
दोइ राह यम कह्यौ, साहि आलम मुख अख्यौ ।।
और मरै व्है सैद, हम जीवतै कहावै।
सैदो की क्या रहैं, नाजि जो काम न आवै ।।
हरवळ तुमैं हम ना किया, मन यह रह्या मजाख रा।
यक चोट लरौ ठढ्ढौ यहाँ, (तुम) गहौ कोट जा आगरा ।।४०।।

छद दोहा

'नाहर' सैद खरौ रह्यौ, गयो बिलद गढवाल।
आयौ करि तातौ तुरि, जहा राव 'सत्रसाल' ।। ४१ ।।

---

३८ दु दह – द्वन्द्व, लडाई। पलो गह्यौ – सहारा लिया।
३९ छळ जग्यौ – युद्ध लड कर। जिसम लग्यो – जिस्म के (घाव) लगा। गौर – गौड। बरत – वरण करते। बिख्यौ – देखा गया। मुरचौ – मुडा, लौट चला। जुरत – लडते हुए। आलम – ससार ने। हळमळी – हल चल हुई। चल चल – चल-विचल। सरम – लज्जा।
४० किम – कैसे। नीसरै – निकले, (युद्ध से) हटे। नाहर – सिंह, नाहर खाँन। यम – ऐसे, इस प्रकार। अख्यौ – कहा। और – अन्य। सैद – शहीद। सैदों – सैयदो की। नाजि – आज नही। मजाख रा – मजाक का। लरौ – लडू। ठढ्ढौ – खडा, दृढता पूर्वक। गहौ – पकडो। कोट – दुर्ग। जा – जा कर के।
४१ खरौ – खडा, दृढ। रह्यौ – रहा। बिलद – बडे, ऊँचे। गढ़वाल – दुर्ग वाला, शाहजादा दाराशिकोह। तातौ – तेज। तुरी – घोडा।

छंद छप्पय

तहा राव 'सत्रसाल', सूर सांमतन सख्खै ।
सो छत्री कुळ सूध, तात मातन दहु पख्खै ।।
जब कातर कतराए, तहा दूनौ बळ दख्खै ।
सिर बोळै जहं साखि, लरत धरर रत लख्खै ।।
कुळि सुनहु बस छत्तीस यह, गति गीता सुमरन गहिय ।
सकट्टिय प्रान सचै नही, यह बखान रजउत कहिय ।।४२।।

कहै राव 'सत्रसाल', सुणौ सब भीछ कहाव ।
उरध मडळ भेद तणा, दोइ लैहैं लहाव ।।
करि इस्टि द्रढ दमन, भेदि सह कमळ उचाई ।
स्यांम कांम धरि मनै, यह पग धरत सवाई ।।
ब्रहमड फूटि चालै सुते, जोतिहि जोति मिळाइया ।
यह धरै पाव असमेद का, दोय मुकति यक पाइयां ।।४३।।

राव अनम्मी कध, सिलह तिण वार न धारिय ।
अमर केसरी कीध, जड़ित मणि मौड़ सवारिय ।।
अती मनै ऊछाह, भूझ कारण खगबधी ।
वज्रपात री गढी, पाण हाळाहळ दध्धी ।।

---

४२. **सख्खै** – साथी, सखा। **सूध** – शुद्ध, पवित्र, उज्वल। **पख्खै** – पक्षो मे। **कातर** – कायर। **कतराए** – भयभीत हुए। **दूनौ** – दुगुना। **बोळै** – खोवे, बोले। **साखि** – साक्षी। **रत** – रक्त, लवलीन। **गहिय** – ग्रहण करें। **सचै**– सचय। **रजउत** – राजपूत के, क्षत्रिय के।

४३ **भीछ** – योद्धा। **कहाव** – कहे जाने वाले, कहलाने वाले। **उरध मंडळ** – ऊर्ध्व मण्डल। **भेद तणा** – रहस्य का, भेदने का, पार करने का। **लैहैं** – लेवेंगे, लेंगे। **लहाव** – लाभ। **इस्टि** – इष्ट। **कमळ** – योग के चक्र। **मनै** – मन मे। **पग** – पैर। **असमेद** – अश्वमेध यज्ञ। **मुकति** – मुक्ति। **यक** – एक, एक साथ। **पाइयां** – प्राप्त करेंगे।

४४ **अनम्मी** – न नमने वाले। **सिलह** – कवचादि। **तिण वार** – उस समय। **अमर केसरी कीध** – रण मे जूझ मरने के सूचक केशर के रग मे रगे वस्त्र (धारण) किये। **मौड** – सिरमौर, मुकट। **भूझ** – युद्ध। **खगबधी** – तलवार बाँधी। **वज्रपात री गढ़ी** – वज्रपात (बिजली) की बनी हुई। **पांण** – आग मे तपा कर तीक्ष्ण करने की क्रिया। **हाळाहळ** – हलाहल, विष। **दध्धी** – दी हुई।

अहलोक सुजस कारण हरखि, स्वांम ध्रम-मन धारियौ ।
चढि तुरी सौहड हुता सहो, साहि 'मुराद' बाकारियौ ।।४४।।

यह बखान रजपूत, प्रान सुच्छिम करि लेखै ।
टरै मेर की मेर, टरै नह अरिदळ देखै ।।
जब पैलाय परत्त, जाय कित ही दरवाजै ।
यते धारि तुतकारि, हारि दोऊ कुळ लाजै ।।
'सिवराम' 'भीम' नृप 'रूप' से, यम सभरिपति ऊचरै ।
दळ जुरत मुरत फिर नह मुरै, यह बखान कवियन करै ।।४५।।

जितक जोग निग्रहन, जितक इद्री मन रक्षन ।
जितक नेम सन्यास, जाप जप तप हि परक्षन ।।
जितक जागि सौन्न, तुलन कासी तन छडन ।
सब अड़सठ असनान, दान कोडस अन खडन ।।
कोटिक ऊपास येकादसी, दळ भजै जूझै तहां ।
यक हत्थ सूर 'सत्रसल' सुनत, वह मन्न अदभूत कहा ।।४६।।

ये ठाढै रजपूत, पाव गाढै सोइ मडिय ।
राव तुरी आरूढि, गयद आरूढि स छडिय ।।
सब छत्रिय येकंत, मत करि प्राकळ प्रिय ।
हेम तुला जुध आजि, कीय बहळा दिन अप्पिय ।।

अहलोक – इस लोक मे । सौहड़ – वीर । बाकारियौ – ललकारा ।

४५ टरै – डिगे । मेर की मेर – सुमेरुगिरि का न डिगने की प्रतिष्ठा का भाव । पैलाय – दूसरे, विपक्षी । परत्त – प्रतिज्ञा कर के । तुतकारि – दुत्कार कर, ललकार के ।

४६. जितक – जितने । जागि – यज्ञ । सौन्न – स्वर्ण । तुलन – तुलादान द्वारा । कासी – काशी तीर्थ पर । अड़सठ – अडसठ तीर्थों मे । ऊपास – उपवास ।

४७ ठाढै – दृढ, खडे । गाढ़ै – दृढ । सोइ – जो, वे । मडिय – रोपें । तुरी – अश्व । आरूढ़ि – असवार हुए । गयंद – हाथी । छडिय – छोडा, त्यागा । येकत मत – एक मत्रणा से । प्राकळ – युद्ध, आरम्भ मे । हेम तुला – स्वर्ण तुला । बहळा – रणातुर वीर ।

कमधज्ज राव 'रामसिंघ' से, गुन छत्रिय और सब गन ।
मम उर हु मर हु मर तै उरहु, मर हु तो करहु उछाह मन ।।४७।।

सबत सात अर सत, बरख दस पच स बीते ।
सुकल पख्ख अष्टमी, जेठ सुदि थावर थत्ते ।।
चार जाम चहुवान, धौसता रेनि दान वर ।
हय गय रजत हरन करि, यम निमुक्त मुक्त कर ।।
अवधूत राव खित्रिय अटळ, सुजस ध्रम घन सचवै ।
बचवै कौन दिन दळ बदळ, बळ प्रमान को बचवै ।।४८।।

छंद दोहा

वारण फौज विभाड, डारण हय जाडा भडां ।
अनमी कध औनाड़, कारण भूत स कांम रा ।।४९।।

छंद त्रोटक

अगग अगग गजराज गजै । घनन घनन घन घट बजै ।।
रमझम घमघम घूघरय । प्रति बाजत ते हय पख्खरिय ।।
धम धमय बाजिय धूजि धरा । रज उड्डिय बुड्डिय सहसकरा ।।

उछाह – उत्सव, उत्साह ।

४८ सत – सौ । बरख – बरस, वर्ष । दस पच – पन्द्रह । जेठ सुदि – जेष्ठ शुक्ला । थावर – शनिवार । थत्ते – तिथी, स्थिर । धौसता रेनि – दिन से रात्रि पड़ने तक, सारे दिन । रजत – चाँदी । हरन – स्वर्ण । निमुक्त – पवित्र मुक्ति हित । मुक्त कर – खुले हाथ, उदारतापूर्वक । अवधूत – योगी । बचवै – बचा रहे । दिन दळ बदळ – दिन पलट जाने पर ।

४९ वारण फौज – गज सेना । विभाड़ – नाश कर । डारण – झोके । जाडां झडा – बलवानो के ध्वजो पर, घने झण्डो पर । औनाड़ – स्वतन्त्र, किसी के आगे न झुकने वाला ।

५० अगग अगगं – अगाडी अगाडी । घननं घनन – ध्वनि । घन घट – घने घटे । रमझम घमघम – ध्वनि । घूघरय – घुघरु । प्रतिबाज – प्रतिध्वनि । हय – घोड़े । पख्खरि – घोडो के कवच । धूजि – कापी । धरा – पृथ्वी । रज – रेणु-राशि । बुड्डिय – डूब गई, छिप गई । सहस करा – सहस्र किरणों, सूर्य ।

धसमस्सि धमस्सि जवान धसै। किरवांनन तौडि कमान कसै ॥
खिलि मिल्लिय झिल्लिय छक्करय। मनु कुंद तुरगन बक्करय ॥
पग छुट्टिय सकुळ छुट्टि पटा। घन-घौरि मिळी दहु वौर घटा ॥
हिंगलीय यलग्गिय हूल हुय। धम गज्जर गज्जिय माचि धुयं ॥
सुलत्तान चव्हान की सैनि जुरी। सद मद्द गयदन घट घुरि ॥
परि सद्दन सद्द पहार गज्जे। गिडधौ गिडधौ करि नद्द बज्जे ॥
मचि ऊध धम धमका धकय। मचि बीरन हक्क बको बकय ॥
मनु बीजळ की झळसी बढिय। किरवानन होत कढौ कढिय ॥
पिलवान खिले करि पील हुलै। मयमत्तन मत्तान दत मिळै ॥
सो भिरै मनुं पाहर पाहर भारि। किधौ दोऊ कोट करीर करारि ॥
नर से नर कुजर कुजर से। असवार जुरै असवारन से ॥
असिवार झिसारन के झटका। खनकार झकारन के बटका ॥
रणराव बळी 'सत्रसाल' रचै। हुव गाज अराबनि सूर हिचै ॥
बरछान की मार दूरार बहैं। सिरदारन के सिरदार सहैं ॥
बबकार बकारत घाव बजे। गमकार गुरज्जन मार गजे ॥
हलका हलकारि धकारि हल। सु मनी ललकारत मल्ल मल ॥

धसमस्सि – भूमि ऊपर नीचे हुई। **किरवानन** – तलवारें। **कसै** – बाँधे। **छक्करयं** – चक्र, तलवार विशेष। **कुद** – कधा। **बक्करय** – वक्र, बाँक ॥ **सकुळ** – शृङ्खला। **छुट्टिपटा** – खुला पटा, तलवार विशेष। **दहु वौर** – दोनो ओर। **घटा** – सेना। **हिंगलीय** – शस्त्र विशेष। **यलग्गिय** – अलग। **हूल** – भाला, भाले का प्रहार। **धमगज्जर** – युद्ध, भयकर युद्ध। **धुयं** – तोपें, धुआ। **सद मद्द** – मद वाले। **घट घुरि** – गजघट बजे। **परि सद्द न सद्द** – ध्वनि प्रतिध्वनि होने से। **गिड्धौं गिड्धौं** – आवाज विशेष। **नद्द** – नगारे, वाद्य। **ऊध** – युद्ध। **हक्क बक्को** – हक्का वक्का। **बकय** – बोलने लगे। **बीजळ** – बिजली। **झळसी** – ज्वाला सी। **बढ़िय** – बढी। **किरवानन** – तलवारें। **कढौ कढ़िय** – निकालो निकालो। **पिलवान** – महावत। **खिले** – प्रसन्न। **पील**– हाथी। **हुलै** – गतिमान किए। **मयमत्तन मत्तन** – मदमस्त हाथियो के, मदोन्मत्त हाथियो के। **मिळै** – भिडे। **कोट** – दुर्ग। **करीर** – हाथी। **करारि** – जबरदस्त। **कुजर** – हाथी। **असवार** – अश्वारोही। **असिवार** – खड्ग-प्रहार। **झिसारन** – तलवार। **झटका** – प्रहार। **खनकार** – खन खन की ध्वनि। **झकारन** – झनकार। **बटका** – खण्ड। **अराबनि** – तोपो की। **हिचै** – युद्ध करते है। **बरछान** – बर्छो की। **दूरार** – दरारें। **हलका** – हाथियो का समूह। **हलकारि** – चलाकर। **धकारि** – धकेल कर। **हल** – हल्लाकर। **ललकारत** – चुनौती देते है।

कुंवरा रण 'भारथसीघ' कथी। खग बाहत दोहुन हथ्थ-हथी ॥
'मुहकम' पराक्रम अैस कियो। गज को(दत)सूर उखारि लियो ॥
खितरां चवहान 'गुमांन' खिल्यो। मुढ मार कहैं डड रोहि मिल्यो ॥
भुझ पारत झारत 'भूझ' भुक्यो। रिणराव क सीह बराह रुक्यो ॥
चहुवान के जुद्ध कमध लरै। पतिसाहन के दळ पारि परै ॥
जमरूप 'जुरावर' अगद ज्यू। मिळि राव करै खग मगद ज्यू ॥
'सिवरांम' बळी बळ चाळक सूर। गिरै रणखेत समेति गरूर ॥५०॥

छद दोहा

बळ बळ दिल्ली ऊबके, दळ जेहा दरियाव।
'सत्रसल' मुनि आखाडसिध, रेसे 'अवरग' राव ॥५१॥

जिम दुसराहे कीजिये, येहा कीध उछाह।
भड रवि मडळ भेदबा, बधियो मरण बिमाह ॥५२॥

छद सोरठा

बधियो मरण बिमाह, 'सिवपति' हैमर सादळे।
खडा घतै गजगाह, सिरा फिरगी पाखरा ॥५३॥

हथ्थ – हाथ से। हथी – हाथी पर, तलवार। अैस – ऐसा। उखारि – उखाड। खितरां – युद्धस्थल, घावो से। खिल्यो – प्रसन्न हुआ। मुढ मार – (?)। डड रोहि – शस्त्र विशेष से रोद कर। भुझ – युद्ध। झारत – गिराता। भुक्यो – झुका। बराह – बाराह, सुअर। रुक्यो – ठहरा। कमध – धड, राठौड। पारि परैं – गिरा कर गिरे। खग मंगद – तलवार से चूर्ण जैसा। चाळक – चालुक्य। समेति – सहित। गरूर – गर्व।

५१. बळ बळ – बार बार। ऊबके – उमडे, जोश करे। दळ – सेना। जेहा – जैसा। अखाडसिध – योद्धा, युद्ध कुशल। रेसे – पराजित करने, नष्ट करने।

५२. दुसराहे – दशहरे पर, विजयादशमी का। येहा – ऐसा। कीध – किया। उछाह – उत्साह, उत्सव। भेदबा – भेदने के लिए। बधियो – बढा। बिमाह – विवाह।

५३ हैमर – घोडा। घतै – नाश करे। गजगाह – हाथी समूह, युद्ध। सिरां – सिरो पर। फिरंगी पाखरां – अंग्रेजी ढग की पाखरें।

छद छप्पय

महाराजा 'गुमांन' सुतण, 'इद्रसाल' स जाणे।
बाबा आगळि बळी, अनड़ मूंछा बळ ताणे॥
कळि क्रत राखण काज, साज केसरियां सज्जे।
मणि माणिक नग जटित, हद्द सिर मौड अरज्जे॥
'सत्रसाल' राव बेली सकौ, झड ओझड हूता झड़ै।
बाढ़ाळी करा बाहै बहसि, घड निरळग हुय हुय पड़ै॥५४॥

जोर कर कर बरजागि, अनड ब्रहमड सु लग्गे।
बीद घडा बारिबा, पितामह आगळि पग्गे॥
करि केसरियां साज, बाज झोके खग साहे।
खग तुटै दोय च्यार, साहि गज ऊपरि बाहे॥
भडहूत कहै कविलाणपति, मौ जतन(जीव)कराइयो।
हिंदवाण नाथ 'सत्रसाळ' नृप, हाथळ बाहत आइयो॥५५॥

महाराजा पति अनड़, नाम 'महौकम्म' कहाणो।
'सत्रसल' री भुज सबळ, सबळ बिरदाव बहाणो॥
झौकि तुरी अरि घडा, बाहि किरमर बाढाळी।
ऊपाड़े गजदन्त, कन्न ज्यो करी कराळी॥

---

५४ सुतण – पुत्र। बाबा – वडे पिता, पिता के बडे भाई। आगळि – अगाडी। अनड – बलवान्, वीर, अनम्र। मूछा बळ तांणे– मूंछो के वट दे, बल का प्रदर्शन करे। कळि – कलियुग मे। क्रत – कृत, कर्म। साज – पौशाक। नग – नगीनें। जटित – जडे हुए। हद्द – बेहद। अरज्जे – शोभित हो रहा है। बेली – सहायक। सकौ – सबका, वह। ओझड़ – भयकर प्रहार। झड़े – कटे। बाढ़ाळी – तलवार। बहसि – उत्साह मे भर। निरळग – खण्ड-खण्ड, छिन्न होकर। हुय हुय – हो कर।

५५ बरजागि – वज्र अगी, बलवान्, वज्रास्त्र। अनड – वीर। बींद – दूल्हा। घडा – सेना। बारिबा – वरने के लिए। बाज – घोडे। साहे – सम्हाले। कविलाणपति – कर्बलापति, शाहजादा। हाथळ – हाथ।

५६. अनड़ – अनम्र, वीर। भुज – हाथ, सहायक। झौंकि – आगे वढा कर। किरमर बाढाळी – धार वाली तलवार। कन्न – कन्न चौहान, कर्ण। कराळी – भयकर।

वाहि दत सीस गज साहि रै, आछड़ि तुरी चलाइयौ।
असुरेस ईस ऊबरे जहा, गज रण भूमि मिळाइयौ।।५६।।

'भारथ' पारथ जिसौ, सुतण 'सत्रसाल' सिघाळौ।
बय दस पंच प्रमाण, अनड बिरदा उजवाळौ।।
ताखा जिम बळ भरे, सुणै बीरारस बाजा।
सिंधु लहरी जिम चमू, चलै हुय तोप अवाजा।।
पित मुहरै अत देबा अवसि, चाढै तुरी चलाइयौ।
गज जूथ घणा देखे जहा, अनळ पख जिम आइयौ।।५७।।

गवड नाम 'जगनाथ', पाथ जेहो भुज पाणे।
'सत्रसळ' आगळि सोहोड, करा खग दोय झिलाणे।।
आरूढे हय लखी, सु तो अयराक ऊपनौ।
'गौव्यद' रौ गहवत, अछर बर काज स बन्नौ।।
दळ जुरत मुरत पग ना धरै, करे हाक आधा धरै।
अणबरी घडा भेळण हठी, प्रान कळपि पौरिस करै।।५८।।

चाळक बस उजाळ, नाम 'सिवराम' कहाणो।
खैराडो खग झाट, रीसि गज सीस बहाणो।।

आछडि – वेग से बढा कर। तुरी – घोडा। असुरेस ईस – मुसलमानो के स्वामी, शाहजादा। मिळाइयो – गिरा दिया, मिला दिया।

५७ भारथ – भारतसिंह, युद्ध। पारथ – अर्जुन। सिघाळौ – श्रेष्ठ वीर। बय – आयु। दस पच – पन्द्रह। अनड़ – अनम्र, अटल। ताखा – तक्षक नाग। बळ भरे – बलवान्। सिंधु – समुद्र। चमू – सेना। मुहरै – सन्मुख, आगे। अत देबा – अन्त देने, मौत। चाढ़ै – चढ कर। गज जूथ – गजसमूह, गजसेना। अनळ पख – अनल पक्षी। नोट.–यह पक्षी सदैव आकाश मे रहने वाला और हाथियो का आहार करने वाला कहा जाता है।

५८. पाथ जेहो – अर्जुन जैसा। भुज पाणे – भुज बल मे। सोहोड – सुभट, योद्धा। करां – हाथो मे। झिलाणें – ग्रहण किये। हय लखी – लाखी रग के घोडे। सु तो – वह तो, जो तो। अयराक – ईराक देश। ऊपनौ – जन्मा हुआ। बन्नौ – दूल्हा। हाक – वीर नाद। आधा – आगे ही। भेळण – नाश करने। कळपि – उत्सर्ग, सकल्प।

५९ चाळक बस – चालुक्य वश। खैराडो – खेरवाड भूभाग का स्वामी। खग झाट – तलवार चला। रीसि – क्रोध कर।

'सत्रसळ' आगळि सूर, खळां फाड़ै अवझाड़ै ।
केसरियां अग साजि, जिरह जूसण बीभाड़ै ।।
दइवाण असुर दळ दाहिवा, बिहसि बिहसि आघा धरै ।
'अवरग' 'मुराद' ऊपरि उरडि, सूडाडड निरळंग करै ।।५९।।

सिव पूजा 'सिव' करै, (असि) कीधी असवारी ।
नद्द घोर नीहाव, बजे तीसरी स वारी ।।
हुय हाहुळि हैमरा, होय गैमरा हजारा ।
खळा मिळिया खरहड, लडग चढिया दळ लारा ।।
धर धूजि रजी रवि धूधळौ, करबा यम सायक्क लो ।
आगि बरजागि अजमेर बे, फौजां कियौ मुकाबलो ।।६०।।

छद भुजगी

यम ऊलटै साहि आया अपार । जुरै 'भीम' 'सिवराम' सो नाम सार ।।
मुरै 'साहिदारा' जहा पाव मडे । सबं सूर सिरताज हैराज छडे ।।
उभै चाळ टकी उसस्सै(तेग)बाही । मुरें मूठि नाही जिनै मूठि साही ।।
करें डिढ्ढ कढ्ढी सुबढ्ढी कराळा । मनौं जग्गि की प्रगट्टी कोटि ज्वाळा ।।

अवझाड़ै – प्रहारो से गिरावे । जिरह – कवच । जूसण – कवच । बीभाड़ै – तोडे, मारे । दाहिवा – जलाने, नाश करने । उरड़ि – उमड कर । निरळग – टुकडे-टुकडे ।

६०. असि – अश्व पर । कीधी – की । नद्द घोर – वाद्य विशेष की ध्वनि । नीहाव – ध्वनि, नाद । वारी – समय, बार । हाहुळि – हल्ला । हैमरा – घोडो । गैमरां – हाथियो । खरहड – वीर, सेना । लडग – लबी पक्ति । लारा – पीछे । रजी – धूलि । धूधळौ – धूमिल । सायक्क – (?) । आगि – बरजागि – वज्राग्नि ।

६१ ऊलटै – उमडे, उलट कर । सार – सार । मुरै – मुडे, लौटे, चढे । पांव मडे – पैर रोपे । हैराज – अश्वराज, श्रेष्ठ घोडे । छडे – छोडे । उभै – दोनो । चाळ टकी – धनुष की प्रत्यचा, वस्त्र के छोर टाँक कर । उसस्सै – जोश मे आये । मूठि – तनिक भी । मूठि साही – तलवार पकड । डिढ्ढ – दृढ । कढ्ढी – निकाली । वढ्ढी – काटी, वढकर, तेज धार । जग्गि – यज्ञ । कोटि – करोड । ज्वाळां – अग्नि, लपटें ।

लगे मैन खाण्डीव ऊठै लपट्टै। झळ आमही-सामही तें झपट्टै ।।
करै सूर सन्नाह केते सहेते। बळे वक्ष बेली करै राहु केते ।।
झरा झार बागी सिरं टोप झारै। मनौं चक्र कोलाल कुंभ तारै ।।
करै मुण्ड हक्कं जहां रुण्ड जूटै। तते तुण्डन ऊपरां तेग तूटै ।।
कटै सुण्डि सुण्डिन असुण्ड भारे। परै श्रोन के सैल तें ज्यूं पनारे ।।
परै लाल ढालें हरी पीत भारी। मनौ बध केसान ते केलि डारी ।।
परै मीरजा मीरजादे मुगल्ल। परै चामर टोप बानैत बल्ल ।।
परै हैरख बैरख बाज हथ्थी। जुरै जोध जोधार जे लथ्थबथ्थी ।।
करै सूर साहेस बाहे कटारी। फळ भोगळी अैचते बूडि सारी ।।
कटै सीफर कोपर भई फार। मनौं ककरी फूटि लीनो बिहार ।।
भये सूर रत्ते वहैं रत्त रेळे। मनौ रंग पत्तंग तें फाग खेलें ।।
घट घट्ट घूमत फूटन्त घाये। मनौ फूल की छाक अैराक पाये ।।
कटै जंघ बाहू भये अंगभंगा। तरु चैत के पत्त ज्यूं तंग तंगा ।।
वहैं हथ्थ 'सिवराम' के पातिसाई। भिरै 'भीम' भाई मनौं 'भीम' भाई ।।

झळ – लपटें। आमही सामही – आमने-सामने। सन्नाह – कवचादि। केते– कितने। सहेते – प्रीति सहित। वक्ष – वक्षस्थल। बेली – सहायक। राहु केते – राहु केतु की तरह। झरां झार – झडाझडी। झारैं – गिराते हैं। चक्र – चाक यंत्र। कोलाल – कुम्हार। कुंभ तारै – घट उतारे, मटके उतारे। हक्क – हाक, हल्ला। जूटै – जुडे, लडे। तते – तेज, वहाँ। तुंडन – शुण्ड, मस्तक। तेग – तलवार। तूटै – टूटे। असुण्ड – शुण्ड कटने पर रहा हुआ सिर। भारे – बडे बडे, भारी। सैल ते – पहाड़ से। पनारे – परनाले। पीत – पीलेरंग की। बध केसान तें – बधे हुए केशो से। केलि डारी – फूलो का गुच्छा फेंका हो। बानैत – वीरता सूचक चिन्ह। बल्ल – बल्लम, वाले। हैरख – घोडे पर रहने वाली पताका। बैरख – हाथी पर रहने वाला ध्वज। बाज हथ्थी – घोडे हाथी, तलवार बजने पर। लथ्थबथ्थी – बाथम-बाथ हो, गुत्थमगुत्थ हो। फळं – फल। भोगळी – शस्त्र विशेष। अैचते – खेंचने से। बूडि – भाले के डंडे का नीचे का भाग। सीफरं – ढालें। कोपर – कोहनियां। फारं – दरारें, उस पार। रत्ते – लाल। रत्त रेळे – रक्त की बडी धारें। पत्तंग – लाल रंग। घटं घट्ट – घट प्रति घट। फूटन्त – फटे हुए। घाये – घाव, जख्म। फूल की छाक अैराक पाये – पहली बार निकाले हुए शराब के प्याले पिये हुए। बाहू – भुजाएँ। तर – तरु, पेड। चैत – चैत्र मास। पत्त – पत्र, पत्ते। तंग तंगा – कटे हुए टुर्रे। हथ्थ – हाथ।

गहैं भीम के हथ्थ हाथी न भारै। बिहारैं बिदारै उछारै पछारैं ॥
धसै सामुही सामुंही धारि धावै। उतै अच्छरी बैठि विमान आवै ॥
बजे बीर की घौर नीसान बाजा। जुरै साहि 'अवरग' 'सिवराम' राजा।
जरजोधनं राव मारू दुबाह। रहाचक्क कीनौ परै 'रामसाह' ॥
खिव खाग 'खगार' बीजू खळक्कै। भड़ कंध भानें घडं मे भळक्कै ॥
जुरै जैत रौ 'कम्म' आये जिवारं। सहू भाखर नीर चढ्ढाय सार ॥६१

छंद छप्पय

जिह मुख श्री गुर मत्र, यस्ट ऊचारस कीनौ।
जिह मुख मगन-जनह, लख्य लख्यन द्रव्य दीनौ ॥
जिह मुख पान कपूर, और अगमद सैबासी।
जिह मुख अधरे सदर, खानि खट रस आवासी ॥
सोही मुख प्रफुलित कवळ सम, बीरारस रन लुट्टियो।
वह ठौर गौर 'सिवराम' रौ, वहौ तरवारिन तुट्टियो ॥६२॥

॥ इति श्री कवि महेसदास विरचतायां धौलपुर सिंग्राम सपूरन ॥

गहैं – पकडे। भारै – विशाल, बोझिल। बिहारैं – घुमाएँ। बिदार – विदीर्ण करें, चीर डालें। उछारै – उछालें। पछारैं – पछाडें, पटकें। धसै – प्रवेश करे। सामुही – सामने, सम्मुख। धारि – शस्त्र धारा, सेना। धावै – जावे, बढे। उतै – वहाँ। अच्छरी – अप्सरा। नीसान – नक्कारे। जरजोधन – दुर्योधन। राव मारू – मारवाड़ का राजा। नोट – मारवाड के राजा चन्द्रसेन का वशज होने से रामसिंह को 'राव मारू' कहा है। दुवाह – वीर। रहाचक्क – भयानक सग्राम। खिवं – चमकाकर, घुमाकर। बीजू – विजली। खळक्कै – चमकी, गिरें। भळक्कै – चमके, कान्तिमान हुए। जैत रौ – विजय का, जैत्रसिंह का पुत्र। कम्म – कर्मसिंह। आये जिवार – उस समय मे आ कर। सहू – सारे, सब। भाखर – भाखरोत, भाखरसिंहोतो के। नीर – आव, कान्ति। सारं – तलवार से, शस्त्र से।

६२ जिह – जिस। यस्ट – इष्ट, आराध्य देव। कीनौं – किया। मगनजनह – याचक जनो। दीनौं – दिया। अगमद – कस्तूरी। सैंवासी – सुगन्धित पदार्थ। अधरे सदर – अधर और सधर दोनो ओठ। खानि – खाद्य पदार्थों का। खटरस – षट् रस। आवासी – प्रवेश हुए, स्वाद लिए गए। कवळसम – कमल पुष्प सदृश्य। ठौर – स्थान। गौर – गौड। वहौ – वहुत। तुट्टियो – टूट कर गिरा।

॥ अथ त्रतीय सग्राम पूरब लख्यते ॥

छंद पद्धरी

'अकबर जलाल दीनह' दिलीस । सो तपै गयौ नवखड सीस ॥
'नूरदीसाहि जहागीर' नूर । प्रथमादि सिरै तिण तेजपूर ॥
'साहिजिहांन' साहिब्ब दीन । चहु चक्क जेर समसेर कीन ॥
सह मिळै आय दिल्ली स पाण । रस मिळै नही राजसी राण ॥१॥

छद छप्पय

'साहिजिहां' पतिसाह, राह दहुवै सिर रज्जै ।
बाजा पूरब दिखण, उतर पछिम दिस बज्जै ॥
पूत सपूत स च्यारि, यळा चहुवै ज्या अप्पि ।
ठावां ठोहड़ा ठोहड, उथउ थाणा करि थप्पि ॥
जाजुळी तेज जग चख्खि जिम, दुनिया ऊपरि देखियै ।
नवखड सप्त दीपह नरिंद, लोह गहै कुण लेखियै ॥२॥

छद पद्धरी

थिर ऊत्तर 'साहि दारा' स थप्पै । यळा पूरब 'साहि सूजा' स अप्पै ॥
जरा दिखिण 'साहि अवरग' जाणौं । बळ पछिम 'साहिमुरियाद' बखाणौं ॥
चहू देस अच्चाळ च्यारौं चगत्ता । करै च्यार हु येमि चौ बेद कथ्था ॥
दिली 'साहिजिहान' बैठो दुबाह । यक पाय सेवै जीह दोय राह ॥
जीयप्पउ जहमत्ति जांणी जगत्त । खाली हुवौ तखत्त नै आतपत्तं ॥
मही मडळ हूहळं कूक माचै । वळा च्यारि वाका दहाका स बाचै ॥३॥

---

१. सह मिळै – सब मिले, शामिल हो गए । आय – आकर के । रस मिळै नहीं – प्रीतिकर नही मिले । राजसी रांण – उदयपुर के राणा राजसिंह ।

२ बाजा – वाद्य । बज्जै – बजते हैं । अप्पि – सौंपी । उथउ – वहा । गहै– ग्रहण करें, पकड़ें ।

३. च्यारौं – चारो । चगत्ता – मुसलमान, मुगल शाहजादे । येमि – इस प्रकार । बेद – वेद, विग्रह, युद्ध । यक पांय – एक पैर पर खडे होकर । सेवै – सेवा करते है । जींह – जिसकी ।

छंद दोहा

'सूजे' पूरब सांभळे, वाका ढिल्लो येह ।
ग्रारभ जुध परट्ठियौ, ग्रारभ कीध स येह ।।४।।

छंद त्रिभगी

'सूजा' सुलिताण ग्रौह ग्रमाणं जाणि जवाण जमराण ।
ग्रारभ उमगे ग्रग सु ग्रगे तग तुरगे ताणाण ।।
पखराळ पमगां नाग सनग्गां बाहि बिहगा बाणास ।
गज झप स जग्गा धारै धज्जां ऊडि स रज्जा ग्राकास ।।
खड खड स खडिया आभि स ग्रड़िया जोधा जड़िया जरदाळ ।
रत्थाह उचडिया खिझि दळ खडिया ग्रनडां नड़िया योहाळ ।।
दिल्ली-सर दाव चित्त स चाव राजा राव उमराव ।
पुणि सैद पठाण ताणि कमाण गिडिक घाण गुमराव ।।
गौहमी पालट्ट थट्ट सुथट्ट बहै बिहट्ट पूरबय ।
'सूजा साहि' ग्राया ग्रसा ग्रधाया 'साहिजिहान' सुणे स बय ।।५।।

छंद छप्पय

सुणियौ 'साहिजिहान', येमि 'सूजासाहि' ग्राया ।
पट्टण हृदा तौडि पाट, द्रहवट्ट लुटाया ।।

---

४ पूरव – पूर्व दिशा मे । नोट .—यह मुगल सल्तनत के पूर्वी भू-भाग, बगाल का सूबेदार था । सांभळे – सुना । परट्ठियौ – रचा, शुरू किया । सयेह – सब ने ।

५. जवाण – जवान, युवा । जमराण – यमराज । तग – जीन के तस्मे । ताणाण – खीच कर । पमगां – घोडे । नाग – हाथी । बिहगा – ग्राकाश मे । बाणास – तलवारें । गज झप – लम्बी छलागें । धज्जा – ध्वजाए, ग्रण्व । रज्जां – धूलि । खड खड स खडिया – विभिन्न भू-खण्डो मे चले । ग्राभि – ग्राकाश । जरदाळ – कवच । उचडिया – उखड़े, चले । खिझि – रुष्ट हो कर । ग्रनडा नडिया – ग्रनम्रो को झुकाये निर्बंधो को बाधे । ताणि – खेंच कर । गिडि कघाणं – वाराह जैसे कधे वाले । बिहट्ट – बिना मार्ग ।

६ येमि – इस प्रकार । पट्टण – नगर, सभवतया पटना । पाट – किवाड । द्रहवट्ट – महार किया, दसो मार्गों मे ।

असी सहस असवार, पार पैदळ कुण पावै।
मेक सहस मातग, अरि गढ मूळ ऊचावै॥
गजनालि गजा सुत्रनालि गणि, तोप जमूर जगळा तई।
सीसाण बाण सौराण सजि, दीयण विधी फत्ते दई॥६॥

छंद दोहा

'साहिजिहा' 'दारा' सुणै, 'सूजा' आया साहि।
कोके तोके कामरा, दहु राह रा दुबाहि॥७॥

छंद छप्पय

दिली थभ भड दूठ, कमध कूरम्म कहाणां।
गणि हाडा वळि गौड, मोहरै पडी मडाणा॥
'जसमत' नै 'जैसीघ', 'सत्तो' दखि दीड सोहैं।
धीगराज 'अनुरुद्ध', लाख लाखा दळ लोहै॥
'दल्लेलखान' जेहा दुरत्त, दळ प्रणाम तामे दुजां।
सिरदार 'साहि सल्लेम' सा, भार सार 'रासा' भुजा॥८॥

छंद त्रोटक

भुज भार यता सिरदार भणै। पति साहिजिहान तिता प्रभणै॥
दिस पूरब दुंद पडै दहल। हुय कपिय भू द्रगपाळ हल॥
दर कूच खडे 'जैसीघ' दिली। मह अमर डंमर रैण मिळी॥

मेक सहस – एक हजार। मातग – हाथी। अरि गढ़ – दुश्मनो के दुर्ग। मूळ ऊचावै – जड या वुनियाद से उखाड कर। फेंके जमूर – छोटी तोपें। जगळा तई – बदूक विशेष।

७. कोके – वुला कर। तोके – टोक कर। दुबाहि – बहादुर।

८. थभ – स्तम्भ। दूठ – वीर। कमध – राठौड। कूरम्म – कछवाह। दीड – प्रचण्ड वीर। धींग – वीर। लोहै – काटे, मारे। दुरत्त – वीर। तामें – उनमे। दुजां – दूसरा, अन्य।

९. यता – इतने। तिता – जितने। प्रभणै – कहते है। दुद – द्वन्द्व, युद्ध। भू – पृथ्वी। द्रगपाळ – दिग्पाल। दर कूच – मजिल-ब-मजिल। मह अमर – पृथ्वी और आकाश। डमर – समूह, धुआ। रैण – रात्रि, धूलि। मिळी – मिली, हो गई।

तिण ऊपरि फौज उरैस तंई। गलवाज दिसौ दिसी फूटि गई ॥
सरदार 'सलेमा साह' जिसा। उमराव 'जैसिंघ' रायसिंघ' असा ॥
'अनिरुद्ध' जोधार हरोळ अणी। धरि पाण भुजा अजमेरि धणी ॥
कविलापति जोध विदा स किया। गज हैंवर अंमर कौटि दिया ॥९॥

छंद वेलो भुजंगी

सजै 'साहि सल्लेम' सेना स पांण। प्रथमादि पूरब्ब कीधौ पयाण ॥
बजै सद्द नद्द छतीस बिहद्द। पुणै मेघ अग्राज तै भाद्रपद्द ॥
चढ़ै सीघ 'जैसीघ' राजा सचाळौ। सदा आतपत्त दिलो रख्खवाळौ ॥
वळै चढै 'रायसिंघ' राजा बडेरौ। भुजा जेमि मौजा गजा सीस फेरौ ॥
'अनौ' चढै राजा धणी अज्जमेरौ। सिहां पाखतो झालिया समसेरौ ॥
'जसौ' चढै गिरमेर राजा बिजाई। भुजा बणै 'अनुरुद्ध'रै जिसौ भाई ॥
'उदैभाण' जमराण चढियौ अकूणौ। दळां रीठ बागा मारुराव दूणौ ॥
'भोजौ' चढै खगार रौ लीध भारा। लखां भाजणां जोध चढै स लारा ॥
भडा 'भावसी' चढै 'रणछोड' भाई। पमाडा घणा खाटणा सिद्धि पाई ॥
दळां 'खान दल्लेल' चढै दुहेला। रुडा साथि चढै रुहेला रुहेला ॥
वळै सैद 'बादर' चढै स बेग। तिकौ बाहणौ मैंगळां सीस तेग ॥
मुणै 'जाफर मीर' चढ्ढै मरद्द। सत्र कौंण चपै जियारी सरद्द ॥

उरैस – झोकी। तई – तब, उस समय। गलवाज – अफवाह। दिसौ दिसी – दिशा-विदिशाओ, दसो दिशाओ मे। फूटि गई – फैल गई। असा – ऐसे। हैंवर – घोडे। अंमर – वस्त्र। कौटि – विविध कोटि के, करोडो भांति के।
१० सपाण – बल सहित। पयाण – प्रयाण, प्रस्थान। सद्द नद्द – शब्द हुए। छतीस – छत्तीस प्रकार के वाद्य। भाद्रपद्द – भाद्रपद। आतपत्त – छत्र। फेरौ – घुमा देने वाला। अनौ – अनिरुद्ध। धणी – स्वामी। पाखतौ – पार्श्व मे। झालियां – लिए। समसेरौ – खाडा, तलवार। जसौ – जसवत-सिंह गौड। गिरमेर – सुमेरुगिरी तुल्य। बिजाई – दूसरा। जिसौ – जैसा। अकूणौ – पूरा, पूर्ण। रीठ – प्रहार। बागा – बजने पर। दूणौ – द्विगुना। भोजौ – भोजराज खगारोत। लखा – लाखो, लक्षाधिक। लारा – पीछे। पमाडा – प्रवाडा, कीर्ति के विरुद। खाटणां – प्राप्तकर्त्ता। दुहेला – दुर्लभ। रुड़ा – अच्छा। रुहेला – मुसलमानो की एक जाति का नाम। सैद – सैयद। स वेग – शीघ्रता से। तिकौ – वह। वाहणौ – चलाने वाला। मैंगळा – हाथियो। तेग – तलवार। मुणै – कहते हैं। सत्रं – शत्रु। कौण – कौन। चपै – दावे, अधिकार मे ले। जियारी – जिनकी। सरद्द – सरहद।

कडा-भीड़ चढ़ै घड़ा सेद 'कासू' । बड़ा बाहरो आणियो जिको बासू ।।
अनै छोट मोटा घणां ऊमराव । नही जाणिजै जेतला तणा नाव ।।
हवै येतला जम्मुना पार हूवा । रातबेस स जोधा तणा हूह जूवा ।।१०।।

छंद छप्पय

मणि बासुर केइ मधि, साहि भरिया गस पत्ता ।
'सूजा' कथ सभळेबा, बूझे तात बिरत्ता ।।
दिये डेरा दूभरा, तटि त्रबैणी रजपूता ।
सोह आरभ सनान, सौहड़ सामन्त सपूता ।।
भद्र हुवा पाप मुदियो भरम, परम धरम जह प्रगट्टियो ।
कळमस गग सुर तार करि, करवत धार स कट्टियो ।।११।।

चर दहुवै दळ च्यारि, लियै चरचा बिचरत्ता ।
क्षिण क्षिण हदी खबरि, कत आपरा करत्ता ।।
'सूजा' हदी खबरि, 'साहि सल्लेम' सुणाणी ।
उलटी दळ आविया, पीठि दै सोवन पाणी ।।
हरवल्ल हुवा 'महमद हया', 'जाम बेग' सा जाणियै ।
जुध 'राजसिघ' हाडा जिसा, बग सुलताण बखाणियै ।।१२।।

कडा-भीड – कवच धारण कर । कासूं – कासिम खांन । जिको – वह । बासू– पीछे से । अनै – अन्य । घणां – बहुत से । जेतलां – जितने । तणा – का । नांव – नाम । हवै – अब । येतला – इतने । रातबेस – यवन, मुसलमान सजोधा – योद्धाओ सहित । हूह जूवा – पृथक पृथक युद्ध नाद ।

११. बासुर – शऊरदार । गस – क्रोध, मूर्छा । डेरा – पडाव । तटि त्रबैणी – त्रिवेणी के तट पर । सौहड़ – योद्धा, सुभट । भद्र – सिर और दाढी मूछो के केश कटवा कर, मुण्डन । कळमस – कालिख, पाप । करवत – करोत, आरा, एक औजार ।

१२ चर – गुप्तचर । च्यारि – चारो ओर । चरचा – चर्चा, खबरें । बिचरत्ता – घूमते हुए । हदी – की । कत – स्वामी । करत्ता – (सूचित) करते । उलटी – उमड़ कर । सोवन पाणी – सोन नदी । बग – बगाल ।

छद नीसाणी

सहसराव आया 'सुजा', 'सलेम' सुणाणा ।
येहा झळमळ ऊठिया, जेहा जमराणां ।।
दळ उतरै गगा दुरत्त, परठिया पयाणा ।
बजि सिधू सहनाइया, निघसे नीसाणा ।।
हरवळ 'रासा' राय सा, 'जैसाह' स जाणा ।
हरवल्ला हरवल्ल हुवा, 'अनरुद्ध' अमाणा ।।
बीजा दळ दौळा बहै, हीदू तुरकाणा ।
यम बाणारसि आविया, सिर असस लगाणा ।।
दरस विसेसर दरसिया, राजा राव राणा ।
जिम दरसण जम दररा, मन तरस मिलाणा ।।१३।।

छद नीसाणी

सहसराव हूता 'सुजा', उलट्टिया येहा ।
जाणे सातो समद जळ, गिर लागा जेहा ।।
दळ खडता पैडा दुरत, खळदळ मिळि खेहा ।
ताटका जळ तूटता, लूटै पुर लेहा ।।
घड काळा मात्तग घड़, मडै करि मेहा ।
आहचे खडि आविया, लडि दिल्ली लेहा ।।

---

१३ **सहसराव** – बगाल प्रदेश का स्थान विशेष । **येहा** – ऐसा । **झळमळ** – देदिप्यमान हो । **जेहा** – जैसा । **दुरत्त** – बलवान् । **परठिया** – किया, स्थापित किया । **पयाणां** – प्रयाण । **सिधू** – सिधु राग के वाद्य । **सहनाइया** – शहनाई बाजे । **निघसे** – बजे । **नीसाणां** – नक्कारें । **हरवळ** – हरावल मे । **रासा** – रायसिह । **बीजा दळ** – अन्य सैनिक-दल । **दौळां** – आस पास । **बहै** – चलते हैं । **यम** – इस प्रकार । **बाणारसि** – वाराणसी, बनारस । **असस** – असख्य, अपार । **दरस** – दर्शन । **विसेसर** – विश्वेश्वर । **दरसिया** – दृष्टिगोचर हुआ ।

१४ **येहा** – ऐसा, इस प्रकार । **सातो समद** – सप्त सागर । **गिर लागा** – पर्वतो को छूने लगे । **जेहा** – जैसा । **खडता** – चलते । **पैडा** – यात्रा, मार्ग । **दुरत** – कठिन, दूर से । **खेहा** – धूलि । **ताटका** – तालाबो । **तूटता** – समाप्त होने पर । **लेहा** – लेते है । **घड काळा** – श्याम घटा । **मात्तग** – हाथी । **मेहा** – मेघ, बादल । **आहचे** – मार के या सहार कर के । **लेहा** – लेने वाले ।

खेत बभदर पूरब खभे, बधि नेत बिछेहा।
वार पार दुय असपत्या, घणघोर घुरेहा ॥१४॥

छंद छप्पय

वार पार हय हीस, वार पार हय गय गाजै।
वार पार अणपार, बीर नीसाण स बाजै॥
वार पार ऊमरा, सार वदै समबादा।
वार पार येखिजै, सुरग डेरा साहिजादा॥
वार नै पार बीच गगा पुणि, पहल आड किण ही पिलै।
पार नै वार हदा प्रगट, झडा लाल रगी झिलै॥१५॥

छंद नीसाणी

आखै 'साहि सलेम' यम, अपणां उमरावा।
मसलति येहा मडिये, ठिक हदी ठावा॥
ऊतरै गगा पगार, कौन्ह झिलै नावा।
दिल्ली कारण मडिया, झडा झूझावा॥
मह दिली के पातसाह, दिल्ली सिरदावा।
दिल्ली सिर मारै मरै, भागे कित जावा॥
'जैसिंघ' 'अनुरुध' 'रायसी', बोलै बहसावा।
दिल्ली दळ दोखण धरा, लकाळ धिकावा॥

नेत – ध्वज, चिन्ह। बिछेहा – पीछे न हटने वाले। घुरेहा – बजते थे।

१५ हय – घोडे। हींस – हिनहिनाहट। हय गय – हाथी घोडे। वार पार – इधर-उधर, इस ओर तथा उस पार। ऊमरा – उमराव। सार – तथ्य की बातें, तलवार। वदै – होड करते है। समवादां – सम्बाद, विवाद। येखिलै – दिखाई देते है। सुरग डेरा – लाल रग के तम्बू। आड – ओट। पिलै – लोपें, उल्लधन करें। हदा – का। झिलै – सुशोभित हुए।

१६ आखै – कहता है। मसलति – सलाह। ठिक – ठीक, उचित। ठावा – सयाने। पगार – तट, किनारे। कौन्ह – कौन। झिलै – धारण करे पकडे। झूझावा – जूझने वाले, युद्ध के। मह – महि। कित – कहा। बहसावां – जोश मे भर कर। दोखण – दूषित, नाश करने। लकाळ – सिंह, योद्धा। धिकावां – कुपित, आगे बढे।

पच्छिम दिसा पहाड भी, पूरब दिस लावां।
उतर धर का पातसाह, बधे ले आवा ॥
यक दिली के पातसाह, को कध नवावा।
लूण दिल्ली पतसाहि रै, तकसीर न पावा ॥
यम लडिसा मुह आगळै, कछु तरस न लावा ॥१६॥

छंद छप्पय

बिहु दळ सिलहा बटै, बणै पाखर गज बाजा।
बिहु दळ बेढ विचार, सुहड साजै जुध साजा ॥
येक दिल्ली ऊपरा, कहर लागा बेहु केवै।
बिहु बळ साहि अबीह, राह बेवै बळ खेवै ॥
हळमळ बेहू फौजा हुई, घमधमे सारी धरा।
'सूज' नै 'साहि सलेम' रा, कछै भीछ बेहु काम रा ॥१७॥

वडा साह छळ वेढ, बढै अऊख बाणारस।
प्रब येकण पामिया, धार खग गगह धार स ॥
येक कहै रिवलोक, भेदि साजोति मिळावा।
येक कहै सुरलोक, येक सिवलोक स जावा ॥
येक कहै करि द्रोग्रणि अणि, अणि ही धणि उबारस्या।
येक कहै मारिस्या अवसि, येक कहै दळ मारिस्या ॥१८॥

लावा – ले आए। बधे – बन्दी बना कर। नवांवां – झुकाते है। लूण – नमक। तकसीर – त्रुटि, दोष, गुनाह। आगळै – अगाडी। तरस – भय, त्रास। लावां – लाये।

१७ सिलहां – कवच। पाखर – हाथी व घोड़ो की कवच। वेढ़ – युद्ध। सुहड – सुभट। साजै – सज्जित होते है। जुध साजां – युद्ध सज्जा। कहर – युद्ध, शत्रु। केवै – वैर, आपत्ति। अबीह – निडर। राह – मार्ग। बेवै – दोनो। खेवै – चमकाते हैं। हळमळ – हलचल। घमधमे – घमधम की ध्वनि। कछै – बाधे, कसे, तैयार हुए। बेहु – दोनो पक्षो के।

१८ छळ – लिए। वेढ – युद्ध। अऊख – ओक, स्थान। प्रव – पर्व। पामिया – पाये। धार खग – खड्ग-धारा। गगह धार – गगा की धारा। साजोति – सज्योति। द्रोग्रणि – वैरी। अणि – सेना। अणि ही धणी – सेनापति। मरिस्यां – मारेंगे।

हळमळ बिहु फौजां हुई, भले भला उमरावां ।
सौहडा सजेह ·····, दळा दहुवै विच दावा ।।
येक कहै सनान दान, जप जाप स जांणै ।
येक करै उजू निवाज, तसब्बी तुरकाणे ।।
यक रटै राम राम हि रसण, अला अला यक ऊचरै ।
आरणि रटक्क लेबा अवसि, कटक्क बिहु यण विधि करै ।।१९।।

महाराजा 'अनिरुद्ध', जुद्ध कारण ऊमगा ।
भाई नौ काका भुजाळ, सह भीच ससगा ।।
कुळि राजाये कोकि, दिढै बैठिया दिवाण ।
धरम पुत्र जिम जाणि, सुतन 'वीठळ' सुभियाण ।।
यम कहै धणी अजमेर वो, छित सू माया छडियै ।
चित च्यंत पच तत्तह तणी, मरण रणे सो मडियै ।।२०।।

मिळै वाय मधि वाय, सुन्नि मधि सुन्नि समावै ।
तेज तेज मे मिळै, पिंड धर माइ मिळावै ।।
आप आप मिळ जाय, रहै अपणो नह कोई ।
सत रज तम जिस मांय, जकौ ले देय समोई ।।
नह तात न मात न भ्रात पुणि, उड़ै हस राखै कवण ।
टगटगी लाय रहियै जितैं, भरियौ तजि जाये भवण ।।२१।

---

१९ हळमळ – हलचल । दावा – अधिकार प्राप्ति का वाद । उजू – ईश्वर की इबादत के पूर्व हाथ मुह की सफाई । निवाज – नमाज । तसब्बी – माला । रसण – जिव्हा से । अला अला – अल्लाह, अल्लाह । आरणि – युद्ध मे । रटक्क – टक्कर । लेबा – लेने । कटक्क – सेना । बिहु – दोनो ।

२० भुजाळ – बलवान् । भीच – योद्धा । ससगा – सगोत्र । कोकि – बुला कर । दिढै – दृढता के साथ, स्थिर भाव से । दिवाणां – परिवार-जन, सभासद, राजा । धरम पुत्र – युधिष्ठिर । सुभियाण – श्रेष्ठ । छित – चित्त, पृथ्वी, इस लोक । पच तत्तह – पचतत्व ।

२१ वाय – वायु, पवन । सुन्नि – शून्य, आकाश तत्व । समावै – मिले । पिंड – शरीर । धर मांइ – पृथ्वी मे । आप – अपने अपने मे । सत रज तम – सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण । जकौ – वह । हस – प्राण, जीव । कवण – कौन । टगटगी – ताक, चितवन । लाय – लगा कर । भरियौ – भरापूरा, सम्पन्न । भवण – भवन घर ।

काढो काढो कहै, मोह माया सह मूकै।
पुत्र कळित्र परिवार, सकळ त्रखवत मसकै॥
दीठि दीठि हूं डरै, असह सह हाय अलख्खौ।
प्रीति रीति परिहरिय, रटै नारी नह रख्खौ॥
भ्रम यह फिरतौ ही भलो, सीस पडै जेती सहैं।
आवजे कामि यण वासतै, कुळि सौहडा राजा कहै॥२२॥

पिडि ऊपडिया प्रसिद्धि, लच्छि कीरति पाईजै।
गज - गाहण रावता, धारि साम्हा धाईजै॥
ससत्र भग सब अग, तूटि पडसी तग तगा।
ईस सीस पळ पखि, वरै सुर-कवरि बरंगा॥
ध्रम स्याम रहै जस ऊघरै, मुणै गौड आपौ-मलो।
भडि मरण भलो रिण भौमि रै, खाट भजि मरबो भलो॥२३॥

यम राजा ऊमरा, सकळ समोदि सग्यान।
जेमि क्रस्ण अरजुन्न, पय समजाय निदान॥
यम अग्या ऊचार, सजौ जुध तणौ सरूप।
भाई काको भीच, रूप आय बड रूप॥

---

२२ काढ़ो काढो – निकालो निकालो। मूकै – छोड कर। कळित्र – स्त्री। त्रखवत – भयातुर। ससकै – सशकित। असह – शत्रुवत, असह्य। परिहरिय – छोड, त्याग कर। भ्रम – ब्रह्म। फिरतौ ही – घूमता ही रहना। जेतो – जितनी। आवजे कांमि – काम आने की आज्ञा का भाव। सौहडां – योद्धाओ को।

२३ पिडि – युद्ध। ऊपडिया – आक्रमण करने, मरने से। लच्छि – लक्ष्मी, द्रव्य। लच्छि कीरति – कीर्ति रूपी धन। गज-गाहण – युद्ध। धारि – शस्त्र धारा। साम्हा – सम्मुख। धाईजै – जाइए, बढिये। ससत्र – सशस्त्र। तग तगा – पृथक पृथक टुकड। ईस – शिव। पळ – मास। पखि – मासाहारी पक्षी। सुर-कुवरि – अप्सरा। वरगा – टुकडे, क्षताग। ऊघरै – प्रकट हुए। मुणै – कहता है। आपो मलो – अपने बल पर भरासा रखने वाला, शक्तिशाली। खाट भजि – पलग तोड कर। मरबो – मरना। भलो – अच्छा।

२४ यम – इस प्रकार। पय – पास। समजाय – समझा कर। अग्या – आज्ञा। सजौ – तैयारी करो। आय – आयु।

येकत मत सह ऊचरै, करै दान पूजा करै।
आबरी वरण भड़ आजि रा, धख खळा ऊपर धरै ॥२४॥

छंद छप्पय यकभ्भडो

राम तणां बदरां, जिसा राकस रावण रा।
अति करां ऊधरां, वपू जेहा बावण रा॥
अगनि हूत आकरा, अनड येहा वोयण रा।
नाहर जिम नाहरा, दाह देहा दोयण रा॥
पाहडा गजां घड़ पेलणा, जीतण आजि स जुद्ध रा।
काम रा खरा सजि बगतरां, असा भीछ 'अनुरुद्ध' रा ॥२५॥

छंद नीसाणी

असा भीछ 'अनुरुद्ध' जिका, जुद्ध गौड स जाण।
गोपावत माझी अगज, सज्जै सिलहाण॥
भाखर पाखर भीडियां, अद पाखर बाण।
कळह बार केल्हण-हरा, जेहा जमराण॥
वळि पातळौत बाखाणिजे, दळ भीछ दिपाण।
अडीखभ अड बालउत, जमरूप जिसाण॥

आबरी – अविवाहित। धख – कोप दृष्टि, इच्छा। खळां – शत्रुओ। धरै – धारण करें।

२५. राकस – राक्षस। करां – हाथो के। ऊधरां – उदार, उद्धार करने वाले। वपू – वपु, शरीर। बावन रा – वामन के। आकरा – तेज। अनड – पर्वत, अनम्र। येहा – ऐसे। वोयण – पैर। नाहर – सिंह। जिम – जैसे। दाह देहा – दाह देने वाले, नष्ट करने वाले। दोयण – वैरी। पेलणा – पेलने वाले, खदेडने वाले। खरा – पक्के, दृढ निश्चयी। असा – ऐसा। भींछ – योद्धा।

२६ जिका – वे। सजाण – जानिये, सज्जित हुए। गोपावत – गोपालदासोत। माझी – मुखिया। अगज – अजेयी। सिलह्राण – कवच। भाखर – भाखरोत। पाखर – गज-अश्वादि के कवच। भीडिया – कस कर बांधे हुए। कळह बार – विपत्ति काल, युद्ध काल। वळि – फिर, पुनः। दिपाण – शोभायमान होते है। अडीखभ – जबरदस्त। अड – हठीले। बालउत – बाला के वशज। जिसाण – जैसे।

पचायत भूप पेखियै, पूरा वपु पाण।
ठावा भड मारीठ रा, दावा दीयाण ॥

सातळवता सूरिमा, कसिया केकाण।
मालावत धरियां मछर, बर बीर बखाण ॥

सिंघ जेमि सिंघण-हरा, आवध ऊफाणं।
लाखणवत भाजण लखा, येहा अप्रमाण ॥

खोखरवत बाखाणिजै, सावत अवसाण।
वळि नाथावत वेखिजै, देदावत दाण ॥

भड बाकारण भूतिया, ताणै बळ ताण।
सकरावत जुध सूरिमां, ओठभ अवसाण ॥

बेलहावत रण भडा, असमर ऊबाण।
सांगावत सावत सिरै, दोय राह दिवाण ॥

औडा पैडा हालणा, अहडावत आण।
झीथरिया जाडा झडा, लडबा लोहाण ॥

कटहडिया लखणोर का, बस गौड बखाण।
चमर बध खधार का, करि कहे बखाण ॥२६॥

पाणं – बल मे। **ठावा** – चुने हुए। **दीयाण** – देने वाले। **सातळवता** – सातल के वशज। **केकाण** – घोडे। **मालावत** – माला के वशधर। **मछर** – गर्व। **सिंघण-हरा** – सिंघण के पौत्र। **आवध** – आयुध, शस्त्र। **ऊफाण** – उमडते है। **लाखणवत** – लाखण या लाखा के वशज। **भाजण लखां** – लाखो को मारने वाले। **खोखरवत** – खोखर के वश वाले। **सावत** – सामत। **अवसांण** – अवसर। **नाथावत** – नाथा के वशज। **वेखिजै** – देखे जाते हैं। **देदावत** – देदा के वश के। **दाणं** – दानी। **बाकारण** – ललकारने। **भूतिया**– प्रेत तुल्य। **ताणं** – खीचे। **ओठभ** – रक्षक, आश्रय, शरणस्थल। **अवसाण** – अवसर पर। **असमर** – तलवार। **ऊबांण** – नगी रखने वाले, युद्धार्थ तत्पर रहने वाले। **सिरै** – श्रेष्ठ। **दिवाण** – राजा। **औडा पैडा** – कठिन मार्ग पर। **हालणा** – चलने वाले। **आणं** – आन के। **झींथरिया** – झीथर स्थान के। **जाडा झडा** – घने झडे या समूह। **लोहाण** – शस्त्रो से। **कटहडिया** – स्थान विशेष मे निवास करने वाले। **लखणोर** – स्थान विशेष के निवासी।

नोट .—इस छद मे गौड क्षत्रियो की विभिन्न शाखाओ के नामोल्लेख है।

छंद छप्पय

वम गौड बाखांणि, जिता घमसाणि स जीतण ।
सबै सूर सामत, पबै जेहा अभैत पण ॥
सबै बधि सन्नाह, सबै पाखर हय साजै ।
सबै पराक्रम सिद्धि, उदधि सामत स आजै ॥
अनुरुद्ध जुद्ध करबा अभग, आवध बाहिबा ऊरडा ।
सूडा लकाळ डीकाळबा, रवताळा सजिया रूडा ॥२७॥

सजि रवताळा साथि, येमि दरबार स आयै ।
भडानाथ सभळै, मुकट सन्नाह मगायै ॥
'अनौ' येमि ऊचरै, जीण हयराव जडावौ ।
सिरी बाधौ सिर सोभ, पछै पाखर पहरावौ ॥
बधि सिलह आप वळि बधि, बळ साकुर ठाकुर सज्जिया ।
'अनुरुद्ध' जुद्ध करबा अभग, वीर घौर नद बज्जिया ॥२८॥

छंद नीसार्णी

बीर घौर नद बाजि येमि, सजिया चक्रवत्ती ।
फौजां सबदळ फूलिया, हूलिया हसत्ती ॥
जोडाई चढिया जकौ, भाई 'जसपत्ती' ।
काका साधक कामरा, अधिका अधपत्ती ॥

---

२७. **जिता** – जितने । **घमसाणि** – युद्ध । **जीतण** – जीतने वाले । **पबै** – पर्वत । **अभैत पण** – अटलपने वाले, अडिगता वाले । **सन्नाह** – कवच । **हय** – घोडे । **उदधि** – समुद्र । **आजै** – युद्ध । **बाहिबा** – चलाने । **ऊरडा** – जोश से, उमड कर । **सूडा** – हाथी । **लकाळ** – सिंह । **डीकाळबा** – (?) । **रवताळा** – रावत पदधारी, वीर ।

२८. **रवताळा** – योद्धा, क्षत्रिय । **येमि** – इस प्रकार । **भडांनाथ** – सेनापति । **सभळै** – सुना । **सन्नाह** – कवच । **अनौ** – राजा अनिरुद्धसिंह गौड । **जीण** – घोडे का चारजामा, पलाण । **हय राव** – अश्वराज । **सिरी** – श्री, घोडे के ललाट का आभूषण । **पछै** – तदनन्तर । **साकुर** – घोडे ।

२९. **चक्रवत्ती** – चक्रवर्ती राजा । **फूलिया** – प्रफुल्लित हुए । **हूलिया** – झोके, आगे बढाये । **हसत्ती** – हाथी । **जोडाई** – जोड मे, बराबरी के । **जकौ** – वह । **जसपत्ती** – जसवतसिंह गौड । **अधपत्ती** – अधिपति, राजा ।

'भाऊ' चढिया रेणिसा, साऊ समजत्ती ।
'तेजा' चढिया जोरवर, बहता रवि रत्ती ।।
'जोरावर' चढिया जरूर, नाहर निरत्ती ।
दीनां दान स छडिया, मडिया मसलत्ती ।।
'नवला' 'सकता' नरिंद रा, दो वहलायत्ती ।
'रुकमांगद' रिण राखिबा, क्रवरा कीरत्ती ।।
'अचळा' गिर अचळा जिसा, रुपि चलै न रत्ती ।
कहै 'किसौवर' कांम रा, भारथ्थ अभत्ती ।।
सुज भाई काका समेति, छजिया छत्रपत्ती ।
पुन्यम चद प्रकासिया, नखख जाणि नत्ती ।।२९।।

छंद छप्पय

नख जाणै नाखित्र, सकळ जोधार सपाणं ।
बिंव जाणि राकेस, बीचि राजा बहौ-जाण ।।
कहियौ राव 'किसौर', जेमि देवासुर जाणं ।
दीपै 'सावळ दास', अटळ ध्रुव जे आराणं ।।
ये भट्ट ठट्ठ ठिल्लै अठिल, अघराजा व्रद ऊधरै ।
दस अस लिये सपति दिसा, कळहणि अध बाटौ करै ।।३०।।

साऊ – भली प्रकार । बहता – चलते हुए । रविरत्ती – सूर्य की काति जैसा । निरत्ती – तत्पर । दीना – गरीवो को । छडिया – छोडा, दिया । मसलत्ती – गुप्त मत्रणा । वहलायत्ती – युद्धातुर । राखिवा – रखने । गिर अचळा – पर्वत, पहाड । जिसा – जैसा । रत्ती – तनिक सा भी । भारथ्थ – युद्ध । अभत्ती – अभय, अडर । सुज – वह । समेति – सहित । छजिया – सजे, शोभित हुए । नख – नक्षत्र । नखत्ती – चद्रमा ।

३० नाखित्र – नक्षत्र । बिंव – प्रति छाया । राकेस – चन्द्र । बहौजाण – बहुज्ञानी । देवांगुर – वृहस्पति । दीपै – शोभा पाता है । ध्रुव – ध्रुव, मस्तक । आराणै– युद्ध मे । भट्ट – भाट । ठट्ठ – झुण्ड, ठाठ । ठिल्लै – धकेले गए । अठिल – नही ठिलने वाले । दसअस – दशमास । सपति – सम्पत्ति, धन । कळहणि – युद्ध मे । अधबांटौ – आधा हिस्सा ।

छंद नींसाणी

कळहणि अध बाटी करै, सिलहा जे सारा।
अनुरुध हदा ऊमरा, जुध जाण अपारां॥
'हरदा' सुंदरदास रा, बिरदा बेपारा।
जोगावत रावत जुडण, सांमत सिरारां॥
'सिवा' 'महेस' महेस सा, करि क्रोध करारा।
'राम' 'डूंगर सीह' रणे, डूगर उणिहारा॥
'केसवदास' अकास पाज, लकी कोधारा।
साकुर 'सूर' नरिंद सुत, भुज भाखर भारा॥
महा खग बाहै मरद्द, 'केसवा' करारा।
दूठ दळा पातिळ दुवा, दाखियै 'दवारा'॥
सूर 'अनायत' सारिसा, मैंगळ मोहारा।
सो कज्जळगिर सारिसा, बादळ बरिखा रा॥३१॥

छंद दोहा

बादळ बिरखा रा बणै, 'अना' रा गज येह।
सिरी सपख्खर सोहिया, दिग्गज दीरघ देह॥३२॥

---

३१ सिलहा – कवचो। सारा – तलवारो से। हदा – का। जुध जाण – युद्ध-विद्या मे निपुण। बेपारां – अपार। जुडण – लडने मे। सिरारा – उच्च-कोटि के, श्रेष्ठ। महेस सा – शिव जैसा। करारां – बलवान। डूगर – पर्वत। पाज – मर्यादा, सीमा। लकी – सिंह। कोधारा – क्रोधालु। साकुर – घोडा। भाखर – पहाड, भाखर के वश वालो मे। भारा – भारी, बडा। महा खग – बडी तलवार। बाहै – चलावे। करारा – ताकतवर। दूठ – वीर। पातिळ – प्रतापसिंह। दुवा – अन्य, दूसरा। दवारा – द्वारका-दास। सारिसा – सदृश्य। मैंगळ – हाथी। मोहारां – मोहरे का। कज्जळगिर – कज्जलगिरि, विंध्यगिरि। बरिखा – वर्षा।

३२. अना – अनिरुद्धसिंह। सिरी – हाथी के ललाट का आभूषण विशेष। सोहियां – शोभित हुआ। दिग्गज – दिशाओ के हाथी। दीरघ देह – विशालकाय।

छंद छप्पय

दीरघ दिग्गज देह, येह मयमन्त 'अना' रा ।
गयण जेमि गाजता, मुणँ भाद्रव मझारां ॥
फौज डंमर फाबिया, फबँ धज अमर फरक्के ।
हरवळ कीध हठीह, जोध बरणो अव जक्के ॥
दळ लाख मद्धि ऊर्धा दिपै, खळां लाख हूता खहै ।
सिरदार लार खटतीस रा, लाख लाख मुजरा लहै ॥३३॥

छंद त्रोटक

लख लाखन के भुज दण्ड लहै । कवि नाम तिता बळि ठांम कहै ॥
परमारह सूर 'जूझार' पुणँ । सिरदार जको जुधवार सुणँ ॥
धर धार उधारण हार घणो । वप जेणि घणी खत्रवाट बणी ॥
सिध रूप 'जसो' सिध रूप सदा । दळ मारण - हार मदा दुरदा ॥
'मोहकम्म' जिसा मोहकम्म मही । कथिये बळ भाय न जाय कही ॥
वळि 'क्रन' जिसो बलि 'क्रन' बळां । 'क्रमसेनि' जिसा अकळक कळा ॥
सिंघ जाणि 'सुजाणह सिंघ' सिरै । फरिये दळ जो पछिमाण फिरै ॥
तवि 'डूंगर' डूगर सीह तणो । घण सार वहै जुधवार घणो ॥
जुध 'केसरि' 'खा समसेर' जुवा । हरवल्ल भला तिण साथि हुवा ॥

---

३३ मयमन्त – मदोन्मत्त । गयण – आकाश । मुणँ – कहे जाते है । भाद्रव – भाद्रपद । मझारा – मे । डंमर – शोभा । फबँ – शोभित होते हैं। धज – ध्वज । अंमर – आकाश । फरक्के – लहराते हुए । जक्के – उन, जिनका । ऊर्धा – ऊँचे । दिपै – शोभित होते है । खहै – नाश करे । लार – पीछे । खटतीस रा – क्षत्रियो के छत्तीस राजवशो के । लहै – लेते है ।

३४ तिता – उतने का । बळि – फिर । ठांम – स्थान, ठिकाने । पुणँ – कहलाते हैं । जको – वह, जो । धार – धार राज्य, मालव प्रदेश का धार नामक नगर । धणी – स्वामी । वप – वपु, शरीर । जेणि – जिसका । घणी – अधिक । सिध – सिद्ध, शकर । मदां दुरदा – मस्त हाथियो के । मोहकम्म – दृढ । भाय – प्रकार । बळां – बलवान् । अकळक – निष्कलक । कळां – शक्ति, कला । सिरै – श्रेष्ठ । फरिये – फिरने पर । पछिमाण – पीछे की ओर । फिरै – लोटे, मुडे । तवि – कहो । घणसार – बहुत तलवारे या शस्त्र । घणो – अधिक । जुवा – अन्य, दूसरा, अलग । भला – अच्छा, बलवान् । तिण – उसके ।

पिंड लौहन मेळ घणा पहलां । बर बीर यता बहला बहला ॥३४॥

छंद दोहा

बहला ही बहला बणै, रण-गहला रजपूत ।
मैमता मदि मारिवा, सामत जिता सपूत ॥३५॥

छंद छप्पय

सामत सबै सपूत, सबै जमदूत स जाणै ।
हेट हेट अविनास, पास अणठिल अप्रमाणै ॥
परां बग सुळिताण, 'साहि सूजा' दळ सज्जै ।
उरां 'सलेमासाहि', करण गजगाह स अज्जै ॥
'जैसाह' चढै रिमराह जुध, घडा मेळि अबधी घणौं ।
मन साहि येक आणद मे, येक पतिसाहि उणमणौं ॥३६॥

छंद दोहा

यक पतसाह उणमणौं, भय लागै यण भाय ।
जिण ऊपरि 'जैसाहि' नृप, बधी तेग सनाय ॥३७॥

छंद छप्पय

सुज वधीय सनाह, किता बहला कछवाहा ।
'सूरसिंघ' सारिसा, अनै 'महासिंघ' उमाहा ॥

पिंड – शरीर । लौहन – शस्त्रो । मेळ – मिलाने । घणां – बहुत से । यता– इतने । बहला – युद्ध करने के लिए अत्यधिक आतुर, उतावले ।

३५ रण-गहला – रणोन्मत्त । मैमंता – हाथियो के । मदि – मस्ति । मारिवा – नाश करने । जिता – जितने हैं ।

३६ हेट हेट – छोटे से छोटे भी । अणठिल – न ठेले जाने वाले । परां – उधर, उस ओर । बंग – बगाल । उरां – इधर, इस तरफ । गजगाह – युद्ध । अज्जै – आज । रिमराह – शत्रु के संहार के लिए, युद्ध । घडा – सेना । मेळि – मिला, भिडा । अबधी – तीनो प्रकार से । घणौं – अधिक । उणमणौं – अन्यमनस्क, उदास ।

३७ भांय – तरह । सनाय – सन्नाह, कवच ।

३८. किता – कितने ही । अनै – अन्य । उमाहा – उत्साहित ।

'फतैसिंघ' रण फतै, हुवै जित हुवै सदा ही ।
'तेजसिंघ' तरसिंघ, अवर वौळगै असा ही ।।
'हदमल्ल' तणा 'रिणमल' हठी, गज ढल्ला रिण गाहिबा ।
अजमेरि धणी आमैरि छळि, बधि बधि साबळ बाहिबा ।।३८।।

छंद दोहा

बधि बधि साबळ बाहिबा, मन उमगै 'मथुरेस' ।
सो दाता जुधि सूरमा, दळा उजाळै देस ।।३९।।

छंद छप्पय

दळा उजाळै देस, जको मथुरी जाणीजै ।
वंध जेणि समवडी, ईढ 'मधकर' आणीजै ।।
सूर धीर संग्राम, नाम हृदा छळ जग्गै ।
मंडिये लोहमराट, अनड जेहाण अडग्गै ।।
ये गौड ठौड तिण ही अठिल, ठौडा ठौडा पण थट्टां ।
स्याम रै कामि आखाडसिंघ, कध सहुवै कवचट्टा ।।४०।।

छंद नींसाणी

कध सवाहै कवचटा, ऊपटां अपारा ।
'वळभद्र' तणो वखाणिजै, 'तेजो' तिण वारा ।।

जित – जिधर, जिस पक्ष पर । तरसिंघ – वीर । वौळगै – पहिचानते हैं, कीर्ति करते हैं । असा ही – इसी कोटि के । गज ढल्ला – हाथियों के रक्षक, महान् वीर । गाहिवा – रौंदने, नाश करने । छळि – लिए । बधि बधि – बढ बढ कर । साबळ – भाले, बर्छे ।

३९ बाहिवा – चलाने । उजाळै – उज्ज्वल करें ।

४० जको – वह । जेणि – जिन, जिस । समवडी – समान के, बराबरी के । ईढ – बराबरी के, हठ । मधकर – माधोसिंह । लोहमराट – जबरदस्त । अनड – पहाड़ । जेहाण – जैसे । अठिल – अटेल, जिन्हे कोई इधर उधर हटा न सके । थट्टां – समूह । कध चट्टा – (?)

४१. सवाहै – उठाये हुए चलाता है । ऊपटा – बढ़ कर । तेजो – तेजसिंह । तिण वारा – उस समय ।

खाडाहथ खगार रा, बधिया बहसारां ।
'रूपा' जेहा राठवड, भजण गज भारां ।।
चत्रभुज का बणवीर का, भाखरा भलारां ।
पचायण नाथावता, कीता अधिकारा ।।
सूर नरूका सामता, अणचूक उदारा ।
भारमला सुरताण का, जोगी जुहारा ।।
पूरणमल रूपसिंह का, भजण गज भारां ।
आसकन कलियाण का, घण जांण अपारां ।।
राजधरा हम्मीर का, खेहावत खारा ।
कुभावत कुभाणिया, जाणै जोधारा ।।
राजावत चढिया रुडा, सेखावत सारा ।
वळ वळ सैदाना बजै, घणघोर नगारा ।।
वळ वळ वणै बंदूकची, खड़ि खुर-खधारा ।
वळ वळ पायक नच्चता, घायक घणवारा ।।
वळ वळ धज्जा फरकती, पचरग प्रकारां ।
वळ वळ बाणवि राजिया, घमसाण मझारा ।।
वळ वळ ठमकै बीरघट, मैमन्त मदारा ।
वळ वळ घमकै पाखरा, चमकै चौधारा ।।
वळ वळ जोधा बहसिया, दे सेल सलारा ।
हाहुळी माची हैवरा, गैवरा गूजारा ।।

खाडाहथ – खड्गधारी । बहसारां – जोश मे आकर । गजभारां – गज-समूह । अणचूक – अचूक । घणजांण – बहुज्ञ । खारा – खारे, क्रोधी । जांणै – जानें, पहिचानें । रुडा – सुन्दर, अच्छे । सारा – समस्त । वळ वळ – बारम्बार । सैदाना – विजय की प्रसन्नता की ध्वनि के वाद्य । खडि – चल कर । खुरखधारा – कधार देशोत्पन्न घोडे । पायक – पैदल । घायक – सहारक, घायल । घणवारा – बहुत प्रहार करने वाले । धज्जां – ध्वजाएँ । फरकती – लहराती । पचरग – पाच रगो की । नोट :—आमेर के कछवाहो का राज-ध्वज पाच रग का था । बाणवि – धनुषधारी । राजिया – शोभित हुए । घमसांण – युद्ध । मझारा – मे । ठमकै – ध्वनि करते है । बीरघट – (हाथियो के गले मे बँधे रहने वाले) घटे । मैमत मदारा – मदमस्त हाथियो । चौधारा – भाले विशेष । बहसिया – उत्साहित होते है । सलारा – (?) । हाहुळी – हलचल । माची – हुई । हैवरा – घोडो की । गैवरां – हाथियो का । गूजारा – गर्जना ।

यों चढिया जैंसिघ दे, चढिया दळ लारां ।
जांणि सुमेरु बिराजिया, कुळ आठ मझारां ।।४१।।

छंद दोहा

आठ कुळी जेहा अनड, जैंसिघ रा जोधार ।
बरणता लागै बरस, जो बरणौं बहु बार ।।४२।।

छंद छप्पय

जो ब्रणौ बहु बार, बस कूरम्म वडाळौ ।
महाराजा 'जैंसिघ, यता' बिरदा उजवाळौ ।।
'प्रथीय राज' 'कुंतिळ', मुणै 'पज्जून' 'मलेसी' ।
कथ भाराथा कीध, कथा नहिं जिता कळेसी ।।
मानहर असै अभिमान मे, भडि कुतळ दळ भगियौ ।
सद नद्द सुणै 'सूजा' तणा, पचायण जिम जग्गियौ ।।४३।।

छंद दोहा

जाणि पचायण जग्गियौ, रायसिंघ रिमराह ।
मानव कोई रच्चियौ, दाणव रूप दुबाह ।।४४।।

यों – इस प्रकार । लारां – पीछे । बिराजिया – बैठा । कुळ आठ – आठ कुली पर्वतो । मझारां – मध्य, मे ।

४२ अनड़ – पहाड, वीर । लागै – लगे, बीते ।

४३. कूरम्म – कूर्म, कछवाहा । वडाळौ – वडा, महान् । यतां – इतनें । मुणै – कहते हैं । पज्जून – पजवनराय । भारथां – युद्धो मे । जितां – जितनी, विजय की । कळेसी – युद्ध । मांनहर – राजा मानसिंह का पौत्र । असै – ऐसे । कुतळ – भाला । पंचायण जिम – सिंह की भाति ।

४४. रिमराह – शत्रुओ को पराजित करने वाला । दाणव – दैत्य । दुबाह – वीर ।

छंद छप्पय

दांणव रूप दुबाह, राव कमधज्ज रढोजै ।
'अमर' तणौ आदीत, पात परभात पढीजै ।।
छात सकळ छत्रिया, बात राखण जुध-बारां ।
गात जियै बयराट, ठाठ ठेलण चवधारा ।।
ऊ पाट पाट 'गजबध' रै, लड़बा कजि बगतर लिया ।
ऊससै भुजा लागा अरसिं, बळा बळा भड बहसिया ।।४५।।

छंद दोहा

बळा बळी भड बहसिया, ऊससिया उमराव ।
उदैभाण' चढिया अभग, समहर 'स्याम' सुजाव ।।४६।।

छंद छप्पय

समहर 'स्याम' सुजाव, 'भाण' चढियौ अणभत्ती ।
मुणि 'जोधा' 'रिणमाल', साथि चढिया समजत्ती ।।
कसि तुरिया कैजमां, बाधि भूथाण वरम्मां ।
सु जमाति गौरख्ख, जाणि चलि आया दुगम्मा ।।

---

४५ रढ़ीजै – हठ करने वाला । अमर तणौ – राव अमरसिंह का तनय । आदीत – आदित्य, (कुल) रवि । पात – कवि । परभात – प्रभात काल मे । पढ़ीजै – पढा जाता है, स्मरण करते हैं । छात – छत्र, (छत्रधारी) राजा । गात – गात्र, शरीर । बयराट – विराट, विशाल । ठाठ – सेना, समूह । ठेलण – धकेलने वाला । चवधारां – भाले से । ऊ – के, वह, उस । पाट – राज्यासन । गजवध – महाराजा गजसिंह । ऊससै – जोश मे उमड कर । अरसि – आकाश । बहसिया – जोश मे आए ।

४६ समहर – युद्ध । स्याम – श्यामसिंह । सुजाव – पुत्र ।

४७ भांण – उदयभान । अणभत्ती – इस प्रकार । जोधा – राव जोधा के वशज । समजत्ती – समान बल वाले । कैंजमां – एक शस्त्र विशेष । भूथांण – भाथे, तूणीर । वरम्मा – कवच । गौरख्ख – गौरक्षनाथ योगी की । दुगम्मां – दुर्जय, योद्धा, दुर्गम ।

छंद त्रोटक

दळ ऊलटियो दरियाव जिसा । अणभग चढ़े दळ साह असा ॥
घुवि टंक निसाण सु नीघसिया । कड - भीड़ जिके गयदा कसिया ॥
करनाळि वजै उवनाळि करा । पडि गाज अवाज समद परा ॥
सुर सिंधुव यो सहनाय वजै । वरघू रिणतूर गरूर गजै ॥
गजनाळि गजा गजनाळि गजा । सुत्रनाळि सुत्रा धरि लाल धजा ॥
नर झालि वदूक अचूक कहै । असवार वहां उमहै उमहै ॥
तोहि तोरि गजा धज उवरये । अदभूत झळमळ अमरये ॥
कट साहि-सुजानव तोग तवै । खग पायक नगिय झालि खवै ॥
कट कोतिल मोर कला करता । भणि पंग फिरै डकरा भरता ॥
सुन आगळि झालि मुदगरय । गुरजा - वरदार प्रहार गय ॥
सुरताण चढै जदि सिंधुरय । कड गोळ चदोळ हरोळ कियं ॥
हरवल्लह कूरम राव हठी । जयसीघ जको रणवीग जठी ॥
जिण रै हरवल्ल 'दलेल' जिसा । जमराण जिको दइवाण जिसा ॥
समसाग स जीतणहार घणा । तवि ठांण पठाण हरोळ तणा ॥

४४ दळ – सेनाएं । ऊलटिया – उमड़े, उलट कर आए । दरयाव – समुद्र । अणभंग – बहादुर । साह – बादशाह के । असा – ऐसे । घुवि – लग कर । टक – टंके, चोट । निसाण – नक्कारे । नीघसिया – बजे । कडभीड – [illegible] । जिके – जो । कसिया – कसे । करनाळि – करनाल नाम का बाजा । उवनाळि – दुनाली बन्दूकें । गाज – गर्जना । परा – पार, उस पार । सुरसिंधुव – सिंधु राग का स्वर । सहनाय – शहनाई । [illegible]

कठठे बेऊ साह चढै स कड़ै। अणभग दिली सिर जग अड़ै ॥५५॥

छंद दोहा

अडिया अणभग येरसा, दिल्ली सिर दइवाण।
समरि 'सलेमासाहि' सा, अरु 'सूजै' सुलिताण ॥५६॥

सो 'सूजै' सुलिताण हू, जोध करैबा जग।
कड़ाभीड़ हरवळ किया, तीस हजार तुरग ॥५७॥

छंद छप्पय

तीस सहस हथ तुग, सजिय 'जयसाह' हरौळह।
ता प्रमाण सुलितान, पासि गैथट्ट स गौळह ॥
बीस सहस चदौळ, रवद रिमराह सरज्जिय।
विहु बाजुन वरबीर, सहस दस दस भर सज्जिए ॥
यक लक्ख सैनि दिल्लीसुरह, बजि निसांन घन गज्जियौ।
चहु वोर जोर जसवळ फिरहि, मोर व्यूह दळ सज्जियौ ॥५८॥

छंद दोहा

मोर व्यूह दळ सज्जियौ, तास सुदिन सुलितांन।
फागुन सुदि येकादसी, सवत नौ अठ जान ॥५९॥

कठठे – कठठ की ध्वनि हुई। कड़ै – निकट। अणभग – वीर। सिर – पर। जग – युद्ध। अड़ै – अड गये, रुप गए, भिड गए।

५६ येरसा – ऐसे। दइवांण – योद्धा, राजा। समरि – युद्ध मे। अरु – और।

५७ करैवा – करने के लिए। कड़ाभीड – कवचादि से सुसज्जित। तुरंग – घोडे।

५८ हयतुग – अश्वसमूह, अश्वसेना। ता – उसी। पासि – पास मे। गैथट्ट – गजसेना। गौळह – सेना के मध्य भाग मे, मध्य भाग की सेना। चदौळ – पीछे के भाग की सेना। रवद – मुसलमान। सरज्जिय – तैयार किए गए। दिल्ली-सुरह – दिल्लीश्वर, बादशाह। घन – मेघ। जसवळ – जोश दिलाने वाले। मोर व्यूह – मयूर व्यूह।

५९. तास – उस, वह।

अवसाण सिद्ध मारू अटळ, निडर राय अद उद्धरै।
'क्रमसेणि' जही क्रमसेण हर, कथ समथ्थ भारथ करै।।४७।

छंद दोहा

कथ समथ्थ भारथ करै, 'भोजराज' भैभीत।
कछवाहा चाढण कळा, रणरावत रणजीत।।४८।।

छद छप्पय

रणरावत रणजीत, 'भोज' यम चढै भयकर।
भूरो भड भैभीत, डोहे फौजा आडबर।।
जुद्ध केइ जीतियौ, प्रगट भड पूर पमाडा।
पिडि पडि पड़ि ऊपडै, वोप यम चढै सिवाडा।।
'मांन' रो जोध 'खगार' जिम, कछवाहो चाढण कळा।
सन्नाह दुबाहां सज्जि करि, बीर चढै रण बावळा।।४९।।

छद दोहा

बीर चढै रण बावळा, 'दरिया' सुतण 'दलेल'।
सूजा सिर खग साहिया, विढण करेबा खेल।।५०।।

छंद छप्पय

विढण करेबा खेल, खान चढियौ खग साहे।
अग जको बजरग, सूर ढापिया सनाहे।।

जहीं – ज्योही। हर – पौत्र। समथ्थ – समर्थ। भारथ – युद्ध।

४८ भैभीत - भयभीत, शत्रुओ को आतकित करने वाला।

४९ भूरो – योद्धा, वीर। डोहे – मथन करे। आडबर – ठाठ-बाट।
पूर – पूर्ण। पमाडा – प्रवाडे, विरुद, कीर्त्ति। पिडि – युद्ध मे। ऊपड़ै – उमड कर, उठे, दौडे। वोप – ओप, कान्ति। सिवाडा – समीप वालो के, सीमान्त वालो के। रण बावळा – रणोन्मत्त।

५० सुतण – पुत्र। साहिया – सम्हाले, उठाये हुए। विढ़ण – युद्ध का। करेबा – करने।

५१. खान – दलेलखा। खग साहें – कृपाण ग्रहण कर। जको – वह। बजरग – वज्रांग, वज्र जैसा अति दृढ अग वाला। ढापिया– ढका हुआ, आवेष्ठित। सनाहें – कवचो से।

मैमंता गाजता, अनै ताता अैराकी।
रुहेला रिमराह, बाह देखता कजाकी ।।
धर गाजि बाजि हुव धूहळा, दिल्ली सिर दावा दिया।
जैसिंघ तणै हरवळ जको, करण फतै मुहरै किया ।।५१।।

छंद दोहा

करण फतै हरवळ किया, खा दलेल गजखभ।
सूजा हू जुध सूत्रहे, आरभ कीध अभग ।।५२।।

आरभे आरभ यह, समर 'सलेमा साह'।
यो उमगा भड़ आज रा, गगा तट गजगाह ।।५३।।

छद छप्पय

गंगा तटि गजगाह, करै मसलत्ति करारा।
चढिया साहि 'सलेम', सफळ चढ़िया दळ लारा ।।
सैद 'बहादर' जिसा, 'मीरजाफर' भुजमडे।
दहू कीध चदोळ, खूर फौजा खरहडे ।।
तरगाळ राव 'रासो' तवै, बरंगाळ 'अनुरुध' बणै।
गै-जूथ दळा ऊडै गिरद, ऊहजळा करि ऊफणै ।।५४।।

मैमतां – हाथियो। ताता – तीव्रगामी, तेज। अैराकी – घोडे। बाह – भुजा, प्रहार। कजाकी – कज्जाकी, यम, भयकर वीर। धूहळां – तोपें। जकौ – वह। फतै – विजय। मुहरै – आगे।

५२ गजखभ – गजस्तम्भ, शक्तिशाली। सूत्रहें – प्रारम्भ करने, बांधने। अभग – वीर। समर – युद्ध। गजगाह – युद्ध।

५३ मसलत्ति – परामर्श, विचार विमर्श। करारां – जबरदस्त, कौल करार। दळ – सेना। लारां – पीछे। चदोळ – सेना के पृष्ठ भाग की सैनिक टुकडी। खूर – समूह, घोडे। खरहडे – सेना, घोडे, योद्धा। तरगाळ – बाँए पार्श्व की सेना। बरगाळ – दाहिने पार्श्व की सेना। गै-जूथ – गज समूह। गिरद – धूलि। ऊह जळा – बहते जल मे बहने वाला कूडा कर्कट।

सवत नो अठ पच सद, और स मगळवार ।
गगा तटि भारथ रच्यो, कर झल्लै किरवार ॥६०॥

छद चौपाई

कर झल्लै किरवार करार । असपति दोय हुवा असवार ॥
देव घुनि तटि मडि दूवाह । आरभ सिभु घणौ ऊमाह ॥६१॥

छंद छप्पय

आजि रभ ऊछाह, आजि सिभु नारद आये ।
आजि प्रेत पळचरा, ऊठि डक्कार अघाये ॥
आजि साहि दोय अडै, आजि निबडै सो वत्ती ।
पहर येक दिन चड़ै, जुडै जोधा समजत्ती ॥
है धूजि धरा हाहुळी हुई, चढै साह सेना चडी ।
ऊपडी गरद मडळ अडी, आजि घडी दोय ऊघडी ॥६२॥

छद भुजगी

सग्राम वरनन

घडी ऊघड़ी येमि वज्जै त्रधाय । चढै सीघ 'जैसीघ' रायानराय ॥
पडै पाखरां रोळ धजा फरक्कै । भाला बीठिया पखि मारग्ग थक्कै ॥
दळ ऊतरे येमि गगा दुबाह । मिळै पातिसाहा मिळै पातिसाह ॥

---

६०. **सवत नो अठ पच** – सवत १७१५ । **भारथ** – युद्ध । **रच्यो** – रचा, किया । **कर** – हाथ मे । **झल्लै** – पकड़ कर, ग्रहण कर । **किरवार** – कृपाण ।

६१. **करार** – बलवान् । **असपति** – अश्वपति, शाहजादे । **देवधुनि** – गगा । **तटि**– किनारे । **दुबाह** – वीर । **आरंभ** – युद्ध, सग्राम । **सिभु** – शिव । **घणौ** – बहुत, अत्यधिक । **ऊमाह** – उत्साह ।

६२ **रभ** – अप्सरा । **ऊछाह** – उत्सव । **पळचरां** – मासभक्षी । **डकार** – तृप्ति पर निकलने वाली कण्ठध्वनि । **अघाये** – तृप्त । **निबडै** – निपटे । **वत्ती** – बढकर, श्रेष्ठ । **समजत्ती** – समान वीर । **हाहुळी** – हलचल । **चडी** – चढी सवारी की । **ऊपडी** – उठकर । **गरद** – रजसमूह । **मडळ** – आकाश, सूर्य मडल । **अडी** – लगी, स्पर्श की । **उघड़ी** – खुली ।

६३ **त्रधाय** – नगारो की ध्वनि । **रोळ** – आवाज । **धजां** – ध्वज । **बीठिया** – घिर कर । **पखि** – पक्षी । **थक्कै (तके)** – देखते है ।

पहल्लां बहल्ला हला की पठाणा । बगा ऊपड़ी मेळिया साहि डाणा ॥
अराबा धडक्कै उड़ै सोर बाणा । करै कुडळा जोध ताणै कबांणा ॥
तहा छटिया तीर ते बीर तेहा । खतग उरा लागै उडै पार खेहा ॥
परा वग सुलिताणा 'सूजा' स वाही । मुगल्ला मिळै घाणमथ्थाण मांही ॥
तुरगा मिळै येमि मंहम्मद तातो । मुगल्ला पठाणा दढा रीठ मातो ॥
पड़ै रीठ नाराजिया बाढ पूरां । करै सिभू माळा बळै रभ सूरा ॥
कुरम्मा अबै वाग लीधी कडक्कै । धरा पाखरा तुरा हूता धड़क्कै ॥
भिड़ै 'भोज' भाराथ जिम भारी । 'सुरौ' जोध 'परताप' रौ आप सारी ॥
सको बाहतो सेल बदि बादि सूरौ । भडा टूक करतो खगा बाहि भूरो ॥
'महासीघ' सेखाधणो अणी माझी । रणे साहि सूजा तणो सेनि साझी ॥
'फतैसीघ' करणो फतै गाहि फौजा । महासूर दातार रिझवार मौजा ॥
करा कूत ऊपाडि भेळै कटक्कां । झाझा लोह री बौह लीधी झट्टका ॥
'तेजै' कान्ह रै येमि भडिजाळ तोरै । अडाभीड फौजा बिचै दीयौ वोरै ॥
धसै साबळां तणा बाजै धमोड़ा । घाये मेळिया 'मथुरादास' घोडा ॥
'माधोदास' बरहास मेळै समेळा । भड़ा काटि कीधा घणा धरण भेळा ॥

बहल्ला – उतावाले । हला – हमला । बगां – वागें । ऊपडी – उठी । डाणा – समूह । अराबा – तोपखाना । धडक्कै – धडकता है, गर्जता है । सोर – बारूद । बाणां – बन्दूकों से । कुडळा – कुण्डल, गोल घेरा, मण्डलाकार । ताणै – खींचे । कबाणां – धनुषों को । ते – वे । बीर – बावन वीर, गण । तेहा – तैसे । खतग – बाण, घोडे । उरा – इधर, वक्षस्थान । पार – उधर, पार निकल कर । खेहा – धूलि । परां – इधर, दूर । घांण मथ्थाण – भयकर युद्ध, सहार, उथल-पुथल । तातो – तेज, उतावला, वीर । दढ़ा – दृढ - शरीर । रीठ – प्रहार । मातो – घनीभूत । नाराजियां – तलवारें । बाढपूरा – पूरी धार सहित । कड़क्कै – कडक कर, गर्ज कर । धरा – पृथ्वी । तुरा – घोडो । सको – वह । बदि बादि – हठपूर्वक, बद बद कर । भूरो – योद्धा । सेखा धणी – शेखावतो का मुखिया । अणी – सेना । माझी – मुखिया । साझी – सहार की । गाहि – नाश कर । मौजां – प्रसन्न हो कर । कूत – भाला । ऊपाडि – उठा । कटक्कां – सेना । झाझा – गहरा, घनें । बोह – बहुत । झट्टका – प्रहार । जाळ – व्यूह । अड़ाभीड – अधिक भीड । वोरें – झोक दिए । धसै – घुसते है । साबळां – भाले । धमोडा – धमाधम की ध्वनि । बरहास – घोडा । घणां – बहुतो को । धरण भेळा – धरती मे मिला दिये ।

समर वाहतौ सेल अणठेल 'सागौ'। असौ लाख फौजा धसै फाडि आगौ ॥
तिहू जोध 'हृदमाल' रा माल तेहा। अनड आभ थभा दियै भोछ येहा ॥
रुडा 'रूप' राठोड तिठोड रढियौ। चकाव्यूह हाथो तणै दाति चढियौ ॥
नरूको कहे राव 'कलियाण' कोपै। असौ आज सिरदार गजभार वोपै ॥
हुई बार 'कुसलेस' रौ फतै हाथा। नरा चाढणौ नीर रणधीर नाथा ॥
वणै ऊमरो वार 'खगार' बीजौ। कहै राव राजा सुरा रूप कीजौ ॥
भणै भाट गजथाट भाजण भुजाळा। अभग राव भाई विन्हैं 'परस' वाला ॥
गहर राव 'गिरवर' गिरा जिसा गाढा। दला टाक मांझी दहु वेधि वाढा ॥
'अखौ' भी भूझार आकार आडी। लडणवार फौजा तणौ टाक लाडौ ॥
कहर-बार तिण राव 'रासो' करारो। भलो आयौ मामा तणौ मदति भारी ॥
मुणै बाकुडा पाघडा तणा मारू। समर आविया साहि काम सारू ॥
बिलदां चढै छकिया लोह बागै। असौ सिंघ 'गोयंदा' रौ 'हरी' आगै ॥
महामत्ति वाळै महामत्ति वाळै। कळह बाहि चौधार 'भूझार' काळै ॥
अनै ऊहडा राव 'गोयद' येहा। जियै कवंर 'हरराम' वरियाम जेहा ॥
बिन्है बाघुळा सिंघ वहसिया बहल्ला। पिसण पाडता जोध मांझी पहल्ला ॥

अणठेल – अडिग। **सागौ** – सग्रामसिंह। **असौ** – ऐसा। **धसै** – प्रवेश कर। **आगौ** – आगे। **तेहा** – तैसे, जैसे। **अनड़** – वीर। **आभ-थभा** – आकाश थाभने वाले। **भोछ** – योद्धा। **येहा** – ऐसे। **तिठोड** – उस ठौड। **रढ़ियौ**– हठ धारण किया। **चकाव्यूह** – चक्रव्यूह, युद्ध। **दाति** – मुह पर, दात पर, भिड गया। **कोपै** – कुपित होकर। **असौ** – ऐसा। **गज भार** – हाथी का वजन, बडा दायित्व। **वोपे** – शोभा पाता है। **नीर** – कान्ति, चमक, जल। **ऊमरो** – उमराव। **बीजौ** – दूसरा। **भणै** – कहता है। **भाट** – भट्ट, महेश दास कवि। **गजथाट** – हाथियो की सेना। **भुजाळा** – वीर। **गिरा** – पहाड। **गाढा** – दृढ। **टाक** – भाटो की टाक जाति। **वेधि** – युद्ध। **आकार** – बलवान्, आकृति। **आडौ** – आड, रक्षक। **कहरबार** – विपत्ति काल मे। **उस**– वह। **मामा तणौ** – मामा की, मिर्जा राजा जयसिंह की। **वांकुडा** – वक्र, टेढे। **पाघडा** – पगडिया। **तणा** – का। **मारू** – राठोड। **समर** – युद्ध। **सारू** – लिए, सिद्ध करने वाले। **बिलंदां** – विलद, बडे (वीर)। **बागै** – बजने पर। **महामत्तिवाळै** – महाबुद्धिमान, अत्यधिक मतवाले। **कळह** – युद्ध। **चौधार** – भाला विशेष। **काळै** – वीर, हाथी। **जियै** – जिसका। **वरियांम** – श्रेष्ठ वीर। **जेहा** – जैसा। **बिन्है** – दोनो। **बाघुळा** – भूखे। **बहल्लां** – रणो-त्सुक। **पिसण** – शत्रु। **पाड़ता** – गिराते।

दळा 'चद' दूजो रघुनाथ दीठौ। तठै घाति हयराज भ्रगराज तीठौ।।
'बन्नराज' चढै बाज सिरताज बेली। झाझी फूलधारा तिका सीस झेली।।
जठै 'सुंदरी' 'भावसी' तणो जाणै। वडो वीर वीराधि माझो बखाणै।।
असी-वार मे 'स्याम' री जोध 'ऊदो'। जुडण काज भेळो सदा रहत्त जूदो।।
हुबे बीर हाथी किया बीर हाका। डडाळा बबाळा छळे बाजि डाका।।
कटै सध नै बध कधा करग्गा। पड़ै टोप माथा झडै सार झग्गा।।
भभक्कै घणा घाव मांहे असुंडा। कमध नाचिया जोगणी भरै कुडा।।
गयदा छुटै बहे येमि नाळि गोळा। दुगम्मा फरे अणी पातिसाह दोळा।।
निपट्ट साहि रा जकै बेली नजीकी। झलै गुरज्जा-दार गुरज्जा नझीकी।।
घडा ढालडा ऊपरा व्है धमका। गुरज्जा तणा येमि बाजै गमका।।
रुडा कामि आणे मोहे काम राणै। कवे 'सगर' पोतो क सूतो कहाणै।।
सिसोदो सदा सेवतो येमि कासी। बिढे थयो वैकुट हदो बिलासी।।
हबै छूटिया पाव सुलिताण हदा। बढै खेत पडिया किता मीर बदा।।
नमे नीसरै साहि बैठो निवाडै। अभगनाथ 'जैसाहि' जीतो अखाडै।।६३।।

दीठो – दीखा। तठै – वहाँ। भ्रगराज – सिंह। तीठो – तेज, तीव्र गति। बाज – घोडा। बेली – सहायक। झाझी – गहरी। फूलधारां – तलवार के प्रहार। तिका – वह। तणो – पुत्र, का। जोध – पुत्र, वीर। ऊदो – उदयभान। भेळो – शामिल। जूदो – अलग, जुदा। हुबे – भिडे। डडाळां– नक्कारे। बबाळा – नक्कारे। छळे – युद्ध। डाकां – डके, नक्कारे की चोट। करग्गा – हाथ। झडै – कट कर गिरे। सारझग्गा – लोह कोट, कवचादि। भभक्कै – उमडता है। घणा – बहुत। मांहे – मे। असुडा – ललाट, सिर। कमध – धड। नाचिया – नाचे। जोगणी – योगिनी, रणदेवी। कुडा – रक्त-पात्र, खप्पर। नाळिगोळा – तोपो के गोले। दुगम्मा – कठिनता से। अणी – सेना। दोळा – चारो ओर। निपट्ट – बिल्कुल। जकै – जो। बेली – अगरक्षक, सहायक। नझीकी – निकट के। घड़ां – शरीरो। ढालडा – ढालो। आणे – आने। मोहे – मुग्ध, मुह आगे। कवे – कहते है। सगर – राणासगर। बिढ़े – युद्ध मे। थयो – हुआ। हबै – अब। बढ़ै – किता – कतिपय। मीर बंदा – अमीर जादे, सेवक। नमे – नमकर। नीसरै– निकल गया। बैठो – पुत्र। निवाडै – समाप्त होकर, हार मान कर। अखाडै – युद्ध मे।

छंद दोहा

आखाड़ै 'जैसिंघ' नृप, ऊभौ हथ्थ उपाडि ।
'जामबेग' 'अनरुद्ध' जुडि, रण बरणौं सोहि राडि ॥६४॥

छंद चौपई

रण बरणौं सोहि राडि रचिया ।
मार मार चहुवै दिस मचिया ॥
महाराजा जुडिया 'अनपाल' ।
नद्द बजै गजै करनाळ ॥६५॥

षचनिका

करनाळो का सौर । धमक बजे घनघोर । अराबो की आवाज । जुरे 'अनुरूध' महाराजाधिराज। कोहोकबान चद्रबान, छूटतै हैं । तारे आसमान सै तूटते हैं । सुलतान नवारे को गया । 'जामबेग' खरा रया । बात करते बेर लगै । जोधा जुडै कायर भगै। 'राव किसौर' सै यौं फुरमाया। 'जामबेग' चलाय आया। 'बेग' के पीलवान नै हाथी डाल्या। पाहर जैसा पगा चाल्या । येते दरम्यान कौन खडा रहै । हाथी का धका हाथी सहैं। फौजदार 'साहि यनायत'के सै यो फुरमाया । अपरना हाथी डालि गनीम का हाथी नभीक आया। हाथी सै हाथी लड्या । वज्र जैसा टूटि पड्या । पील नै पीलवान भजाया । अपणी फौज मे मारि लाया । राजा नै अपणा फौजदार चढाया । पहली फतै का हाथी पाया । राजा के हरौळो नैं साहिजादा के छत्र चमर मारि लीया । साहिजादा जाणै दीया ॥६६॥

---

६३ ऊभौ – खडा । हथ्थ उपाडि – शस्त्र उठाए हुए । सोहि – वह । राड़ि – युद्ध ।

६४ मार मार – मारो मारो की ध्वनि । अनपाल – अनिरुद्ध सिंह । नद्द – वाद्य । करनाळ – करनाल, एक प्रकार का वाद्य ।

६५ सौर – आवाज, ध्वनि । अराबो – तोपो । कोहोकबान – तोप विशेष । चद्रबांन – तोप विशेष । नवारे – निपट गया, समाप्त होकर गया । डाल्या – डाला, झोका । पाहर – पहाड । पगां – पैरो । पील – हाथी । पीलवान – गजारूढ योद्धा, महावत । मारि लीया – छीन लिए । जांणै – जाने ।

छंद दोहा

साहिजादा जाणै दिया, महा मची रणमार ।
पहला बहला भेळिया, पिडि भाखरां पमार ॥६७॥

छंद छप्पय

परमारां मझि सूर, वीर भाखरां रढाळौ ।
या पैला वौरिया, वीर बहला बिरदाळौ ॥
पुणि पैंतीस पमार, गौड भड बीस गिणाणा ।
करि छूटा लंकाळ, ताळ मेळै सुलिताणा ॥
पाछाडि झाड़ि द्रोयण परां, घण थाटा हय घल्लियौ ।
आडबर देखि फौजा तणा, चमू छत्र दिस चल्लियौ ॥६८॥

छंद दोहा

चमर छत्र दिस चल्लिया, ये बहला उमराव ।
'जामबेग' 'अनुरुध' जुडै, घण बग्गै रण घाव ॥६९॥

छंद त्रोटक

राजा अनुरुध को जुध

घण घाय बजै रणफौज घडी । पडि बाण कबाणह रीठि पडी ॥
झखि आगि अजागि खाग झडी । कटि कध बगत्तर तूटि कडी ॥
बहि धार अपार चौधार बहै । किलकार करै भड मार कहै ॥

---

६६ बहला – शीघ्रता करने वाले, जल्दबाज । भेळिया – झोके । पिड़ि – युद्ध ।

६७. रढाळौ – हठीला, युद्धालु । वौरिया – झोके । पुणि – फिर, कहते है । करि – मानो । लकाळ – सिंह । ताळ मेलै – ताल मिलाकर । झाडि – सहार । द्रोयण – बैरी । परां – दूर, उस तरफ । घणथाटां – सघन सेना । हय – घोडा । घल्लियौ – डाला । आडंबर – वैभव । चमू – सेना ।

६८. घण – घना । बग्गै – बजा । घाव – प्रहार ।

६९. घण घाय – घने घाव । बजै – लगे । रीठि – प्रहार । झखि – प्रज्ज्वलित । खागझड़ी – तलवार की झडी, तलवार से गिरी । कडी – शृ खला । चौघार– भाले । किलकार – हर्ष ध्वनि, किलकने की क्रिया । मार – मारो मारो ।

हयराज चढै तिण वार हठी। जुध भार पड़े सिरदार ऊठी ॥
'भावसिंघ' अनै 'रिणछोड' भणै। पहली रण दाखिय सूर पणै ॥७०॥

छंद दोहा

दाणी ऊपरि दोवड़ी, सुर राणिया समाज।
विढि रण मंडळ भेदियौ, सुत 'भाखम' सिरताज ॥७१॥

छंद त्रोटक

सूर मंडळ भेदहि सूरि समैं। चवसट्ठि नचैं तहा बीर रमैं ॥
घन घाय सपूरन सूर मिळैं। झटकान की बाह दुबाह झिलैं ॥
कर बाहत सावत सागि कही। यत तैं उत तैं यक बेर बही ॥
मुगलै तेंहि ठौरि कबान गही। यक बार ही मार अपार भही ॥
सिरदारन के जह लोह लगै। घन घाय छकै पुनि खेत वगै ॥
हयराज की बाग उपारत ही। सिरदार तहा कर सागि गही ॥
सु त्रभगिय बाहिय यू तरछी। सु बगत्तर फौरि गई बरछी ॥
जिह बेर 'हरी' जस सेर भयौ। चक्रब्यूह नमाइ चलाय गयौ ॥
बहु बाहत है रण तेग बळी। तिह बारह दीरघ धार चली ॥
'भावसिंघ' जहा रणसिंघ भयौ। 'रनछोड' जहा रण मांडि रयौ ॥
पुनि 'जैत' जहा रन उपरिय। भर घावन तै घट यौ भरिय ॥
बरियाम 'करन्न' को खेत बग्यौ। जहा राव'किसोर'के गोरा लग्यौ ॥

हयराज – श्रेष्ठ घोडे पर। तिणवार – उस समय। ऊठी – उधर ही। भणै – कहते हैं। दाखियै – कहिये। सूरपणै – शूरपने में।

७० दाणी – बराबरी के। दोवड़ी – दौड़ लगाकर। सुरराणियां – देव पत्नियां, अप्सराएं। विढि – कट कर।

७१ चवसट्ठि – चौसठ रण देवियां। बीर – बावन वीर। रमैं – खेलते हैं, क्रीडा करते है। घनघाय – घनें घाव। सपूरन – सम्पूर्ण। झटकान – प्रचण्ड प्रहारो। दुबाह – दुधर्ष वीर। झिलैं – झेलते हैं, सहते है। सागि – साग। यक वेर – एक साथ, एकवार। गही – ली। छकै – छाके हुए। खेत – रण-क्षेत्र। वगै – वीरगति प्राप्त हुए। बाग – वल्गा, रास। तहा – वहां। सागि – वर्छी। त्रभगिय – तीन धार वाली साग। बाहिय – चलाई। तिरछी – टेढी। जस – जैसे। नमाइ – झुका कर, भग कर। मांडि रयौ – करता रहा। घट – शरीर। बरियांम – श्रेष्ठ योद्धा। गोरा – गोला।

यक गोरा लग्यौ मुर तीर लगै । दोउ भाट भयै रिन ठाठ अगै ।।
उततै यक मीर बळी निकस्यौ । तिह ऊपरि 'सावर' यो बिहस्यौ ।।
बहतानि कमानि को तीर दियौ । यह सागि सै मारि सुमार कियौ ।।
तवि 'सूदर' को 'हदमाळ' तहां । जब जोर परयौ तिहि वार जहा ।।
'नवलौ' सकतेस' को यौं निहस्यौ । मनु बीजळ सी खग लै बिहस्यौ ।।
'रुकमागद' अगद ज्यौ रन मे । घनघाय करै अरि के घन मे ।।
'अचळौ' अचळौ 'अनुरुध' अगै । रनरोह लियौ तन लोह लगै ।।
सब सूरन मे सु 'जोरावर' सै । रन रूप कियै रुद्रावर सै ।।
सब सूरन की उपमा बरनौ । रनखेत हि फाग बसत मनौ ।।
अगु लाल गुलालन तै अरचै । मनु रग पतगह के चरचै ।।
सिरदार लौ सार अपार भये । रन भान जहा रथ खैंचि रये ।।
जब भाजि गनीम की फौज गई । जिह ठौरन गौरन बाग लई ।।७२।।

छद छप्पय

गौरन बाग उपारि, राज सिरमौर स गौरनि ।
सबै सूर सामत, छकै घायन तिह ठौरनि ।।
भट्ट सु भट्ट 'किसोर', राय नूप बाग स झल्लिय ।
जिह सुबेर 'हरजस्स', आय आडौ हय घल्लिय ।।
रन जीति खेत ठढ्ढै रहे, 'जामबेग' नकसै गवय ।
कवि कहै 'महेस' येकादसी, महा भयकर जुध भवय ।।७३।।

मुर – तीन । रिन – रण । निकस्यौ – निकला । बिहस्यौ – जोश मे आया । बहतांनि – चलते हुए । सुमार – अच्छा प्रहार, उसके प्रहार । निहस्यौ – निकला । बीजळ सी – बिजली जैसी । घन – समूह । अचळौ – अचल । रनरोह – युद्ध मे स्थिर हुआ । रुद्रावर – महादेव के । अरचै – अर्चा । पतगह – लाल । चरचै – चर्चित । भान – सूर्य । खैंचि – रोक कर । गनीम – शत्रु । गौरन – गौडो ने । बाग लई – घोडो की लगामे पकडी ।

७२ घायन – घावो से । झल्लिय – पकडी, ली । आडौ – सहायतार्थ, विमुख । हय – घोडा । घल्लिय – डाला । नकसै – निकल । गवय – गया । भवय – हुआ ।

छंद दोहा

जुध महा भयक्रत भवय, कहि 'महेस' कविराव ।
पहर येक अति ही प्रबळ, घन बग्गै रिन घाव ॥७४॥

छंद छप्पय

पहर येक पर पहर, गहर भर सार स बग्गै ।
मार मार ऊचार, धार धाराह रन बग्गै ॥
तिहिं सुबेर हरवल्ल, छात्र वारो गज घेरचौ ।
डारि छत्र नेजा सम्हाय, मैंमत्त सु फेरचौ ॥
उपारि हथ्थ भालो हन्यौ, भर टरि घोरैं के लग्यौ ।
'रूप' दई 'रांम' फिरि सागि की, बार येक लोहा बग्यौ ॥७५॥

छंद दोहा

बार येक लोहा बग्यौ, गज तैं परचौ स मीर ।
छत्र उचाय लीन्हौ जहा, सूर परमार सधीर ॥७६॥

छंद छप्पय

छत्र लयौ तहां बीर, मीर 'रामह' रन मारचौ ।
जान दयौ सुलितान, मही सिर बौल उवारचौं ॥
गौर राज रन जीति, जहा ठाढै जहा आयै ।
आन पत्त बधाय, भूप को कध नवायै ॥

७३　घन – घने । बग्गै – युद्ध हुआ, बजे, लगे । रिन – रण मे ।

७४.　धार – शस्त्रधार । धाराह – सेना, तलवार की धार । छत्रधारो – जिस पर छत्र था वह । घेरचौ – घेरा । नेत – निशान । मैंमत्त – हाथी । फेरचौ – घुमाया, फेरा । हन्यौ – मारा । भर - योद्धा । टरि – बच कर । घोरैं – घोडे ।

७५　उचाय – ऊपर उठा कर । परमार – परमार जाति के ।

७६　बोल उवारचौ – वचन निवाहा, वचन-पालन किया । ठाढ़ै – खडे थे ।

महाराज चलै सुलितान पै, सब उचाय घायल लयै।
अदभूत जहा बिबव वन्यौ, साहि लाय हिय से लयै ॥७७॥

गवय साहि पै सूर, जाय कै छत्र सु दीन्हौ।
जिह सुवेर सुलितान, महा उच्छाह सु कीन्हौ ॥
फिरि राजा से कह्यौ, फतै तुम से हम पाई।
पतिसाही हम करै, तुमैं दीनी पतिसाई ॥
सुलितान बहुत सनमान करि, सैदाना बाजे सही।
जिहि ठौर साहि 'अनिरुद्ध' को, खासा असवारी दही ॥७८॥

छद दोहा

खासा असवारी दई, जेह ठाढै सब आन।
दै घोरे सिर पाव दै, बहुत कियै सनमान ॥७९॥

छद छप्पय

अभगनाथ 'जैसिघ', जीति ऊभो आखाडै।
बाबाडै अणबीह, सीह जिम मच्छर उपाडै ॥
सैदाना बज्जिय भजिय, रिम साह स 'सूजा'।
कळा चद जिम चढी, पातिसाहे खग पूजा ॥
महि दीय फतै मामारखी, येमि कटक सह ऊलह्या।
पूरब कथा जुद्ध जै प्रसन, कवि 'महेस' बरनन कह्या ॥८०॥

॥ ईती श्री कवि महेसदास कृत बिन्हैरासो पूरब जूध संपूरन लिखत महताप
सतपूत्र जोरावर सींघ कस्य पठनार्थ अगरजी सतपूत्र प्रतापजी कस्य
मती वैसाख सुदी २ सोमवार पूरो हुवो सवस[त] १८७६
राजै श्री सिवस्यहजी इन्द्रगढ़ मद्ये लिखी
श्रीराम रांम रांम ॥

लाय – लगा।

७७ गवय – गोड। उच्छाह – उत्साह, उत्सव। सैदाना – विजय की प्रसन्नता के वाद्य। खासा – खास।

७८ घोरे – घोडे।

७९ अभगनाथ – वीर सेनायक। आखाड़ै – युद्ध-स्थल। बाबाड़ै – गजना की। अणबीह – निडर। मछर – मात्सर्य धारण कर। रिम – शत्रु। कळा– कान्ति। चद – चन्द्र। खग – तलवार। मामारखी – बधाई। कटक – सेना। ऊलह्या – उल्लसित हुए। कह्या – कहा, किया।

परिशिष्ट (१)

कवि की अन्य ऐतिहासिक कृतियां

क रांणा राजसिंघजी में गुण राव महेसदास कृत



छंद छप्पय

अइ अइ अलेख भेख केते ज्याहा भ्रमै।
जळ सज्या सिवरूप कमळ किये नाभि स भ्र मै ।।
ब्रह्म थियै विभ्रंम पेखि महणारभ पाणी।
तप तप हूता तरण बोलि आकासह बाणी ।।
तप धरै त्यार अदभूत मे सहस कोटि लागा बरस।
वैराट घाट पाह पलब दीधी त्यार निधी दरस ।।१।।

अप्प दि अप्प उच्चारि आदि थट्टै नारायण।
वेद भेद विस्तारि पकिर लोकेस परायण ।।
कीट भ्रंग जिम किया च्यार मुख वेद उचारा।
विस्व मंडळ विस्तारी करण कीध करतारा ।।
उण कीध मंडे दीसै यता धरा सीस बासिक धरै।
रवि करै दिवस रजनी'र चंद सकळ देव दाणव करै ।।२।।

देवा नै दाणवा द्वंद आदेर जुगादे।
वरण कवण वरणवै वरण देवा अनुवादे ।।
असुर जिता ऊपनै तिता धरिया अवतार।
भार करै भव सीस तिताही बार उतार ।।
सत जुग जुग त्रैता सुथिर धुर द्वापर लग यम धरै।
कळि जुग करै चवथै कळा करि हिंदू मेछह करै ।।३।।

देवा नै दाणवां तेमि हिंदू तुरकाणा।
चित्रगढ दिल्ली चाव सरव राणा सुरिताणा ।।

गहलोतां चगथवां सार बधै समजत्ती ।
आप आप मग परै बाज जे करै बिरत्ती ॥
नरनाथ सहसना जिसै करणि रहस पूजै कही ।
जिण मुख सुरह मद सचरै जवन मुख्ख जोवै नही ॥४॥

कळंकी वत राइया जिया केदार कळाकळ ।
पापी जिया पिराग जिता मदवा गगाजळ ॥
हत्यारा हिंदुवा तेता बाणारस ।
आस ऊपादब पुणै मुणै पीरव समदारस ॥
सुरताण गहण मोखण सदा आतपत्ता सिर उल्लहै ।
राजसी चिरुद हम्मीर का कवि महेस बरणन कहै ॥५॥

महि मडळ मेवाड़ जिका दस-सहस सु गाम ।
बरण च्यार सुख बास घरनि साद धाम ॥
विकट अनड बेछाड जूह जगळ वन जेते ।
जळ पग पग ऊजळा तिहुं रति साख स तेते ॥
आलब सुरह देवा द्विजां परम सरूप परस्सिय ।
राजसिंघ राण भूतेस रुख दोय यकलग दरस्सिय ॥६॥

नगन नगन प्रति नगन तिनहि अतर सळिता सर ।
पिखी करत किलोळ अरुन सित बिबधि वर ॥
चक्रवाक सारस विसाळ जळ काक स जीवत्त ।
आडि ढक बक अनत कुरज तट हिक यत उत्त ॥
उपकठ तरन अति सघन वन नलन नलन जळ सीत बहु ।
कळिराय इद्रपुर ते कलित कपोत कठमनि मोर कहु ॥७॥

तट तटाक सैंबाळ जाळ पखी परि डोलत्त ।
जळ उज्जळ भासत्त भूमि लहरी व्यग बोलत ॥
कबहु नीर तट परसि उदधि सबद उपजावत ।
कमळनाळि पतकपत जात बहो सो फिरि आवत ॥
समीर सग अनुसरत रो निज येकत सोऊ निरत ।
जिस कौऊ सजन अति सजन कौं पहुचायर पीछौ फिरत ॥८॥

सत सळित नेत्र नकुलि विमळ जह वाल विछतं ।
कहु दळ दळ कहु पक करी कहु तीव्र छित ।।
करत ग्राह कहु केलि तिरत कच्छप त्वविय ।
कहु वन नागिन नाग कलभ ले कै सकुटविय ।।
पय पियत अब छटित अनत कमळ पत्त पूगन करत ।
नहिं आवत स्वास समीर तै मद मद गति अनुसरत ।।६।।

छद वेलि भुजगी

कहू गज कपोल मजै सवारे । कहु लेत है वही करनीन लारे ।।
कहू नीर उछारि सूंडे उछारे । मनौ सीस मोती क कढै तिवारे ।।
कहू रौद ढाहत छाया विरोधै । कहु सूधि हथनीन की गाज सोधै ।।
कहू व्रद के बीच ठाढै विलासै । कहु मूल राजीव काढै हुळासै ।।
कहूं द्वार वाराह पीवै विरोधै । धरा दाढ तै मोथि कै दत खोधै ।।
भय सिंघ कं आवत सव भज्जै । जहा येकलौ वैठि कै आप गज्जै ।।
कहू बाघनी बाघ छौनान लीयै । पय घाट विघाट तै आनि पीयै ।।
गिर श्रृंग जा तै परै नीर धार । गत ऊछटै ऊचरै यो अपार ।।
जल जरजर सीकर तैं बखानं । जहा श्रम तै ऊपजै स्वाद जान ।।
कहू कुड नीके भरै वारि पूर । हरी दूर्वा लेत नीके हिलोर ।।
कहू भोलनी भील गुंजा समेटै । दरी ग्रेह जामे सिंघ लेटै ।।
कहू नृत केकीन मडे सुन्यारे । पर कप तै पूछ के छत्र धारे ।।
कहू म्रगनी म्रग के ससोही । मनौ म्रग के मोह से रभ मोही ।।
कहू म्रगसाखा सो साखा हिलावे । द्रुम येक तै कूदि येक आवै ।।
लगै उद्र तै डाभ डारी न लावे । फल तौरि चक्खे केई डावे ।।
कहू साभर नीलगाव कहीजै । कहू आरनै ढक तै कप भीजै ।।
कहू गज्ज सा पाय आवत गैडा । वन घूजि प्रथी सू धावत वेडा ।
कहू चीतळा मारि भखत चीता । करी नख्ख तै खड विहड कीता ।।
कहू जाति जामोद की जीति गावै । उनै मेद तोके घिसै केस आवे ।।
कहू सिद्ध गिर किन्नरां मद्धि सेवै । दिढ ध्यान लग्गैत आनद लेवै ।।
कहू सग नारीन स्नान कीडा । वसन जहां मूकि मुखेति व्रीडा ।।
रिखं अजुली देत सिध्यात वर्वै । जिन वसन पत्र भोजन कर्धै ।।
वन व्रनन प्रवत कीध वारू । सोये अप्पनी अप्पनी वुधि सारू ।।१०।।

छंद दोहा

बुधि सारू कवि बरणिया, पति मेवाड़ पहाड़ ।
राण प्रतपै राजसिंह, अतुळित बल बेछाड ॥११॥

छंद छप्पय

दोय राह पतिसाह दोय दोय तखत दिपाणौ ।
छत्र दोय ससि सूर दोय क्रामत्ति कहाणौं ॥
खग दोय खळ खंड दड द्रोयणा अडडा ।
हिन्दू तुरक हजुरि पाण द्रोयणा प्रचडा ॥
अदभूत बिहु आखाड - सिघ कथै जाय निरबळ कहू ।
जाजुळी तेज जग ऊपरां दिल्ली उदियापुर दहू ॥१२॥

उदियापुर यण अवनि जिसौ अमरापुर जाणौ ।
इद्र राण अवतार बिभौ ग्रह जेणि बखाणौ ॥
गज घटा रव गाज बणै वैरक्ख विभत्ती ।
सहल काज नीसरै हद मद पूरि हसत्ती ॥
अबूजिया काच मचै यती भुज गयद फण भीजिवै ।
मैनाक जिसा हलता मही दिग्गज मीढ न कीजिवै ॥१३॥

सद मद्दा सिंधुर तरा नाग ले त्रबका ।
धूर पूर धूधळा निगड गड़ाहि निसका ॥
मद जोखा माल्हणा बाग पेलणा वरम्मा ।
ओछाडी ढकिया उभै बड दान भरम्मा ॥
राति दिन कध चढिया रहै पीलवान त्या ऊपरा ।
राकेस जेमि गोडो - रवद्द केइ विनोद छदाकरा ॥१४॥

चरक्खी पेलै गडदार मद जोख मदगळ ।
बारहमण तोडा पचीस लगरये सब्बळ ॥
जे रगै रोळी जगाळ सिंदूर नूर सिर ।
ऊजळ दत उत्तग सबै कज्जळ - गिर ॥
धरि पीलवान धुजदार धुज हाक डाक हू हल्लिया ।
राजसी राण खूमांण रा मुजरा कारण मल्लिया ॥१५॥

अळवळता उरडता अटकि रहता आवता ।
तरा धरा ढाहता खून करता खूटता ॥
छह रति ही छाकीया छठै मासे छूटता ।
.. ...　　... ..　　......　　... .. ॥

जाणियै सनिपाति जिसा लगर मदळ लग्गिया ।
राजसी राण खूमाण रा मुजरा कारण उमग्गिया ॥१६॥

मद मोकळ मैंगळा असा दूकळ आणीजै ।
पैंडा नह पाकडै जिकै वैंडा जाणीजै ॥
बाणदार चहुवळा चहुवळ गडह चरक्खी ।
जजीरा जकडिया करै तोहि नजरि कुरक्खी ॥
आपाहि करता आवता कौतूहळ पुरजन करत ।
मदिरा चढै पौ गौरख चढि चदमुखी जोवै चरित ॥१७॥

छंद दोहा

चदमुखी जोवै चरित, सहला चढै दिवाण ।
सांकुळ छूटै सिंधुरा, पमगा हुवै पिलाण ॥१८॥

छद छप्पय

श्री दिवाण गजराज आप चवगान लडावै ।
पुनि जोडी दस पांच जिकी कजि लडिबा आवै ॥
जिण जोडी व्है हुकम जिकी आगळि आय जूटै ।
गयद गयद ऊपरा तमक करि करि यम तूटै ॥
अगडा ऊपरि आय हुवै चवदत हूमल्ला ।
तूटि रदा फाःचरा फूटि कुभाथळ टल्ला ॥
रीसि जुडै मुडै भग्गै नही यसडी राडि अघाइया ।
राजसी रांण जगतेस रै भाखर जाणि भिडाइया ॥१९॥

मेदपाट खळदाट राज राजेस दिवाण ।
चवै दुरग चीतोड वळै आहड बाखाण ॥
नागद्रहा कुभलमेर जकै कवळपुर कत्थै ।
उदियापुर विख्यात मुणै हिंदवाण समत्थै ॥

राजसी राण राजे रिधु जगत जेमि प्रम ज्या जपै ।
मंताप नही ऊछह सहति तिण प्रताप तेजहि तपै ॥२०॥

असा तेज आगळे अगनि सूरिज हु दीपै ।
जुध कवण जीपवै जियं राम तिन जीपै ॥
वद बिकार मेंगळा पुणं ध्वजा फरकता ।
तत्व ग्यान की च्यत चवै परलोक स चता ॥

बाधियै काबि सागर बदा कर ग्रहियो सुकुमारिका ।
साभळै मे सब सता सदन सूना सदन ससारिका ॥२१॥

आसिक सावक घात तुरि तळ बाग फिरता ।
असु - पात ऊपजै धोम जगि होम करता ॥
वरण सकर वेखिजै मद्धि चितराम मडाणा ।
दडक कनक धारि तखत सिर छत्र दिपाणा ॥

येखियै कनक रजनीस यम विण कळक राजड सुवर ।
कर दोय जिका चकर किया कळा बिराजै सहसकर ॥२२॥

छद दोहा

सहस - किरण राजड सुवर, हिंदूवे सुलिताण ।
जळ पोखण सोहि निरजरा, सोखण जळ असुराण ॥२३॥

छद विद्रुम

सोखिवा जळ असुराण । राजसी प्रतपै राण ॥
पुरहूत प्रभुताय । रिम क्रोध हू जमराय ॥
बणिया भडार कुमेर । अवता सु तावै वेर ॥
प्रम चा कळा सु प्रमाण । दस सहस नाथ दिवाण ॥
बड तखत बखत बिळद । निज द्रस्टि रौर निकद ॥
बड मिदर ऊच बखाणि । पहाडा ऊच प्रमाणि ॥
नवखणी द्रढ सु नीव । सुज चित्रसाळिय सीव ॥
पटिया स चंदण पाट । श्रीखड केई कापाट ॥
थिर कनक रा जस थभ । यळह होय देव अचभ ॥
छजि फटिक रा छाजोळि । प्राकार दीरघ पौळि ॥

बगला गौख बणाव । मुर बारियां महलाव ।।
पच बारिया सुप्रकार । जडिया स रतन जुहार ।।
जाळिया मुकता - जाळ । आरसी आळ उजाळ ।।
प्रभता चढन सुपान । बदि और काहि बखांन ।।
सोवनी कळस सिंगार । नग हीर मद्धि निहार ।।
तणियां सु वारि उतान । छविया अनोप बिछान ।।
छजि सकळ वधै छाति । भासत तखते भाति ।।
जग - मग्ग सब जगीस । अमरावती आसीस ।।
वळि राज - पथ वरन्नि । नर सहर दूजै नन्नि ।।
हाटक पूरक हाट । बीथिया नूमळ बाट ।।
जखि कद्रप गध्रव जाणि । इंद रा पठठ आणि ।।
कहु जरै जेव जराय । कहु हेमता यक-साय ।।
कसि कनक तार कसत । रवि किरवि जिम विकसंत ।।
कहु लेत मानिक लाल । पुखिराज लेत प्रवाळ ।।
कहु पन्ना लेत परखि । दखि दखि सुदखि ।।
मुकता लरी कहु लेत । बहो मोल द्रव्य सु देत ।।२४।।

छद पद्धरी

कळ किया राय केदार कथ्थ । पापिया राय परियाग पथ्थ ।।
सरापिया राय गगा स्नांन । हत्यारा राय कासी निदान ।।
सुरताण गहण मोखण सकाव । कध राण बिरद सागण गिणाव ।।
करणेस अमर जेहा करिग्ग । खळखड रांण प्रताप खग्गि ।।
सुरति राण गति उदैसीग । धजबध राण रायमल्ल धींग ।।
कुभेण राण मोकळ कठोर । हमीर जेणि हेळा हम्मीर ।।
खेतसी अजैसी लखमसीह । अवकध रांण अरसी अबीह ।।
विद्रिया राय कळि कलिप व्रख्ख । आसवा राय कामधेनि अख्ख ।।
दातार राय करतार देव । सेवियां राय सामद सेव ।।
राजीव राय उतबग सूर । कामियां राय रुदर करूर ।।
अहकार राय जोधन अगज । भुज भीम राय भारथ्थ भज ।।
गाजीव राय भजण गरोठ । दळ गजा राय सादूळ दीठ ।।
महि अगनि राय सिर धार मेह । छिलराय राय सागर अछेह ।।
वोलिया राय वाघ वोल । तोलिया राय पहाडां तोल ।।

भागियां राय डूंगर भुजाळ। केविया राय परतखिख काळ ॥
पाळगां राय प्रसराम पैज। मूगला राय सिर डार मैंज ॥
दिल्लीस राय उर दियण दाह। साहान राय हिंदुवा साह ॥
सरणाय राय भड कोट-सार। मैमंतां राय मद्दां उतार ॥
अवतार रूप राजड स इंद। श्री आण जेण सातो समंद ॥२५॥

छंद छप्पय

आज तणी व्रतमाण दिल्ली सुरताण दुबाह।
जिणरा मुंह आगळै राह दहुवै यकराहं ॥
कवण सकै दभ काढि कवण वेद मारिग च्हल्लै।
गऊ बध देखिये साक घातिया नथ्थलै ॥
जगपती तणौ सांगण जही घर दिल्लीसर घक्खियां।
हिंदवाण घणी सुरताण हू राण पाण यम रक्खियां ॥२६॥

प्रथियनाथ दीवाण हाथ मूछा बळ ताणै।
तूठा बड करतार जाणि रूठां जमराणै ॥
दिल्ली साह आथमैं पौहमि नवखड पलट्टै।
राण आज राजसी घडा मेळिया त्रघट्टै ॥
सुतण जगपति उभत्ति सिरा चित्र खत्रवाट चग-चगो।
अकबराबाद औचक रहै दिल्ली आज दग-दगो ॥२७॥

करै राण आरभ धरा खुरसाण धकावण।
परवाना हल्लिया वस खटतीस बुलावण ॥
गिर अढार अरबुद्द पुर डूगर बासापुर।
देवळिया सादड़ी सुणै कनवज्ज सलूंबर ॥
दिवाण खग तुरका दहण झिल्ले व्रद सागण झलै।
कुण अक्खर पचमो कहै चहुं दिस रा जोधा चलै ॥२८॥

आहाडा देवडा कमघ झाला कछवाहा।
सौळकिया साखला वळै तूवर खग-बाहा ॥
भड गौड़ भाटिया जाम-कवरा जाड़ेचा।
बाढेला बैरड़ा खित्री हूला खेडेचा ॥

हिंदवाण धणी खुरसाण हू ऊखेळा ऊखेळिया ।
दस-सहस धणी दस सहस भड दळ करि पाहड भेळिया ॥२९॥

छंद नींसाणी

राय बखाण राजसी हिंदवांणा सूरिज ।
सुरताण मोखण गहण चगताण चूरिज ॥
पोहो दिल्लो धर पालटण असमर भुज ऊछज ।
उदियापुर दळ येकठा खिळि मिळिया खूरज ॥
राजा रावा रावळां रावत रज ।
बस सीसोदै समद बड़ हठ मिळै हिलूरज ॥३०॥

छंद दोहा

हठ मेळै राणै हठी ग्रेठी भौह ग्रमाण ।
ग्रवळापति ग्राळोचता सोच पडै सुलिताण ॥३१॥

छंद गाथा

ध्रम जयो ग्रध्रम पाप कुवती छयो जाते ।
कथा निगम धम काम उध्रते राण राजेस्वर ॥३२॥

छंद छप्पय

दिज दान ग्रमान निति ग्रगनति सुदीजै ।
राजेसुरहि मुख देखि येमि प्रातहि उठीजै ॥
हेमदान रुक्म जे देखि पातर समपीजै ।
पोह सुणि कथा पुराण वळै वेदा वाचीजै ॥
बहौ सिखडी डंडाळ रिस वद काफर नहिं जाणै किसा ।
तुलि-ताण रांण राजड तपै देवराण हदो दिसा ॥३३॥

मिळै बस खटतीस मद्धि उदियापुर मेळा ।
सभा मडप दिवाण भीछ थहिया सह भेळा ॥
ठौड़ ठौड ग्रापणी सोहड बैठिया सपाणा ।
प्रहसे पान कपूर वार दस बीच वटाणां ॥

करि मौज गजां बाजा किता बसो नाथ सक्र वूठियौ ।
सोहडा भडां सहता सुथिर आरोगण कजि ऊठियौ ॥३४॥

भोजन साल बिसाल भाति पाथरिया पत्ते ।
अदब अदब आपणै सोहड़ बैठिया स भत्ते ॥
कनक पाट दीवाण पाट हिंदवाण कळाधर ।
भोजन भाति भाति जिकै विंजन घरि इधर ॥
खट वरण पोखि पसु पखिया सत्त बाचा धरि सोखिजै ।
स्नांन दान निति ध्यान सु जपति दिन येता पोखिजै ॥३५॥

वचनिका

दिल्ली का लिख्या आया । श्री दिवाण खोलि बचाया ॥
साहिजिहा जहमति दबाया । दारासाहि सिर ऊचाया ॥
खजानै खोलि दीजै हैं । फौजो ते वे विदा कीजै हैं ॥
सात रोज सै पातसाह दरबार न आवै । कासीद निकसनै न पावै ॥
उमरावौं (नै) दिल चुराया । पातसाही जाणै का बखत आया ॥
कुळि राह बद कीनी । साहौं (नै) हठनाळ दीनो ॥
चीतौड़ के नाह । पातिसाहो कै पातिसाह ॥
दरहाल चादरि दीजै । जोम अरचा की मारि लीजै ॥३६॥

छंद छप्पय

रिण रावत रघुनाथ रण कोकियो रढाळी ।
धर दिल्ली धोपटा चित्त धरि येमि सचाळी ॥
यम रघुपति ऊचरै करै प्रारभ करारै ।
मालपुरे अजमेरि मुरड़ि सभरि धर मारै ॥
नर मरै नाम रहसी अमर यम चौडाहर ऊचरै ।
पुनि जनम सुव्रत रजपूत रै कथ समथ्थ भारथ करै ॥३७॥

छंद नीसाणी

उदियापुर हू उल्लहे करि क्रोध करारै ।
लाख दळा मिळिया लगस घरहर घासारै ॥

सिंधुर भाखर सारिखा पाखर पठियारै ।
ग्रहु गाठे बहता ग्राक धज नेजा धारै ।।
जाणै बादळ पावसे उतराध उभारै ।
पर राठा फेरण ऊपाट है-थाट हिंसारै ।।
रीछ हरीफ रगिया उतमग उधारै ।
घूघर चमर घत्तिया गूमर भर गारै ।।
मैज सिरा दिल्ली मरद फौजा फैलारै ।
दळ है गै-दळ पैंदळा दळ रथ्थ दिपारै ।।
मेघाडबर ग्रातपत्त सिर चमर सु धारै ।
कूरम दाढे पीठ कमठ फण वासिग फारै ।।
धडकै यम सारी धरा कसडी धर मारै ।
पडी धाक दिल्ली दसा ग्रैराक पुकारै ।।
राणै प्रारभ मडिया ग्रारभ यसारै ।।३८।।

छंद दोहा

ऊटोळा ग्रायाह, उदियापुर हू उल्लहे ।
छति डूगर छायाह, जग ऊपरि जगराण उत ।।३९।।

छद पारिजात

ऊटोळा मिळिया येह । ग्रामळा थाट ग्रछेह ।।
रीसे रवद राणं राव । घूमाडे ग्रवधी घाव ।।
छत्र सीस भडा छत्र । पाडै दिल्लो ग्रातपत्र ।।
रासो हळवद्द राण । घातणो द्रोयण घाण ।।
रटै सबळेस राव । चवाणौं मोटौ स चाव ।।
ग्रधराजिया बारखांण । दे ग्राधी गादी राण ।।
रावत राघौ बराडि । मेवाडै हदो किमाडि ।।
केहरी रावत्त काळ । सो सिरा पाड़ै सुंढाळ ।।
सामळ कमध सूर । चौरगे रवदा चूर ।।
दुरजण - सीह दक्खि । लोह बाहै घडां लक्खि ।।
राजड रावत्त रूप । भीछ मेघा तणै भूप ।।
भणं राव इद्रभांण । वीजं जगिदे वखाण ।।

चदसा माहे अचल्ल । माहेची आखाडमल्ल ॥
राघवदे झालौ राव । घणा खळां पाड़ै घाव ॥
भूपाळ जेहा भयक । लोहै क्रीति तोडौ लक ॥
गगसा मारू करूर । पमार्डा पमाडा पूर ॥
मौहोकमसिघ मांण । दूणौ तं राखै दिवांण ॥
मोहण जेहा मरद्द । हाथा जेणि हद हद्द ॥
मांनसिघ मन्नमोट । केविया उपाडै कोट ॥
सुणै राव माधौसीग । धाडिधाडि खत्रीधीग ॥
जैतसी रावत्त जोर । घाहरै नीसाण घोर ॥
माहेस जेहौ महेस । दहू करा वदै देस ॥
भावसी अभग भड । ऊपाडै जेही अनड ॥
बिहारी उधारी वेढ । तको खळा काढै तेढ ॥
सेरखां मल्लिक सेर । गज्जगाहा साहा गेर ॥
सूरताणसिघ साथि । हवै दळां पाड़ै हाथि ॥
झालौ रिणछोड झाल । पाहड़ा घड़ा प्रजाळ ॥
भावसिघ सा भुजाल । आहडा दळां उजाळ ॥
पीथळौ बिराजै पूत । सांवता माझी सपूत ॥
नरा रौ समद नीर । साहणा सामद सीर ॥
महमा समद माण । रीस रौ सामद राण ॥
जौन-घरा जळाबोळ । हाथियां उठै हिलोळ ॥
राण किना जमराण । सोच दिल्ली सुरेताण ॥४०॥

छंद छप्पय

जदिन राण सज्जव प्रथम पयांण परट्ठै ।
घड असुरा घातबा लोह घण ले ले लट्ठै ॥
भाराक्रान्त अवनि झिलै नह भार भुयगह ।
थावर सिर थरकिया मूदि नया दसमगह ॥
अवतार राण इग्यारवें हेवै-पति सिर हकिया ।
पुणि सात अनै इकवीस पुड च्यार चक्क भैचकिया ॥४१॥

छद नींसाणी

ऊटोळा हू उल्लहे बब त्रब बजाया ।
चारौं दिसा चमकियां वो रांणा आया ॥

माडळ थहिया हळमळा दहला दहलाया ।
वणहेडा फूल्या वळै केकडी कपाया ॥
भहरै राण भणाय भड थहरै थहराया ।
टळटळ टोडा टोडड़ी दळ सवळ दिखाया ॥
वाणवलख सरौंज बळ भेळसा भजाया ।
महि जोधपुर मेड़ता थरहर थहराया ॥
साभरि अबानैर का अळवळ अकुळाया ।
दहल चरक्खी दादरी सर अम्बर सकाया ॥
सीहनदी सुलतानपुर लाहौर लगाया ।
पुणि गजनी पैसोर सा कावळि कजळाया ॥
राणै भजै मालपुर धुवणण धिखाया ।
पटणहट पहट तौडि गढ खौदि गुमाया ॥
घोपटि करि सारी धरा द्रहबट्ट लुटाया ।
सोना हदा सापरति यळ मोर उड़ाया ॥
राणै भजै मालपुर धुवड़ाण धिखाया ॥४२॥

छंद छप्पय

जहा भाजि कमवज्ज जीव आसिरै सपत्तौ ।
अवरग दारासाह येमि आराण निरत्तौ ॥
येथि राण राजसी धरा दिल्ली ढढ़ोळी ।
विरोळी वीनड़ी नडी बायै कर तोली ॥
पण धरै विरद अदभूत पण भग्या भड तिय सरभरी ।
मारता सकळ नवखड मे यम अजमेरि स ऊवरी ॥४३॥

छद भुजगी

वरा डड धारै धधूर्णे धिखाड़ै । पुरां सायरां पार रा भोग पाडै ॥
सत्रा उरा मावे नही स्रास सास । वसै डूगरा किन्नरां तरा वास ॥
तरा पत्त भोजन्न वेपत्त पायै । वळै वसन वळकळ वणायै ॥
वळै म्रगनैणी तरुणी स वाली । पुळै राण ओद्राव हूता क पाळी ॥
लखै येटिया जावक्क लाल लाल । तूटै हार छूटै नग्ग छाल ॥

जकै हीडती हिंडलोटै जुवत्ती । जकै मोहणी कांमणी कामवती ।।
जकै सेज हू पाव देती न जमी । जकै भाखरां झगरा ही भरमी ।।
जकै खोहळै बाहळै नाळ खाळं । जकै पथी पथा उभाणीज पाळ ।।
जकै राजवती घणी रायजादी । सुणै सीस कूटै घणी साहिजादी ।।
लटा तौड़ि रोवै घणी मुग्गलाणी । पटक्कै सीस चूडी फोड़ै स पठाणी ।।
जहा मदिर सतं खड स भड । जहा नूपर झझर बाल झुंड ।।
जहा चदआननि झाकै उभक्कै । तिन अध्र बिब द्रग भौह कपै ।।
जहा नृत नाद संगीत म्रदग । जहा बीन बाजत बाजत चग ।।
जहा तत्कार थिकार यकार । तहा अग सुगध सौ गधसार ।।
जहा अग्गर मेदि जवादि जग । पुणै जक्खि कादम्रम घनसार पग ।।
जहा आरसी आल आरास आस । जहा चित्रसारी विसारी विलास ।।
जहा बगला गौख झाखी तिवारी । तिस प्रीति बदै जहा नाह नारी ।।
जहा पट्टन हट्ट चौहट्ट पूरं । जहा सामत रावत जोध सूर ।।
जहा मैगळं खभ बेलाल बाल । जहा ढोहि ढगूस माचत ढाल ।।
जहा बाग ताटक वापी स वारी । थट्ट पीन हट्ट वट्ट पन्निहारी ।।
जहा घूघव घौर धूमत घाई । जहा वायस चील बैठे स आई ।।
जहा प्रेत भूत सकत्ती तमासै । जहा जुग्गनी दैत चौसट्ठि रासै ।।
जहा भूत भैसासर सबै भारी । जहा फ्योंकरी बैन बोलै अकारी ।।४४।।

छद छप्पय

दुरंग खळा दईवाण पाड़ि ऊपाडि प्रजाळे ।
घाडि लगाडि उझाडि राडि खळ झाडि सराळे ।।
वसुह सिरि बाजाडि ताडि मेछायण तट्टा ।
घूणै खडगि धपाड़ि चाडि खत्रवाट कवचट्टां ।।
जिहा साहि दारा सुणै सह सूजै सुणियौ सही ।
अवरग मुरादहि ओदकै दिल्ली धर राणै दही ।।४५।।

दुंद पाडि दस देस पेस लीधी अप्रमाणां ।
निडर राण नरेस सक पचौ सुलिताणां ।।
कथा विमग्गी करै धरै ध्रुव साम धरत्ती ।
छत्रीपति खूमाण जोध जायै जगपत्ती ।।

पख उभै छीति खेडै प्रचड गुमर न कहू गिरमर गहे।
जस जैति रांण राजड जरु उदियापुर दिस उल्लहे ॥४६॥

उदियापुर उल्लहे वळे दौड़िया बदाऊ।
अभग - राण आविया साथि सामत सहाऊ ॥
हट साहा अवछाडि जकै अमर जर - तारां।
बाळ तरुण ब्रध बेस सहर साजे सिणगारां ॥
आणद उछाह नर नारियां धरि सिर कळसां धावती।
आवती येमि आनन उजळ गहमह मगळ गावती ॥४७॥

उदियापूर परवेस रांण आयै राजिदह।
बोहौ रग सेनि बणाय जकै आडबर इदह ॥
ध्रह अवाज धूहळौ पड़ै अनडां पडसाद।
सामता सामहा राण भेटै रायजाद ॥
कर मेळि मौहर वदै कळस अत्तन परजा भाइयां।
अवतार रूप राजड़ अभग यम उदियापुर आइया ॥४८॥

पहल दरस कियै परम पहल पूजे सिध पाये।
कवळा राह करूर सूर हिंदवाण सवाये ॥
इद्र जेमि आविया राज - महले रणवासे।
बदीजन बोलिया विप्र धुनि वेद विगासे ॥
हिंदवाण पति राखण सरहद कोटि जुगा लग सुख किये।
ध्रुव मेर तितै अमर धरा जितै राण राजड जिये ॥४९॥

छद छप्पय सांकळी

वसावळि वरणीजै आय रघुवंस अवतारं।
विरदावळि वरणीजै सरणराय जगत सधार ॥
धाम जेणि वरणीजै ईढ सुरिज्ज काइ इदर।
नाम जेणि वरणीजै विस्व लोकेस विसभर ॥
आचार सार जे वरणीजै रसण गिरा थक्के रहैं।
गजसी राण परमांण रा की वखाण रूपग कहैं ॥५०॥

धरम जेणि बरणीजै आप धरम ही अवतारं।
करम जेणि बरणीजै सकौ तारण ससारं।।
सत्त जेणि बरणीजै दत्त खट व्रण हि दीजै।
दत्त जेणि बरणीजै वेद नित प्रत बचीजै।।
पति हिंदवांण मेवाड़पति गुर नरिंद छाया गहा।
राजसी रांण परमांण रा की बखाण रूपग कहां।।५१।।

पतिसाहा आखीजै गहण मोखण पतिसाव।
गहर धीर आखीजै सात सामद सुभाव।।
बळ प्रमाण बरणीजै हणू भीषम भारथ्थह।
दळ प्रमाण बरणीजै फिरै जेतै रविरथ्थह।।
ऊपडै नजरि असमाण हूं लोयण जो परसन लहां।
राजसी राण परमाण रा की बखांण रूपग कहां।।५२।।

नर समद बरणीजै समद नर वैसा पिक्खै।
दिल समद बरणीजै दिल सामद स दिख्खै।।
ब्रय समद बरणीजै बरै सामद बडाळौ।
साहण समद सरूप सामद साहणौ सिंघाळौ।।
चीतौड दिलो राखण चुरस गजगाहा साहां गहा।
राजसी राण परमाण रा की बखाण रूपग कहां।।५३।।

कीरति जेणि बरणीजै जगत कीरति तिण जपै।
सूरति जेणि बरणीजै काम सूरति आकपै।।
ग्यान जेणि बरणीजै ग्यान गोरख हू अग्गै।
ध्यान जेणि बरणीजै ध्यान ईसर हू लग्गै।।
जस भेद राण नृप भोज जिम भेद दसा यम मह महां।
राजसी राण परमाण रा की बखाण रूपग कहा।।५४।।

गात जेणि बरणीजै निगम बैराग निमधै।
बध जेणि बरणीजै बध जिण सायर बधै।।
आवध जेणि बरणीजै तेणि सुद्रसन आवध।
जुध जेणि बरणीजै जुडण राम जिम सावध।।

चित क्रम क्रम जिम गी चलौ जिम जिम जस अम्हां तहा ।
राजसी राण परमाण रा की बखाण रूपग कहां ॥५५॥

छंद दोहा

षट षट पद की षट पदी, कीरति रूप कहांण ।
राया पहौप ना रजै, राजेसुर महिराण ॥५६॥

छंद सोरठा

सूर पूर कवि स कथि, कवि कथण आप पूरस कहै ।
साव्रति लौक समथ्थि, रांण रहाडै राजसी ॥५७॥

छंद छप्पय

तवै कवित्त तैईस निपट मुर सरस निसांणी ।
वळै येक वचनिका मद्धि येक गाथ मडाणी ॥
छंद तीस छत्राळ वळै दोहा मुर वच ।
चवि रूपग चौतीस सुकवि माहेस सच ॥
घटि वढि पाठ कोइ मति पढौ कथा राण वरणण कवरा ।
आदम किसू गुण ऊचरै भरियौ गुण तीनौं भवरा ॥५८॥



(ख) महेसदास कृत डिंगल गीत

गीत अरजनजी गौड़ को महेसदास कृत

कदे गाल बावै नही साख तेरह कमध, भिड़ण रिणमाळ वस चौज भूलो
अमर नग थाळ अजमाळ रै अडाणै, दूसरा माल सो माल दूलो

हाथ सिरदार मसळै मिळै रायहर, समर हथियार रौ रहे सहियो
गौड रै मार विच सटै गहणो गळै, राव हीरा तणौ हार हरियो

कोट नव समद पाण थाका करै, खेड खाटायतां मांण खूटा।
छात तोप रा बानैत रा छावड़ा, छात कणपात नौ हाथ छूटा ॥३॥
मांजियौ पाधरै घाय सैंदा भडा, चढै चौ लाय हू बांधि चेळौ।
पाळ यळ माळ ली मास मोटौ पिसण, भुज गळै बाधियां बसै भेळौ ॥४॥

गीत अरजनजी को दूजो महेसदास कृत

करि तै खळ खेति उजैणि कळहणि, मरतै मरण स मार बियौ।
तत चहुवै जाबा दीधा तदि, तत पचमौ स तार बियौ ॥१॥
बाणव यकलख विढता बीठळ रै, अत रौ अत कीधौ अदभूत।
भूत वेद मिळिवा दीधा भ्रम, भूत भ्रम कियौ साछी भूत ॥२॥
प्रथी वाय अप तेज सून पुणि, छाडै जीवण मरण ग्रभ छोति।
जळ जाबा दीधौ नह अरजण, जळ आतमा समाणो जोति ॥३॥

गीत अरजनजी को तीजो महेसदास कृत

पालटता पातिसाहि रा पूता, बिजडा झाट निराट बजो।
आफळि असपति अजण आवियौ, आफळि असपति गयौ अजो ॥१॥
लोहाळा गनेम करि लाल च, चुगळा खगा चढावै चाक।
हुवा हूक आवियौ हीकै, हीसळ गयौ पाधरै हाक ॥२॥
राजा गौड रूक रस रोहे, ढोहे ढाहे लाल ढळ।
अजमळ चालि आवियौ अवरग, अवरग गयौ अजैमल ॥३॥
दूजौ पाळ उरडियो द्रोमझि, थाट बिडार उदार थयौ।
बाढि बढाये घाय तण बीठळ, गौड राय यम चाय गयौ ॥४॥

गीत दयाळदास झाला को महेसदास कृत

अछरां करि मछर अघाफर आई, धारा बहतां अग धुकि।
भूमिया पहल करती झाला, झाला ऊपरि रही झुकि ॥१॥
दळथंभ दळां डौहतौ दीपै, अछरां धावै तेण अरथ।
झाला काजि बरवा झळकै, रळकै ऊपरि घणां रथ ॥२॥

नरहर तणौ वाजता निजडां, कौळाहळ बहौ अछर करै।
रावत अग देखि बहौ रीझे, बढिया पहली मुनै वरै ॥३॥

हळवद धणी चढै रथ हालै, तेवडि करि चौवडि रिणताळ।
घूमर अछर दळां सिर घुळती, रुळती उर ऊपरि वरमाळ ॥४॥

गीत राजा रामसिंघ कछवाहा मे महेसदास राव कृत

खसै खोद आयौ वड़ा खान राजा खसै, दिसै कावलि असी दुलभ दाखी।
मान लीधी धरा मार माटी पणौ, राम जाती धरा धारि राखी ॥१॥
लोदपति गया यम हसन अबदाल लगि, बहसि कसि गया उमराव बीजा।
दूसिरै मान महमान जिम दाखियौ, राखियौ जितै खुरसाण राजा ॥२॥
बगाला पीसि पाछा दिली आविया, हफत-हजारी यम मांण हरिया।
धरा कजि येमि जैसिंघ धू-धरै, धर-चकर येमि अवतार धरिया ॥३॥
बाणपति फरसपति हळोपति फाबिया, किया त्रेबाट देवा प्रथी काम।
सखधर गदाधर फरसधर सारसौ, राम चोथै कळू खाग धर राम ॥४॥



(ग) छप्पय राजा जयसिंघ का महेसदास राव कृत

भभीषण पूछियो बदौ निसचर कोई वाता।
समद केमि हळमळै गिरां हळमळ तर पाता॥
बीटि बीटि ऊजड़े खडै अरि बैठि जहाजा।
रोळ पडि राकसां गाढ लका दरवाजां॥
महराण तणौ दिल्ली मदति उत्तर धर हू आइयो।
वोळिसी येमि बीजापुरा यम जैसाहि रिसाइयो ॥१॥

ये दळ औरगसाह बिन्है धर वेघ प्रगट्टो।
दळ खडै जैसाह हूह करि जूह उलट्टो॥
पूना धर आदि दहकि हदबोळ दुरगां।
सेवा राजा सजि साकिया चकचूर करगां॥
चून करि गढा चौरासिया खोद खूदाड़ै खुरां।
दस देस तणा पेसां लिये पेस न दे बीजापुरा ॥२॥

महाराजा जैसाहि राह वेधी हिंदवाणै ।
सकळ धरा खग साभि आय लागो दखिणाणै ।।
पडै गढा पालटा जडा ऊपडै खयोळा ।
रवताळा चै धकै (चढै) माता सूडाळा ।।
मानहर आज मह मडळी जोड़ै कुण समजत्तिया ।
असमान पुलिन्दर तोडता गा गुमान गढ पत्तिया ।।३।।

गयद समरे अजाद पूर भरियौ पखराळा ।
भडा तरग मन बधै चले गहि आवध चाळा ।।
प्रथम बौळि तरहठि अनड बौळ ता उमग्गे ।
चढतां चढता चढै जाय लागिया निहग्गे ।।
राजगढ येक टापु रहे भरि फौजा दखिण भरे ।
नर समद भिलै जैसिंघ दे सेवै सेवा आदरे ।।४।।

येथि गडियडै स तोप वेथि घडहडै बुरज्जा ।
अनड चढै येथि सूर वेथि उडै सिल रज्जा ।।
वज्रमार गोळा वहत बाणा अप्रमाणा ।
वळै आगि बरसवै ढहै कोटा कमठाणा ।।
मानहर आज मह मडळी जोडै कुण समजत्तिया ।
असमान पुलिन्दर तोड़तां गा गुमान गढपत्तिया ।।५।।

वोढण सूर अगज जग मच्चय जाजत्ती ।
कुसळसिंघ करि कुंत धूणि अरि लियण धरत्ती ।।
सुज मुथरो समसेर जेर करणो चहु चक्का ।
जुध के दरि जमदाढ मरद यम दिये मारक्कां ।।
कमाण रूप री जोड कहि बाणाजी कूरम बिया ।
जुडि लिया दुरग जैसिंघदे जिता जोध आका किया ।।६।।

घ—राव अमरसिंघ जी को साको महेसदास राव कृत

छंद दोहा

धर मुरधर रासो धणो, सुतण राव अमरेस।
गुण तिण रौ यम गाइये, मन सुध राव महेस ॥१॥

छंद छप्पय

आदि मगळ ऊचार मगळ सोही करण यता महि।
रिधि मगळ गणराज कावि मगळ गुणियण कहि॥
मुणै सुणै ज्या मगळ मगळ लेखक कै लखन्ता।
महाराजा रायसिंघ दरस मगळ देखन्तां॥
कवि महेस मगळ यता बड कविया पठ बूझिये।
गुण रचण आदि समझै गुणी पहली मगळ पूजिये ॥२॥

आदि राज कनवज्ज वरणि सुज गाट बडाळो।
बलि राजा चं बडो सूरिज कमधज्ज गढाळो॥
मडोवर परिहार भजि जोधपुर मडे।
सुत रणमल सामन्त पाटि राव जोध प्रचडे॥
जोध राव बाघ सूजा जहो दळे खळा दळ मारिदे।
तिण पाटि नाट भजण तवै दीपाणो राव मालदे ॥३॥

छद दोहा

महि तपै राव मालदे, बिया नखत्र बट बाट।
सुर नर सेवै पाट सह, असुरां पती सु आट ॥४॥

छद भुजंगो

भडे राव गौरी दसो देस भजी। गौरी राव हू माल मारू अगजी॥
मिळै नैण वैण न येहो अमेळौ। खेडेचौ करै धरा ढिली ऊखेळी॥
मनें साही मल्ले भरै नाथि भावै। नही मालदे राव काधो नवावै॥
चमर चारु छत्तर सिरै चमर चालै। हिंदू साख तेहरे तिया साथि हालै॥
यसो मालदे राव राजे मरद। हुई जेणि सामद सातौहि हद॥

चमू मालदे राव हृदी स चालै । घोडा पाखरा चाल दूणा स घालै ।।
पुणै मालदे पाटि ऊदील पूर । सऊ पाटि ऊदील राजत सूर ।।
राजा सूर रै पाटि गजसिंघ राजै । बसु ऊपरा जेणि रा त्रव वाजै ।।
भड़े तेणि गगा तटे भीम भजे । वळै साहिजिहान अयान वजे ।।
फौजां साहगाजी फणे सेस फाटै । सुणे रुपगा दीजय गजा साटै ।।
गाजिसाहि रै पाटि अमरेस गाया । मनौ ऊर्ध तै आजि ही इद्र आया ।।५।।

छद छप्पय

असो राव अमरेस पाटि राजा गजपत्ती ।
भड वका बोळगं भुजा पूजै असपत्ती ।।
नगर तखत नागोर वखत मोटे बिरदाळो ।
नव कोटां नरइद साख तेरहा सिंघाळो ।।
अवतार रूप मानव इसै करण फतै सोही करै ।
पाताळ अनै आकास पुड भारथ जिम ऊडळ भरै ।।६।।

छद पारिजात

राजते अमर राव । सामुदे ईंदे सुभाव ।।
मेवासा गासा मरोड़ । गैमरा करता गौड़ ।।
केकाणां जवाणा काळ । सालुळै घडा स वाळ ।।
पाखरा सलोहा पूर । सामता रावता सूर ।।
पैदळा खधारां पथ । गैज फेरै खला गथ ।।
बेछाड़ा कधा ऊवाड । पहट्टा कीजै पहाड ।।
बीकाणै जोधाणै बाद । येही चलै आई याद ।।
दहकै जगळ देस । रूडै राव अमरेस ।।
चपै कुण धरा चम्म । खोटाळा गजाळा खम्भ ।।
नागपुरै नवो निध्ध । सापजै अस्ट सिध्ध ।।
नौबत्या बाजै निहाव । बिभा रा केहौ बणाव ।।
खेले गजा खभियाण । छह्ु रति छक्कियाण ।।
तुरगा कुरगा चाव । नगा ऊरगा निहाव ।।
बसै क्षित्री येहा बास । पाचाहू भडा पचास ।।७।।

छद नीसाणी

मारू राव राजै अमर बाजै सदनद्दां ।
बूझै माण खळा तणा धूजै सरहद्दां ।।
गढ रख्खण दीयण गढा गढ कीयण गरद्दां ।
जिण घरि रासा जनमिया आसा कबियंदां ।।
अरक ऊजासा येहबा त्रासा तिमरदा ।
अनि पोहो दीसै येहुवा जेहा वोडि रवद्दा ।।८।।

छव छप्पय

अठ ऊभै सै एक सक सवत सुखुध ।
बरस निवं व्रतमान बरणि कहि कबि सुबुंधं ।।
ईख मास पख ऊजळ प्रात तथि दसै ।
बार बुध नखित्र बसु सुभ जोग स घटै ।।
तइतळह नाम तिण करण कही प्रथम लगन तुळ पूगियै ।
अवतरे अमर घरि रायसी येक घडी दिन ऊगिये ।।९।।

छंद दोहा

येक घडी दिन ऊगिये, पुळ चालीस र च्यार ।
सरद रति उजळ ससि, बिचरण गह सु विचार ।।१०।।

छद छप्पय

जनम रति सू रवि.........चिरी बरतारै ।
अलप खेद होय अग सरण सेवै जग सारै ।।
दुतिय थान सनिदेव धन अन धान धरत्ती ।
अथरा क्रम ऊग पोहा वोपम छत्रपत्ती ।।
चतुरथ थान वणियो चदर नाना भोग बिलास नित ।
रिप रोग सोग भजण रमै थान छठें सोहि थान थित ।।११।।

नवं सथान निदान स्राचारिज सुभाणौ ।
विविध सु वुधि विलास करम सुभ धरम कहाणौ ।।
गुर मेछा मगळां रमै ग्यारमें रमता ।
आव भोग अति होय सत्र वणियो सव केता ।।

राजाधिराज रायसिंघ घरि कही जनमपत्री कथ।
अमरेस पिता फळ ऊच कहिय वरणी सोही पडत ॥१२॥

अमरसिंघ रै रायसिंघ येहा अवतरिया।
इद चंद समद देव सूरिज सरभरिया॥
आठ कुळी कहिया अनड नव मानसरइया।
दह दिगपाळ ओतार दस घर ग्यारम घरिया॥
ग्यारा रुद्रह सागिणी बारह बर वरिया।
तवै येम चौदह रतन यतरा परवरिया॥
सोळह सूर सांमत सत करि येकत करिया॥१३॥

छद दोहा

करि येकत करियाह, वप येकै धरिया सबै।
सूरिज सभरियाह, रायसिंघ अमरेस रै॥१४॥

छंद छप्पय

येमि राव अमरेस धणी राजै जोधाणे।
अड़ां-भीड अवनाड कध अवकध कहांणे॥
असपति अस आगरै सुर असुरा तिण सेवै।
राव जठै जमराव कहर लग्गा तिण कहवै॥
पाटपति आय तण ऊपरा मडे खळ मारै मरै।
लकाळ जही लोहाइयो काळ हूत चाळो करै॥१५॥

चाळ काळ हू रचै अमर राव असो अज्जकौ।
धरा बेध सेघणी रूप राठौड़ रज्जकौ॥
पडि सासै पतिसाह अमर दरगह जदि आवै।
असो भड़ आखतो जको विपरीत जगावै॥
अवदक्क रहै असपति ऊवर दीह राति येहो उरै।
जिम जिम लगै छाती जहर कहर रूप केई करै॥१६॥

साहिजिहा पतिसाह साहिदारा साहिजादै।
भरथ खड भोगवै मांण दोयण थिया मादै॥

तिण असपति तेडिया माडि मोटी महमानी ।
मिळिया सह उमराव जिता दिल्ली रजधानी ।।
घरहरे मेघ सावण घटा छित अमर सह छाइयो ।
असपती तणै मुजरै अमर ऊससतौ तह आइयो ।।१७।।

छंद भुजगी

दिल्ली साहिजिहान बैठौ दुबाह । ऊह हाथ जोडे रहे दोय राह ।।
राजा रावळ रान रावत रूप । भडा हिन्दुवां बस पैंतीस भूप ।।
मीरा मीरजा खान माझी नबावा । अडाजूड जेहा खुरासाण आवा ।।
तबल्ले मुगल्ले बधे दोय तेग । सहु सेख जादे तबी खत तेग ।।
जके पाहड़ा जडा हूता ऊपाड़ै । खडा राह बेहू भड़ा रै अखाडै ।।
खड़ा खान कलील कलीच खान । असा खान केईक ऊभा अमान ।।१८।।

छंद छप्पय

साहिजिहा पतिसाह यळा ऊपरै अमानै ।
आबखास हू ऊठि खेद किये गुसळखानै ।।
दोय बगसी दीवान चाढि अरजा मन चावां ।
सतरिखान सामठा अनै बहत्तरि उमरावा ।।
अमर री फौज जगळ यळा खगबळ भोगत खाइयो ।
बीकगढ हूत तिण रौ बळै यतरो वाको आइयो ।।१९।।

छंद नींसाणी

वाका बीकानेर रा येहा ऊघडिया ।
यळ जगळ ऊपरि अमर खुदा दळ खडिया ।।
आप आप घर ऊपरा अजरायळ अडिया ।
रण रावत अमरेस रा ज्या ऊडा जडिया ।।
घार मार माचै धरा बाजे वड बडिया ।
लुत्थि वुत्थि लगि लाल रंग लाखा दळ लडिया ।।
के रहिया भड कामरा खिसि कायर खडिया ।
सो जीता राव अमरसिंघ वीका मुडिया ।।२०।।

छंद नींसाणी

साहिजिहा वाका सुणे आखे असपत्ती।
मुणे राव अमरेस सो बळि येही बत्ती॥
मेरो पतिसाही महो जोर न जाजत्ती।
हेकण घाटें सीह गाय पाणी पीवत्ती॥
मेरे विण दीधै मुलक रखै कुण रत्ती।
खान सलावत्ति सो कहै भैंभीत ये बत्ती॥
धखि पाण मूछो धरै तिण चसमौ तत्ती॥२१॥

छद छप्पय

खरी सलाबति खान अमर हूता यम आखै।
दिलीसुर आगळै दम्भ कुण उत्तर दाखै॥
तम येनी जाजत्ती मुलक हजरति के मडो।
चोरो को चाहते दौस साधौ दे डडो॥
कुण आजि अठै येती करै मन ही सुद चाहे मुवा।
दरगाह बीजि ऊतर करें हिंदू बेअकली हुवा॥२२॥

बेअकली बौलता कमध ऊभलै कटारी।
पबै सरीखी पडी कडकि दामणी अकारी॥
ऊवर बीचि आहणी कहर मोरा दिस कढ्ढो।
चळूवळ अणी चमकि बहण ज्वाळा जिम बढ्ढी॥
बोलिया जके खानड बयण पूरा कहण न पाइया।
नर जाणि कबूतर बाज जिम लोटण आणि लूटाइया॥२३॥

लोटण जिमि लुट्टियौ धरा खांनड जम धक्का।
तडफडात मुख तेणि बीबकर करै ऊबक्का॥
अमर करां आगरै भाहि लग्गी कुदरत्ती।
अणियाळी चूवती आप देखै असपत्ती॥
गढ पती नरपती दुड़ि गया गजपती हदा अगै।
वैरिया ऊवरि घरि बाकड़ो लाय जेमि माथै लगै॥२४॥

लाय जेमि लागणी निपट नागणी निरखै ।
काळ हदी कामणी दुती दामणी दखै ॥
येही अधियामणी महा जामणी स जाणै ।
राकसणी डायणी काळ डासणी ढाडांणै ॥

ऊफणी दरगाह बीच अणी अणियाळी हंदी अणी ।
तिण पाण भौह मूछा तणी अेम खान उर आहणी ॥२५॥

छंद झमालि

खानो गो सळवळे असपति उर औदक्क ।
अमर काळ मुख आवता चावा भडा चमक्क ॥
चावा भडा चमक्क बडाळा ऊमरां ।
तुडि हिन्दू तुरकाण खळभळ खूमरा ॥
थाहे कौण अथाह जाहर कुण जारवै ।
मूढै चढे अमरेस मुणै कुण मारवै ॥२६॥

राजा रावा रावळा निय भड खान नबाव ।
येता हदो रूहरो असपति जोवै आव ॥
असपति जोवै आव कहो कीजै कसी ।
खाय गडूथळ खान क ऊभो अमरसी ॥
तवि लोयण मुख रत्त तडी लग रत्तडी ।
रोवै महल हरम विसूरै बीवड़ी ॥२७॥

हिन्दू राव कहर कीये हैवै तणी हजूर ।
मिळै न कोई मारका रहे दूर ही दूर ॥
रहे दूर ही दूर घणा मिळ घेरियो ।
छिब छिब गुमा ढाळ पोहो मन फेरियो ॥
वरचे राह वराह सीह रुघो सहो ।
वेळा तेणि विमाण अपछर ऊलहो ॥२८॥

छंद दोहा

अपछर समर ऊनही वदे जहा वरमाळ ।
आजे के वरनी अवनि वर राव अमर विसाल ॥२९॥

छद छप्पय

राम हुकम बिरण बदर पबै कुण सायर पट्टै ।
परम हुकम बिण पाथ थटा किम भारथ थट्टै ॥
बिण हुकम अब ईस दिरद खिम खिम खीगाडै ।
लिछमण बिण लोहियो अनड़ किम हणु ऊपाडै ॥
माडिया राव मडोवरो घैरयौ घरण थाटा घणै ।
असपती हुकम बिन नर अवर अमर राव कुण आहणै ॥३०॥

पाहि सलावतखान सकळ दरगह अवगाहे ।
जाणि विरुथौ बाघ करत गल्लार अघाहे ॥
सतरिखान सटाय अनै बहत्तरि उमराव ।
नूर न जिण मुख रहे कहण मुख वैण न आव ॥
साहिजिहा दारासको अजण दिसा सारति कीयै ।
खासा नराज मसलद सै तौकि करा कर हू दीयै ॥३१॥

अजण निराजी भलै आय मुख राव बकारे ।
अगनि कुड मे किधौं स्वाहा करि के घिव डारे ॥
अमर अनम्मी कध दिसा कपाट चलायै ।
जुडिया दहु देखिया जदे बारी सिर नाये ॥
उरण समै पहुचि बोठळहरे बाहि तेग कधै जडी ।
घड हुत बिछूटे सिर जहा जाणि खिलायत की दडी ॥३२॥

छंद दोहा

घड हू सीस बिछूटतां, राव गही जमदड्ढ ।
तोकि चलाई अजण पै, कान बराबरि कड्ढ ॥३३॥

छंद छप्पय

राव पडै रण भौम प्राण सुरपुर प्रयाणै ।
अछर चालि आकषे वाद माचियो बिमाणे ॥
माळ माळ बरमाळ बरण बरमाळ परक्खै ।
अकंइ सो पूर सूरा हुई ... कवारि हरक्खै ॥
छुडाय चाळ बरमाळ छडि खाथीय पडि खड खडै ।
विमाण अैसे राव बैठियो अछर विमाणा आभडै ॥३४॥

॥ इति राव अमरसिंघजी को साको राव महेसदास कृत ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

घ वसावळी गौड़ा की महेसदासजी राव क्रत

छद साटिक मगलाचरण

स्वेता अमर वैयसिता मुक्तासिरा मगता ।
स्वेता अमर सोभ लबज चिहुर सोभ सजिता ।
रुक्मासिता रामनो श्वेता हस अरुढिता ।
... ... जगजिता श्वेता गुना सारिनी ।
वीना पुस्तक धारिता सरस्वती विद्या वर कारिनी ॥१॥

छंद मोतीदाम

... ... मति गहीर । सुकव्या देयण बुद्धि सरीर ॥
बणै ... ... ळ । सुंरगिय चख्ख सुलोळ सुढाळ ॥
... ... मत्ति । पैबे चंद कळा यक दत्ति ॥
कपोळ ... गळ सुमंत । भ्रणकि गुंजारव भ्र गि भ्रमत ॥
सुंडाडड .. गात सिंदूर । निरख्खिय भाण प्रभातिय नूर ॥
घमकिय घूघर नेवर घोर । सुरन्नर नाग सवै लभ सौर ॥
लबोदर उद्र सुभद्र सुभाव । विद्या बळ पूर नमो गणराव ॥
चत्रभुज आयुध धारिय त्रारि । वळै चत्रवेद सुकठ उचारि ॥
बणै तरसूळ फरस्स सतख्खि । दळा असुरा बळ भजण दख्खि ॥
मुणै मधु मोदक पाण सुमढि । महा प्रिय मूषक बाहण मढि ॥
दुवै रिद्धि सिद्धि सु आगळि दौडि । बल सोइ श्रय मजार बिहौडि ॥
गुणी - जण आरभ अग्र गनाय । ... ... धन गणपत्ति मनाय ॥
बरन गौड सु राज वड़ाळ । ... ... मौतिय माळ ॥२॥

छद किलकिला

सुप्रसन्न होय .. । ... होय धि बिधि ॥
.. सोहिय वाहन हस । वरदाय ग .. ... ॥
. हर धरिय बिसाळ । ... मोहनिय मुकता-माळ ॥
हि .. ... । ... वेद वाक्य उच्चार ॥
.. चदन चर्चित गात । सोभा आय ... ॥

चद कौटिक अ···न चार । धुनि नाद पुस्तक धार ॥
ऊ··ल अमर अग । गति ज्यूं प्रकास सुगग ॥
ब्रह्मसुता ·· वरदाय । मो उक्ति दीजै माय ॥
बुधि तुच्छि वर सविसेखि । भद्र काळिय बोहो भेखि ॥
प्रथम सु गिरिजा रूप । अरधग सिभु अनूप ॥
ब्रह्मचारिणीय बखाणि । जळ थळ जोगणि जाणि ॥
चद्रघटिका चडी सुकाय । महामंगळा महामाय ॥
कौमारिका कात्यायनी । सोभानिजा जानि रूपायनी ॥
आसापूरा अविकाय । श्रीनग्ग कौटि सुरा राय ॥
काळी कपाळीय कथ्थ । चामुंड मुड समथ्थ ॥
दुर्गा अन्नपूर्णा दक्खि । आरज्या गवरी अक्खि ॥
चूडामणि ब्रह्माणि । रटि ··· भैरवी रुद्राणि ॥
सब मगळा म ·· सि । भूतेस्वरी विधवासि ॥
ज्वाळामुखी जमघटि । विद्याभडार रसबटि ॥
महालक्ष्मी महामारि । सेवगा रूपका सुधारि ॥
पदमावती अजू य · । ·· ·· णि ॥
हेमावती हिंगुळाजि । चवसट्ठि देवी · ॥
· धात्र । उमिया कळा सुव रात्र ॥
महाविद्या ··· । ··· ··· किया ॥
दाक्षाणिय अडाणि । मगळा मगळ ··· ॥
· ·· माय । कमळा स कोमळ काय ॥
सिवरि सु ··· । ··· ··· ·· ॥
··· ··· दे रिद्धि । सकरी अवा सुबुद्धि ॥
जिण असूर भजै जुद्ध । इन्द्राणी स ·· ॥
··· ··· यस रूप । रचिया स नाना रूप ॥
मधुकैट दानव मारि । इळ सणो ··· ॥
··· ··· र उतारि । ··· ··· ··· ॥
अदन करी मह खास । ··· या सबु आकास ॥
धूमर ला ·· न धारि । चक्र सूळ गदा प्रहारि ॥
वे चण्ड मुण्ड बिभाडि । परचड जगन पछाड़ि ॥
बळि रक्तवीज बिहडि । मंडि त्रहू लोक सुमडि ॥
सुंभ निसुभ सहेति । बढियाय दाणव खेति ॥

बीरा हिय नर सग । मन सुद्ध करि कवि मग ।।
सरस्वती बुद्धि समद । अजमाल बरणू इद ।।
गुण बिन्हैरासो गौड़ । महि छत्रिया सिर मौड ।।
गुण मद्धि होय न भग । तन उठै अधिक तरग ।।
रचि यह कवळा छद । मुणि गौड़राज ... ।।३।।

छद नींसाणी

... ... गुण कीधा गुण कथण काज ।
गोब्यद ... ... ।।
... ... ण कहाया ।
श्रोणित पाणी सग हुवा घड़ जे ... ।।
... ... पांणी महि बळ हड्ड बणाया ।
मास नवै ग्रभ ... . ।।
जठर अगनि जळिया नही पळिया प्रह... ।
... ... णि दुनिया दरसाया ।।
चखि मुख नासा श्रवण ... ..या ।
हस्त चरण भिज्या कवळ विधि विधि बणाया ।।
पहुता वळिया पाळिया पूरा पोहोताया ।
बाळ अवसता ... गति या तरुणाया आया ।।
विषया-रस लागा रहा लालच लोभाया ।
पर निंदा अहमेव प्रिय प्रिय जेमि उपाया ।।
रसणा रस चाखे इम्रत खटक्रम बणाया ।
बासा रसना सो वळै आसा उळझाया ।।
चित चंचळ चचळ चखे रस रूप सुचाया ।
श्रवणे राग सिंगार रस बस जेणि बसाया ।।
करां सुक्रत कीधा नहीं कुक्रत कुमाया ।
क्रम तीरथ क्रमिया नही अणक्रमे आया ।।
रांम नाम रटिया नही यम जनम गुंमाया ।
सुणिया कथा पुराण नही नही वेद बचाया ।
ह ... या नही नही दरसण पाया ।।
परम सत नही पोखिया नही . ।
कपट कुटिळ कामो कळा लपट मन लाया ।।

वे दिन आदिन आणिया मुख औध भुलाया।
... ... नीसाणिया रटि रटि रघुराया ॥
गुण कीधा गुण कथ्थ ... गोब्यद न गाया।
गुणि अनि मानव गाइया यो नृगुण कहाया ॥४॥

छंद कवित्त

जयौ मच्छ जगदीस जेणि संखासुर भजिय।
जयौ कच्छ जगदीस जेणि गोमि पीठिस गजीय ॥
जयौ न सिंघ .. .. दाढ़ा बिच रख्खिय।
जै जै श्री नरसिंघ भभकि हिरणा कुस भजिय ॥
बामन जयौ बळिबंधणह फरस जयौ धारी फरस।
राम ब्रह्म अण रढणाथी जै नाथ जै जै दरस ॥५॥

बालमीक रामाणि कथै रामायण कथ।
बणै व्यास विलास भेद गायौ भारथ ॥
सुखदेव जैदेव क्रस्ण आचारिज सारं।
माघ बाणि कवि दडि चंद बरदाय उचार ॥
क्ळस रूप काळीदास कहि भेद सुरां नर भेखिये।
द्रस्टान्त उकति बरन न कव्या रंचक बाकी राखिये ॥६॥

रचक नह रखियौ काव्य की करै सुकव्विय।
सोही उकति द्रस्टात सोही सोही जुकति सुसाख्यिय ॥
. द प्रबध सोही बरनन बिसाल ... ।
... ... सोही सिणगार रस गाया ॥
कहिये कवित्त 'माहेस' कवि पातघ्नन . पावजै।
... . ग कविया यता गाया आया सोही गावजै ॥७॥

छंद दोहा

गाव खोहरी ... न करा जे तीरथ राज।
मेडलगढ अजमेर की कौ क्रम ... ॥८॥

राजगढ बानैत सुव राज करत अजमाल।
. ... गोडांपति सत्रनवै उर साल ॥९॥

कवि महेस हर ... .. थ समोय ।
नाम बिन्हे रासो रच्यौ बिन्है करै सब कोय ॥१०॥

पुस्करराज रो बरनन

छद पद्धरी

पौहकरा - रन्य पौहकर क ... । दुख परिहार कित्त ॥
मुर बीस अठ्ठ तीरथ्थ सुमद्धि । पर गुरुता पाल कहि प्रसिद्धि ॥
वाराह आदि तिहि ठौर बचि । सावर्त्री ब्रह्मा गायत्री सचि ॥
... पट्टेसुर जह रहत आप । नरदेव करत सब सेव जाप ॥
अरध सु नदेसुर तत्थ थान । बळि अजै गधेसुर ते बखान ॥
अरध सु चतेसुर वैजनाथ । तिह रूप किरातह छळे पाथ ॥
पच जह सरस्वती है प्रगट्ट । तीरथ्थराज सेवै सु तट्ट ॥
जे सस्ट . भान । मद्धि स्वधा सरस्व ... ॥
... ... निष्ट कुंड कनिका । ... ... ॥
. बहुरि प्राची बिसाल । ... ... ॥
... पुरहूत भवानी तहा पगि । ... .. . ॥
चवसट्ठि रहै नित प्रति चेर । इह रूप दियै गढ अजयमेर ॥
.. ... बिसबिसवानि । जेते सहाय सब गौर ... ॥
... ... गहीर । सोइ यता अस धारै सरीर ॥११॥

छंद दोहा

... .. दुतिय गवरि पति जांनि ।
तृतीय ब्रह्म ... .. खांनि ॥१२॥

छद मोतीदाम

॥ उत्पत्ति ॥

... ... आदि दिय । कुळि ब्रह्म तणै बिस ... ॥
... ... वास बली । बिसवास धरै रिख धो ... ॥
... .. . जय । जिण पाट भारगव जेणिज ॥
... ... । प्रजाळण रोख खळा प्रजाळ ॥
.. .. । .. बि ईंद अवै सिरताज ॥१३॥

छंद छप्पय

जिन ... ... विन थभ सु रक्खिय ।
जिन किय ससि अरु ... ... खिय ॥
जिन किय चक्कवति भूप गाम ग ... ।
... ... र सुमेर धरनि सिर से... ॥
... ... गढ चौरासी येम ।
रनसूर ... ... ॥१४॥

छंद गाथा

गवड आ ... ... ।
... ... गोपति राज ॥१५॥

वंसावळी छंद कमला

... ... । रा ... ... ॥
गोपती पाट सैढ़ल गरीठ । ... ... ॥
सेढुव पाटि समसेरसीह । राखणौ वाट खत्रवाट रीह ॥
... .. आभौ अरक्क । हद जेणि समदा दड हक्क ॥
अ ... ... । लेखियै मौज फौजा अलेखि ॥
सिंघुराज .. ... । ... .. वर बणै चौज ॥
अनुराज पाटि बछराज ... । ... ... ॥
नागौर द्रुग भजै निराट । बाहे निराट ... ... ॥
... . द्यो बिल्हण भुजाळ । सुज हनुराज रा ... ... ॥
... ... अबीह । सूडाळ दळा पखराळ सीह ॥
... .घ । रजवट राखण कुळवाट रीघ ॥
चद ... . । प्रथमादि सकल सेवैंज पाव ॥
भोज रै थी ... ... । ... अघराज के औखल्लमल्ल ॥
सुलताण अलाव ... ... । हिंदवांण साह हट्टै हठाल ॥
... . स भाटियाध । कहियो स ... .. ॥
... ... । ... ... प्पाल ॥
रिढराज गोड़रा कध रहसि जोध । वर बीर धीर राखण स बोध ॥
... . । बैरियां हूत चालणौ बक्र ॥

थाणा जिण टेक हद थप्प । ... . प ॥
बाढियौ मुदफराखा बराडि । धिखाडि द्रू .. ... ॥
... . डो निरिंद । मारियौ गौड आखै मयद ॥
अखैराज ... ... । प्रमाण रा ... ... ॥
ब्रन जिण छहू ब्रन्न । ... ... ॥
सरवाड राम राजा स जोघ । .. .. ध ॥
खीचीज राम सिर बधि खाग । वाहळा भडा ऊपाड बाग ॥
... .. राजा वडाळ । आसीस जेणि दीजै उजाळ ॥
राम री ... ... । भुज बणै घणी अजमेर भार ॥
कुभक्रन .. .. । .. .. उदार हत्थि ॥
सुरजन चाढि जैसिंघ सू . । बीजळा झाट ... .. ॥
... . । ... ... ओध ॥
जुधि पडै खेत अजमेर जोघ । ... ... ॥
... . रे राज वैकुट आळ । जिण सिद्ध . .. ॥
... . । .. .. ..राण पीस ॥
जोगराज पाटि गोपाल जांण । .. .. भाण ॥१६॥

छंद दोहा

भांण महि भळहळै ... . ।
अजमेर घर मोटां का ... . ॥१७॥

छंद .....

ध्रमराज गौड सुध्रम । परतख्खि दूजो प्रम ॥
... गौड़ सु राव । ... . ॥
पच उभै अठु पुराण । बौहो .. तसु दान ॥
घरि उभै हरि हर ध्यान । . .. ॥
सुर गुरु .. वट लाज । . .. ॥
बाल ध्रुव धवळ अबीह । .. . ॥
समहरे प . घर दाहि । गढ राखिगौ खगगाहि ॥
रहिसगढ गु .. । . . ण ओर ॥
समहरे बाहण सेल । खळ जड़ा मूळ उखेळ ॥

... ... रौड़ । आवियौ महु अरौड़ ॥
धुळियौ सरब गोपाळ । ... ... ॥
... घर धिखाड़ि । पाहड़ां भोग स पाडि ॥
... ... । सांभळे सुल्ताणि ॥१८॥

छंद छप्पय

साभळ ... ... णी ।
सूरवीर सामंत छळां जगण ... ... ॥
... ...पख रहै कलो ।
भडा वोट रखण ... ह लायक दलो ॥
प्रेम उजीरा ऊमरा .. ..।
... ... ग्रहदी विदा करै ॥१९॥

छंद नीसाणी

.. .. माण बौही सनमांनि ।
चुला .. .. ॥
पडित पूछाण सुभ बासर सुभ वचन पौहो कीध पयाण ।
खळभळिया भड खरहडा चतुरग चलाण ॥
सजै सुभटां सावता बज्जै नीसाण ।
धर धूजै गिर धूजिया थरहरि अरिथाण ॥
मि .. पाहि खूरन सो... जालिम जमराण ।
गज बाजा भुज अरधिया... ... ... ॥
राजा रावा रावळा बदि सिरै बखाण ।
खान निबावा मीरजा सिरजा ति सोभाण ॥
महाराजा गोपाळमल दरगाह दिवाण ॥२०॥

छंद कुंडळिया

मिळिया साहि गोपाळमल गुमर अगजी गौड ।
साहि घणौ संमांन किय रवदा पति अरौड़ ॥
रवदा पति अरौड पिता हूता पालट्टै ।
खून सपाय मनख री थाट ऊपाट स थट्टै ॥

थाट खुरम्म येहा थट्टै जोरावर जमराळ ।
गढ बिभाड़ आगळि गवड़ गज भूरज गोपाळ ॥२१॥

छंद सारसी

धुर मुसाह दीर वाह रूप राह रज्जिये ।
सामंत सूर पाणि पूर साव ... र सज्जिये ॥
टोप सनाह बाह बाह हैरख बैरख्खिये ।
राग सराग ओबरक्क दस्सतान दक्खिये ॥
जिरह जूसाण ... पठाण मूगलांण मडिये ।
खाना निबाब मीरजावं ताव घाव तडिये ॥
खूरम खडिया खड़िया आभि अडिया जोध जडिया बज्जर ।
घर दक्खिण धाया उरडि आया नि ... मद्रि ... क निज्जर ॥
खस ... वं गरक्क गाव करै खुरम कौपिया ।
घर काजं सजै सा ... ध ध्रम स वौपिया ॥
जिण पिता सीस रचै रीस है थट्ट ... ।
जोधा जवाण जम्मराण चातुरग चल्लिये ॥
औघटा घाट ... ह बाटा थाट थाटा नेसये ।
घर पडै धाह गढा गाह स हल्लये पड़ै दस देसये ॥
पटण हट्ट व्है पहट्ट तुट्टि गिर तर ता ... क ।
गढ पड़ै घेरा फौज फेरा जूझ मो भिर झाटक ॥
रिणथभ आया दहराया ताव झल्लै तेगय ।
गढ सर गिढोही दूठ दोही बीजळ लै बेगय ॥२२॥

छन्द छप्पय

थभ द्रुग रिणथभ सहे खूरंम सपाण ।
... सीस दौडिया मेळ थाणां आपाण ॥
दिगराज गोपाळ देय खूरम सपाण ।
वीजळी वाकीवेग पाण दख्खै पतिसाई ॥
ता हूत तपै अजमेर पति सूरा गुरा माझी सनढ ।
महि साह आजि खूरम भजै क छडै थभ गढ ॥२३॥

बीजळ बांकीबेग बिन्है यक बात विचारी।
मोहबति खान निवाब धरा भुव डड उधारी॥
करि विचार गजभार दीय जह गिरद रहाई।
अम्हा दीह येतळा खग सट्टै धर खाई॥
बांकीबेग बीजळ सहित उतरि लडिबा आवियौ।
नेन बध बि ... दळ बिहसवा भूझ खेत भाडाखियौ॥२४॥

छंद त्रोटक

रिण गोपाळ अनै बांकीबेग रचै। बड़बात जुगा लगि चारि बचै॥
बाजि धाव अघाव स नद्द बजे। ... ... ॥
हुबि सूर बिन्है दळ हूचक्किय। थिर सद्दन भाण तणा थक्किय॥
चलि बाण कबाण बदूक चलै। मचि मार भले सरदार मलै॥
झिलि सार हू सार बहै झटका। बकसी करि जाणि ‥ बटका॥
उडि सोर अराब सिताब उडै। बिब भाण स धुंमर माहि बुडै॥
धमकै उर कुत सु मोर धुर। किलकार हकार बही करर॥
खट-चट्ट पडै भड लाल रंगं। अध टूक-तिटूक ... अग॥
बहि पाणि बीजळ बेग बिन्है। तै बात रही मझि लोक तिन्है॥
अछरा रथ तथ्थर ऊतरिया। रुण्डमाळ भूतेसर लै रुरिया॥
वर बीर बिन्है भिडतै बिरिया। करि नारद तडव तै करिया॥
पतरा भरि चौसठि श्रौन पियै। जुध आमिख भक्खि सु पक्खि जियै॥
भरि उद्र यताव असीस भणी। धुव तेमि तपै अजमेरि धणी॥२५॥

छंद छप्पय

पोहो जीतो गोपाळ बेग बीजळ खग बाढे।
थाणो दै रिणथभ चाव अजमेरि स चाढ़े॥
मुडै साह खूरम जुडै पित हूत न जीता।
मिळि आयै गोपाळ बढि दोय काळ बदीता॥
असुरेस भुजा गज अरधिया लै भुज भुजा लगाइया।
धजरा नरा हैमरा कसै धरा दिखण दिस धाइया॥२६॥

छद वेग्रक्षरी

खडिया साह खूरम सपाण । नीधसिया कसिया नोसाणं ।।
उस्सिये जोधा उमराव । दळां हले करि वद्दल दाव ।।
फरहर धजा गजा फव्वाणी । पूरा सर तर तुट्टिया पांणी ।।
पाळ जिसा लकाळ स पाणां । मोहौ आगळि खड़िया जमराणा ।।
कवर वसी लीधा सह कानै । गवड गजां भजरग अवगानै ।।
माडै सह खूरम सपाग्ग । थूरै दीधा ग्रपणा थाणा ।।
बळै साह मसलत्ति विचारी । प्रीत लगी नन दिल्ली प्यारी ।।
बळि कोकै गोपाळ वडाळै । चित करि धरि वेद स चाळै ।।
दिल्ली पड़ै ग्राप रै दावै । येक पहल ग्रासेर स ग्रावै ।।
लागि पहल ग्रासेर स लीजै । दाखै पाळ बिदा मी कीजै ।।
पाळ विदा कीधौ पौंतारे । बळै बिखी फुरमांण बिचारे ।।
गढ आसेर जकौज गढौई । जाहागीरज मेळे सजौई ।।
तिण ऊपरि गोपाळ स तोकै । कवर विहारी रा भट कोकै ।।
पहल खड़ै ग्रासेर सपत्ता । भारै दुरग लियण भैभीता ।।
दुरग सेर माळी दरवाजै । सुभटां थाट मेळिया साजै ।।
साहां गिर फुरमाण जितावै । ऊतरि गढपति लेवा ग्रावै ।।
गढ हूता ग्राविया गढौई । सथ सामत ग्रानि सथ सौई ।।
लै फुरमाण व ‥ खां वचे । उठि गोपाळ दखिण कर खचे ।।
वज वामे वडहथ्थ विलग्गौ । भरम हवै भुरजाळ स भग्गौ ।।
रामसिंघ मिरजा समाही । ग्रनि ग्रोदरिया देखि ग्रगाही ।।
गौड भड़ा स पच स गाढा । ठीक लियण गढ ग्रदरि ठाढा ।।
कहै खांन ग्रव कौल स कीजै । दाने धरम दवार स दीजै ।।
पौहो ग्रापण गढ सीस पधारे । ग्रसुर तणा सव ही ऊतारे ।।
हवै तुरक गयौ गढ हूता । पौहो भरिया गोडा रजपूता ।।
फतै साह खूरम फवांणी । लखि वाका दिल्ली दिसलाणी ।।
यतै साहि खूरम स ग्राया । बळै गौड मनसूभ बधाया ।।
पंच हजारी दीन्हा पट्टा । घाये तै भजण गज घट्टा ।।
यौं करि तू ग्रासेर स आणै । तूं ऐसा दिल्ली वैठाणै ।।
धरै ग्रवै नाम मन घातां । विढि राखो गढ ऊपर वाता ।।
मै यक ठौड रहण नहि पाऊ । जिस खातरि पूरव दिस जाऊ ।।
पूरव गया खुरम वळ पूरा । सजि ग्रासेर गौड़भड सूरा ।।२७।।

छंद दोहा

गौड सजे आसेर गढ, खडिया साह खुरंम ।
वेगम सौपर तिन बळी, हैमर जीत हरम ॥२८॥

छंद कवित्त

मळिया गढ गोपाळमल ससि सूर समाणी ।
गढ जीपण रण गौड गढ रखण भुज पाणी ॥
भरि सज्जित भडार भुरज सह कोट सम्हारे ।
वाण नाळि बदूक सोर सीसा भरि सारे ॥
सामत सूर जोधा समूह कळह गौड भड कौपियो ।
अजमेरि धणी पाणो-अणी यम आसेर स ओपियो ॥२९॥

छंद वेग्रक्षरी

यसडौ गढ आसेर अगजै । सूरां गुर गोपाळ स सज्जै ॥
गढ माळा कमर गढ गाढ । चडियो गौड घणा अदचाढ़ ॥
भरिया सजति अनन्त भडारा । सौज जिती ऊठै सिरदारा ॥
बेढण रो आरभ वडाळौ । गढ गाढा गाढौ गोपाळौ ॥
कोटा भुरज मोरचा कीधा । दिसवादिसा थभा भड दीधा ॥
मतिवाळा टोळा मडाऐ । बळाबळी कांगुरा बणाऐ ॥
द्रिढ गाढा जोधा दरवाजां । रूडा जिके वस रावराजा ॥
दस हजार खधार बदूका । चूकै नही हदफ अणचूका ॥
ऊदाबासी भरियस ऐही । काळ तणा त्रिय जाणै तेही ॥
बड़कसाव बळै बिपरीता । भखं सोर मण नौ सैभीत ॥
छूटै असणि हजार स छूटै । केवी दळा दोयळा कूटै ॥
नाळ्या ··· गौळा नी छाडै । पाच सात कोसा लगि पाड़ै ॥
जस नाळी मुर सहस स जाणो । कहियौ गढ रौ किसौ बखाणो ॥
बाजै साझ सवारे बाजा । रुधणौ गढ ऊपरि यो राजा ॥
येबदाब जाहागीर स आये । फबिया करि सागर फूटाये ॥
घोडा भडा गजां रथ घेरौ । ऊपरि गढ बणियौ अजमेरौ ॥
झिलता लाल श्वेत पित झडा । माझी केई मारिग स मडा ॥
झडा गौड़ गढ दौळा झूळै । फबिया कारि बसत स फूळै ॥

कहियो यम परवेज कहाणौ । रीसाणां मांझी रीसाणौ ॥
मिळिया जाव लछी बे मेळा । अण मिळिया थारी ऊखेळा ॥
पातिसाहि यण भाति पयपै । अम्हां जो आसेर स अप्पै ॥
मोटा गाढा आप अजमेरौ । साहै तो ... समसेरौ ॥
येमि बसीठ गढा सिर आये । बळे गढ राजा बौलाये ॥
कहियौ क्या परवेज स कीजै । राजा अण बोलै न रहीजै ॥
कहिया मेळण तणी कहाणै । परसति अगनि घिरत्त सीचाणै ॥
गौड सूतौ पचायण जग्गै । पणगी अगनि सोर जिण पग्गै ॥
यम झळहळ ऊठौ अजमेरौ । फिरया जुग माडू नह फेरौ ॥
अरक जाय पछिम दिम ऊगै । पैज कही प्रसराम न पूगै ॥
गग उत्तर दिस वहै गहीर । सत चूकै सतवत सरीर ॥
भुयग भार झेलै न भुवाळो । गाढ असुर अप्पै गोपाळौ ॥३०॥

छद दोहा

गढ राजा दढियौ गवड, पढियौ वेद पुरांण ।
मेळण कथ मानै नही, ऊखेळण असुरांण ॥३१॥

छद रेड़की

गढा झालियो आसेर, गौड साहे समसेर सेर,
मूछा बळ घातै मानधाता मन मेर ।
भाहरां नगारा भेर, भीकाडै गुडाळा भेर,
आज रै उजाळै बाप धरा आजमेर ॥
साहरा फेरै बसीठ कौपाणें ज्यू काळकोठ,
रूका झाडा उझाडा वाहेव जुध रीठ ।
तौराळा पूरै नतोठ, दौळा साह दळा दीठ,
पूरौ पमाडां पाळ, जीप माडी पीठ पीठ ॥
ढाहणौ सूरा गढाळ, मौरछा माडै मडाण, बोछटै कोहौकबाण ।
घेरौ चहुवळा घांण, अराबा माचै अफाण, साजै सुरताण ॥
हळाहळ माचै हक्क, तोपां हदी मडै तक्क, बाहळां फाटैन वक्क ।
कन्नडा अकै कजक्क, धरा गैण धूजी धक्क, आतसा हदो उझक्क ॥
चकत्या चढावै चाक, दसो देस डाक, नाळया रा गोळा निहाव ।
घडा धल्ले घणां धाव, परट्टै पनगा पाव, चौज मे सजाव ॥
द्रोयणा ऊपरा दाव, विछूटै अगनि वाव, कहोजै जो कहाव रीस गौड़ राव ॥३२॥

छंद पद्धरी

गोपाळ थियो मन मेर गौड । आहणे दुरग खडियो अरोड़ ।।
कहि लघु वेस दिग्घ काम कीध । लोह रै ताव धर दखिण लीध ।।
गूगोर सालि वेहै गजाडि । आवध जुव दोधो उभाडि ।।
घर माडू कीध वळि धूक धाक । च्यारिसै ग्राम दस चाढि चाक ।।
ठामियो न करि गोपाळ ठौड । गांजियो साहि गोपाळ गौड़ ।।
तजि गयो गाम गाडरी ताम । धर मेलि खड़ै ऊजैणि धाम ।।
परचड चड खीची पजाडि । पाहडां घरा सहि भोग पाडि ।।
रीझाडि झाडि रतनेस राव । पूजियो भुज तैहि प्रभाव ।।
साभळी वात यह पातिसाह । रजपूत एक विच बिन्है राह ।।
तिण काज कीध फुरमाण त्यार । पतिसाहि लिख करि बहौत प्यार ।।
कौकियो ज ·· ··· कठीर । बळिवत महा बीराधि - वीर ।।
साभळै पाळ ··· ·· ··· । आरभ कीध पायेण आव ।।
पौहो देखि महुरथ की पयाण । ··· य मिळै सो सुलिताण ।।
सुळिताण घणो सनमान कीध । · ··· पटो मोटो सु दीध ।।
बाढे रण वीजळ अनै वेग । ··· ··· ··· पूजे स तेग ।।
आसेर रखे अजमेर वौप । केइ करै गया सुलिताण ।।
चलि थटा सीस खूरम अचल्ल । मौहरै दळा गोपाळ मल्ल ।।
होय हळाहळ यम बीर हक्क । केइ करै बीर काळा किलक्क ।।
डहडहे वाजि डोरू डमम । परचड भडा उतबग पम ।।
हूरा रथ उतरै अरस हूत । ऋगळा दूसारां बहै कूत ।।
गड गडै नाळि गोळा गरज्जि । धड धडा ऊपरा कमध धज्जि ।।
हीसल्ल हमल्ला गरद होय । गति गुडै सीस चवगान गोय ।।
जुध पाळ अनै बळिराम जोध । करकिया जाणि सभू किरोध ।।
ढाहता गजा ढाला ढिचल्ल । ढिग ढोह थिया सुरिताण ढल्ल ।।
पाळ नै कवर बळिराम पूर । सूरामणि सूरातन स सूर ।।
पडि खेत बिहु पुर अमर प्रम । ध्रम स्याम अनै खत्रवाट ध्रम ।।
रवि मडळ बेधै करै राज । पूठै बिकम · ··· णि पाज ।।
दिल्ली सथभ अनम्या स दाट । मन मेर गौड लो · · ।।
·· खग बाहे जेणि पाठाण खाग । आबधां तणो मुखि झड़ै आग ।।
· · · बक हुवै जम्म । बरजागि गौड भाहर बिकम्म ।।
घड · ·· ·· धाक । बजि पार समदा गुल्ल बाक ।।
हरि समर क ··· ··· ह । घर पडै येमि खधार धाह ।।

घर धूणि बलख ... । ... चाढि अनै गढेस नोर ॥
बे पाकड़ि किया सुलिताण बदि । चाढै तिण नामें सूर चद ॥
बछराज वस नर सहस मांण । अजमेर धणी री फिरै आंण ॥
राजे बिक्रम राजाधि - राज । अनि नृपति नही समतुल्ल आज ॥
अजमेरि भोग ग्वालेरि मौड़ । आमेर धणी सो रै अरौड ॥
जोधपुर धणी सो नही जुहार । मेवाड धणी सो सार - मार ॥
खत्रवट्ट वट्ट रजवट्ट पूर । साहि के ... न हर वळ सूर ॥
जिन कियौ गढ गढन सिधार । अजमेर मेर ओपम अपार ॥
राजगढ राज सुभ रचै गाम । आवास वास धौळहर धाम ॥
गिरकोट गिरन सिर धज भुरज्ज । सिघपौळि दीरग्घ सीमाळ सज्ज ॥
है मदिर ध्वजा फाबति हद्द । नीसांण सथ्थ छालरिय नद्द ॥
वे सुनत रौर वपु तें बिलाय । ऋस कटत कष्ट कल्यान राय ॥
सागर बीकम सागर समान । रितराज बाग बारी बखान ॥
गुजार अलिन कौकिल्ल कीर । सीतळ सुगध मदह समीर ॥
पटन हट्ट सोहै अपार । बाजार गळिन मे भीर भार ॥
ब्रन च्यारि ओर अरचन्न च्चारि । जह बसत सत व्रत पुन्नकारि ॥
चातुर दिचित्र जुवतोन लोग । भिन भिन्न करें सब तीर्थ भोग ॥
पन - घट्ट घाट नारी अनेक । भरि चलै भरन आवै अनेक ॥
हस गवनि चद वदनि हसत । दारिम्म जेम चमकत दत ॥
कमनीय काम कै सीस मान । विधि और कहा कीजै बखान ॥
पडित पात सामत सूर । किन्दरा गिरन सिद्धिन गरूर ॥
गढ कियो यसौ वानैत गौर । अनि गढ्ढ नही समतुल्लि और ॥
वानैत तणा कवरा विचारि । जे हुवा चारि घर लियण कारि ॥
अनपाळ अनै अजमाल येमि । जाणिजै कह्या वळिराम जेमि ॥
जसराज अनै भीमाल जोड । माझिया दळा दीठा अमोड़ ॥
सत सूर दत्त खत्रवट समाज । राजैधिराज अनिरुद्ध राज ॥
घघैड धरा ऊवेड धार । वासाडि अजाड़े दोय वार ॥
भड गर्ज्जण उदयेर भाजि । गिळ लिया वैर आमैर गाजि ॥
पूरब्ब साह भागे पडोस । छत्र लिया मारि मौखिया सीस ॥
गज लिया मारि वाना र तौग । सामद गया सूजा स लोग ॥
राजाधिराज अनरुद्ध राडि । जीतिया वळै नौवत्ति वजाडि ॥
वपु लगै घाव ऊबरै वीर । सांमंतां सहित राजा सधीर ॥

जुध जैत बाणारसि जैत वार। धारैं प्रवाह गग लार धार ।।
पातिसाह जैत दिल्लीस पाण। अनुरुद्ध भुजां फत्तेस आण ।।
अनपाळ हुवै राजा स इद। कथि सकै कवण बाणी कविंद ।।
अनुरुद्ध पाट नरसिंघ आज। लघु बेस गौड़ दीरघ्घ लाज ।।
बरसा जिण द्वादसि खडग बाधि। केविया तणा बाहवा स काधि ।।
भडि जेणि साहि दारा भजाडि। राजा नरिंद जीतियो राडि ।।
बगाल कावरू लै बिहद्द। हुबि कीध सांमदां लग्ग हद्द ।।
यम सूजै सुणै सामद वारि। पौहो ताडि कियौ तिणतिण पयारि ।।
बानैत पाटि अजमाल बीर। दातार सूर दहु विधि सधीर ।।
अवतार रूप पारत्थ आप। जिण इद ईस जगिदीस जाप ।।
मुरत्ति मैण बरणं बिसाल। माननी जीय त्रिय अक माळ ।।
दाखै जुबान यक दोय राह। बेछाड कध आजान-बाह ।।
ऊबरो विसेख अति ही अभीत। आकार सिद्ध जुध वार जीत ।।
पव्वैस पाव रिण माहि पेखि। दळथभ जैतखभ जिसौ देखि ।।
असपति दिली परखेस श्रेम। जगि क्रस्ण रथि पारथ्थ जेमि ।।
भारत्थ तणा प्राक्रम भुजाळ। प्रम ग्रत्थ कत्थ री पैंज पाळ ।।
जैयधूत्त क्रस्ण सा सला जाणि। बळि बहै सुधन्वा तेणि बाणि ।।
सापरत जीपणौ हार सोज। इद्र तणो बर परजाळि ओज ।।
पतिसाह जाणि यम करै प्रीत। जुध येह त्री अणजीत जीत ।।
थिर दियै पाटि अजमेर थान। बापी गढ चाढणा घणो बान ।।
अजमाल श्रेमि अजमेर आय। गिड किया पमाडा कित्तै गाय ।।
सांभळे सेर समसेर साहि। मैवास कहावै धरा माहि ।।
त्या तणै सीस कियै क्रोध त्याम। नर खळा साल अजमाल नाम ।।
बाज अनै आप पक्खर बणाय। सामत सिलह यण सजै चाय ।।
घण गजै बजै त्रामाळ घोर। महि गिरा तरां बौलिया मोर ।।
प्रथमादि सीस नद झौक पाडि। पौहो समै अडायळ झोकझाडि ।।
बोरवै खान दाऊद बेढ़ि। त्यो तजै मिळै बळ प्राण तेढि ।।
बधणी बळै सारोठ बाळि। ओनाकर बौराहड उखाळि ।।
दूजडा गहो त्या दही देह। जे काटि आगुळी रह्या तेह ।।
दूसिरा बळा सिर बाळि दाट। घासाहर बिचरै बिघट घाट ।।
चाग यम खान मीढा सुचाव। पौहोमि सु झाडि सेवै सुपाव ।।
मानपुर अनै लालपुर मारि। धर खळा येमि धर चाक धारि ।।

कालिंजर डेरा तेखि कीध । लुळि आय खांन यावोस लीध ॥
यम जीति बळै अजमेर आय । बोथिका साहि मारिग बणाय ॥
दिल्लीवै आगरै फौजदार । भै गाम जीतियौ गजा भार ॥
महि मऊ अखो पूरन्न माळ । ढाहिया बिन्है गज ढाहि ढाल ॥
साहियौ त्यार यम खडग सैण । जगमाल आय मिळियौ स जैण ॥
चक्र असी गढा करि चून-चान । मैवास ग्रासियां तौडि म्यान ॥
जुध अतरबेध स जीति जोध । पतिसाह तैण बाधे प्रमोद ॥
हजरत्ति तैरिण राखै हजूर । देसन्तरि भेजै नही दूरि ॥
साहानसाह साही जुवांन । आगरै येमि राजै अमान ॥
तिण सेव करै ससार सार । पौही जीता समदा वार पार ॥
अै दिखण अनै पूरब्ब देस । पछिमादि उत्तर अप्पै सु पेस ॥
पग अेक रहै ऊभा स पास । खट तीस वस ही आब खास ॥
अनि असुर कहर ऊभा असक । लेखियै जाणि गढ तिणा लंक ॥
त्यां बीच राव बहडै सधीर । मारियौ सलावति खान मीर ॥
ऊरडै बळै सूधौ अपाल । आडौ जदि फिरियौ अज्जमाल ॥
जुध गौड अनै राठौड जांणि । प्रतिमाळ लगै पडियाळ पाणि ॥
कहि खहै खहै बाहै निसक । हाथळा मेगळा जेहि हंक ॥
पाहडा बीहु जुड़िया प्रकार । मैगळा मैंगळा हुई मार ॥
च्यार जद बही जमदाढ चीन । तदि बहै ताप तरवारि तीन ॥
वाहबा मही बिहु नही बक । ऊबरे मरै लिखिया स अक ॥
दोय लड़ै जेथि यक पडै दूठ । यम गजण तणौ पडियौ अकूठ ॥
वानैत तणौ जीत्यौ अजागि । खूद जिण देखि पूजियौ खागि ॥
वळियौ जीति बधनोर वाढि । कमधज्ज धरां हूं दीध काढि ॥
जुध कीध पमाडा अजै जाणि । विधि बिन्हैरास केतै वखाणि ॥
जा मिळै मुडै दीजै स वत । यम दियौ अजैणि खेत अत ॥
अजमाल पाट राजड अवीह । दौयणा पडत चढ तास दीह ॥
मेडतै अनै गढ अजयमेर । वेऊ पख अजसै येणि वेर ॥
प्रभ साह तणै हणमत पेखि । दोय भुजा जैणि भीमांण देखि ॥
उत्तमग भाग झल्ले कै अमोल । तिरण मद्धि रत्ति गिरमेर तोल ॥
वणि वदन कमळ तेहो विकासि । पून्योम चद सूरिज्ज प्रकासि ॥
यरण वार आय अवतार लीध । सावत सूर अवसाण सीध ॥
दूसिरी भुजा सोही राम दूठ । अवकध माल दाता अकूठ ॥

राम री भुजा बणि भरत रूप । बानैत पाटि अजमाल भूप ।।
भरथ भुजा सत्रघण भुजाळ । सिरदार सूर फौजा सिघाळ ।।
सुज कहै आतमा राम सीह । अजमाळ तणा पांचौ अबीह ।।

।। इती श्री बसावळी गौड़ां की राव महेसदास कृत लिखत महताप पठनार्थं
अगरजी समत १८७६ मिती चैत सुदि २ सनिवार
पूरी हुई बांचे ज्यांने श्रीराम ।।



परिशिष्ट (२)

ऐतिहासिक टिप्पणियां

उज्जयिनी युद्ध

पृ. २ (१) अकवर जलालदीनह—मुगल वश का प्रसिद्ध वादशाह जलालुद्दीन अकवर, जो हुमायू का पुत्र और बावर का पौत्र था।

(२) नूरदीसाहि जहांगीर — वादशाह अकवर का पुत्र वादशाह अवुलमुजफ्फर नूरुद्दीन जहाँगीर। इतिहास मे वह जहाँगीर के नाम से प्रसिद्ध है।

(३) साहिजिहांन — वादशाह जहाँगीर का पुत्र और उत्तराधिकारी वादशाह शाहजहाँ। शाहजहाँ के चारो शाहजादो के तीन स्थानो पर लडे गए युद्धो का इस ग्रथ मे वर्णन है।

(४) राजसीं रांण — उदयपुर (मेवाड) के शासक महाराणा राजसिंह (प्रथम)। महाराणा राजसिंह महाराणा जगतसिंह के पुत्र थे। जगतसिंह की मृत्यु के बाद सन् १६५२ मे मेवाड के सिंहासन पर बैठे। राजसिंह अपने समय के बडे वीर, स्वतत्रता प्रेमी तथा विद्वानो एव कलाकारो के आश्रयदाता थे। तीनो शाहजादो के उत्तराधिकार के युद्धो मे उन्होने प्रत्यक्ष रूप मे तो तटस्थता ही वरती थी। किन्तु वैसे वे शाहजादे औरगजेव और मुरादवख्श के पक्ष मे थे। सभवत महाराणा की ओर से शाही सेवा मे दक्षिण मे नियत एक हजार सेना ने दोनो शाहजादो का पक्ष ग्रहण किया हो। शाहजादो की तरफ से लिखे गए पत्र और महाराणा को उपहार भिजवाने के उल्लेख से इस तथ्य की पुष्टि होती है। उनका सन् १६८० मे निधन हो गया।

—वीर विनोद भा. २ पृ. ४१२–१५

पृ ३ (१) शाहिदारा — शाहजादा दाराशिकोह वादशाह शाहजहाँ का जेष्ठ पुत्र था। उसकी सूवेदारी मे दिल्ली से उत्तरी भूभाग के प्रदेश थे। वह एक नेक-दिल, धर्मसहिष्णु और सहृदय शाहजादा था। वादशाह की उपस्थिति मे भी दिल्ली दरवार मे उसकी मत्रणा और कार्यादेश माने जाते थे। जव शाहजहाँ की अस्वस्थता के समय शाहजादा शुजा, औरगजेव और मुराद ने विद्रोह किया, तव दाराशिकोह ने ही तीनो शाहजादो को अपने अपने प्रान्तो मे लौट जाने के लिए शाहजहाँ की ओर से आदेश और सेनाएँ भेजी थी। औरगजेव और मुराद के विरुद्ध महाराजा जसवतसिंह जोधपुर और कासिम खा को भेजा गया था। किन्तु युद्ध मे शाही सेना शाहजादो की सेना मे उज्जैन के पास धरमत के मैदान मे हार गई, तव फिर दाराशिकोह ने धौलपुर के पास मुकाबिला किया। वहा भी उसके पक्ष की हार

हुई। तदनन्तर वह यत्र तत्र बल-सग्रह करने के लिए भटकता रहा और अन्त में औरगजेब के सकेत पर मलिक जीवन अफगान द्वारा वन्दी बनाया जाकर मरवा दिया गया।

(विशेष परिचय के लिए देखो दाराशिकोह)

(२) साहि सूजा — बादशाह शाहजहाँ का द्वितीय पुत्र शाहजादा शुजा। तब उसके मनसब मे दिल्ली से पूर्व के बगाल आदि प्रान्त थे। शाहजहाँ की अस्वस्थता की सूचना पर सब से पहले उसी ने विद्रोह किया था। उसे दिल्ली-आगरे की ओर बढने से रोकने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह (प्रथम) आम्बेर और दाराशिकोह के बडे शाहजादे सुलेमानशिकोह को भेजा गया था। दोनो पक्षो का बनारस के निकट बहादुरपुर स्थान पर सामना हुआ और शुजा को परास्त होकर बगाल की तरफ भाग जाना पडा। औरगजेब ने बादशाह बनने के बाद मे उसे भी छलाघात से मरवा डाला।

—वीरविनोद, द्वि भा, पृ. ३६१, दाराशिकोह पृ. १०६-१५

(३) साहि अवरग — शाहजादा मुहम्मद औरगजेब शाहजहाँ का तृतीय पुत्र था। उसके मनसब मे दक्षिण के भूभाग थे। बादशाह की अस्वस्थता के समाचार प्राप्त कर उसने भी दक्षिण से दिल्ली की तरफ कूच किया और रास्ते मे गुजरात के सूबेदार शाहजादे मुराद से साठ-गाठ कर अपने शामिल कर लिया। तदनन्तर धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धो मे दाराशिकोह की सेनाओ को हरा कर आगरे पर अधिकार कर लिया। वहाँ से दिल्ली पर कब्जा करने के लिए प्रस्थान कर मथुरा के मुकाम पर मुराद को मदिरा पिला कर कैद कर लिया और माडू के किले मे कारागृह मे रख कर कुछ अर्से बाद मरवा डाला।

— मुगलकालीन भारत, भा० २ देखो

(४) साहि मुरियाद — शाहजादा मुरादबख्श बादशाह शाहजहाँ का सब से छोटा पुत्र था। उस समय वह गुजरात का सूबेदार था। शाहजादे औरगजेब ने पहिले तो उसे बादशाह बनाने का प्रलोभन देकर अपने पक्ष मे बना लिया था। फिर धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धो मे विजय प्राप्त कर शाहजहाँ को आगरा के किले मे बदी बना दिया। फिर दिल्ली पर अधिकार करने के लिए जाते हुए मार्ग मे मुराद को कैद कर माडू के किले मे भेज दिया। तदनन्तर उसी दुर्ग मे मुराद को मरवा डाला। — मुगलकालीन भारत, भा० २ देखो

पृ ५ (१) जसमत — महाराजा जसवतसिंह जोधपुर नरेश राजा गजसिंह के छोटे पुत्र थे। राजा गजसिंह की इच्छा से बादशाह शाहजहाँ ने उनके बडे भाई अमरसिंह को तो राव का खिताब तथा नागोर का वतन दिया और उनको जोधपुर का राज्य व पहले राजा और बाद मे महाराजा का उपटक दिया। बादशाह ने विद्रोही शाहजादे औरगजेब और मुरादबख्श को समझा-बुझा कर अपने सूबो मे लौट जाने को बाध्य कर देने के लिए जसवतसिंह और कासिम खाँ को भेजा था। महाराजा जसवतसिंह ने अनेक हिन्दू उमरावो के साथ मालवा के उज्जैन नगर के समीपस्थ धरमतपुरा नामक स्थान पर दोनो शाहजादो का सामना किया। दोनो पक्षो मे बडा कडा सग्राम हुआ। अन्त मे महाराजा जसवतसिंह की पराजय हुई और वे रणक्षेत्र त्याग कर जोधपुर चले गए। उस समय इनका सात हजारी जात छह हजार का मनसब था। स० १६९५ से १७३५ तक इनका जोधपुर पर राज्य रहा।

— मा इ भा १ पृ. २१०-४२

(२) **जैसींघ** — मिर्जा राजा जयसिंह (प्रथम) आम्वेर के स्वामी थे। बादशाह शाहजहाँ ने अपने पौत्र शाहजादा सुलेमान शिकोह सहित इन्हे बागी शाहजादे शुजा को रोक कर अपने सूबे को लौटा देने के लिए भेजा था। मिर्जा राजा जयसिंह ने अपनी रणदक्ष नीति से शाहजादा शुजा की सेना पर बनारस के निकट बहादुरपुर स्थान पर नैश्य आक्रमण कर बगाल की तरफ भगा दिया। शाहजहाँ के शासनकाल मे उनका मनसब छह हजारी जात पाच हजार सवार का था। जयसिंह का स० १७२३ तक आम्वेर प्रदेश पर शासन रहा।

— ना ई पृ १३६-३७, मा उ पृ. १६३

(३) **सत्तौ** — राव शत्रुशाल हाडा बूदी के स्वामी राव राय रतनसिंह के पुत्र राजकुमार गापीनाथ का पुत्र था। गोपीनाथ का निधन राव राय रतनसिंह के जीवन काल मे ही हो गया था। राव राय रतनसिंह की मृत्यु के पश्चात् राव शत्रुशाल स० १६८८ मे बूदी की गद्दी पर बैठे थे। धौलपुर के युद्ध मे वह शाही पक्ष के प्रमुख योद्धा और हरावल के नेता थे। शाहजादा दाराशिकोह के मैदान छोड कर भाग जाने पर भी शत्रुशाल अन्य राजपूत योद्धाओ के साथ युद्ध मे डटे रहे और अन्त मे हरावल मे लडते हुए मारे गए। उस समय उनका मनसब चारहजारी जात, चार हजार सवार का था। — रा ई. ज. द्वि भा पृ ११७

(४) **अनुरुद्ध** — राजा अनिरुद्ध सिंह गौड, बादशाह शाहजहाँ के अत्यधिक विश्वासपात्र राजा गोपालदास गौड लाखेरी और अजमेर (नगर को छोड कर) के स्वामी के द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गौड के पुत्र थे। वह भी शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना मे मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा के साथ भेजी गई सेना मे नियुक्त हुआ था। अनिरुद्धसिंह बहादुरपुर के युद्ध मे घायल होकर बच गया था। उसके वतन मे मालपुरा और रणथभौर का परगना था। उस समय उसका मनसब तीनहजारी जात, तीन हजार सवार का था। स १७१६ मे इनका देहान्त हो गया।

— मा उ (मुगल दरबार के हिन्दू सरदारो की जीवनी) पृ ६३-६४

(५) **दलेलखान** — नबाव दलेलखान (दिलेर-खाँ) रुहेला शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना मे नियुक्त था। उस समय वह कन्नौज का फौजदार था।

— दाराशिकोह पृ ११२

(६) **साहि सलेम** — शाहजादा दाराशिकोह का पुत्र शाहजादा सुलेमानशिकोह। वह शाह शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना का सेनानायक था। उस समय उसका मनसब पन्द्रह हजारी जात, आठ हजार सवार का था। वह भी माडू के किले मे एक वर्ष कैद भोगने के बाद गला घोट कर मार दिया गया।

— वीर विनोद द्वि भा पृ २६१, दाराशिकोह पृ १०६–१७,१५७

(७) **रासा** — राजा रायसिंह सीसोदिया मेवाड के महाराणा अमरसिंह के पुत्र राजा भीम (भीमसिंह) का पुत्र था। उसके वतन मे टोडा रायसिंह का परगना था। उज्जैन के युद्ध मे वह भी शाही सेना मे नियुक्त था। महाराजा जसवतसिंह के रणक्षेत्र छोडने के साथ ही, वह भी युद्ध से अलग हो गया था। उस समय उसका मनसब पाँच हजारी जात, अढाई हजार सवार का था। — मा उ. पृ ३६३–६६

(८) रार्यसिंघ — उज्जैन, धौलपुर और बनारस के युद्धो मे रार्यसिह नाम के कई योद्धा शामिल थे। जिनमे राजा रार्यसिह सीसोदिया टोडारार्यसिह, राव रार्यसिह राठौड नागौर प्रमुख थे। यहाँ कवि का किस रार्यसिह से अभिप्राय है, स्पष्ट नही होता। सभवत यहाँ रार्यसिह का रार्यसिह सीसोदिया ही तात्पर्य है।

पृ. ६ (१) जसौ — जसवर्तसिह गौड, राजा अनिरुद्धसिह गौड का छोटा भाई था। वह भी अपने भाई राजा अनिरुद्धसिह के साथ पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध मे शामिल था। सभवत: उसकी जागीर मे मारवाड के नावे परगने के मारोठ ठिकाने के गाँवो का एक भाग था। — ख्यात ग. हस्तलिखित

(२) उदैभाण — अजमेर मेरवाडा के राठौडो के ठिकाने भिणाय के राजा श्यामसिह का पुत्र राजा उदयभान। वह भी पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध मे शामिल था। उदयभान के वशजो के अजमेर मेरवाडे मे भिणाय, देवलिया और वघेरा के ठिकाने थे। उस का मनसब आठ सौ जात, पाच सौ सवार का था। — ख्यात ग. हस्तलिखित

(३) भोजौ — भोजराज खगारोत कछवाहा। वह नराणा के राव खगार का पुत्र था। मिर्जा राजा जर्यसिह के साथ शुजा के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना मे नियुक्त था।
— नैणसी ख्यात भा १ पृ ३०५, कछवाहो के वीर गीत

(४) भावसी — भार्वसिह, सभवत वह गौड योद्धा था। और राजा अनिरुद्धसिह गौड की सेना मे अपने भाई रिणछोडदास के साथ बहादुरपुर के युद्ध मे सम्मिलित था।

(५) रिणछोड़ — भार्वसिह गौड का भाई रणछोडदास गौड। वह भी बहादुरपुर के युद्ध मे अपने भाई के साथ था।

(७) वादर — बहादुर खाँन सैयद। वह भी बहादुरपुर के युद्ध मे सेना के चदावल भाग मे रह कर लडा था।

(८) जाफरमीर — मीरजाफर। वह शुजा के विरुद्ध लडे गए युद्ध मे सेना के पृष्ठ भाग मे रह कर लडा था। उस समय उसका मनसब एक हजारी जात, छह सौ सवार का था।

(९) कासू — सभवत: कासिमखान सैयद। वह वगाल का सूवेदार भी रह चुका था।

(१०) गजपत्ति—जोधपुर के राजा गर्जसिह राठौड, जो महाराजा जसवर्तसिह के पिता और शाही मनसबदार थे। स १६७६ से १६९५ तक उनका शासन काल रहा।
— मा. ई भा १ पृ १९९-२०८

पृ १०(१) अरजण — राजा विट्ठलदास गौड का द्वितीय पुत्र अर्जुन गौड। वह वादशाह शाहजहाँ का विश्वस्त सेना नायक और दरवारी योद्धा था। अर्जुन गौड ने ही दरवार मे सलावतखाँन बक्सी को मारने पर पाच-छह अन्य योद्धाओ के सहयोग से राव अमरसिह राठौड नागर को मारा था। धरमतपुरा के युद्ध मे वह भी कतिपय गौड़ योद्धाओ सहित

अनुभव कर राजा अमरसिंह लडाई के मैदान से अलग हो गया था। तब उसका मनसब पन्द्रह सौ जात, एक हजार सवार का था।

— नैणसी. भा १, पृ ३०३ मा. ख्यात ग, वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३७०।

(१५) वेळू — धरमतपुरा के युद्ध मे भेजी गई सेना मे वेलूजी नाम नही मिलता। यहा वस्तुत· मालोजी भोसला नाम होना चाहिए था। वह धरमतपुरा के युद्ध मे शाही पक्ष की सेना मे था। उस के जिम्मे युद्ध-शिविरो की रक्षा और सम्हाल का कार्य था। वह पर्सोजी के साथ ही युद्ध की स्थिति बिगडने पर मैदान छोड कर चला गया था।

— मा ख्यात. क.।

(१६) परसु — मालोजी भोसला का भाई पर्सोजी भोसला। वह धरमतपुरा के युद्ध मे शाही सेना मे डेरो की रक्षा एव सम्हाल के लिए अपने भाई मालोजी सहित नियत हुआ था। किन्तु युद्ध की स्थिति बिगडते देख कर वह भी मालोजी सहित मैदान छोड कर आगरा को कूच कर गया। तब उसका मनसब तीन हजारी जात, दो हजार सवार का था।

— मा ख्यात. क, मा उ भा. १ पृ ३०४-८, वीरविनोद द्वि भा पृ. ३६६।

(१७) देवीसिंह — ओरछा का शासक राजा देवीसिंह बुदेला। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे महाराजा जसवतसिंह की नायकता में भेजी गई सेना मे नियुक्त था। परन्तु युद्ध की भयकरता से विचलित होकर वह विद्रोही शाहजादो से मिल गया था। उस समय उसका मनसब अढाई हजारी जात, दो हजार सवार का था। वह बादशाह औरगजेब के शासन के तेरहवे वर्ष मे काबुल के सूबेदार मुहम्मद अमीनखा के साथ नियुक्त हुआ था। खैबर दर्रे मे मुहम्मद अमीनखा के पराजित होने के बाद का उसका कोई उल्लेख प्राप्य नही है। इसलिए सभवत खैबर मे ही वह मारा गया हो।

— वीरविनोद द्वि भा पृ ३६७, मा उ भा १, पृ. २२०-२३।

(१८) सुजाणसिंघ — बुन्देलखण्ड के राजा पहाडसिंह का पुत्र राजा सुजानसिंह बुदेला। राजा सुजानसिंह भी धरमतपुरा के युद्ध मे शाही सेना मे नियुक्त हुआ था। वह भी युद्ध की भयानकता से भयभीत होकर मैदान से दूर हो गया था। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, दो हजार सवार का था। तदनन्तर वह औरगजेब की सेवा मे रह कर शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना के सहायको मे नियुक्त हुआ और कूच-विहार, आसाम, पुरन्दर दुर्ग, और बरार के युद्धो मे भी शामिल हुआ। उन युद्धो मे वीरता दिखला कर प्रशसा प्राप्त की। बादशाह औरंगजेब के शासन के ११ वें वर्ष मे दक्षिण मे उसका देहान्त हो गया।

— मा उ. भा. १, पृ ४३५-३६, वीरविनोद द्वि भा पृ ३६८, मा. ख्यात. क।

(१९) राजा छत्रमणि — डीग (भरतपुर) राज्य के शासक राजा छत्रमणि यादव। वह यादवो के करौली राज्य के नजदीकी भाइयो मे था। राजा छत्रमणि भी धरमतपुरा के युद्ध मे महाराजा जसवतसिंह राठोड के साथ नियुक्त शाही सेना मे सम्मिलित था। महा-

राजा जसवंतसिह का पाणिग्रहण उसकी राजकुमारी के साथ हुआ था। महाराजा अजितसिह उसका भानजा था। युद्ध की स्थिति बिगडने पर वह भी मैदान से हट गया था।

— राठौडां री ख्यात, मा. ख्यात. ख, नैणसी भा ३ पृ २१३।

(२०) बलिराम — बलिराम हाडा के वतन और शाही मनसब की जानकारी उपलब्ध नही है। सभवतः वह कोटा तथा बूदी के हाडा राजवश के भाइयो मे हाडौती के किसी ठिकाने का जागीरदार था। धरमतपुरा मे वह भी शाही सेना मे था।

(२१) पातळ — प्रतापसिह मारू राठौड कहा का था, ख्यातो तथा इतिहास से प्रमाणित नही होता। सभवतः वह मालवा के झाबुआ राज्य के सस्थापक अकबर-कालीन राजा केशवदास मारू राठौड के वशक्रम मे हो।

(२२) सबळसिह — राणा अमरसिह (उदयपुर) के पाचवें पुत्र बाघसिह सीसोदिया के पुत्र सुरताण का पुत्र सबलसिह राणावत सीसोदिया। धरमतपुरा के युद्ध में वह घायल होकर बच गया था। बादशाह शाहजहा के शासन के २२ वें वर्ष मे उसका मनसब दो हजारी जात, एक हजार सवार का था। — मा ख्यात. ख, म. उ भा १ पृ ४०६।

पृ १२ (१) जखमी उजबक — कवि ने यहा उजबक जाति के किस मुस्लिम योद्धा का उल्लेख किया है, ख्यातो आदि से स्पष्ट नही होता है। सभवत यहा सैयद कुली उजबेक से अभिप्राय होगा। तब उसका मनसब आठ सौ जात चार सौ सवार का था।

(२) खा अफितार — अब्दुलाखा फीरोज जग का भतीजा इफ्तखारखा ख्वाजा अबुलबका। वह बादशाह शाहजहा के १८ वें वर्ष मे इफ्तखारखा की उपाधि प्राप्त कर सम्मानित हुआ। तदनन्तर अकबर नगर की फौजदारी पर नियुक्त होते समय उसका मनसब डेढ हजारी पाच सौ सवार का हो गया। वह कधार मे कजिलबाशो के युद्ध मे बडी बहादुरी से लडा। तब पुरस्कार रूप मे दरबार से उसका मनसब बढा कर दो हजारी सवार का किया तथा झण्डा भी प्रदान हुआ। बादशाह शाहजहा के ३८ वें वर्ष मे वह तीन हजारी मनसबदार बनाया गया और तब ही मालवा में चौरागढ की फौजदारी तथा जागीरदारी प्राप्त हुई। बादशाह के शासन के अन्तिम वर्ष में धरमतपुरा के युद्ध मे महाराजा जसवन्तसिह की सेना मे वह शामिल हुआ और मुरादबख्श की सेना से युद्ध करता हुआ मारा गया।

— मु द भा २ पृ ४४८-५१।

(३) कासिमखांन — महाराजा जसवतसिह जोधपुर को सहयोग देने के लिए कासिमखान को एक स्वतत्र शाही सेना का प्रधान बनाकर बागी शाहजादा मुराद का मार्गविरोध करने के लिए भेजा गया था। परन्तु उसने शाही सेना और विद्रोही शाहजादो की सेना का मुकाबिला होने पर मैदान छोड दिया। कासिमखान का धरमतपुरा के युद्ध के समय चार हजारी जात, चार हजार का मनसब था।

— मा. ख्यात, ख, रा ख्यात दाराशिकोह पृ. ११७-१८।

(४) सिवपति — राजा गोपालदास गौड के जेष्ठ पुत्र राजा बलिराम गौड का पुत्र राजा शिवराम गौड। उस समय वह मालवा प्रान्त के प्रसिद्ध दुर्ग माडू का दुर्गपाल

महाराजा जसवर्तसिंह के साथ भेजा गया था। वह भी धरमत मे जूझता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, पन्द्रह सौ सवार का था। उसके वतन मे अजमेर के निकट राजगढ का ठिकाना एव जागीर थी।

— मा. ख्यात, गौडो के वीर गीत

(२) **मुकदेस** — कोटा के राजा माधर्वसिंह हाडा का जेष्ठ पुत्र मुकदर्सिंह हाडा। वह उस समय कोटा का शासक और तीन हजारी जात दो हजार सवार का मनसबदार था। वह भी धरमत के युद्ध मे सेना के हरावल भाग का नेतृत्व करता हुआ खेत रहा।

— रा ई ज. द्वि. पृ ४७-४८; हाडो के वीर गीत

पृ. ११ (१) **मोहर्णसिघ** — कोटा के शासक राव मुकर्दसिंह हाडा का भाई मोहर्नसिंह हाडा। वह उस समय आठ सौ जात, चार सौ सवार का मनसबदार था। मोहर्नसिंह भी धरमत मे खेत रहा था। उसकी जागीर मे कोटा राज्य का पलायथा ठिकाना था।

— को रा ई प्र भा पृ १३४

(२) **जूझार** — कोटा नरेश मुकर्दसिंह हाडा का तृतीय भाई जूझारसिंह हाडा। वह भी धरमत मे लड़ता हुआ काम आया। उसके वतन मे कोटा राज्य का कोटडा ठिकाना था।

— को रा ई प्र भा. पृ १३४

(३) **किसोवर्रसिघ** — राव मुकर्दसिंह हाडा कोटा का पाचवा भाई किशोरसिंह हाडा। वह धरमत के युद्ध मे घायल होकर बच गया था। तदनन्तर औरगजेब के राजत्व के २५वें वर्ष मे वह कोटा का शासक बनाया गया था। उससे पूर्व उसकी जागीर मे कोटा राज्य का सागोद ठिकाना था।

— रा. ई ज द्वि पृ ५०–५२

(४) **कन्हीराम** — कोटा के राव मुकर्दसिंह हाडा का चतुर्थ भाई कन्हीराम हाडा। वह भी धरमत के युद्ध मे लडता हुआ धराशायी हुआ था। उसकी जागीर मे कोटा रियासत का कोयला ठिकाना था।

— को रा ई प्र. भा, पृ १३४

(५) **रतनागर** — मालवा के रतलाम राज्य का शासक राजा रतर्नसिंह राठौड। वह महेशदास का पुत्र और महाराजा जसवर्तसिंह का दो पीढी दूर का भाई था। धरमतपुरा के युद्ध मे राठौड सेना के हरावल का संचालन करता हुआ मारा गया था। उस समय उसका मनसब दो हजारी जात, सोलह सौ सवार का था।

— र प्र. पृ १५–६७

(६) **वळथभ** — मालवा के गगधार परगने का स्वामी रावत दयालदास झाला। वह भी धरमत के युद्ध मे मारा गया। उस समय उसका मनसब नौ सदी जात, पाच सौ सवार का था।

— मा ख्यात-क

(७) **सुजार्णसिघ** — शाहपुरा का शासक सुजार्णसिंह सीसोदिया वह महाराणा अमरसिंह के छोटे पुत्र सूरजमल सीसोदिया का जेष्ठ पुत्र था। वह भी धरमत के युद्ध में अपने तीन पुत्रो सहित खेत रहा था। उसका मनसब दो हजारी जात, आठ सौ सवार का था।

— मा ख्यात-क

(८) बैरीसिघ — शेखावाटी प्रदेश के शेखावतो के प्रमुख राज्य खण्डेला का शासक राजा बैरीसिंह (वरसिंहदेव) शेखावत। वह अकबर-कालीन सुज्ञात राजा रायसल दरबारी के पौत्र राजा द्वारिकादास शेखावत का पुत्र था। उसकी लडकी से जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह का विवाह हुआ था। धरमतपुरा के युद्ध मे वह भी महाराजा जसवतसिंह के साथ शाही सेना मे नियुक्त हुआ था। महाराजा जसवतसिंह के रणभूमि त्यागने पर वह भी युद्ध क्षेत्र से अलग हो गया था। खण्डेला पर उसका शासन संवत् १६६० से १७२० तक रहा था। — मा. ख्यात क खण्डेला, पृ. ६६-६६

(९) गोवरधन चद्रहतणौ — मारवाड के चण्डावल ठिकाने के ठाकुर चन्द्रसिंह का पुत्र गोवर्द्धनसिंह कूपावत राठौड। गोवर्द्धनसिंह पहिले राजा गजसिंह की सेना मे था। उसने गजसिंह के द्वारा लडे गए विभिन्न युद्धो मे अच्छी ख्याति अर्जित की थी। उनके निधन के बाद महाराजा जसवतसिंह की सेना मे भी उसका प्रमुख स्थान था। धरमपुरा के युद्ध मे वह सेना के हरावल मे रह कर लडा था और उसी युद्ध मे अपने साथियो सहित धराशायी हुआ। उस समय उसका मनसब एक हजारी जात, पाच सौ सवार का था।

— मा ख्यात क, ख, ग, रा वीरगीत, वचनिका २०, टि. पृ ११८।

(१०) केहरी — रावत केशरीसिंह शक्तावत (सीसोदिया)। वह महाराणा प्रतापसिंह के भाई शक्तिसिंह का वशज था। रावत केशरीसिंह बानसी के स्वामी रावत नारायणदास का पुत्र और किशनसिंह का भाई था। धरमतपुरा के युद्ध मे केशरीसिंह अपने एक अन्य भाई सहित सम्मिलित था और उसी युद्ध मे वीरता प्रदर्शित कर धराशायी हुआ।

— मा. ख्यात ग, मारवाड के परगनो की विगत, शक्तावतो के वीर गीत।

(११) रुकमांगद — रुक्मागद शक्तावत सीसोदिया सुरताण अचलदासोत का पुत्र था। अचलदासोत बानसी के रावत नारायणदास शक्तावत के भाई सुरताण का पुत्र था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे सम्मिलित था। — मा. ख्यात ग।

(१२) राघवदे — मालवा के गगधार सस्थान के स्वामी रावत दयालदास झाला का छोटा भाई और रावत नरहरिदास झाला का छोटा पुत्र राघवदेव झाला। वह भी शाही सेना मे नियुक्त था और अपने जेष्ठ भाई रावत दयालदास झाला के साथ ही धरमतपुरा के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ। — मा ख्यात ख, ग.।

(१३) चद्रावत अमरेस — रामपुरा राज्य के चद्रावत सीसोदिया हरिसिंह का पुत्र और उत्तराधिकारी राव अमरसिंह चद्रावत। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे नियत शाही सेना मे शामिल था। युद्ध का परिणाम प्रतिकूल जानकर राव अमरसिंह भी रणक्षेत्र का त्याग कर चला गया था। तब उसका मनसब पन्द्रह सौ जात, एक हजार सवार का था। वह सवत् १७२५ वि मे दक्षिण के साल्हेर किले की तलहटी मे लडता हुआ मारा गया।

— मा. ख्यात ख, वा ख्यात पृ १०८, मा ख्यात ग., म उ पृ २१६-१८।

(१४) अमरेस — नरवर का शासक राजा अमरसिंह कछवाहा। वह राजा आशकर्ण कछवाहा के पौत्र राजा रामदास का पुत्र था। धरमतपुरा के युद्ध मे वह भी अपने पुत्र कुवर जगतसिंह सहित शाही सेना मे नियत था। युद्ध मे शाही सेना की पराजय की स्थिति का

था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे शाही पक्ष मे लड कर घायल हुआ था। तदनन्तर धौलपुर के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ। एक समय उसके वतन मे मालवा का धवेरा भूभाग भी रहा था। राजस्थान मे सरवाड़ (किशनगढ राज्योन्तर्गत) ठिकाना उसकी जागीर मे था। तब उसका मनसब अढाई हजारी जात, अढाई हजार सवार का था।

— मा उ भा १ पृ ४३०-३१, मा ख्यात ग, मा. प. विगत।

(५) **मांन** — सुमेरसिंह गौड का पुत्र मानसिंह गौड। वह तब मालवा के आसेर (आसिर) गढ का किलेदार था। उसी ने सर्व प्रथम दोनो विद्रोही शाहजादो की सेनाओ के शामिल होकर आगरे की ओर बढने की सूचना उज्जैन मे महाराजा जसवंतसिंह के पास भेजी थी। धरमतपुरा के युद्ध मे वह भी शामिल था। मानसिंह के मनसब और जागीरी व ठिकाने की जानकारी प्राप्य नही है।

(६) **गोपाळ** — राजा विट्ठलदास गौड का पिता राजा गोपालदास गौड। वह शाहजादा खुर्रम (शाहजहा) का अत्यधिक विश्वासपात्र सरदार था। एक समय उस के अधिकार मे बूदी राज्य की ओर से प्रदत्त लाखेरी परगना था। रणथभौर के युद्ध मे उसने वहा के किलेदार बाकीबेग को बन्दी बना लिया था और सहायक किलेदार बीजल कछवाहा को मार कर किले पर अधिकार कर लिया था। अन्त मे वह शाहजादे पर्वेज के विरुद्ध झूसी की रणभूमि मे लडता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ।

— गोपालदास गौडरी बात, गौडो के वीरगीत।

(७) **बळिराम** — राजा गोपालदास गौड का जेष्ठ पुत्र और राजा शिवराम गौड का पिता राजा बलिराम गौड। राजा बलिराम गौड भी शाहजादा खुर्रम के पक्ष मे था। पर्वेज और खुर्रम के झूसी के युद्ध मे अपने पिता के साथ वह भी मारा गया था।

— गौडो के वीरगीत, मा उ पृ ४३०-३१।

पृ १३ खां मनसूर — सैयद खानजहा शाहजहानी का पुत्र सैयद मसूरखा बारह। उसे बादशाह के ३० वें वर्ष मे एक हजारी, चार सौ सवार का मनसब प्रदान हुआ। धरमतपुरा के युद्ध मे वह शाहजादा औरगजेब के साथ था। जब औरगजेब ने धरमतपुरा और धौलपुर के युद्ध मे विजय प्राप्त कर शाहजादा मुराद को गिरफ्तार किया, तब मसूरखां को तीन हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का मनसब मिला और दाराशिकोह का पीछा करने के लिए खलीलुल्लाखां के साथ भेजा गया था।

— मु द भा ४ पृ. १८७-९०।

पृ १४ रावळ समरसेनि — दिल्ली मण्डल के अन्तिम और प्रसिद्ध हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के समकालीन और उसके बहनोई चित्तौड के स्वतत्र शासक रावल समरसिंह सीसोदिया। वह पृथ्वीराज के पक्ष मे महम्मद गौरी के विरुद्ध लडता हुआ मारा गयो था।

पृ १५ वचनिका राणा करण — मेवाड के शासक राणा कर्णसिंह सीसोदिया। सवत् १६८१ मे बनारस के पास टोस नदी के युद्ध मे शाहजादा खुर्रम शाहजादा पर्वेज की

सेना से पराजित होने पर एक अर्से तक उदयपुर (मेवाड) मे वहाँ के शासक की शरण मे रहा था। उसी प्रसग मे यहाँ राणा कर्णसिंह का उल्लेख हुआ है।

— वीरविनोद द्वि. भा पृ. २८६।

पृ २२ (१) सूलितांण महमूद — शाहजादा औरगजेब का पुत्र और वादशाह शाहजहाँ का पौत्र मुहम्मद सुल्तान। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे अपने पिता के साथ था। तब उसका मनसब सात हजारी जात, दो हजार सवार का था।

— वीरविनोद द्वि. भा. पृ. ३४६।

(२) खांन निजावति — शाहजादा औरगजेब का पक्षधर निजावत खान। वह धरमतपुरा के युद्ध मे अपने पुत्र शुजाअतखाँ सहित औरगजेब के समर्थन मे लडा था। माडू के किले को अपने अधिकार मे लेकर शाहजादा औरगजेब के सुपुर्द करने के लिए भी वह प्रयत्नशील हुआ था। किन्तु तब वहाँ के दुर्गाध्यक्ष राजा शिवराम गौड की सतर्कता एव दृढता के कारण वह सफल नही हो सका। वादशाह शाहजहाँ के शासन समय मे उसका मनसब चार हजारी जात, चार हजार सवार का था। — मा. उ. (हिन्दी) भा ३. पृ. ४६२-६८।

(३) पोहकरदास — पृ १२ छ. स २७ की टिप्पणी के राजा शिवराम गौड बलिरामोत का छोटा भाई पोखरदास (पुष्कर दास) गौड। वह विद्रोही शाहजादो की सेना से माडू के किले मे भी लड चुका था। धरमतपुरा के युद्ध मे घायल होकर बच गया था। धौलपुर के युद्ध मे वीरतापूर्वक लडता हुआ रणशायी हुआ।

पृ. २७, खाचरोद — उज्जैन के समीपस्थ मालवा प्रान्त का गाँव खाचरोद। महाराजा जसवतसिंह ने पहिले खाचरोद स्थान के पास ही शाहजादा मुराद की सेना से सामना करने का निश्चिय किया था। पर शाहजादा को अपनी अकेली सेना से मुकाबिला करने का साहस नही हुआ। तब अपना मार्ग महाराजा की सेना के सामने से बदल कर उज्जैन के पास अपना मुकाम किया। — मा इ प्र. भा. पृ २२१।

पृ. २८ (१) चोरनरायणो — उज्जैन से ४ कोस दूर नरायना चोर नाम का नाला। महाराजा जसवतसिंह ने इसी स्थान पर अपना सैनिक शिविर बनाया था।

— रा ख्यात।

पृ २८ (२) अस्टम तिथि — वैसाख कृष्णा ८, गुरुवार सवत् १७१५ धरमतपुरा के युद्ध का प्रथम दिन। इसी तिथि को उभय-पक्षीय सेनाओ ने अपने अपने मोरचे तैयार किये थे।

पृ. ३१ सतरा सै समत्त -- धरमतपुरा के युद्ध की तिथि सवत् १७१५, वैसाख कृष्णा ६ शुक्रवार।

पृ. ३५ श्रीमणि — गौड वीर अर्जुन के सिलहखाने का अधिकारी शिवमणि जोशी (ब्राह्मण)। शिवमणि खेमराज जोशी का पुत्र था। वह भी अपने स्वामी अर्जुन गौड़ के साथ धरमतपुरा मे विपक्षी सेना का सहार करता हुआ खेत रहा था।

पृ. ३६ वीरभद्र — राजा गोपालदास गौड का छोटा पुत्र और राजा विट्ठलदास गौड का छोटा भाई वीरभद्र गौड। वीरभद्र भी धरमतपुरा के युद्ध मे भेजी गई शाही पक्षीय सेना मे सम्मिलित था। अपने वीर नायक अर्जुन गौड और अन्य अनेक गौड योद्धाओ एव मनसबदारो सहित वह भी धरमतपुरा की रणभूमि मे वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके मनसब और जागीरी स्थान की जानकारी प्राप्त नही है।

पृ. ३७ मुरारि — राव मुरारिदास सोलंकी। तव उसके वतन मे मेवाड प्रदेश के माडल परगने का खैराड भूभाग था। खैराड पर अधिकार रहने के कारण सोलंकी खैराडे (खैराड के स्वामी) कहलाते हैं। तब खैराड भूभाग की राजधानी जहाजपुर थी। मुरारिदास सोलकी भी अपने नौ सेना नायको सहित अर्जुन गौड के साथ की सेना मे लडता हुआ धराशायी हुआ। मुरारिदास के मनसब की जानकारी उपलब्ध नही है।

पृ ३८ (१) प्रथीराज — रावत लक्ष्मीदास का पुत्र रावत पृथ्वीराज किस स्थान का स्वामी था, ख्यातो से कोई प्रमाण नही मिलता। वह अपने भाई आशकर्ण सहित धरमतपुरा के युद्ध मे शाही पक्ष की ओर से लडता हुआ खेत रहा था।

(२) आसकरण — रावत लक्ष्मीदास का पुत्र और रावत पृथ्वीराज का लघु भ्राता आशकर्ण। आशकर्ण के विषय मे भी तत्कालीन ख्यात ग्रथो मे कोई आधार नही मिलता। वह अपने भाई रावत पृथ्वीराज के साथ ही धरमतपुरा के रणक्षेत्र मे काम आया था।

पृ. ३९ (१) राजसिंघ — गौडो की केहलनोत शाखा के प्रतापसिंह गौड का पुत्र राजसिंह गौड। राजसिंह के विषय मे भी सम्बन्धित इतिहास ग्रथो मे कोई सामग्री प्राप्त नहीं है। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे अर्जुन गौड के नेतृत्व मे लडता हुआ खेत रहा था।

(२) मानसिंघ — सभवत पृ १२ छ स २८ टिप्पणी का मालवा के आसेरगढ का दुर्गपाल मानसिंह गौड। उसके पिता का नाम सुमेरसिंह था। वह भी धरमतपुरा मे वीरगति को प्राप्त हुआ था।

(३) साँईदास — गौड जसराज भाखरोत (भाखरसिंह का वशज) का पुत्र साँईदास गौड। साँईदास का परिचय ख्यातो आदि मे प्राप्त नही है। वह भी इस युद्ध मे अन्य गौड योद्धाओ के साथ शाही सेना के पक्ष में लड कर खेत रहा था।

पृ ४० (१) कुसलसिंघ — गौड क्षत्रियो की भाखरसिहोत शाखा का योद्धा कुशलसिंह गौड। कुशलसिंह भी अपने अनेक सजातीय वीरो के साथ धरमतपुरा के रणक्षेत्र मे शाही पक्ष के समर्थन मे लडता हुआ खेत रहा था। उसके भी निवास स्थान, जागीरी भूभाग और मनसब आदि की जानकारी उपलब्ध नही है।

पृ ४० (२) इंद्रभाण — प्रसिद्ध गौड नेता राजा गोपालदास गौड के छोटे भाई सुन्दरदास गौड का पुत्र इन्द्रभानु गौड। यद्यपि सम्बद्ध ख्यात-ग्रथो मे इन्द्रभानु का उल्लेख प्राप्त नही है। किन्तु राजा शिवराम गौड के साथ की सेना मे उदयभानु गौड योद्धा का होना ख्यातो मे प्राप्त है। उदयभानु का मनसब चार सदी दो सौ सवार का था।

सभवतः इन्द्रभानु और उदयभानु एक ही योद्धा का नाम है। वह भी धरमतपुरा मे वीरगति को प्राप्त हुआ।
— मा. प. वि., रा. ख्यात. ग।

पृ. ४१ (१) किसनदास — गौडो की पातळोत (प्रतापसिहोत) शाखा के राघवदास गौड का पुत्र किशनदास गौड। किशनदास अर्जुन गौड के सेनानायको मे से था। वह भी अपने स्वामी अर्जुन गौड के साथ धरमतपुरा मे लडता हुआ मारा गया था।

(२) नरहरदास — जसवन्तसिह गौड का पुत्र नरहरिदास गौड। नरहरिदास मारवाड की नागौर सरकार के परगने मारोठ (गौडावाटी) के घाटवा, झूथर, खोरण्डी आदि मे से किसी एक ठिकाने का स्वामी था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे लड कर खेत रहा था।

(३) नरसींघ — टिप्पणी पृ. सख्या १२ छ सं. २८ के मानसिह गौड का पुत्र नृसिंहदास गौड। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त कृपाराम गौड का चचेरा भाई हीरामणि गौड, मनसब दो सदी चालीस सवार; हरिभानु गौड मनसब तीन सदी, एक सौ सवार; सदाराम गौड मनसब चार सदी, डेढ सौ सवार; राजा शिवराम का पुत्र सूरजमल गौड मनसब तीन सदी, एक सौ सवार और शूरसिह गौड मनसब दो सदी, बीस सवार आदि कई मनसबदार भी धरमतपुरा के युद्ध मे शामिल थे।
— मा. प. वि., रा. ख्यात ग।

(४) जगभांण—खैराड (परगना जहाजपुर) के किसी ठिकाने के दीपचन्द सोलकी का पुत्र जगभानु सोलकी। वह अर्जुन गौड की सेना मे नियुक्त था। जगभानु भी धरमतपुरा के युद्ध मे वीर गति को प्राप्त हुआ।

पृ० ४२ (१) किसोर—कर्मसिह का पुत्र राव किशोरसिह राजावत कछवाहा। वह आमेर (जयपुर राज्य) के राजावाटी भूभाग के किस ठिकाने का स्वामी था, स्पष्ट नही होता। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे अर्जुन गौड की सेना मे था। किशोरसिह राजावत के मनसब की परिचिति भी प्राप्त नही है।

(२) वैरियसाल — खैराड प्रान्त के स्वामी मुरारिदास सोलंकी का सेनानायक बैरीशाल खीची (चौहान)। बैरीशाल खीची के ठिकाने आदि की निश्चित जानकारी प्राप्त नही है। सम्भवत वह मालवा के खीचीवाडे के राज्य राघोगढ, गढा, खिलचीपुर आदि मे से किसी ठिकाने का रहा हो। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे सम्मिलित था।

(३) कुम्भकन्न—खीचीवाडे (मालवान्तर्गत) के भगवानदास खीची का वशधर कुम्भकर्ण खीची (चौहान)। कुम्भकर्ण के वतन और मनसब की जानकारी प्राप्त नहीं है। वह मुरारिदास सोलकी के साथ की सेना मे था। वह भी धरमतपुरा मे शाही पक्ष की तरफ से लडता हुआ काम आया था।

(४) मोहणदास—जहाजपुर (रामपुरा वालों के पूर्वज) दुर्गभानु चन्द्रावत सीसोदिया के वशज केशरीसिह का पुत्र मोहनदास चन्द्रावत सीसोदिया। वह भी धरमतपुरा मे लडता हुआ मारा गया था।

(५) **जयरांम**—भैंरवदास का पौत्र और कल्याणदास का पुत्र जयरामदास पवार क्षत्रिय। जयरामदास के निवास स्थान और शाही सेना के पद की जानकारी प्राप्त नही है। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे शाही पक्ष की ओर से लडता हुआ काम आया।

पृ० ४३ (१) **राघवदास**—खैराड प्रान्त के सौलकी क्षत्रिय कल्याणदास का पौत्र और खेतसिह का पुत्र राघवदास सौलकी। राघवदास भी धरमतपुरा के युद्ध मे शाही सेना की ओर से लड कर काम आया था।

(२) **मनरांम**—मालव प्रदेश के पवारो के प्रसिद्ध राज्य धार का स्वामी मनराम पवार क्षत्रिय। उसके पिता का नाम वुद्धिसेन था। वह भी विद्रोही शाहजादो के विरुद्ध धरमतपुरा मे लडता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था। उसके मनसब आदि की परिचिति नही है।

(३) **भीमेंणि**—अजमेर प्रान्त के गौडो की खोखर शाखा के ताजखान गौड का पौत्र भीमसिह गौड। वह भी अपने पिता सहित धरमतपुरा के युद्ध मे सम्मिलित हुआ और उसी युद्ध मे वीरता पूर्वक लड कर मारा गया।

(४) **कुम्भक्रन**—चूडा खवास का पुत्र कुम्भकर्ण खवास। वह राव मुरारिदास सौलकी का सेवक था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे अपने स्वामी राव मुरारिदास के साथ ही लडता हुआ काम आया।

(५) **महेस**—प्रस्तुत बिन्है रासौ का कर्त्ता कवि महेशदास राव।

पृ० ४८ **स्याम**—पुष्कर (अजमेर) के पास खोहरी ग्राम के दसोन्धी केशवदास राव का पुत्र श्यामदास दसोन्धी। श्यामदास स्वय अच्छा कवि, वक्ता और योद्धा था। वह भी अपने आश्रयदाता अर्जुन गौड के साथ ही लडता हुआ धरमतपुरा के युद्ध-स्थल मे धराशायी हुआ था।

पृ० ५० (१) **सोमदत्त**—सोमदत्त द्विज (ब्राह्मण) किस स्थान का था, ख्यातो से स्पष्ट नही होता है। सम्भवतः वह अर्जुन गौड का सेवक था और अपने स्वामी के साथ ही धरमतपुरा मे मारा गया था। उसके पितामह का नाम जैसा (जसराज) था।

(२) **तेजसी**—भाट (राव) जाति का दसोन्धी तेजसी। वह गौडों का आश्रित था। धरमतपुरा के युद्ध मे उसने भी भाग लेकर वीरता प्रदर्शित की थी। उसका छोटा भाई हरजी भी उसके साथ इस युद्ध मे शामिल था।

(३) **हरजी**—तेजसी भाट (राव) का छोटा भाई हरजी भाट। हरजी गौडो का आश्रित था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी गौड वीरो की सेना के साथ था।

(४) **मेघौ**—अर्जुन गौड के भोजनालय का दारोगा (अधिकारी) बारी जाति का मेघराज। वह अर्जुन गौड का विश्वस्त सेवक था। धरमतपुरा के युद्ध मे वह भी अपने स्वामी के सामने वीरता प्रकट कर काम आया।

(५) **नरो**—अर्जुन गौड का सेवक नाई जाति का नरा। वह भी अपने स्वामी के साथ रणभूमि मे अश्वारूढ होकर शत्रुओ से लडने गया और धरमतपुरा की रणभूमि में ही काम आया था।

पृ० ५२ (१) सूर—जोधपुर के राजा शूरसिंह राठौड। राजा शूरसिंह राजा गजसिंह के पिता और महाराजा जसवन्तसिंह राठौड जोधपुर के पितामह थे। यहाँ सूरहर शब्द महाराजा जसवन्तसिंह के लिए प्रयुक्त हुआ है।

—मा० ई० प्रथम भाग पृ० १८१।

(२) मधुकरो—बूदी के राव सरबुलद राय रतनसिंह हाडा का छोटा पुत्र राव माधवसिंह हाडा। राव माधोसिंह ने अपने पिता के जीवन काल मे ही उल्लेखनीय शाही सेवाए कर कोटा का स्वतन्त्र राज्य प्राप्त किया था। धरमतपुरा के वीर योद्धा राजा मुकन्द सिह, कन्हीराम, मोहनसिंह, जूझारसिंह और किशोरसिंह राव माधवसिंह के पुत्र थे।

—रा० ई० द्वि० भा० पृ० ४०-३७

(३) खुरम्म—बादशाह अकबर का पौत्र और जहागीर का पुत्र शाहजादा खुरंम। वह दिल्ली के सिंहासन पर बैठने पर बादशाह शाहजहां के नाम से इतिहास मे प्रसिद्ध हुआ। वह ६ फरवरी १६२८ ई० मे आगरे मे सिंहासनारूढ़ हुआ था। धरमतपुरा और धौलपुर के युद्धो मे विजय प्राप्त करने के बाद औरगजेब ने उसे आगरा के किले मे कैद कर दिया था। अन्त मे २२ जनवरी, १६६६ ई० मे बन्दी अवस्था मे ही उसका देहावसान हुआ।

(४) रतन—बूदी रियासत का स्वामी सरबुलन्दराय राव रतनसिंह हाडा। राव रतनसिंह हाडा अपने समय का प्रसिद्ध योद्धा और कुशल शासक था। उसने शाही सेवा मे रहकर अनेक युद्धो मे भाग लिया था। दक्षिण मे बुरहानपुर पर विजय प्राप्त कर उसने यश कमाया था। बादशाह शाहजहां के चौथे वर्ष मे बालाघाट के पडाव पर उसकी मृत्यु हो गई। उस समय उसका पाँच हजारी, पांच हजार सवार का मनसब था। राव रतनरी वेलि, मु० द० भाग १ पृ० ३१७-२०

(५) भोज—बूदी के राव सुर्जन का छोटा पुत्र राव भोज हाडा। राव भोज बडा स्वाभिमानी और जातीय गौरव का रक्षक तथा मर्यादा-पालक राजा था। उसे बादशाह अकबर के २२ वें वर्ष मे बूदी का अधिकार मिला था। उसने शाही सेवा मे रहकर अनेक युद्धो मे भाग लिया था। सन् १६०८ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

—मु० द० भाग १-पृ० २७३-७४

पृ० ५३ दूदरज—बूंदी के शासक राव सुर्जन हाडा का जेष्ठ पुत्र राव दूदा हाडा। वह अपने पिता के शासनकाल मे उसकी अनुपस्थिति मे बूदी का राज्य-कार्य सम्हालता था। पर राव सुर्जन उस पर नाराज रहता था। सुर्जन की इच्छानुसार उसकी मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई भोज ने उससे बूदी छीन ली, तब वह बागी हो गया और मेवाड की सहायता से लूट-मार करता रहा। अन्त मे सन् १६४२ ई० मे मालवा मे मर गया।

—रा० ई० द्वि० भा० पृ० ६२-६३

पृ० ६० (१) बीठल—राजा गोपालदास जोगीदासोत गौड का द्वितीय पुत्र राजा विट्ठलदास गौड। राजा विट्ठलदास गौड बादशाह शाहजहाँ का विश्वस्त और प्रिय सेनानायक था। एक समय उसके वतन मे मालपुरा का परगना था। फिर उसे रणथभोर की

फौजदारी और प्रान्त शाहजहाँ ने प्रदान किया था। उसने बुन्देलखण्ड के राजा जूझारसिंह बुन्देला, खानेजहाँ लोदी, परेन्दा दुर्ग का युद्ध, शाहजी भोसला के विरुद्ध युद्ध, बदख्शा की चढाई आदि युद्ध मे बडी वीरता एव साहस का परिचय दिया था। बादशाह शाहजहाँ उसकी सैनिक सेवाए और स्वामि-धर्म पर उससे बडा खुश रहा। वह सन् १६५१ ई० मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।— मु० द० भाग १ पृ० २३८–४१।

(२) **बीठल**—पाली के स्वामी ठाकुर गोपालदास चाँपावत का पुत्र विट्ठलदास चाँपावत। विट्ठलदास चाँपावत कुल आठ भाई थे, जो आठो ही विभिन्न आठ युद्धो मे लड कर मारे गये थे। विट्ठलदास महाराजा जसवन्तसिंह की सेना मे था। धरमतपुरा के युद्ध के समय उसके पट्टे मे बिलाडा तहसील का रणसी गाँव था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ।—वचनिका र० म० टि० पृ० १३६।

पृ० ६६ (१) **अम्मेरस**—धरमतपुरा के युद्ध मे नियत अमरसिंह नामक दो कछवाहा नरेशो का कवि ने नामोल्लेख किया है, जिनमे एक तो पृ० १० टिप्पणी स० १४ का राजा अमरसिंह कछवाहा नरवर का शासक था। दूसरे अमरसिंह को कवि ने रामगढ का बतलाया है। जयपुर-राज्य मे रामगढ नाम के दो तीन ठिकाने थे, जिनके इतिहास के अभाव मे यह स्पष्ट नही होता कि दूसरा अमरसिंह कहाँ का था। महाराजा जसवन्तसिंह जोधपुर की सेवा मे एक समय अलबत्ता दाता-रामगढ परगने का ठाकुर अमरसिंह शेखावत कछवाहा दाँता का रहा था। वह महाराजा जसवन्तसिंह का साला और राजा बैरीसिंह खण्डेला का द्वितीय पुत्र था। किन्तु निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि वह धरमतपुरा के युद्ध मे उपस्थित था। जोधपुर हकूमत की बही, नैणसी री ख्यात भा० १ पृ० ३२२

(२) **फतो**—शाहपुरा के शासक सुजानसिंह सीसोदिया का जेष्ठ राजकुमार फतहसिंह सीसोदिया। फतहसिंह अपने पिता और अपने दो छोटे भाई दौलतसिंह मन्सब तीन सदी और रामचद्र सहित धरमतपुरा के युद्ध मे सम्मिलित था। फतहसिंह अपने पिता सुजानसिंह और भाई रामचद्र सहित इस युद्ध मे मारा गया और दौलतसिंह घायल होकर बच गया। इस युद्ध मे शाहपुरा की सेना के ५३३ सैनिक मारे गए थे। फतहसिंह तब पाँच सदी सवार का मन्सबदार था। उस का चाचा वीरमदेव सीसोदिया भी शाही सेवा मे था। वीरमदेव धौलपुर के युद्ध मे दाराशिकोह के पक्ष मे लडा था। तदनन्तर वह औरगजेब की सेवा मे रहा। वह महाराजा जसवतसिंह जोधपुर का ससुर था। वीरमदेव तीन हजारी जात एक हजार सवार का मन्सबदार था। उसका सवत् १७२५ के आस-पास देहान्त हुआ।

—उदयपुर का इतिहास २ जिल्द पृ ८३७, शाहपुरा की ख्यात भाग १

पृ ७३ **भगवंतसींग**—बून्दी के राव शत्रुशाल हाडा का पुत्र राजकुमार भगवन्तसिंह हाडा। वह शाहजादा औरगजेब की सेना मे था। उज्जैन और धौलपुर के दोनो युद्धो मे उसने औरगजेब के पक्ष मे युद्ध किया था। जब औरगजेब सिंहासनारूढ हुआ तब उसने भगवन्तसिंह को राजा की पदवी और मालवा का मऊ का परगना प्रदान कर सम्मानित किया था।　　　　—रा. इ द्वि० भा० पृ ७२–७३

पृ. ७४ (१) **केसरीसिंघ**—बीकानेर के राजा करणसिंह का द्वितीय पुत्र राजकुमार

केसरीसिंह राठौड। वह खण्डेला के राजा द्वारिकादास शेखावत का दौहित्र था। उज्जैन और धौलपुर के युद्धो मे राजकुमार केशरीसिंह शाहजादा औरगजेब की सेना मे रह कर लडा था। बादशाह औरगजेब उसकी वीरता और निर्भीकता का बडा सम्मान करता था। वह जैसा वीर था वैसा ही उदार भी था। तब वह अढाई हजारी मन्सबदार था।

—राजस्थानी बात सग्रह पृ. १७०–१७५

(२) चिकनखान—सफशिकनखा का असली नाम मुहम्मद ताहिर था। शाहजहाँ के शासन काल के अन्तिम वर्षों मे वह दक्षिणी सूबे मे तोपखाने का दारोगा नियुक्त किया गया था। जब शाहजादा औरगजेब ससैन्य दिल्ली पर अधिकार करने के लिए रवाना हुआ तब नर्मदा नदी पार करने पर मुहम्मद ताहिर को सफशिकन खा का खिताब दिया गया था। तब उसका मनसब अढाई हजारी जात, दो हजार सवार का था। —आ ना. पृ ५३

(३) बहादरखाँ—बहादुरखाँ का असली नाम मीर मलिक हुसैन था। वह प्रारभ से ही शाहजादा औरगजेब के साथ मे रहा था। शाहजहाँ के जुलूस सन् २७ मे उसे हण्डिया होशगाबाद की फौजदारी दी गई थी। कल्याण के घेरे के समय उसने नैलग के किले पर अधिकार कर लिया था। सन् १६५८ ई में उसे बहादुरखा का खिताब दिया गया। धरमत-पुरा के युद्ध मे वह औरगजेब की सेना के हरावल में नियुक्त हुआ था।

—आ ना (अग्रेजी) भा १ पृ ७८३–८४

(४) अलयाखान—मीर तुजुक अल्लाहयार खाँ। वह औरगजेब का उसकी शाहजादगी के समय से ही सेवक था। धरमतपुरा के युद्ध में वह भी सेना के हरावल भाग मे शामिल था। औरगजेब के शासन के पांचवे वर्ष मे वह उन्नति को प्राप्त होकर डेढ हजारी जात पन्द्रह सौ सवार का मनसबदार बनाया गया था। छठे वर्ष मे सन् १६६३ ई० मे मर गया।

—मु द भा. २ पृ ३२५

(५) हमीर—सीसोदिया हम्मीरसिंह राणावत। कविराजा श्यामलदास ने वीर विनोद द्वि. भा. पृ ३४१ पर हम्मीरसिंह को देवगढ वालो का बडा (पूर्वज) लिखा है, जो ठीक नही है। देवगढ वाले तो चूण्डावत सीसोदिया है और यह राणावत सीसोदिया था। वह भी धरमतपुरा मे औरगजेब की सेना मे था। उस समय उसका मनसब पाच सौ जात, तीन सौ सवार का था। —वीर विनोद द्वि भा पृ ३७८

(६) सेख मीरक—काजी असलम का भतीजा मीरक शेख हरवी। वह जहाँगीर के शासन-समय मे खुरासान से भारत आया था। वह बडा विद्वान् और सुशिक्षित था। बादशाह शाहजहा के शाहजादो की शिक्षा का भार उसे सौंपा गया था। शाहजहा के शासनकाल मे उसे अर्ज मुकर्रर और बेगम साहिबा का दीवान का पद मिला था। औरगजेब ने बादशाह बनने पर उसे तीन हजारी के मनसब पर नियुक्त किया था। धरमतपुरा के युद्ध मे वह औरगजेब की सेना मे था। सन् १६६१ ई. मे उसकी मृत्यु हो गई।

—मु द. भाग ४, पृ २९५–९६।

पृ ८२ खानजिहाँ—दौलतखाँ लोदी शाहू खेल का पुत्र खानजहाँ लोदी, उसका जन्म-नाम पीरखाँ था। अपनी जवानी के प्रारभ मे शाहजादा सुलतान दानियाल का अन्तरग

मित्र बन गया था। उसकी मृत्यु के बाद जहाँगीर के दरबार का खास दरबारी बना। तब उसे तीन हजारी मनसब और सलावतखाँ की पदवी मिली। तदनन्तर खानजहा की बडी पदवी प्राप्त हुई। बादशाह उस पर अधिक भरोसा करता था। उसे बादशाह ने अनेक जिम्मेदारी के कार्यो और युद्धो मे भेजा था, जहाँ उसने बडी योग्यता और बहादुरी का परिचय दिया था। जहागीर के समय मे वह बारह हजारी के मनसब तक आसानी से पहुँच गया था। शाहजहाँ के बादशाह बनने पर वह उससे शकावश बागी हो गया। तदनन्तर अनेक स्थानो पर शाही सेना से मुकाबला करता हुआ वह लडता रहा। अन्त मे कालिजर के युद्ध मे माधवसिह हाडा के बाण से घायल होकर गिर गया। अब्दुल्लाखा जख्मी ने उस का सिर काट कर दरबार मे भेजा। उसका बडप्पन बादशाह शाहजहा द्वारा सैयद खानजहाँ को कहे गए इस वाक्य से प्रकट हो जाता है—यह पदवी उस आदमी की है, जिसकी हम और सभी शाहजादे कृपादृष्टि चाहते थे और वह बेपरवाही से किसी से नही बोलता था।

—मु. द. भाग ३, पृ १३७–५२, रा इ. द्वि. भा पृ. १११।

पृ ८४ (१) **कलियाण**—पवार शाखा का क्षत्रिय कल्याणसिंह। उसके वतन तथा जागीर की जानकारी प्राप्त नही है। सभवतया वह राव मुकन्दसिह हाडा का सामन्त था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ।

(२) **दळथभ**—यहाँ राव-पदधारी किस दलथभ राठौड का उल्लेख कवि ने किया है, यह निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता। वह औरगजेब के विरुद्ध शाहजादा दाराशिकोह के पक्ष की सेना का योद्धा था।

(३) **हरियंद**—भाट (राव) जाति का हरिदास कौन था, स्पष्ट नही होता है। सभवत. पृ ५० टिप्पणी २ का हरजी भाट ही हरियद भाट होगा। वह भी हाडा वीर मुकन्दसिह कोटा के साथ मे युद्ध मे मारा गया था।

पृ ९५. **जगभांण**—मारवाड के मारोठ परगने के गौडो के ठिकाने पाचवो, पाचोतो, लूणवो, मीठडी और सरगोठ आदि मे से किसी एक स्थान का स्वामी जगभानु गौड। वह धरमतपुरा मे विद्रोही शाहजादे औरंगजेब और मुराद की सेना से युद्ध करके मारा गया था।

—मा. ख्यात, रा ख्यात ग

पृ १०० (१) **स्यामदास**—भाट-जाति का श्यामदास राव। वह अजमेर-प्रान्त के गौडो का आश्रित और वहाँ के भाटो (रावों) का मुखिया था। वह भी धरमतपुरा के युद्ध मे जूझता हुआ काम आया।

(२) **मलौ**—बाघावत भाटो (रावो) का वशज मालीराम राव। मालीराम स्वय अच्छा कवि था। राजसिंह गौड पर रचित उसकी एक दवावैत प्राप्त है। वह भी धरमतपुरा मे लडता हुआ मारा गया।

धौलपुर-युद्ध

पृ १०८ **भाराय सिंघ**—वून्दी के स्वामी और धौलपुर-युद्ध के प्रमुख हिन्दू-सेना-नायक राव शत्रुशाल हाडा का सबसे छोटा पुत्र राजकुमार भारत सिंह हाडा। उस समय

उसकी पन्द्रह वर्ष की आयु थी। वह भी अपने पिता सहित धौलपुर के रणागण में वीरगति को प्राप्त हुआ। रा इ. द्वि. भा पृ ७२, वाकीदास री ख्यात पृ, १४६।

पृ १०६ (१) महोक्कमं—वूदी के राव शत्रुशाल का छोटा भाई महाराज महोकम-सिंह हाडा। वह राजकुमार गोपीनाथ का पुत्र और राव रतनसिंह का पौत्र था। महोकम-सिंह भी अपने दोनो कुमारो जोरावर सिंह और नाहर सिंह सहित धौलपुर मे शाही पक्ष की ओर से लडता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। वह कोटडियाद के आतरदाह ठिकाने का स्वामी था।—रा ई. द्वि भा पृ ७२

(२) गुमांन—वून्दी के शासक राव रतन सिंह हाडा के द्वितीय राजकुमार इन्द्रशाल का पुत्र गुमान सिंह हाडा। कोटा का इन्द्रगढ ठिकाना उसका वतन था। इन्द्रशाल आठ सौ जात, चार सौ सवार का मनसबदार था। उसका उत्तराधिकारी गुमानसिंह हाडा धौलपुर के युद्ध मे शाही पक्ष मे लड कर खेत रहा था। मा ख्यात।

(३) जोरार नाहर—वून्दीनरेश राव शत्रुशाल के भाई महाराज महोकम सिंह हाडा के पुत्र जोरावर सिंह और नाहर सिंह। वे दोनो भाई भी धौलपुर के मैदान मे शाहजादा दाराशिकोह के पक्ष मे लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। मा. ख्यात

(४) जगपत्ति—गोविन्ददास गौड का पुत्र जगन्नाथसिंह गौड। वह राव शत्रुशाल हाडा का सामन्त था। वह भी धौलपुर के युद्ध मे मारा गया था।

(५) सिवरांम—खैराड-प्रान्त के शिवराम सोलकी का परिचय प्राप्त नही है। सभवत वह राव शत्रुशाल हाडा का सेवक और सेना-नायक था। धौलपुर के युद्ध-वृत्तान्त की किसी भी ख्यात मे उसका उल्लेख उपलब्ध नही है। एक अन्य शिवराम का वर्णन अवश्य मिलता है जो राजा वलिराम गौड गोपालदासोत का पुत्र था। वह उज्जैन के युद्ध मे घायल होकर बच गया था। धौलपुर मे वह भी अपने भाई पोखर दास सहित लड कर मारा गया था। वह अढाई हजार जात, अढाई हजार सवार का मनसबदार था। उसके साथ में उसका पुत्र सूरजमल तीन सदी एक सौ सवार और सदाराम गौड चार सदी डेढ सौ सवार के मनसबदार भी वीरगति को प्राप्त हुए थे। मा प विगत.

पृ ११० खांन रुसतम—रुस्तमखाँ वहादुर फिरोज जंग। वह बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल के बड़े सेना-नायको मे था। शाही सेवा मे रह कर उसने अनेक युद्धो मे भाग लिया था। शाहजादो के विद्रोह के समय वह कावुल के सैनिक शासक के पद पर नियुक्त था। शाहजादा दाराशिकोह के बुलावे पर वह द्रुतगति से कावुल से आगरा आकर पहुँचा और धौलपुर के युद्ध मे शाहजादा सिपहर शिकोह के साथ शाही सेना के हरावल के वाम भाग मे नियुक्त हुआ। वहाँ वह बडी दिलेरी के साथ लडता हुआ मारा गया। तब उसका मनसब सात हजारी जात, छह हजार सवार का था।

—मु.द. भा. ४, पृ. १२१, वि. विनोद द्वि भा. पृ. ३५६, ३६३.

पृ ११४ रांमसी—जोधपुर के राव चन्द्रसेन का पौत्र और राव कर्मसेन का पुत्र राव रामसिंह राठौड। वह महाराणा उदयपुर का भानजा था। महाराणा की सेवा में रह कर

उसने गुजरात के राज्य ईडर के शासक को हराया था और प्रतापगढ के रावत जसवन्त-सिंह को भी युद्ध मे पराजित कर मार दिया था। वह बडा वीर और उदार था। उदारता के कारण वह इतिहास मे रामसिंह रोटला के नाम से विख्यात रहा है। धौलपुर के युद्ध मे वह भी दाराशिकोह के प्रतिद्व द्वियो से लड कर मारा गया।

—मु द. भाग १ पृ ३४६–४७ वा ख्यात पृ. ८५।

पृ ११५ रूपसिंह—राजस्थान के किशनगढ राज्य का स्वामी राजा रूपसिंह राठौड। वह बादशाह शाहजहा के शासनकाल मे बल्ख, कधार और चित्तौड के घेरे तथा युद्धो मे वीरता प्रकट कर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। राजा रूपसिंह भी धौलपुर के युद्ध मे अपरिमित पराक्रम प्रकट कर वीरगति को प्राप्त हुआ। उस समय उसका चार हजारी जात, अढाई हजार सवार का मनसब था। मु द भाग १, पृ ३६८-७०, वा. ख्यात पृ ८१.

पृ. ११६ भीमाळ—राजा विट्ठलदास गौड का तीसरा पुत्र भीमसिंह गौड। वह धरमत-पुरा के युद्ध मे घायल होकर बच गया था। वह भी धौलपुर के युद्ध मे लड कर शाही पक्ष की ओर से वीरगति को प्राप्त हुआ। तब उसकी जागीर मे रणथभोर सरकार का बोळी ठिकाना था।—मा प विगत, मु. द. भाग १ पृ २४२।

पृ ११९ (१) केसरीसींघ—मोटे राजा उदयसिंह जोधपुर के तृतीय पुत्र भगवानदास राठौड का पुत्र केसरीसिंह राठौड। वह धौलपुर के युद्ध मे शाहजादा दाराशिकोह की निजी सेना मे नियुक्त था। वह भी धौलपुर के युद्ध मे खेत रहा था। मा ई प्रथम भाग पृ १७८।

(२) नाहर—यहा कवि ने नाहरखान सैयद नाम के किस योद्धा का उल्लेख किया है, निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता है। वह दाराशिकोह की सेना का योद्धा था।

पृ. १२० (१) अलियार खांन—यहाँ अल्लाहयार खाँ मीरतुजुक जो धरमतपुरा मे औरगजेब के साथ था, से भिन्न किस अल्लाहयार खाँ से कवि का प्रयोजन है, निश्चय-पूर्वक नही कहा जा सकता।

(२) रहमतुला—रहमतुला के विषय मे भी कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नही हुई है। वह धौलपुर के युद्ध मे शाही सेना मे सम्मिलित था।

(३) सत्रसाल—कछवाहो की नरूका-खांप का शत्रुशाल। वह अक्षयराज का पुत्र और चन्द्रभानु का पौत्र था। कछवाहो की ख्यात से स्पष्ट नही होता कि वह कहा का था। शत्रुशाल भी अपने भाई महासिंह सहित धौलपुर के युद्ध मे शाही पक्ष मे था।

(४) महासिंघ—कछवाहो की नरूका-शाखा के अक्षयराज का पुत्र और चन्द्रभानु का पौत्र महासिंह। उसके स्थान आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं है। वह भी अपने भाई शत्रुशाल के साथ धौलपुर-युद्ध मे नियुक्त शाही सेना मे था।

(५) नरपाल—चौहानो की साचोरा-शाखा के वल्लू का पुत्र नरहरदास चौहान। नर-हरदास के वतन मे जोधपुर का साचोर परगना था। वह भी धौलपुर के युद्ध मे शाही सेना मे था और युद्ध मे मारा गया था। नरपाल के पिता वल्लू का मनसब सात सौ जात, चार सौ सवार का था।—वी विनोद द्वि भा पृ ३७६, नै. ख्यात. भा १ पृ. २३४

(६) रणछोडि—मानसिंह राठौड का पुत्र रणछोडदास राठौड। वह किशनगढ़ के राजा रूपसिंह राठौड का सेना-नायक था। रणछोडदास भी अपने स्वामी राजा रूपसिंह के साथ युद्ध क्षेत्र मे वीरगति को प्राप्त हुआ। ख्यात ग

(७) सूजाणसींघ—सुजानसिंह राठौड किस स्थान का निवासी था, स्पष्ट नही होता। वह भी धौलपुर के युद्ध मे शाही सेना मे रह कर लडा था।

(८) राम—आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध कछवाहा-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के जेष्ठ पुत्र राजकुमार रामसिंह कछवाहा। रामसिंह अपने भाई कीर्त्तिसिंह सहित धौलपुर के युद्ध मे शाही सेना मे नियुक्त था। तब उसका मनसब तीन हजारी जात दो हजार सवार का था। मिर्जा राजा जयसिंह के देहावसान के बाद वह आमेर के सिंहासन पर बैठा था। छत्रपति शिवाजी मरहठा को औरगजेब की कैद से निकल जाने का अवसर प्रदान करने का श्रेय राजकुमार रामसिंह को ही है। वीर विनोद द्वि भा पृ ३६६, कछवाहो के वीरगीत।

(९) कीरत्तीसींघ—आमेर के कछवाहा-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह का कनिष्ठ राजकुमार कीर्त्तिसिंह कछवाहा। वह भी धौलपुर के युद्ध मे नियुक्त शाही सेना मे था। तब उसकी जागीर मे मेवात (अलवर) का इलाका और कामा खोहरी का परगना था। वह एक हजारी जात, नौ सौ सवार का मनसबदार था। कछवाहो की ख्यात

(१०) कुसळो—राजकुमार रामसिंह कछवाहा आमेर का सेनानायक कुशलसिंह कछवाहा। वह अपने पुत्र कनकसिंह सहित धौलपुर के युद्ध मे नियुक्त था। कुशलसिंह धौलपुर मे घायल होकर बच गया था। तदनन्तर वह बीकानेर के राजा अनूपसिंह के भाई पदमसिंह राठौड के साथ दक्षिण मे सवत् १६४० मे सावतराम जादवराय दक्षिणी के मुकाबले मे युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। —रा० बात सग्रह पृ १८६–८७

(११) कनको—कुशलसिंह कछवाहा का पुत्र कुवर कनकसिंह कछवाहा। वह भी धौलपुर के युद्ध मे नियुक्त राजकुमार रामसिंह आमेर की सेना मे सम्मिलित था।

(१२) दाऊदखान — दाऊदखाँ कुरेशी का पुत्र शेख दाऊद। वह शाहजादा दाराशिकोह की सेवा मे रहकर उन्नति को प्राप्त हुआ था। शाहजहाँ के शासन के ३० वें वर्ष मे मथुरा, महावन, जलेसर तथा अन्य महालो का फौजदार नियुक्त हुआ था। धौलपुर के युद्ध मे वह राव शत्रुशाल हाडा बूदी के साथ शाही सेना के हरावल मे नियत हुआ था। औरगजेब के बादशाह बनने पर भी वह दाराशिकोह के साथ बना रहा। अन्त मे भक्खर के पास से वह अलग होकर अपने देश हिसार फीरोजा चला गया। तदनन्तर औरगजेब के दरबार में उपस्थित होने पर उसे चार हजारी जात, तीन हजार सवार का मनसब मिला। वह औरगजेब की सेवा मे रहकर अनेक युद्धो मे शामिल हुआ तथा खानदेश, बरार और इलाहाबाद का प्रान्ताध्यक्ष भी रहा। आलमगीरी के २५ वें वर्ष मे उसकी मृत्यु हुई।

—मु द भा ३ पृ. ४०९–१२

(१३) नरपाल—मारवाड के गोडावाटी-प्रदेश के किसी ठिकाने का स्वामी नरपाल गौड। वह राजा शिवराम गौड की सेना मे था। धौलपुर मे वह भी राजा शिवराम गौड के साथ खेत रहा था।

पृ १३८ (१) खंगार—खगार का नाम धौलपुर के युद्ध-वृत्तान्त की किसी भी ख्यात मे नही मिला। सभवतया वह राजा रूपसिह राठौड किशनगढ की सेना का योद्धा था।

(२) क्रम्म—जैतसिह का पुत्र भाखरोत कर्मसिह का परिचय भी उपलब्ध नही है।

पूर्व (बहादुरपुर) का युद्ध

पृ १४३ राजसिंघ हाडा—बूदी के स्वामी सरवुलदराय राव रतनसिह हाडा का छोटा द्वितीय पुत्र राजसिह हाडा। वह बगाल के सूबेदार शाहजादा शुजा की सेना मे नियुक्त था और पूर्व (बहादुरपुर) के युद्ध मे शुजा के साथ रह कर राजा जयसिह कछवाहा और शाहजादे सुलेमानशिकोह के नेतृत्व मे भेजी गई शाही सेना से लडा था। वा ख्यात पृ १४६

पृ १५१ (१) जसपत्ती—राजा अनिरुद्धसिह गौड का भाई जसवन्तसिह गौड। वह भी अपने भाई राजा अनिरुद्धसिह के साथ शाहजादा शुजा के विरुद्ध भेजी गई सेना मे शामिल था।

(२) भाऊ—रतनसिह का वशज भावसिह कहां का था, स्पष्ट नही होता। अनुमानतः वह बून्दी के राव शत्रुशाल हाडा का जेष्ठ राजकुमार भावसिह हाडा था। भावसिह राव रतनसिह का प्रपौत्र था। वह बहादुरपुर के युद्ध मे शाही सेना मे सम्मिलित था।

(३) तेजा—जयपुर के बलभद्रोत कछवाहो के ठिकाने अचरोल का ठाकुर तेजसिह बलभद्रोत कछवाहा। वह बहादुरपुर के युद्ध मे मिर्जा राजा जयसिह की सेना मे नियुक्त था। वह भी शाहजादा शुजा के विरुद्ध शाही पक्ष की ओर से लडा था। उसके पिता का नाम कान्ह सह था।

(४) जोरावर—मिर्जा राजा जयसिह कछवाहा का सेनानायक शिवब्रह्मपोता कछवाहा राव जोरावरसिह। वह जयपुर के नीदड ठिकाने का स्वामी था। राव जोरावरसिह भी बहादुरपुर मे शादजादा शुजा के विरुद्ध लडा था।

(५) नवला—शक्तिसिह का पुत्र नवलसिह किस स्थान का स्वामी था, कोई स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नही है। वह भी बहादुरपुर मे भेजी गई शाही सेना मे था।

(६) सक्ता—शक्तिसिह का स्थान और जातीय परिचय अज्ञात है। वह भी शाही सेना मे रहकर बहादुरपुर के युद्ध मे शाहजादा शुजा के विरुद्ध लडा था।

(७) रुकमागद—कुवर रुक्मागद गौड का परिचय भी उपलब्ध नही है। अनुमात. वह राजा अनिरुद्धसिह गौड की सेना मे था। उसने भी बहादुरपुर मे शाहजादा शुजा के विरुद्ध भाग लिया था।

(८) अचला—अचलदास गौड के भी वतन और मनसब-प्रभृति की जानकारी प्राप्त नही है। संभवतया वह राजा अनिरुद्धसिह की सेना मे था। उसने भी बहादुरपुर के युद्ध मे शाहजादा शुजा के विपक्ष मे युद्ध किया था।

(९) किसोवर—किशोरसिह के स्थान, जाति और मनसब आदि का परिचय अप्राप्त है।

पृ १५२ (१) किसोर—उदयपुर से तीन मील दूर चिकलवास ग्राम का दसोधी किशोर-दास राव। वह दासाजी राव (भाट) का पुत्र था। किशोरदास स्वय डिंगल-साहित्य का

अच्छा विद्वान् कवि था। उसने राणा राजसिंह पर 'राजप्रकास' नामक एक खण्डकाव्य लिखा है। बहादुरपुर के युद्ध मे वह राजा अनिरुद्धसिंह की सेवा मे था। किशोरदास के तोप का एक गोला और तीन तीर लगे थे। —वरदा त्रैमासिक वर्ष ७ अक २ पृ. ५७

(२) सांवळदास—भाट-जाति का श्यामलदास किस राजा के साथ की सेना मे था और कहा का निवासी था आदि का कोई आधार नही मिलता। अनुमानत वह किशोरदास राव का सम्बन्धी था।

पृ १५३ (१) हरदा—जोगीदास गौड के छोटे पुत्र सुन्दरदास गौड का पुत्र हृदयराम गौड। वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड का निकटस्थ सम्बन्धी और उमराव था। वह भी बहादुर-पुर के युद्ध मे शाही पक्ष की सेना मे था। —गौडो के वीरगीत, मा. प विगत

(२) सिवा—शिवा अथवा शिवराम का परिचय प्राप्त नही हुआ। अनुमानत वह राजा अनिरुद्धसिंह गौड की सेना का योद्धा था।

(३) महेस—महेशदास कहाँ का था, उसका भी कोई वृत्तान्त उपलब्ध नही हुआ। सभवतया वह गौड-क्षत्रिय था और राजा अनिरुद्धसिंह की सेना मे था।

(४) रांम—रामसिंह का भी सम्बन्धित ख्यात ग्रथो मे कोई उल्लेख प्राप्त नही है। अनुमानत वह–नाथावत कछवाहा था और तब राजा जयसिंह की सेना मे था।

—नै. ख्यात, भा. १ पृ ३१०

(५) डूगरसींह—डूगरसिंह नामक योद्धा का नाम बहादुरपुर के युद्ध के योद्धाओ की किसी नाम-सूची मे नही मिलता है।

(६) केसवदास—राजा शूरसिंह के पुत्र केशवदास का परिचय भी स्पष्ट नही है।

(७) दवारा—पातळ (प्रतापसिंह) का वशज द्वारिकादास कहा का था, कोई आधार प्राप्त नहीं हुआ।

पृ १५४ (१) जूझार—मालवा के धार-राज्य के परमारो के वशज जूझारसिंह का भी बहादुरपुर के युद्ध मे सम्मिलित शाही सेना के योद्धाओ की किसी सूची मे नाम नही मिलता है।

(२) जसौ—यह जसवन्तसिह राजा अनिरुद्धसिह गौड के भाई पृ. १५१ छ सं २६ टिप्पणी (१) का जसवन्तसिह गौड ही है अथवा उससे भिन्न जसवन्तसिह है, स्पष्ट नही होता है।

(३) मोहकम्म—मोहकमसिंह के भी वतन और मनसब आदि की कोई जानकारी ख्यातो से प्राप्त नही है।

(४) क्रन—यह कर्णसिंह भी किस स्थान का था, कोई सकेत ख्यातो मे नही मिलता है।

(५) क्रमसेनि—कर्मसेन का भी वश-परिचय और शाही वतन आदि की कोई जानकारी प्राप्त नही है।

(६) सुजांणहंसिघ—सुजानसिंह के भी वश, स्थान और शाही मनसब आदि की कोई स्पष्ट जानकारी ख्यातो के आधार पर प्राप्त नही है।

(७) डूंगर—डूगरसिंह पृ. १५३ छ. स. ३१ टि. (५) वाला ही डूंगरसिंह है अथवा कोई अन्य है, स्पष्ट नही होता है।

पृ १५५ (१) सूरसिंघ—शूरसिंह जयपुर-राज्य के कछवाहो के किस ठिकाने का स्वामी था, स्पष्ट नही होता। वह मिर्जा राजा जयसिंह का सामन्त और सेना-नायक था। वह भी बहादुरपुर के युद्ध मे शामिल था।

(२) महासिंघ—जयपुर-राज्य के प्रमुख ठिकाने मनोहरपुर शाहपुरा के राव लूणकर्ण शेखावत कछवाहा के पौत्र उग्रसेन का पुत्र महासिंह शेखावत। महासिंह अमरसर-वाटी परगने के दौराला ठिकाने का स्वामी और मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा का सेना-नायक था। वह भी बहादुरपुर के युद्ध मे शाही पक्ष की सेना मे सम्मिलित था। रा ज सरोज.

(३) फतैसिंघ—जयपुर राज्य के उनियारा सस्थान का स्वामी राव फतहसिंह नरूका कछवाहा। वह राव चन्द्रभानु का पुत्र था। बादशाह शाहजहा ने चन्द्रभानु को चार हजारी मनसब और शाही मुरातब प्रदान किया था। राव फतहसिंह मिर्जा राजा जयसिंह के साथ बहादुरपुर भेजी गई शाही सेना मे सम्मिलित था। तब उसका मनसब सात सौ जात, तीन सौ सवार का था। ला. रा. भूमिका पृ. ३३, वीर विनोद द्वि. भा. पृ ३७६.

पृ १५६ (१) मथुरौ—मथुरादास कछवाहा मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा की सेना मे था। वह बहादुरपुर के युद्ध मे कछवाहो की सेना मे रह कर लडा था। तदनन्तर वह कधार की तरफ के किसी युद्ध मे मारा गया था। नै ख्या. भा. १ पृ ३१०–११।

(२) मधकर—मथुरादास का भाई और हदमाल का पुत्र माधोदास कछवाहा। वह भी बहादुरपुर के युद्ध मे मिर्जा राजा जयसिंह की सेना मे शामिल था।

पृ. १५८ (१) प्रथीयराज—आमेर का प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज कछवाहा। वह बडा विवेकशील, धार्मिक और भगवद्‌भक्त था। कछवाहो की बारह कोटडिया खगारोत, बलभद्रोत, नाथावत आदि राजा पृथ्वीराज के बारह पुत्रो से ही अलग-अलग प्रचलित हुई है। (शासनकाल वि स १५५६-१५८४ तक) ना. इ पृ. ३६-४१.

(२) कुतिल—आमेर के राजा कछवाहा किल्हणदेव के पुत्र राजा कुतिल। राजा कुतिल वि स. १३३३ मे आमेर के सिंहासन पर आसीन हुए थे। ना. इ पृ ३०

(३) पज्जून—सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के समकालीन और सम्बन्धी राजा पज्जवन राय कछवाहा। राजा पज्जवनराय सम्राट् पृथ्वीराज और राजा जयचन्द राठौड के युद्ध मे लड़ता हुआ काम आया था। कछवाहा री ख्यात

(४) मलेसी—राजा पज्जवनराय का ज्येष्ठ राजकुमार मलयसिह कछवाहा। मलयसिंह भी सम्राट् पृथ्वीराज के पक्ष मे राजा जयचन्द राठौड की सेना से लडता हुआ काम आया था।

कछवाहा री ख्यात

पृ. १५९ अमर—जोधपुर के राजा गजसिंह का जेष्ठ राजकुमार और राव रायसिंह नागौर का पिता राव अमरसिंह राठौड। उसका जन्म वि स १६७० पौष शुक्ला ११

को हुआ था। वह बडा वीर, हठी और निर्भीक योद्धा था। राजा गजसिंह अपने छोटे राजकुमार जसवन्तसिंह को अपना उत्ताराधिकारी बनाना चाहते थे। इसलिए राजा गजसिंह ने बादशाह शाहजहा को कह कर अमरसिंह को अपने जीवनकाल मे ही नागौर का राज्य और राव की उपाधि प्रदान करवा कर जोधपुर के अधिकार से वचित कर दिया था। वह वि स १७०१ मे शाहजादा दाराशिकोह की हवेली मे बादशाह शाहजहा के सरह दरबार मे फौज बक्षी सलावत खा को मारने के बाद अर्जुन गौड और खलीलुल्ला खा आदि छह योद्धाओ के सामूहिक प्रहारो से मारा गया था।

—म उ. भा. १ पृ. ६७-७३ सू. प्र. भा. ३ भूमिका. पृ. ४७

पृ १६६ (१) सागो—हदमाल का पुत्र सग्रामसिंह कछवाहा। वह भी अपने भाई मथुरादास और माधोदास सहित बहादुरपुर के युद्ध मे शाही पक्षीय सेना मे शामिल था।

(२) कलियाण—अलवर-राज्य के स्वामी नरूका कछवाहो का पूर्वज राव कल्याणसिंह फतहसिंहोत नरूका। तब वह मिर्जा राजा जयसिंह के द्वितीय राजकुमार कीर्तिसिंह की सेवा मे था। बहादुरपुर के युद्ध मे वह भी मिर्जा राजा जयसिंह की सेना मे शामिल था।

—ला. रा भूमिका पृ ३४-३५

(३) कुसळेस—कुशलसिंह नाथावत कछवाहा। जयपुर मे नाथावत कछवाहो के चौमू और सामोद दो बडे ठिकाने थे, परन्तु उनके इतिहास मे कुशलसिंह नाम के किसी नाथावत का कोई नाम-सकेत नही मिलता। बहादुरपुर के युद्ध मे वह भी कछवाहो की सेना मे था।

(४) गिरवर—कछवाहो का पोलपात्र राव गिरवर भाट। उसके पिता का नाम परशुराम था। वह रावो की टाक-शाखा का था। अनुमानत वह भट्टो की गली के रावो का पूर्वज हो। गिरवर भी बहादुरपुर के युद्ध मे कछवाहो की सेना के साथ मे था।

(५) अखौ—गिरवर का भाई और परशुराम का पुत्र अक्षयराज राव। वह भी अपने भाई के साथ बहादुरपुर के युद्ध मे कछवाहो की सेना मे था।

(६) हरी—गोयददास ऊहड का पुत्र हरिसिंह ऊहड। वह भी अपने पिता सहित बहादुरपुर के युद्ध मे सम्मिलित था।

(७) गोयंद—हरिसिंह ऊहड का पिता गोयददास ऊहड। वह भी अपने पुत्र सहित बहादुरपुर के युद्ध में शाहजादा शुजा के विरुद्ध शाही सेना मे शामिल हुआ था।

पृ १६७ रघुनाथ—चद का वशज रघुनाथ कौन और कहाँ का था, कोई आधार स्रोत प्राप्त नही है।

पृ १७० जैत—कर्ण के पुत्र जैतसिंह की जानकारी भी प्राप्त नही है।

पृ १७१ सावर—सावरदास भाट (राव) का भी स्थान और अन्य परिचय उपलब्ध नही है।

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणिका

इ

ई

उ

ऊ

ऐ

औ

क

ख

प

फ

ब

परिशिष्ट (४)

छन्दानुक्रमणिका

उज्जयिनी युद्ध

धौलपुर युद्ध

पूर्व (बहादुरपुर)—युद्ध



सहायक ग्रन्थ-सूची

आलमगीर नामा	मुहम्मद काजिम कृत (बिबलोथिक इण्डिका संस्करण)
उदयपुर राज्य का इतिहास	डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत, जिल्द २
कछवाहो के वीर गीत	सौभाग्यसिंह शेखावत, भगतपुरा का हस्तलिखित संग्रह
कछवाहां री ख्यात	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
कोटा राज्य का इतिहास	डा० मथुरालाल शर्मा कृत, प्रथम भाग
खण्डेला का इतिहास	पं० सूर्यनारायण
मारवाड़ री ख्यात ग	सीताराम लाळस, जोधपुर का संग्रह
गौड़ों के वीर गीत	सौभाग्यसिंह शेखावत, भगतपुरा का संग्रह
गोपाळदास गौड री बात	कुंवर देवीसिंह मंडावा का संग्रह
दाराशिकोह	डा० कालिकारंजन कानूनगो
नाथावतो का इतिहास	हनुमान शर्मा कृत
मआसिरुल उमरा	ब्रजरत्नदास, बी० ए० एल० बी० द्वारा अनुवादित, भाग १
मारवाड का इतिहास	पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत, भाग १
मारवाड री ख्यात ख	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
मारवाड री ख्यात क	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर संग्रह
मारवाड़ के परगनो की विगत	मुहता नैणसी लिखित, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर संग्रह
मुगलकालीन भारत	डा० आशीर्वादीलाल कृत, भाग २
मुगल-दरबार	अनुवादक ब्रजरत्नदास, बी ए. एल एल. बी , भाग १, २, ३, ४
मुहता नैणसी री ख्यात	सं० बद्रीप्रसाद साकरिया, भाग १, २, ३, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
राजपूताने का इतिहास	जगदीशसिंह गहलोत कृत, भाग २
राजपूताने का इतिहास	डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत, भाग २
राजस्थानी बात संग्रह	स० नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर
राठोडा री ख्यात	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
वचनिका राठोड़ रतनसिंघ महेसदासोत री	स० काशीराम शर्मा, डा० रघुबीरसिंह, सीतामऊ
राठोड़ों के वीर गीत	राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर का संग्रह
रायसल जस सरोज, रामदयाल कविया कृत	सौभाग्यसिंह शेखावत का संग्रह
वरदा, त्रैमासिक पत्रिका,	राजस्थान साहित्य समिति. बिसाऊ

बाकीदास री ख्यात,	सं० नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थान प्राच्यविद्या प्र जोधपुर
वीरविनोद	महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग
सूरज प्रकास	कविया करणीदान कृत, स० सीताराम लाळस, रा प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, भाग ३
हाडो के वीर गीत	बगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता का सग्रह



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

राजस्थानी–हिन्दी-ग्रन्थ

१. कान्हडदे प्रबन्ध, (ग्र. ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित; सम्पादक - प्रो. के. बी. व्यास । मू. १२.२५

२. क्यामखां रासा, (ग्र. १३), कवि जान कृत; सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अगरचन्द भवरलाल नाहटा । मू. ४.७५

३ लावा रासा, (ग्र. १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत; सम्पादक - श्रीमहतावचन्द खारेड़ । मू. ३ ७५

४. बांकीदास री ख्यात, (ग्र २१), बांकीदास कृत; सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. ५ ५०

५. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १, (ग्र. २७), सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. २.२५

६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, (ग्र. ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं—बगडावत, प्रतापसिंह महोकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २ ७५

७. कवीन्द्र कल्पलता, (ग्र. ३४), कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. २ ००

८. जुगलविलास, (ग्र ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत ; सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू. १.७५

९. भगतमाळ, (ग्र ४३), चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत, सम्पादक - श्रीउदयराज उज्ज्वल । मू १.७५

१०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग १, (ग्र. ४२), ई स. १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रंथो का वर्गीकृत सूचीपत्र ; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ७ ५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र. ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थो का सूची-पत्र ; सम्पादक - श्रीगोपालनारायण बहुरा । मू. १२ ० ०

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थसूची भाग १, (ग्र. ४४), मार्च १९५८ तक के ग्रंथो का विवरण , सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ४.५०

१३ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची भाग २, (ग्र. ५८), १९५८-५९ के संगृहीत ग्रंथो का विवरण , सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू २ ७५

१४. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथ-संग्रह, (ग्र ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी । मू ६ २५

१५ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १, (ग्र ४८), मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक - आ० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू ८ ५०

१६. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग २, (ग्र. ४६), सपा०-प्रा० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया। मू. ६.५०

१७. मु० नैं० री ख्यात भाग ३, ((ग्र. ७२), ,, मू. ८.००

१८. सूरजप्रकास भाग १, (ग्र. ५६), चारण करणीदान कविया कृत; सम्पादक— श्रीसीताराम लाळस। मू. ८.००

१९. सूरजप्रकास भाग २, (ग्र ५७); सम्पादक - श्रीसीताराम लाळस। मू. ६.५०

२०. ,, भाग ३, (ग्र. ५८); ,, ,, ,, मू. ६.७५

२१. नेहतरग, (ग्र. ६३), बूदी नरेश राव बुधसिंह हाडा कृत; सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच। मू. ४.००

२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र ६६), लेखक डॉ. मोतीलाल गुप्त; मू ७.००

२३ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र.३१), अनु० श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी, प्रोफ़ेसर एस.आर भाण्डारकर द्वारा हस्तलिखित सस्कृत-ग्रथो की खोज मे मध्यप्रदेश व राजस्थान मे (१९०५-६ ई०) मे की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद। मू. ३.००

२४ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र ६८), लेखक–प० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक–शान्तिलाल म जैन। मू. ३.००

२५. वीरवांण, (ग्र ३३), ढाढी बादर कृत, सम्पादिका–रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मू ४ ५०

२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र ३६), सम्पादक - एम सी मोदी। मू ५ ५०

२७ रुषमणीहरण, (ग्र. ७४), महाकवि सायाजी झूला कृत, सम्पादक–पुरुषोत्तमलाल मेनारिया। मू. ३ ५०

२८. बुद्धि-विलास, (ग्र. ७३), बखतराम साह कृत, सम्पादक–श्री पद्मधर पाठक। मू. ३ ७५

२९ रघुवरजसप्रकास, (ग्र ५०), चारण कवि किसनाजी आढ़ा कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मू. ८ २५

३० सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थो का सूचीपत्र भाग १ (ग्र ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सग्रह का स्वरित रोमन-लिपि मे ४००० ग्रन्थो का सूचीपत्र, अत मे विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण, सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३७.५०

३१ सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थो का सूचीपत्र भाग २ अ (ग्र. ७७), सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३४.५०

३२. सन्त कवि रज्जब–सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र ७६), लेखक–डॉ. ब्रजलाल वर्मा। मू. ७ २५

३३ प्रतापरासो, (ग्र ७५), जाचिक जीवण कृत, सम्पादक–डॉ मोतीलाल गुप्त। मू. ६.७५

३४ भक्तमाल, (ग्र. ७८) राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका, सम्पादक–श्री अगरचन्द नाहटा। मू ६ ७५

३५. पश्चिमी भारत की यात्रा, (ग्र. ८०) कर्नल जेम्स टॉड कृत, अनु० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम ए. मू. २१.००